विश्व-विख्यात कथाकार की श्रेष्ठ कहानियां

रहस्यपूर्ण कहानियां

एडगर एलन पो

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

'TALES OF THE GROTESQUE AND ARABESQUE'
By Edgar Allan Poe का हिंदी अनुवाद

अनुवादक
श्रीरामनाथ 'सुमन'

मूल्य :
साधारण संस्करण : पांच रुपये
विशिष्ट संस्करण : छः रुपये

भूमिका

इस पुस्तक में जो कहानियां प्रकाशित की जा रही हैं उनकी विधा पर 'रहस्यपूर्ण' शब्द पर्याप्त मात्रा में लागू होता है। दो या तीन वर्षों की (लम्बी) अवधि में इस प्रकार की बीस-पचीस कहानियां मैंने लिखी होंगी, इसलिए इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता—ऐसे निष्कर्ष में सच्चाई नहीं है—कि इस प्रकार की रचनाओं के लिए मुझमें कोई असाधारण रुचि या झुकाव है। पुस्तक रूप में निकालने के लिए, एक विचार-बिन्दु के रक्षण की दृष्टि से हो सकता है कि उनमें कुछ रचनागत ऐक्य हो। यह तथ्य भी है। यह भी हो सकता है कि इस प्रकार की कोई रचना आगे मैं न लिखूं। मैं ये बातें यहां इसलिए कह रहा हूं कि मेरी गम्भीर कहानियों की विचित्रालंकृतियों को देखकर, मैत्री भाव से एक-दो आलोचकों ने यह आक्षेप किया है कि उनमें जर्मनवाद और विषाद की छाप है। यह अभियोग कुरुचि का द्योतक है। उन्होंने अभियोग के कारणों पर भली भांति विचार नहीं किया है। एक क्षण के लिए हम मान लेते हैं कि फैण्टेसीवाले टुकड़े जर्मनीय हैं, या वे और भी कुछ हो सकते हैं। तब मैं कहूंगा कि फिलहाल जर्मनवाद नाजी है, वाहन है। कल मैं जर्मन के अतिरिक्त और कुछ हो सकता हूं, ठीक वैसे ही जैसे कल तक मैं उसके सिवा और सब कुछ था। फिर भी ये अनेक टुकड़े एक पुस्तक हैं। मेरे मित्र इसी प्रकार किसी ज्योतिषी पर बहुत ज्यादा ज्योतिष जानने का, या किसी नैतिक लेखक पर बहुत ज्यादा सदाचार का उपदेश देने का लांछन लगा सकते हैं। किन्तु सच्चाई तो यह है कि एक अपवाद को छोड़, इन कहानियों में कोई ऐसी नहीं है जिसमें कूट-आतंक

की उस प्रजाति की विशिष्टता हो जिसे जर्मनीय कहा जाता है—केवल इस कारण कि जर्मन साहित्य के चन्द गौण नाम उसके दोषों के साथ सम्बद्ध हो गए हैं। यदि मेरी बहुत-सी कृतियों में भय या आतंक का आधार रहा है तो मैं कहना चाहता हूं कि वह भय वा आतंक जर्मनी का भय नहीं है बल्कि मेरी आत्मा का भय है और मैंने उसे उचित स्रोतों से ग्रहण किया है और उचित परिणामों के लिए उसका उपयोग किया है।

इस पुस्तक में एक-दो रचनाएं ऐसी हैं (जो मजाकिया या ऊटपटांग ढंग पर लिखी गई हैं) जिनपर मैं किसीसे गम्भीर विचार की आशा नहीं करता, और जिनके विषय में मैं आगे और कुछ कहना भी नहीं चाहता। किन्तु उनके अतिरिक्त दूसरों के लिए मैं ईमानदारी के साथ यह मानने को तैयार नहीं कि उन्हें मैंने जल्दबाजी में लिखा है। इसलिए मेरे लिए यह कहना अच्छा होगा कि यदि मैंने पाप किया है तो जान-बूझकर पाप किया है। ये लघु रचनाएं, अधिकांशतः, प्रौढ़ अर्थ और सुचिन्तित रचना-प्रक्रिया की द्योतक हैं।

सूची



एडगर एलन पो

1809-1849

एडगर एलन पो
व्यक्ति और उसकी कला

पो एक रहस्य के कवि और कथाकार के रूप में विख्यात है। वस्तुतः वह स्वयं एक रहस्य था। रहस्य में पला, विकसित हुआ और रहस्य बना हुआ भरी जवानी में दुनिया से चला गया। उसका जीवन और उसकी कला परस्पर-विरोधी मनोवृत्तियों का ऐसा प्रदर्शन है जिसे देखकर रहस्य, करुणा एवं विषाद से मन आकुल हो जाता है। उसने रोमांस में गुह्य, परलोक एवं प्रेत-तत्त्वों को मिलाकर अद्भुत मायिक सृष्टि की है और अपने आविष्ट स्वप्नों के पक्ष में तर्कशक्ति का ऐसा प्रयोग किया है कि देखते ही बनता है।

पो का जन्म बोस्टन (अमेरिका) में १९ जनवरी, १८०९ को हुआ था। बाप पहले ही मर चुके थे, और वह तीन वर्ष का भी नहीं हो पाया था कि मां, जो अंग्रेज़ अभिनेत्री थी, चल बसी। संसार में जब उसका कोई नहीं रह गया, एक धनवान पर संतानहीन महिला श्रीमती एलन ने उसे गोद ले लिया और विह्वल मातृप्रेम से उसे पूरित कर दिया। श्री एलन ने पत्नी के आग्रह पर उसे अनिच्छापूर्वक ग्रहण किया। इंग्लैण्ड और अमेरिका में उसे शिक्षा मिली। १८२६ ई० में जब वह वर्जीनिया यूनिवर्सिटी में पढ़ रहा था, उसमें और उसके पालक पिता में कुछ बातों को लेकर मतभेद हो गया। यह मतभेद बढ़ता ही गया। प्रथम वर्ष समाप्त कर छुट्टियों में वह घर आया और जब अवकाश के बाद यूनिवर्सिटी को लौटने लगा तो वहां जाने से पिता ने रोक दिया। इसपर वह चुपचाप घर से भाग निकला और बोस्टन जाकर सेना में भरती हो गया। १८२७ से ३१ प्रायः तीन वर्ष सेना

में रहने के बाद वह काम भी छोड़ दिया।

जब वह सेना में था तभी लिखने की ओर उसकी प्रवृत्ति हुई। इस बीच वह अच्छी कविताएं लिखने लगा था। १८२७ में बोस्टन से उसका 'तेमरलेन' और १८२९ में बाल्टीमोर से 'अल-अराफ' काव्य प्रकाशित हुए तथा १८३१ में न्यूयार्क से कविताओं का एक और संकलन निकला। १८३२ में मुक्त साहित्यकार का जीवन बिताने के लिए वह बाल्टीमोर में ही बस गया। इसी साल उसने कहानियां लिखनी शुरू कीं।

सतत गरीबी एवं अभावों के बीच भी अपने गौरव की रक्षा करता वह जीवन-पथ पर चलने लगा। उसे यह दृढ़ विश्वास था कि अपनी प्रतिभा से वह एक दिन संयुक्त राज्य (अमेरिका) और दुनिया में प्रतिष्ठा प्राप्त करके रहेगा। मातृ-पितृहीन, गृहहीन, कुटुम्बहीन, अर्थहीन, निराशाओं की लम्बी शृंखला के बीच भी वह अपनी नियति में विश्वास लिए चलता रहा। जीवन की भांति प्रेम में भी उसे नैराश्य का ही अनुभव हुआ। अब वह धीरे-धीरे मदिरा का सेवन करने लगा, उसीमें अपने दुखों को भुलाने की चेष्टा करता। इस मदिरा में वह ऐसा डूब गया कि उसे उन पत्रों का संपादन भी छोड़ना पड़ा जिन्हें रिचमंड, फिलाडेलफिया और न्यूयार्क सिटी में उसने सफल और समृद्ध बना दिया था। १८३५ में उसने समीक्षाएं लिखना शुरू किया।

१८३६ में जीवन को एक सुखद स्पर्श मिला। उसने वर्जीनिया क्लेम से विवाह कर लिया। उसे वह मन से चाहने लगा, इसलिए दोनों के सुख एवं कल्याण के लिए उसने शराब की लत छोड़ने की सच्चाई के साथ चेष्टा की। एक सीमा तक सफल भी हुआ। यह उसके जीवन में वासंतिक युग था किन्तु पांच ही वर्ष बाद, १८४१ ई० में उसकी नवतरुणी पत्नी सांघातिक रूप से बीमार हुई, अपने दुर्भाग्य एवं निराशा की चपेट न सह सकने के कारण वह पुनः मदिरा-पान के जाल में फंस गया। कई वर्षों की बीमारी के बाद १८४७ ई० में वर्जीनिया की मृत्यु हो गई। पत्नी की बीमारी की छाया उसकी कई कहानियों (जैसे इस संग्रह की मोरेला, बेरेनिस) में देखी जा

सकती है। प्यारी पत्नी के निधन का उसके जीवन पर ऐसा विषादपूर्ण प्रभाव पड़ा कि उसका मस्तिष्क ही विकृत हो गया। बीच-बीच में उसे ज्वर आ जाता था और वह प्रलाप तक करने लगता था। एक अजीब उन्माद और मदहोशी उसपर छा जाती थी। उसने स्वय ही लिखा है—"आई बिकेम इन्सेन, विद इन्टर्वल्स ऑफ हॉरिबल सेनिटी।" अर्थात् "मैं पागल हो गया, हां, बीच-बीच में भयावह प्रकृतिस्थता का काल आ जाता था।" अन्तिम दिनों में कई प्रसिद्ध लेखिकाओं एव कवयित्रियों, जैसे श्रीमती फ्रांसिस सार्जेण्ट आसगोर्ड, श्रीमती श्यू (मैरिया लुइज़े), श्रीमती व्हिटमैन (हेलेन) तथा श्रीमती लेविस (स्टेला), के प्रति उसमें एक प्रकार की प्लैटोनी प्रेमोन्मत्तता (प्लैटोनिक इरोटोमैनिया) उत्पन्न हो गई थी। पत्नी की मृत्यु के बाद वह अत्यधिक मदिरा-पान करने लगा था। वह उसका रक्त-मांस चूसती गई, यहां तक कि आत्मपलायन के इसी क्रम में १८४९ ई० में बाल्टीमोर में उसकी मृत्यु हो गई।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसमें गहरी प्रतिभा थी; वह गूढ़ एवं करुण संवेदनाओं का व्यक्ति था; उसकी प्रतिभा बहुमुखी थी; वह एक सफल कवि एवं गीतकार, एक ज़ोरदार कहानी-लेखक एवं समसामयिक साहित्य का एक संतुलित समीक्षक था। कवि की हैसियत से देखें तो उसमें एक ओर आदर्शोन्मुखता थी, दूसरी ओर गहरी संगीत-क्षमता। कथालेखक की दृष्टि से इन्द्रजाल और नियति का तानाबाना बुनने तथा नाटकीय प्रसंगों के यथोचित समावेश में उसकी कला की विशिष्टता थी। उसकी रचनाएं उसके अपने जीवन की रहस्यमयता का प्रतिबिम्ब हैं। उसका व्यक्तित्व, उसका मानस और उसकी रचनाएं साथ-साथ गतिशील होती हैं।

पो की प्रकृति का प्रधान तथ्य है उसका अद्भुत द्वित्व। यह द्वित्व उसके व्यक्तित्व, स्वभाव, मानस एवं कला सर्वत्र वर्तमान है। वस्तुतः उसमें दो परस्पर प्रतिकूल व्यक्तित्वों के दर्शन होते हैं। वह एक नहीं दो था। एक ओर वह शिष्ट, प्रेमपूर्ण, वफादार था; दूसरी ओर सनकी, झक्की, विद्रोही और कटु था। उसके मानस का एक पक्ष कालिमायुक्त आपराधि-

कता, भयानक श्मशानों से उठती छायाओं की मृत्योन्मुखी कल्पनाओं से ऊर्जस्वित है, तथा उसका दूसरा पक्ष कोमल भावनाओं, नारी-सौन्दर्य की सुषमाओं तथा करुण संवेदनाओं से मुखरित है। वह आदर्शवादी और स्वप्नद्रष्टा था—आदर्शों की ओर उसका आकर्षण केवल काल्पनिक नहीं था, वह उसके हृदय में भी समा गया था। वह सौन्दर्य, पवित्रता, नारी के मार्दव के प्रति बहुत ही संवेदनशील था। वह नारी को समग्र महाप्रकृति की मधुरतम वस्तुओं में गिनता था, इस प्रवृत्ति के कारण ही वह 'टु हेलेन', 'दि स्लीपर', 'टु वन इन पैराडाइज़' सरीखी अश्रुविन्दुओं से आर्द्र करुण गीत लिखने में समर्थ हो सका था।

उसकी कहानियों में एक स्वप्निल वातावरण, एक ऐन्द्रजालिकता, तर्कपूर्ण गुह्यता और रहस्यमयता तथा वर्णन-वैशिष्टय के दर्शन होते हैं। उनमें जीवन में मृत्यु और मृत्यु में जीवन दोनों तत्त्वों का विकास हुआ है। उसने मृत्यु की कहानियां (जैसे भुतहा मकान, छाया) लिखी हैं; उसने दुष्टता एवं अपराध की कहानियां (जैसे विलियम विलसन एवं वेरेनिस) लिखी हैं; उसने मरणान्तर जीवन की कहानियां (जैसे लीजिया, मोरेला, मीतज़ेनजेरस्टीन) लिखी हैं और उसने तीव्र व्यंग्य तथा नियति की कहानियां लिखी हैं। इन कहानियों में कथातत्त्व, यथातथ्य का विस्तृत वर्णन तथा तार्किकता को एकत्र देखा जा सकता है। कहीं-कहीं शब्दचित्र ऐसे अनोखे हैं कि उनमें गद्यकाव्य का सौन्दर्य दिखाई पड़ता है। नारी-सौन्दर्य की भांति उसकी रचनाएं बहुधा हमारी पकड़ में नहीं आतीं। स्वप्नों का एक जाल हमारे सामने छा जाता है और वे जैसे उसमें तिरोहित हो जाती हैं।

पो की ख्याति पहले विदेशों में हुई। पहले फ्रांस के बादलेयर तथा मैलोर्मे ने उसकी प्रतिभा को पहचाना; उसकी कीर्ति यूरोप तथा इंग्लैण्ड में फैली। फिर अमेरिका ने उसकी प्रतिभा की कदर की—मृत्यु के बाद। आज तो विश्व के प्रसिद्ध साहित्यकारों में उसका प्रतिष्ठापूर्ण स्थान है।

रहस्यपूर्ण कहानियां

मोरेला

अपनी मित्र मोरेला के प्रति मेरे मन में गहरी और अनन्य प्रीति की भावना थी। वर्षों की बात हो गई, जब अकस्मात् उससे मेरी भेंट हुई थी किन्तु उस प्रथम मिलन के दिन से ही मेरे अन्तःकरण में ऐसी आग जल उठी, जैसी पहिले कभी न जली थी। किन्तु वह आग काम की आग (कामाग्नि) न थी। धीरे-धीरे मुझे विश्वास होता गया कि उसके असामान्य तात्पर्य की न तो मैं किसी भी रूप में व्याख्या कर सकता हूं और न उसकी अस्पष्ट सघनता पर काबू ही पा सकता हूं। मेरी आत्मा को इससे बड़ी पीड़ा और झल्लाहट भी हुई। फिर भी हम मिलते रहे, और नियति ने हमें वेदी पर सदैव के लिए विवाह-बन्धन में बांध दिया। मैंने उससे कभी वासना की भाषा में बातें नहीं कीं, न कभी प्रणय के विषय में सोचा। हां, उसने इतना किया कि लोगों से मिलना-जुलना छोड़ दिया और अपने को केवल मुझमें समोकर, मुझे सुखी किया—कुछ ऐसा सुख जिसपर आश्चर्य होता है—ऐसा सुख जिसके सपने दिखाई पड़ते हैं।

मोरेला का ज्ञान बहुत गहरा था; उसकी प्रज्ञा सामान्य नहीं थी; उसके मस्तिष्क की शक्तियां अत्यन्त प्रबल थीं। मैं इस बात को अनुभव करता था और बहुत-सी बातों में मैंने उसकी शिष्यता ग्रहण की। किन्तु शीघ्र ही मुझे पता लग गया कि अपने जर्मन शिक्षण के कारण वह मेरे सामने ऐसी अनेक रहस्य-संकुल कृतियां उपस्थित करती है जिन्हें आम तौर पर प्रारम्भिक जर्मन साहित्य का पंक समझा जाता है। मैं कल्पना न कर पाता था कि किन कारणों से वे रचनाएं उसे प्रिय और उसके निरन्तर अध्ययन की सामग्री हैं। पर समय गुजरता गया और वे मेरे लिए भी वैसी ही प्रिय

एवं निरन्तर अध्ययन की चीजें बन गईं। शायद स्वभाव एवं उदाहरण का सरल परन्तु प्रबल प्रभाव ही इसका कारण होगा।

अगर मैं भूल नहीं करता, तो इन सब बातों में मेरे विवेक का कोई भाग नहीं था। या तो मैं अपने को ही भूल रहा हूं, नहीं तो मेरे विश्वासों में आदर्श की प्रेरणा नहीं थी, और जब तक मैं अत्यन्त ही भ्रान्त न होऊं, कह सकता हूं कि मेरे कार्यों या विचारों में रहस्यवादिता का कोई रंग भी न था। चूंकि मुझे इस बात की गहरी अनुभूति थी, मैंने निर्विवाद रूप से अपनी पत्नी का पथदर्शन स्वीकार कर लिया और अचंचल मन से उसके अध्ययन की बारीकियों में प्रवेश किया। और जब उन निषिद्ध पृष्ठों में तल्लीन हुआ तो मुझे कुछ ऐसी अनुभूति होने लगी जैसे कोई निषिद्ध प्रेरणा मेरे अन्दर जाग उठी है। मोरेला अपने ठण्डे हाथ मेरे हाथ पर रख देती और एक मृत तत्त्वज्ञान की भस्मराशि से कुछ छोटे, असामान्य शब्द कुरेदकर खड़ा कर देती जिनका विचित्र अभिप्राय अपने-आप मेरे स्मृति-पट पर प्रकाशित हो उठता। तब घण्टे पर घण्टे बीतते जाते, मैं उसके पास बैठा रहता और उसकी वाणी के संगीत में तब तक खोया रहता जब तक उसका सुर आतंक से रंजित होकर मेरी आत्मा पर छाया की भांति न गिर पड़ता। तब मैं पीला पड़ जाता और उन अपार्थिव सुरों को सुनकर अन्दर ही अन्दर कांप उठता था। इस प्रकार आनन्द अकस्मात् भीषण भय में विलीन हो जाता तथा जो सबसे सुन्दर था वही सबसे बीभत्स हो उठता था।

यहां उन गवेषणाओं की यथार्थ प्रकृति का वर्णन करना अनावश्यक है जो तथोक्त ग्रन्थों के आधार पर उतनी लम्बी अवधि तक, मेरे और मोरेला के बीच होनेवाली एकमात्र बातचीत का विषय थीं। जिसे हम पारमार्थिक नीति कह सकते हैं उसमें निष्णात लोग इन बातों की सहज कल्पना कर सकते हैं और जो अज्ञान हैं वे किसी भी स्थिति में उन्हें समझ नहीं सकते। सामान्यतः फिख्त का सर्वेश्वरवाद, पैथागोरस-सम्प्रदाय के सिद्धान्त तथा शेलिंग द्वारा प्रचारित तादात्म्य या तदभिज्ञा के सिद्धान्त बातचीत के मुख्य विषय थे और कल्पनाशील मोरेला का अधिकांश सौन्दर्य

इनमें ही समाहित था। जो अभिज्ञा व्यक्तिगत कही जाती है, मेरी समझ में 'लाक' ने उसकी व्याख्या करते हुए ठीक ही लिखा है कि वह तर्कना-परक प्राणी के आत्मत्व या सारूप्य में ही समाहित है। और चूंकि व्यक्ति से हमारा मतलब विवेकयुक्त प्रज्ञातत्त्व से होता है और चूंकि एक चेतना सदैव विचारणा के साथ लगी रहती है, यही सब मिलकर हमें वह बनाते हैं जिसे हम 'स्वयं' कहते हैं और इस प्रकार विचार करनेवाले अन्य प्राणियों से अपने को पृथक् करते हैं तथा अपने को अपनी व्यक्तिगत अभिज्ञा प्रदान करते हैं। परन्तु मूल प्रत्यभिज्ञा अर्थात् उस आत्मा की प्रकृति, जो मृत्यु के समय सदैव के लिए नष्ट हो जाती या नहीं नष्ट होती सदा ही मेरे लिए बड़ी दिलचस्पी का विषय था, अपने निष्कर्षों के रहस्यात्मक एवं कुतूहलो-त्पादक होने के कारण ही नहीं, जिस भावोद्वेग के साथ मोरेला उन बातों का वर्णन करती, उसके कारण भी।

जो हो, इतना सत्य है कि अब वह समय आ गया था जब मेरी पत्नी का ढंग, इन्द्रजाल की भांति, मुझे परेशान करने लगा। अब मुझे उसकी विवर्ण अंगुलियों का स्पर्श, उसकी सुरीली वाणी का धीमा स्वर या विषाद-युक्त आंखों की चमक सहन नहीं होती थी। वह इन सब बातों को जानते हुए भी मुझे झिड़कती नहीं थी—उसे मेरी दुर्बलता या अपराध का ज्ञान था, परन्तु वह इसे भाग्य कहकर हंस देती। उसके प्रति मेरा सम्मान जो क्रमशः कम होता जा रहा था इसके, मेरे लिए अज्ञात, कारण का भी उसे पता था। किन्तु उसने मुझे कभी उसकी ओर इशारा नहीं किया। फिर भी वह स्त्री थी और इसके कारण नित्य तड़पती थी। समय पाकर उसके कपोल पर रक्तिम दाग भली भांति जम गया और पीले माथे पर नीली नसें स्पष्ट दिखाई देने लगीं। उसकी यह दशा देख कभी क्षण-भर के लिए मेरा हृदय करुणा से विगलित हो उठता किन्तु दूसरे ही क्षण मेरी नजर उसकी अर्थ-भरी आंखों से मिल जाती और तब मेरी आत्मा को मानो काठ मार जाता और उसे उस आदमी की भांति चक्कर आ जाता जिसका सिर नीचे किसी सूखी अथाह खाई की ओर देखकर चकरा रहा हो।

तब क्या मैं यह कहूं कि उस क्षण मेरे मन में मोरेला की मृत्यु की सच्ची एवं पक्की कामना का उदय होता था ? हां, ऐसा ही होता था, परन्तु मृदु या भंगुर भावना अपने मिट्टी के आवास को बहुत दिनों तक जकड़े रही—बल्कि अनेक सप्ताहों और क्लान्तिकर महीनों तक, यहां तक कि मेरी संक्षुब्ध स्नायुओं ने मेरे मन पर अधिकार कर लिया और जब उसकी मृत्युतिथि में देर होने लगी, मैं अधिकाधिक क्रोधातुर होता गया। एक राक्षस की भांति मैं उन दिनों, घण्टों और कटु क्षणों को शाप देता जो बढ़ते और बढ़ते ही जा रहे थे, जबकि उसका मृदु जीवन समाप्त होता जा रहा था—जैसे दिनान्त की छायाएं।

किन्तु खिजां की एक शाम को, जब हवाएं गगन में शान्त पड़ी हुई थीं, मोरेला ने मुझे अपने पास बुलाया। उस समय सम्पूर्ण धरती पर हलका कुहासा छाया हुआ था तथा जलीय भागों पर तप्त दीप्ति फैली हुई थी और वन के सघन शारदीय पत्रों के बीच गगन से कोई इन्द्रधनुष निश्चय ही उतर आया था। जब मैं उसके पास पहुंचा वह भावना-कम्पित मृदु स्वरों में सनातन ईसाई सम्प्रदाय का एक भजन गुनगुना उठी थी—

पूत जननी शुभ्र मेरी।
भाव-विगलित प्रार्थनाएं और आकुल प्रेम।
पापिनी के त्याग का, बलिदान का यह नेम।
शुभ्र पावन स्वर्ग-सिहासन से मेरी ओर
देख लो छन भर को, मिट जाये अंधेरा घोर।
पूत जननी शुभ्र मेरी।
प्रात, संध्या, दोपहर को गा चुकी जो गान।
तुम सदा सुनती रही हो, हृदय का आह्वान।
दुःख में, सुख में, विपति-संपति में रह साथ,
तुम रही मुझको संभाले और पकड़े हाथ।
ईशमाता ! आज भी प्रत्यक्ष हो सुन विनय मेरी।

पूत जननी शुभ्र मेरी।
जब हमारी प्राण-सरिता, धीर गति से थी प्रवाहित।
और मेरे मन-गगन में थीं न तूफानी तरंगें,
भटक जाएँ ये न मेरे प्राण पथ में हों विमोहित।
प्रेम ने तेरे मुझे पहुंचा दिया तुझ तक अकंपित।
पूत जननी शुभ्र मेरी।
आज बादल जब नियति के घिर रहे हैं मम गगन में।
वर्तमान-अतीत सब कुछ छिप गए हैं सघन घन में।
तब भविष्य करो हमारा देवि ! उद्भासित [निरंतर।
मृदुल आशाएँ तुम्हारी आज भर दें अन्ध अंतर।
पूत जननी शुभ्र मेरी।

मोरेला देखकर बोली—"आज दिनों में दिन है : सब दिनों में ऐसा दिन जब या तो मरा या जिया जाता है। जीवन एवं धरित्री के पुत्रों के लिए यह शुभ्र दिवस है—अहा, स्वर्ग एवं मृत्यु की पुत्रियों के लिए तो यह और भी शुभ्र है।"

मैं उसकी ओर घूम गया, और वह आगे कहती गई—

"मैं मर रही हूं—फिर भी मैं जीवित रहूंगी। इसलिए मेरे लिए, मोरेला, तुम्हारी पत्नी के लिए शवशाला का कोई भय नहीं है। ध्यान से मेरी बात सुनो, उतना भी भय नहीं जितना कीड़ों से होता है। वे दिन कभी न आए जब तुमने मुझे प्यार किया होता, परन्तु जिसका तुमने जीवन में तिरस्कार किया है, उसीकी मृत्यु में तुम उपासना करोगे।"

"मोरेला !"

"मैं फिर कहती हूं कि मैं मर रही हूं। किन्तु मेरे गर्भ में उस लघु प्रेम का प्रमाण है जो तुमने मेरे लिए, मोरेला के लिए, अनुभव किया है। और जब मेरे प्राण उड़ जाएंगे तब भी शिशु जिएगा—तुम्हारा और मेरा शिशु, मोरेला का शिशु। किन्तु तुम्हारे दिन अब शोक के दिन होंगे—ऐसा

शोक जो सब प्रभावों से अधिक दीर्घजीवी होता है जैसे द्रुमों में सुरद्रुम सबसे अधिक स्थायी होता है। तुम्हारे सुख के क्षण बीत गए, और जैसे गुलाब के फूल वर्ष में दो बार खिलते हैं उस तरह आनन्द जीवन में दो बार नहीं प्राप्त किया जा सकता। इसलिए अब तुम काल के साथ खेल न कर पाओगे, किन्तु चूंकि तुम्हें सदाबहार और द्राक्षा लताओं का ज्ञान नहीं है, तुम धरती पर अपना कफन, अपना आवरण खुद ढोते चलोगे जैसा मक्का के मुसलमान करते हैं।"

"मोरेला!" मैंने चीखकर कहा—"मोरेला! तुम यह सब कैसे जानती हो?" किन्तु उसने तकिये पर अपना सिर फिरा लिया; उसके अंगों में एक हलकी फुरहरी-सी आई; उसने अपने प्राण त्याग दिए और मैंने फिर उसकी वाणी नहीं सुनी।

फिर भी जैसी भविष्यवाणी उसने की थी उसका शिशु—जिसे उसने मरते समय जन्म दिया था और जिसने तब तक सांस नहीं लिया जब तक मां की श्वासक्रिया समाप्त नहीं हो गई—जीवित रहा। यह एक कन्या थी। वह आकार एवं बुद्धि दोनों में विचित्र गति से बढ़ती रही और रंग-रूप सब में सदा के लिए विदा होनेवाली मां के बिलकुल समान थी। धरती के किसी भी प्राणी के लिए दूसरे को जितना प्रेम करना सम्भव है उससे कहीं अधिक भावप्रवणता एवं गहराई के साथ मैं उसे प्यार करने लगा।

किन्तु ज्यादा दिन नहीं बीतने पाए थे कि इस पवित्र स्नेह के आकाश पर उदासी, भय एवं दुःख के बादल छा गए। मैंने ऊपर कहा है कि आकार और बुद्धि दोनों में शिशु विचित्र गति से उन्नति करने लगा था। शारीरिक आकार-प्रकार और बाढ़ में उसकी तेजी से होनेवाली वृद्धि अद्भुत थी किन्तु उसकी मानसिक प्रगति को देखकर मेरे अन्दर जो तूफानी विचार उठते थे वे तो अत्यन्त भयप्रद थे। हां, भयप्रद। जब मैं प्रतिदिन देखता था कि शिशु की धारणाओं में नारी की प्रौढ़ शक्तियों एवं क्षमताओं का विकास होने लगा है, और जब बचपन के ओठों से अनुभव के पाठ टपकने लगे हैं, या जब मैं देखता था कि वयस्क स्त्री की भांति उसकी विकसित

एवं कल्पनामयी आंखों से प्रतिक्षण विवेक या फिर कामना की ज्योति विकीर्ण हो रही है तब इसके सिवा दूसरा और क्या प्रभाव हो सकता था? जब यह सब मेरी दिग्मूढ़ बुद्धि के सामने स्पष्ट प्रकट हो रहा था और जब मैं इसे अपनी आत्मा से छिपाने में असमर्थ हो गया; जब अपनी उन धारणाओं से, इसे दूर फेंकने में अक्षम होने लगा जो इसे स्वीकार या ग्रहण करते हुए कांप-कांप उठती थीं, तब इसमें आश्चर्य की क्या बात है कि अत्यन्त भयावने और उत्तेजक संशयों से मेरा अन्तःकरण भर गया और समाधिस्थ मोरेला अपने जीवन-काल में जो अद्‌भुत कहानियां सुनाया करती थी और जिन कुतूहलोत्पादक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया करती थी वे मेरे विचार-पट पर आ-आकर टकराने लगे। इसलिए मैंने संसार की जांच-परिधि से उस प्राणी को दूर खींच लिया, नियति ने जिसकी पूजा करने पर मुझे विवश कर दिया था और अपने पुराने पुश्तैनी मकान के कठोर एकान्त में पीड़ादायिनी उत्कण्ठा के साथ उन सब बातों पर ध्यान देने लगा जिनका सम्बन्ध मेरे प्यारे शिशु से था।

ज्यों-ज्यों बरस पर बरस बीतते गए और प्रतिदिन मैं उसके पवित्र, मृदु और बोलते हुए-से मुख की ओर निहारता तथा उसके प्रौढ़ता प्राप्त कर रहे शरीर पर ध्यान देता रहा त्यों-त्यों मुझे उसमें अपनी उदासी से भरी मृत मां से समानता की नई-नई बातें दिखाई देती गई। सारूप्य की ये छायाएं दिन-दिन गाढ़ी होती गई—अनुदिन पहिले से अधिक पूर्ण, अधिक निश्चित, अधिक जटिल और अधिक भयानक। उसकी मुस्कान अपनी मां के समान थी; इसे मैं सहन कर सकता था परन्तु उसके पूर्णतः सारूप्य पर कांप उठता था। मोरेला के समान उसकी आंखों को मैं बर्दाश्त कर सकता था किन्तु जब वे मोरेला के अपने ही गूढ़ एवं आश्चर्यप्रद अर्थवत्ता के साथ मेरी आत्मा की गहराइयों में झांकने लगती थीं तब मैं अन्दर से हिल उठता था। माथे की उठान, रेशमी बालों की कुण्डलिकाएं, विवर्ण अंगुलियां, उसकी वाणी के उदास संगीत से भरे स्वर, सब वैसे ही थे जैसे मां के थे। तथा सबके ऊपर इस प्रिय और जीवित शिशु के ओठों पर मृत मां

की वाक्यावलियां एवं अभिव्यक्तियां ऐसी थीं जो मुझे दग्धकारी विचारों तथा भीषण भय से भर देती थीं—मेरे हृदय में एक ऐसा कीड़ा पैदा हो गया, जो मरनेवाला नहीं था।

इस प्रकार उसके जीवन के दस वर्ष बीत गए किन्तु मेरी बेटी इस धरती पर अनामिका ही बनी रही—उसका कोई नाम नहीं रखा गया। पिता का स्नेह जब-तब 'मेरी बच्ची', 'मेरी प्यारी' इत्यादि उपाधियों में व्यक्त होता रहता था। कठोर एकान्त ने उसे अन्य सब प्रकार के संसर्ग से वंचित कर दिया था। मोरेला का नाम उसकी मृत्यु के साथ ही मर चुका था। मैंने बेटी से कभी उसकी मां के बारे में कोई ज़िक्र नहीं किया—ऐसी बातचीत करना ही असम्भव था। इस संसार में मेरी बेटी थोड़े ही समय तो जीवित रही किन्तु उस अवधि में उसपर बाहरी दुनिया का कोई प्रभाव नहीं पड़ा—मेरा मतलब है, उससे अधिक नहीं जितना उसके निर्जन एकान्त जीवन की सीमा में सम्भव हो सकता था। किन्तु अन्त में मेरे त्रस्त एवं घबड़ाहट-भरे दिमाग में ईसाई नामकरण संस्कार की बात आई, जैसे मेरी नियति के आतंक से मुक्ति का कोई उपाय सूझ गया हो। संस्कार-वेदिका के सामने उसके नाम के विषय में मैं हिचकिचाहट से भर उठा। बुद्धिमतियों एवं सुन्दरियों के अनेक पुराने-नये जमानेवाले, देश-विदेश के नाम आ-आकर मेरे ओठों पर नाचने लगे—अच्छे से अच्छे और आकर्षक से आकर्षक नाम। तब वह कौन-सी बात थी जिसने उस समाधिगत मृतात्मा की स्मृति को कुरेदने के लिए मुझे प्रेरित किया? किस दानव ने मुझे वह ध्वनि निकालने को बाध्य किया जिसके स्मरणमात्र से माथे का रक्त धारों में हृदय की ओर लौटने लगा? मेरी आत्मा की कन्दरा से कौन-सा राक्षस बोल पड़ा कि उन धुंधली वीथिकाओं में रात के मौन के बीच मैंने पुरोहित के कानों में चीखकर कह दिया—'मोरेला!' किस राक्षस ने क्षण-भर में मेरी बच्ची की देह को ऐंठ दिया और उसके अंगों पर मौत की स्याही फेर दी? उस शब्द के कान में पड़ते ही कांपकर उसने अपनी चमकीली आंखें धरती से आकाश की ओर फेर दीं और हमारे आनुवंशिक गर्भगृह के काले

पत्थर पर चित गिर पड़ी, इस आवाज़ के साथ—"मैं आ गई हूं।"

स्पष्टतः शीतलतापूर्वक, शान्तिपूर्वक स्पष्ट—मृत्यु-नाद की भांति स्पष्ट—भयानक, भयानक मृत्यु। मेरी आत्मा में वह शाश्वत स्वर प्रविष्ट हो गया। वर्षों पर वर्ष बीतते जाएंगे किन्तु उस युग की स्मृति कभी न मिटेगी, कभी नहीं। इस समय मैं फूलों तथा द्राक्षा लताओं के प्रति अवश्य अजान था, किन्तु विषगर्जर तथा देवद्रुमों ने रात-दिन मेरा पीछा किया। बस मुझे समय तथा स्थान का कोई ध्यान नहीं रह गया; मेरे भाग्य की तारिकाएं आकाश में बुझ गईं जिससे धरती अंधियारी हो गई और उसकी आकृतियां भागती हुई छायाओं की भांति मेरे पास से गुज़रने लगीं। इन सबके बीच मैं केवल मोरेला को पकड़े रहा। अन्तरिक्ष की हवाएं मेरे कानों में केवल एक ध्वनि फूंक जातीं तथा सागर की तरंगें पहिले से भी अधिक बुदबुदा उठतीं—'मोरेला!' किन्तु वह मर गई और अपने ही हाथों से मैंने उसे कब्र में रखा और जब मैंने देखा कि शव-समाधिशाला के उस कक्ष में जहां मैं दूसरी (बेटी) को दफनाने गया, पहिली (मोरेला) का कोई अवशेष या चिह्न नहीं है तो मेरे मुंह से एक लम्बा तीखा अट्टहास निकल गया।

नाक की महिमा

मैं हूं—मेरा मतलब है, मैं था—एक बड़ा आदमी, किन्तु मैं न तो किसी महाग्रंथ का लेखक हूं, न तो कोई नकाबपोश हूं। मेरा नाम टामस स्मिथ है, और मैं गप्पनगर में किसी जगह पैदा हुआ था। अपने जीवन में पहिला काम, जो मैंने किया, यह था कि दोनों हाथों से अपनी नाक पकड़ ली। मेरी मां ने इसे देखा और मुझे प्रतिभावान कहकर पुकारा; मेरे पिता तो मारे खुशी के रो पड़े; उन्होंने नासिका विज्ञान पर एक पुस्तक मुझे खरीद दी। चड्ढी पहिनने लायक होने के पहिले ही मैं न केवल उस पुस्तक को चाट गया था, बल्कि एक कापी में मैंने वह सब संकलित कर लिया था जो इस विषय (नाक) पर प्लिनी, अरस्तू, अलेक्जेण्डर रास, मान्यूटियस फेलिक्स, हरमैनस पिक्टोरियस, डेल रायो, बार्थोलिनस तथा सर टामस ब्राउन जैसे विद्वानों ने लिखा था।

अब मैं इस (नासिका) विज्ञान की गहराइयों को समझने लगा था, और शीघ्र ही मैं इस निष्कर्ष पर पहुंच गया कि यदि किसी आदमी के पास काफी बड़ी नाक है तो वह सिर्फ उसका अनुसरण करके प्रसिद्धि प्राप्त कर सकता है। किन्तु मेरा ध्यान केवल सिद्धान्तों तक सीमित न था; हर रोज सुबह एक-दो घूंट चढ़ाने के बाद मैं अपनी नाक को बड़ी करने के लिए दो-चार झटके देता था। जब मैं बालिग हुआ, मेरे पिता ने एक दिन मुझसे अपने पढ़ने के कमरे में आने के लिए कहा।

जब हम दोनों वहां पहुंच गए, उन्होंने कहा—"मेरे प्यारे बेटे! तुम्हारे जीवन का मुख्य लक्ष्य क्या है?"

मैंने कहा—"पिता जी, नासिका विज्ञान का अध्ययन।"

वह बोले—"क्या कहा टामस ? नासिका विज्ञान ?"

मैं बोला—"हां, नासिकाओं का विज्ञान।"

उन्होंने पूछा—"तुम मुझे बता सकते हो कि नाक का मतलब क्या होना है ?"

मैंने कहा—"पिताजी, करीब एक हजार लेखकों ने नाक की विविध प्रकार से व्याख्या की है (मैंने अपनी जेब घड़ी निकालकर देखी), इस समय दोपहर है, या उसके आसपास समझ लीजिए। आधी रात तक उन सबके विषय में बातचीत करने के लिए अभी काफी वक्त हमारे पास है। अब मैं शुरू करता हूं। बार्थोलिनस के अनुसार नाक वह उभार, वह शोथ, वह मांसपिण्ड है जो···"

वृद्ध पिता बीच में ही बोल उठे—"बस टामस, इतना काफी है। मैं तुम्हारे ज्ञान-विस्तार पर आश्चर्यचकित हूं—सचमुच चकित हूं टामस। यहां आओ (उन्होंने मेरी बांह पकड़कर थपथपाई)। अब तुम अपनी शिक्षा को खत्म हुआ समझो। और अब वक्त आ गया है कि तुम अपना रास्ता नापो (उन्होंने मुझे सीढ़ियों के नीचे धकेलकर दरवाजे के बाहर निकाल दिया)। दूर हो मेरे घर से, भगवान तेरा भला करे।"

चूंकि मैं अपने अन्दर ईश्वरीय प्रेरणा का अनुभव कर रहा था इसलिए मैंने इस घटना को और कुछ न समझकर अपने लिए कल्याणप्रद समझा और अपनी नाक का अनुसरण करने का निश्चय कर लिया। मैंने उसे दो-एक झटके दिए और नासिका विज्ञान पर एक पुस्तिका लिख डाली। सारे गप्प-नगर में तहलका मच गया।

"आश्चर्यजनक प्रतिभा !" त्रैमासिक ने लिखा।

"सर्वश्रेष्ठ शरीरशास्त्री।" नवीन मासिक का कहना था।

"श्रेष्ठ लेखक।" एडिनबरा ने कहा।

"महामानव।" ब्लैकवुड ने कहा।

"यह कौन हो सकता है ?" श्रीमती वाग्चन्द्रिका ने कहा।

"यह क्या हो सकता है ?" बड़ी कुमारी वाग्चन्द्रिका बोली।

"यह कहां हो सकता है ?" छोटी कुमारी चन्द्रिका ने कहा।

किन्तु मैंने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया और एक चित्रकार की दुकान में प्रवेश किया।

रानी आत्मसुखी वहां बैठी अपना चित्रांकन करवा रही थीं, सरदारनी अमुक रानी की कुतिया को पकड़े बैठी थीं, कुंवर यह और वह उनसे हंसी-मजाक कर रहे थे, और राजा लजाधुर उनकी कुर्सी के पीछे खड़े थे। मैं चित्रकार के पास चला गया और मैंने अपनी नाक उसके आगे कर दी।

"आह, कितनी सुन्दर !" रानी ने निश्वास लेकर कहा।

"बड़ी ही खूबसूरत।" सरदारनी तुतलाई।

"भयानक।" कुंवर ने कराहकर कहा।

"घृण्य।" राजा बड़बड़ाया।

"इसके लिए तुम क्या (पारिश्रमिक) लोगे ?" चित्रकार ने पूछा।

"हजार पौण्ड।" बैठते हुए मैं बोला।

"हजार पौण्ड ?" नाक को रोशनी की ओर घुमाते हुए उसने पूछा।

"निश्चय ही।" मैंने कहा।

"सुन्दर।" नाक की ओर देखते हुए वह बोला।

"हजार पौण्ड" नाक को एक तरह मरोड़ते हुए मैंने कहा।

"प्रशंसनीय।" वह बोला।

"हजार पौण्ड" मैंने फिर दोहराया।

"आपको मिलेगा" उसने कहा—"कैसी बढ़िया चीज है !"

इसके बाद उसने मुझे दाम चुका दिए और मेरी नाक का एक चित्र बना लिया। मैंने एक अच्छे मुहल्ले में मकान ले लिया और सम्राज्ञी को अपनी पुस्तिका 'नासिका विज्ञान' का निन्नानबेवां संस्करण भेंट किया, इसके साथ लेखक की नाक का एक चित्र भी था। राजा लजाधुर ने मुझे राजकीय प्रीतिभोज में बुलाया।

वहां सब बड़े-बड़े लोग और अन्वेषणकर्ता उपस्थित थे।

इस्ताम्बूल से एक अतातुर्क आए थे। उन्होंने सुनाया कि फरिश्ते दर-

अस्ल अश्व, मुर्गे और वृषभ थे, छठी जन्नत में किसीके सत्तर हज़ार सिर और सत्तर हज़ार जिह्वाएं हैं और आसमानी नील रंग की एक गाय अपनी चार सौ सींगों पर धरती को उठाए हुए है।

वहां एक सर निश्चित विरोधाभास थे। उन्होंने कहा कि सब मूर्ख तत्त्वज्ञानी होते हैं और सब तत्त्वज्ञानी मूर्ख होते हैं।

एक सदाचारशास्त्र के लेखक भी थे। उन्होंने अग्नि, ऐक्य एवं अणुओं के सम्बन्ध में बातें कीं, फिर उभयांग एवं पूर्वजीवित आत्मा, ममत्व एवं विषमता, आदिप्रज्ञा आदि के विषय में बोलते रहे।

एक पुराणशास्त्री थे जिन्होंने यूसेबियस एवं एरियेनस, किंवदन्तियों, नाइस की धर्मपरिषद्, ईसा के अन्तिम भोज में रक्त की विद्यमानता के सिद्धान्त (कानसब्सटैंशियलिज़म), समजननांशी इत्यादि विषयों पर लेक्चर झाड़ा।

फ्लोरेंस (इटली) से आए थे एक महाशय टुनटुनिया, जिन्होंने आर्पिनो, कार्पाशियो, अर्गोस्तिनो, टीटियन की स्वर्णिम महत्ताओं इत्यादि पर लंतरानी की।

उनमें थे फेल्ज़पार नाम के भूगर्भशास्त्री। उन्होंने आन्तरिक अग्नियों, नृत निर्मितियों, गैसीय, तरल एवं ठोस वस्तुओं, स्फटिक एवं अवमृद, परतदार चट्टान एवं शार्ल, सेलखड़ी और ग्रेनाइट, अभ्रक-पट्टिका और मृदु प्रस्तर के विषय में हमें बताया।

गप्पनगर विश्वविद्यालय के अध्यक्ष भी उपस्थित थे। उन्होंने बताया कि चांद को थ्रेस में बेंदिस, मिस्र में बूबैस्तिस, रोम में दियान और यूनान में आर्तेमिस कहा जाता है।

वहां थे डेलफाइनस बहुभाषी। उन्होंने बताया कि एसचाइलस के तिरासी लुप्त दुःखान्त नाटकों का ईसोड्यस की चौवन वक्तृताओं, नाइसियाज़ के तीन सौ एक्यानवे भाषणों, थियूफ्रेस्तस के एक सौ अस्सी निबन्धों, अपोलिनियस के शांकव भाग की आठवीं पुस्तक, पिण्डार के भजनों तथा लघु होमर की तैंतालीस दुःखान्तिकाओं का क्या हश्र हुआ।

एक आधुनिक अफलातूनमनवादी आए थे। उन्होंने पारफाइरी आयमाब्लिकस, प्लाटिनस, प्रोक्लस, हायरोक्लिस, मेक्सिमस टायरियस एवं साइरियानस इत्यादि विचारकों से अनेक उद्धरण सुनाए।

अब आई मेरी बारी। मैं विक्टोरियस, डेल रायो, अलेक्जेण्डर राग, मान्यूटिस, बार्थोलिनस, सर टामस ब्राउन तथा नासिका विज्ञान पर बोला।

"चमत्कारपूर्ण, चतुर मानव!" राजा ने कहा।

"परमश्रेष्ठ।" उनके अतिथियों ने दोहराया।

दूसरे दिन रानी परमश्री आत्मसुखी ने मुझे दर्शन दिए और मेरा चिबुक स्पर्श करके मुस्कराते हुए मुझसे पूछा कि 'नृत्यशाला में आना आप पसन्द करेंगे?'

"खुशी के साथ।" मैंने उत्तर दिया।

"नाक के साथ?" उन्होंने पूछा।

"सब कुछ जैसा मैं हूं।" मैंने उत्तर दिया।

"तब यह आमंत्रणपत्र है। क्या मैं लोगों से कह सकती हूं कि आप वहां आएंगे?"

"प्रियदर्शिनी, सच्चे हृदय के साथ।"

"शित्। नहीं, अपनी पूरी नाक के साथ?"

"हां, हां, बिलकुल नाक के साथ।"

समय पर मैंने अपनी नाक को दो-एक झटके दिए और नृत्यशाला में पहुंच गया। कमरे ठसाठस भरे हुए थे; सांस लेना मुश्किल था।

"वह आ रहा है।" किसीने सीढ़ी पर से कहा।

"वह आ रहा है।" उससे और ऊपर खड़े किसीने दोहराया।

"वह आ रहा है।" उसके भी आगे के किसी आदमी ने कहा।

"वह आ गए।" रानी ने कहा—"वह आ गए मेरे नन्हे दोस्त।" उसने मुझे दोनों हाथों से पकड़ लिया और मेरी नाक पर नजर गड़ा दी।

"क्या खूब।" फ्रांस की मादम अंकुरिता ने कहा।

"जैसे लंगूर।" स्पेन के डान खंजर ने कहा।

"हां, हां, भरपूर।" इटली के काउण्ट मकर ने कहा।

"क्या खूब शक्ल है।" जर्मनी के बैरन भयंकर ने चिपकाया।

आर्केस्ट्रा गाने लगा—"जैसे नागनाथ वैसे सांपनाथ।"

सब तालियां बजा-बजाकर एक साथ चिल्ला उठे—"बहुत खूब। कैसा मनोहर ! कैसा मनोरंजक !" (ज़ोर की तालियां।) मेरे लिए यह सब असह्य हो उठा। इसमें वास्तविकता नहीं थी। यह बहुत बुरा था। मैं सह न सका, मुझे गुस्सा आ गया।

मैंने बैरन से कहा—"तुम हो लंगूर।"

"महोदय" उन्होंने ज़रा ठहरकर कहा—"आप गधे हैं।"

इतना काफी था। मैंने भी तुर्की-ब-तुर्की जवाब दिया। दूसरे दिन ६ बजे मैंने उसकी नाक उड़ा दी और तब अपने मित्रों के बीच पहुंचा।

"मतिहीन।" पहिले ने कहा।

"मूर्ख।" दूसरा बोला।

"गंवार।" तीसरे ने कहा।

"अनाड़ी।" चौथा बोला।

"बुद्धू।" पांचवें ने कहा।

"गधा।" छठा बोला।

"भग यहां से।" सातवें ने कहा।

इन सब बातों से मैंने अपने को अत्यन्त अपमानित अनुभव किया और अपने पिता से सलाह लेने गया।

मैंने कहा—"पिताजी, मेरे जीवन का मुख्य उद्देश्य क्या है ?"

उन्होंने उत्तर दिया—"मेरे बेटे ! अब भी वही नासिका विज्ञान का अध्ययन तुम्हारा उद्देश्य है किन्तु बैरन की नाक पर आघात करके तुमने निशाने के बाहर चोट की। यह सत्य है कि तुम्हारी नाक सुन्दर है, किन्तु बैरन भयंकर की तो अब नाक रही ही नहीं। तुम उस क्षेत्र में अब मृत हो, अब वह आज का प्रधान आकर्षण बन गया है। इस गप्पनगर में बड़ी एवं ऊंची नाकवाला महान है किन्तु जिसे नाक ही नहीं है वह उससे भी महत् है।"

विलियम विलसन

फिलहाल, मुझे अपने को विलियम विलसन नाम से पुकारने दीजिए। जो धवल पृष्ठ मेरे सामने पड़ा है उसे अपने यथार्थ नाम से कलुषित करने की आवश्यकता नहीं है। वह इसके पहले ही मेरी जाति के प्रति अत्यधिक तिरस्कार, आतंक और घृणा का कारण हो चुका है। क्या रोपाकुल हवाएं इसके अप्रतिम अपयश की अफवाहें पृथ्वी के अन्तिम छोर तक नहीं पहुंचा चुकी हैं? ओ जाति-बहिष्कृतों में भी बहिष्कृत! ओ सर्वपरित्यक्त! क्या तू दुनिया के लिए सदा को मर नहीं चुका है?—उसके सम्मान के लिए, उसके सौन्दर्य के लिए, उसकी स्वर्णिम आकांक्षाओं के लिए? और क्या तेरी आशाओं और स्वर्ग के बीच घने, निरानन्द और असीम बादल सदा के लिए नहीं छा गए हैं?

यदि वैसा करना सम्भव होता तो मैं आज अपनी अकथनीय व्यथा तथा अक्षम्य अपराध से भरे बाद के वर्षों की कथा लिखने नहीं बैठता। इस युग—इन पिछले वर्षों—ने स्वयं ही जिस अधमता में अकस्मात् वृद्धि कर दी उसके उद्गम का पता लगाना ही इस समय मेरा ध्येय है। आम तौर से आदमी तिल-तिल करके, मतलब धीरे-धीरे, अधम होता है। किन्तु मेरे विषय में बात बिलकुल उल्टी है। एक क्षण में मेरे समस्त सद्गुण मुझे त्यागकर इस प्रकार गिर पड़े जैसे शरीर से लबादा गिर पड़ता है। मैंने अपने नंगेपन पर त्रिविध अपराध का पर्दा डालने की कोशिश की। अपेक्षाकृत सामान्य दुष्टता से, राक्षसी गति के साथ, मैंने अचानक अधमता के क्षेत्र में प्रवेश किया। किस अवसर, किस एक घटना के कारण दुष्कृत्य सम्भव हुआ, उसे जरा धीरज रखकर सुनिए। मौत आ रही है, और उसके

आगे-आगे, उसके पहले जो छाया चलती है उसने मेरी भावना पर मृदु प्रभाव डाला है। धुंधली घाटी के बीच चलते हुए मैं अपने साथी मानवों की सहानुभूति के लिए तड़प रहा हूं—सहानुभूति क्या, मैं तो दया कहने जा रहा था। मैं उन्हें विश्वास दिलाना चाहता हूं कि किसी न किसी अंश में मैं ऐसी परिस्थितियों के वशीभूत हो गया था जो मानवीय नियंत्रण के परे होती हैं। मेरी कामना है कि जो ब्यौरा मैं उन्हें बताने जा रहा हूं, उसमें से वे मेरे लिए भूलों के मरुस्थल बीच भवितव्यता का, होनहार का कोई लघु शाद्वल (हरित भूखण्ड) खोज निकालने की चेष्टा करेंगे। मैं उनसे यह स्वीकार कराना चाहूंगा—और इसे स्वीकार करने से वे भाग नहीं सकते कि पहले भी बड़े-बड़े प्रलोभन रहे होंगे किन्तु मनुष्य इसके पूर्व इस प्रकार प्रलुब्ध नहीं हुआ होगा—कम से कम इस प्रकार पतित तो नहीं ही हुआ होगा। इसलिए उसने इतनी व्यथा भी नहीं सही होगी। मैं क्या एक स्वप्न में जीता नहीं रहा हूं ? और इस समय क्या मैं एक अत्यन्त आश्चर्यकारी सांसारिक स्वप्नदर्शन के रहस्य और आतंक का शिकार होकर मर नहीं रहा हूं ?

मैं एक ऐसी जाति में पैदा हुआ हूं जो अपने कल्पनात्मक एवं सहज उत्तेजनशील स्वभाव के कारण सदा ही उल्लेखनीय रही है, और अपने शिशुत्व के प्रारम्भकाल में अपनी कौटुम्बिक प्रकृति की सारी विशेषताएं भी मुझे विरासत में मिली थीं। ज्यों-ज्यों उम्र मेरी बढ़ती गई, उनका भी दृढ़ विकास होता गया जो अनेक कारणों से मेरे मित्रों के लिए अशान्तिकर और स्वयं मेरे लिए निश्चित रूप से हानिकर सिद्ध हुआ। धीरे-धीरे मैं अपने मन का और अद्भुत सनकों वाला हो गया। अदमनीय आवेगों ने मुझपर अधिकार जमा लिया। चूंकि मेरे प्रतिपालक माता-पिता दुर्बलमना और मेरी ही तरह शारीरिक अक्षमताओं से पीड़ित थे, इसलिए वे मेरे दुर्गुणों की वृद्धि को रोकने में असमर्थ रहे। उन्होंने गलत ढंग पर कुछ क्षीण प्रयत्न इस दिशा में किए भी तो वे असफल सिद्ध हुए और उनमें मेरी पूर्ण विजय हुई। फिर तो मेरी बात घर के लिए कानून बन गई, और ऐसी छोटी उम्र में जब शायद ही कोई लड़का अपने पथदर्शकों के पथदर्शन से रहित होगा, मैं

सिर्फ अपनी इच्छा का अनुसरण करने को छोड़ दिया गया, और नाम को भले ही न हो पर यथार्थतः मैं अपने कर्मों का स्वामी खुद बन गया।

छात्र-जीवन की मेरी प्रारम्भिक स्मृतियां एक बड़ी बेढंगी, कुटीरोपम एवं टूटती-फूटती इमारतवाले ऐसे स्कूल से सम्बद्ध हैं जो इंग्लैंड के एक धुंधले गांव में स्थित था। गांव ऊंचे-ऊंचे एवं ग्रन्थिल वृक्षों से भरा था और वहां के प्रायः सभी मकान बहुत पुराने और असाधारण रूप से ऊंचे थे। वह आदरणीय पुराना कस्बा सचमुच एक स्वप्न-सदृश और मन में शान्ति लानेवाला स्थान था। कल्पना में तो मैं इस समय भी उसकी सघन छाया-मय वीथिकाओं की नवजीवनप्रद शीतलता अनुभव करता हूं, उसकी सहस्रों झाड़ियों की मलयगंध मेरे श्वास में आती है और धुंधलके भरे वातावरण में स्थित एवं सोये हुए पुराने गाथिक धौरहरे से हर घण्टे के बाद मौन को अकस्मात् भंग करके तीव्र आकस्मिक नाद कर उठनेवाले चर्च-घण्टे की गहरी, खोखली ध्वनि व्याख्यातीत आह्लाद से मुझे आन्दोलित कर देती है।

स्कूल और उससे सम्बन्धित बातों की छोटी-छोटी स्मृतियां भी मुझे ऐसे आनन्द से भर देती हैं जो मैं आज किसी रूप में अनुभव करने की स्थिति में हूं। विपदाओं में जिस प्रकार मैं आकण्ठ डूबा हुआ हूं—सच्ची विप-दाओं में—उसे देखते हुए यदि मैं कुछ असम्बद्ध ब्यौरों की दुर्बलता में राहत खोजता हूं—फिर वह राहत चाहे कितनी ही थोड़ी और अल्पजीवी हो—तो मुझे क्षमा किया जा सकता है। अपने तईं बहुत मामूली बल्कि निरर्थक भी दीख पड़नेवाली ये स्मृतियां, मेरी कल्पना में नैमित्तिक रूप से महत्त्व-पूर्ण बन गई हैं क्योंकि वे एक ऐसी अवधि और ऐसे स्थान से सम्बद्ध हैं जिसमें और जहां मुझे नियति की प्रथम अस्पष्ट सूचनाएं प्राप्त हुईं—उस नियति की जिसने बाद में मुझे पूर्णतः आवरण में ढक लिया। तब मुझे उनको याद करने दीजिए।

मैं बता चुका हूं कि स्कूल की इमारत जीर्ण, बेढंगी और कुटीर-सदृश थी। उसमें लम्बे-चौड़े मैदान थे। वह पक्की, ईंटों की बनी, असामान्य रूप से ऊंची चहारदीवारी से घिरी थी ; चहारदीवारी की मुंडेरी चूने की

बनी थी, और उसमें शीशे के छोटे छोटे टुकड़े लगे हुए थे। यह कारागारोपम प्राचीर हमारे राज्य की सीमा की द्योतक थी। इसके बाहर की दुनिया में हमारा प्रवेश सप्ताह में केवल तीन-चार बार होता था; एक बार तो हर शनिवार को तीसरे पहर, दो प्रवेष्टाओं की देखरेख में, हमें दलबद्ध आसपास के खेतों के बीच से चहलकदमी करने की आज्ञा दी जाती थी, और दूसरी बार रविवार को जब उसी जाब्ते के ढंग पर हमें सुबह-शाम गांव के गिर्जाघर में प्रार्थना के लिए ले जाया जाता था। हमारे स्कूल के प्रिंसिपल ही इस गिर्जाघर के पादरी भी थे। जब वह धर्मभावनापूर्वक धीरे-धीरे व्यासपीठ पर चढ़ते थे तो गैलरी में अपने दूर के स्थान पर बैठे हुए मेरे मन में कैसे चमत्कार और आकुलता का भाव भर जाता था। फरफराते लबादे और अपने सूक्ष्मरूप से संवारे उपकेश (विग) के साथ वह श्रद्धास्पद मानव ऐसा गम्भीर और विराट लगता था कि मन में प्रश्न खड़ा हो जाता था कि क्या यह वही व्यक्ति है जो अपनी चिड़चिड़ाहटपूर्ण मुखश्री एवं नस्यदूषित परिधान-सहित हाथ में बेंत लिए हुए स्कूल के नियमों का पालन कराता है? कैसा विराट विरोधाभास,—विरोधाभास जिसका कोई समाधान नहीं।

कठोर चारदीवारी के एक कोने में उससे भी कठोर फाटक मुंह बिचकाए खड़ा था। उसमें लोहे के कितने ही बोल्ट लगे थे और उसका ऊपरी भाग नुकीले लौह कांटों से भरा था। उसे देखकर कितना गहरा आतंक पैदा होता था। ऊपर मैंने जिन तीन सर्वाधिक आवागमनों का जिक्र किया है उनके अलावा यह फाटक कभी नहीं खुलता था। इसलिए उसके शक्तिमान कब्ज़ों की प्रत्येक चरचराहट में हमें कितने ही रहस्यों, गम्भीर बातचीत की एक दुनिया—बल्कि गम्भीर चिन्तन की दुनिया का अनुभव होता था।

विस्तृत चहारदीवारी देखने में टेढ़ी-मेढ़ी थी किन्तु उसके अन्दर बड़े-बड़े क्षेत्रावकाश थे। इनमें से तीन-चार बड़े क्षेत्रों को मिलाकर हमारी क्रीड़ाभूमि बनाई गई थी। यह समतल थी और सुन्दर, कड़ी बजरी

से आच्छादित थी। मुझे अच्छी तरह याद है कि इसमें वृक्ष नहीं थे, न बेंचें या इस तरह की और कोई दूसरी चीज थी। यह क्रीड़ाभूमि मकान के पीछे की ओर स्थित थी। आगे की तरफ तो एक छोटी वाटिका थी जिसमें सदाबहार की लताएं तथा दूसरे पौधे लगाए गए थे किन्तु इस पवित्र विभाजन के बीच से हम दुर्लभ अवसरों पर ही गुजर पाते थे, जैसे स्कूल में प्रथमागमन के समय या फिर वहां से सदा के लिए विदा होने के अवसर पर या तब जब हमारा कोई प्रतिपालक या मित्र हमें लिवाने पहुंच जाता था और हम उनके साथ बड़े दिन या गरमी की छुट्टियों में घर के लिए रवाना होते थे।

किन्तु वह मकान—वह पुरानी इमारत कितनी विलक्षण थी—मेरे लिए सम्मोहन-भरे किसी महल के समान था। उसके मोड़ों, उसके अचिन्त्य उपविभागों का सचमुच कोई अन्त नहीं था। किसी नियुक्त समय पर निश्चित रूप से यह बता सकना असम्भव था कि आप उसकी दो मंजिलों में से किस मंजिल में हैं। हर एक कमरे से दूसरे कमरे में जाने के लिए तीन-चार सीढ़ियां या तो चढ़नी या फिर उतरनी पड़ती थीं। इनके अलावा बगली शाखाएं, अगणित, कल्पना के बाहर थीं और उनसे गुजरते समय सम्पूर्ण भवन के विषय में हमारे मन में उससे कुछ ज्यादा भिन्न भाव नहीं पैदा होते थे जो असीम के विषय में विचार करते हुए पैदा होते हैं। अपने यहां के निवासकाल के पांच वर्षों में, निश्चित रूप से मैं कभी यह निर्णय नहीं कर सका कि मुझे तथा १८-२० अन्य छात्रों को जो लघु शयन-कक्ष दिया गया है, वह किस दूर कोने में स्थित है।

स्कूल का कमरा मकान में सबसे बड़ा था—मुझे तो लगता था कि वह सारी दुनिया में सबसे बड़ा है। वह बहुत लम्बा, संकरा और बुरी तरह नीचा था; उसमें गाथिक शैली की खिड़कियां थीं और बलूत (ओक) की लकड़ी की छत थी। दूर के भयकारी एक कोने में आठ या दस फुट का एक वर्गाकार कमरा था जो पढ़ाई के घण्टों में हमारे प्रिंसिपल रेवरेण्ड डा० ब्रैंसबी का निभृतकक्ष बन जाता था। यह बहुत मजबूत बना था और उसमें एक

वजनी दरवाजा लगा था जिसे उसके धर्मात्मा स्वामी की अनुपस्थिति में खोलने की अपेक्षा शायद खुशी-खुशी मर जाना हम पसन्द करते। दूसरे कोनों में भी ऐसे ही दो लघुकक्ष थे, जो यद्यपि उतनी श्रद्धा की चीज नहीं थे किन्तु उनको देखकर भी हमपर बड़ा आतंक छा जाता था। इनमें से एक अंग्रेजी एवं गणित के प्रवेष्टा का व्यासपीठ था। कमरे में, अनन्त बेढंगेपन से अनेकानेक बेंचें और डेस्क एक-दूसरे के ऊपर गिरे-पड़े छितरे हुए थे। ये सब काले हो रहे थे और बड़े पुराने एवं जीर्ण हो गए थे। इनपर ढेर की ढेर किताबें बुरी तरह लदी हुई थीं। किताबों पर अंगूठों के चिह्न उभर आए थे; लोगों ने उनपर अपने नाम लिख दिए थे; कहीं-कहीं वे बुरी तरह फट गई थीं; पाठकों ने उनपर विलक्षण आकृतियां बना दी थीं; उनके साथ चाकू के नाना प्रयोग किए गए थे। इन बातों के कारण बहुत पुराने बीते दिनों में उनका जो भी मूल रूप रहा होगा वह बिलकुल ही नष्ट हो गया था। कमरे के एक अन्तिम छोर पर पानी से भरी बाल्टी रखी हुई थी और दूसरे छोर पर एक विशालाकार दीवार-घड़ी लगी थी।

इस श्रद्धास्पद विद्यालय की मोटी भारी दीवारों से घिरे रहकर मैंने अपने जीवन की तृतीय पंचवार्षिकी के दिन बिताए—कुछ थकावट और खीझ के साथ नहीं। बचपन में मस्तिष्क बड़ा उपजाऊ होता है इसलिए उसे अपने को व्यस्त या खुश रहने के लिए घटनाओं की किसी बाहरी दुनिया की जरूरत नहीं पड़ती। मुझे स्कूल की बाह्यतः उदासी-भरी एक-रसता में उससे ज्यादा गहरी उत्तेजनाओं की सामग्री प्राप्त हुई जितनी प्रौढ़ यौवनकाल में मैंने हास-विलास में या पूरा मर्द हो जाने पर अपराधों में प्राप्त की। फिर भी मुझे इतना विश्वास तो करना ही पड़ेगा कि मेरे प्राथमिक मानसिक विकास में बड़ी असाधारणता थी। हम देखते हैं कि मानव जाति के अधिकांश भाग पर निपट शिशुकाल की घटनाएं प्रौढ़ आयु में शायद ही कोई निश्चित छाप छोड़ जाती हैं। सब कुछ एक भूरी छाया बनकर रह जाता है—एक दुर्बल एवं असम्बद्ध स्मृति—क्षीण सुखों और

छायाचित्रात्मक वेदनाओं का एक अस्पष्ट पुनराकलन। परन्तु हमारे साथ ऐसा नहीं हुआ। शायद मैंने अपने बचपन में मर्द की ऊर्जा के साथ वह सब अनुभव किया होगा जिसे मैं अपने स्मृतिपट पर उतनी ही स्पष्ट और गहरी रेखाओं के साथ और उसी प्रकार अंकित एवं स्थायी रूप से स्थापित पाता हूं जितनी और जिस प्रकार की गहरी और स्थायी रूप से खचित रेखाएं कार्थेजीनियन तमगों पर उत्कीर्ण लेखों में होती हैं।

फिर भी तथ्य रूप में—मैं संसार की दृष्टि में जो तथ्य है उसकी बात कह रहा हूं—देखें तो वहां स्मरण रखने लायक कितना थोड़ा था! सुबह का जागरण, शय्या पर जाने की रात्रिकालीन सूचना, मनन एवं सस्वर-पाठ, सावधिक अर्द्धावकाश, तथा चहलकदमियां, क्रीड़ांगण एवं उसके झगड़े-लड़ाइयां, उसके आमोद-प्रमोद, उसके षड्यंत्र—जो दिमागी जादू के सहारे बहुत दिन पूर्व भुलाई जा चुकी हैं—इन सबके कारण सनसनी का एक प्रान्त, समृद्ध घटनाओं की एक दुनिया, विविध मनोद्वेगों का एक विश्व ही हमें प्राप्त था। हृदय को उथल-पुथलकर देनेवाले, उद्वेग-जनक भावों एवं उत्कण्ठाओं का वह बृहत् क्षेत्र!

सच्चाई यह है कि मेरे स्वभाव की प्रचण्डता, उत्साह और हेकड़ी ने अपने स्कूल-बन्धुओं के बीच शीघ्र ही मुझे मशहूर कर दिया और धीरे-धीरे, परन्तु प्राकृतिक श्रेणियों से गुज़रते हुए मैं एक अपवाद को छोड़कर शेष सब साथियों पर, जो मुझसे कुछ ज्यादा उम्रवाले नहीं थे, छा गया। यह अपवाद एक छात्र के रूप में था। यह छात्र यद्यपि नाते-रिश्ते में मेरा कोई न था किन्तु उसका ख्रीष्टीय और गोत्रगत नाम वही था जो मेरा था। यह बात कोई विशेष आश्चर्यजनक या उल्लेखनीय न थी क्योंकि यद्यपि मैं एक उच्चवंश में पैदा हुआ था परन्तु मेरा नाम रोजमर्रा के उन प्रचलित नामों में से था जो परम्परासिद्ध अधिकार से सर्वसामान्य जन की सर्वनिष्ठ सम्पत्ति बन गए हैं। इसीलिए इस कहानी में मैंने अपने लिए विलियम विलसन नाम धारण किया है। यह एक कल्पित नाम है जो मेरे वास्तविक नाम से मिलता-जुलता है। स्कूली भाषा में कहें तो जिन लोगों के

द्वारा 'हमारे दल' का निर्माण हुआ था उनमें से यह हमारा नामराशि मात्र कक्षा के अध्ययन में, खेल-कूद में, क्रीड़ांगण की धक्कामुक्की में मेरी प्रतिद्वंद्विता का साहस करता था और मेरे मतों एवं घोषणाओं में नैष्ठिक विश्वास करने और मेरी इच्छा के प्रति आत्मसमर्पण करने से इन्कार करता था। यहां तक कि वह मेरी मनमानी हिदायतों में दखल तक देने लगा था। यदि दुनिया में कहीं सर्वोपरि एवं निरुपराधि स्वेच्छाचारिता है तो वह अपने साथियों को अपेक्षाकृत कम स्फूर्तिमयी भावनाओं पर बचपन में किसी प्रभुताशाली मानस की स्वेच्छाचारिता है।

विलसन के इस विद्रोह से मुझे अत्यधिक खीझ और झुंझलाहट होती थी—यह खीझ इसलिए और भी ज्यादा होती थी कि यद्यपि सबके सामने मैं उसके और उसके दावों के प्रति हेकड़ी और उपेक्षा का व्यवहार करता था किन्तु गुप्त रूप से मैं अनुभव करता था कि मैं उससे डरता हूं। जिस सहज समानता से वह मेरे साथ व्यवहार करता था और जो उसकी वास्तविक श्रेष्ठता का प्रमाण था, उसपर बार-बार मेरा ध्यान जाता था। इस भावना पर काबू न पाने के कारण मेरे अन्दर निरन्तर एक संघर्ष चलता रहता था। और उसकी श्रेष्ठता की यह भावना—यहां तक कि उसकी बराबरी की भावना भी—मेरे सिवा और दूसरे किसीके मन में नहीं थी; किसी अज्ञेय अन्धता के कारण मेरे साथियों के मन में इस प्रकार का कोई सन्देह तक नहीं था। क्योंकि उसकी प्रतिद्वन्द्विता, उसका प्रतिरोध तथा मेरे मामलों में उसका दुर्विनीत एवं आग्रहयुक्त हस्तक्षेप एकान्त और वैयक्तिक सीमा से बाहर नहीं जा पाया था। वह उस महत्त्वाकांक्षा और आवेगयुक्त मानसिक ऊर्जा से सर्वथा रहित था जो मुझे सबके बीच श्रेष्ठ बनाए हुए थी। उसकी प्रतिद्वन्द्विता अधिक से अधिक मुझे विफल, चकित कर देने या नीचा दिखाने की सनक से प्रेरित रही होगी, यद्यपि कभी-कभी ऐसा भी अवसर आया है जब आश्चर्य, अपमान और मात्सर्य की मिश्रित भावना मेरे अन्दर जाग उठती थी और उसके कारण मैं यह अनुभव करने लगता था कि उसके आघातों, अपमानों और विरोधाभासों में एक प्रकार की अत्यन्त अनुचित तथा निश्चित रूप से

अवांछनीय आचार की स्नेहिलता, स्निग्धता मिली हुई है। मैं इस प्रकार के असाधारण आचरण की उत्पत्ति का कारण ऐसे आत्मदम्भ को ही मान सकता था, जो संरक्षकता एवं सुरक्षा की कदर्य अंगीकृति से उत्पन्न होता है।

शायद विल्सन के आचरण के इस अन्तिम गुण (मेरे प्रति स्नेहिलता), हमारे नामों की एकरूपता तथा एक ही दिन स्कूल में प्रवेश करने के संयोग के कारण पाठशाला की उच्चतर कक्षाओं के छात्रों में यह विचार फैल गया था कि हम दोनों भाई हैं। ऐसे लोग, आम तौर से, अपने से नीची कक्षा-वाले साथियों के विषय में विशेष छानबीन नहीं करते। शायद मैंने पहले कहा है, या नहीं कहा है तो मुझे कहना चाहिए था, कि विलसन के साथ मेरा कुटुम्ब का दूर का भी सम्बन्ध नहीं था। किन्तु इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि यदि हम सचमुच भाई होते तो जुड़वां भाई होते क्योंकि बाद में मुझे अकस्मात् मालूम हुआ कि मेरे नामराशि का जन्म १६ जनवरी, १८०६ को हुआ था—और यह एक आश्चर्यजनक संयोग है कि ठीक वही दिन मेरी भी जन्मतिथि का है।

यह भी एक आश्चर्य की बात लगती है कि विलसन की प्रतिद्वन्द्विता तथा परस्पर-विरुद्ध असहनीय भावना के कारण उत्पन्न लगातार चिन्ता के होते हुए भी मैं अपने को उसे बिलकुल घृणा करने के लिए तैयार नहीं पाता था। नित्य हम दोनों में झगड़ा हो जाया करता था जिसमें वह खुल्लम-खुल्ला मुझे विजय का सेहरा पहनाकर हट जाता था किन्तु वह किसी न किसी तरह मुझे यह अनुभव करने को विवश कर देता था कि असल में विजय का अधिकारी मैं नहीं, वह है। यह सब होते हुए भी एक आत्मगौरव का भाव मुझे और श्रेष्ठता का भाव उसे इस प्रकार प्रेरित कर दिया करते थे कि हम लोगों का वार्ता-सम्बन्ध सदा बना रहता था—कभी ऐसा नहीं हुआ कि हममें अनबोलापन हुआ हो। हमारे स्वभावों में प्रबल अनुकूलता की कई ऐसी विशेषताएं थीं जो मेरे अन्दर उसके प्रति सत्प्रेरणाएं जगाती रहती थीं किन्तु हमारी स्थिति उनके मित्रता में परिणत होने में बाधक थी। उसके प्रति मेरी यथार्थ मनोभावनाएं क्या थीं, इसकी व्याख्या क्या वर्णन

करना भी मेरे लिए कठिन है। उनमें अनेक जातीय तत्त्वों का मिश्रण था—कुछ दुर्विनीत शत्रुता जो अभी घृणा का रूप नहीं धारण कर पाई थी, कुछ श्रद्धा और उससे ज्यादा सम्मान, अत्यधिक भय तथा विकल उत्कण्ठाओं का एक जगत् । जो नीतितत्त्ववादी मानवीय क्रियाओं के सूक्ष्म स्रोतों का ज्ञान रखते हैं उन्हें इसके साथ इतना और बता देना अनावश्यक-सा लगता है कि विलसन और हम अविच्छेद्य साथियों में से थे।

इसमें सन्देह नहीं कि हम लोगों के बीच होनेवाले मामलों में जो असंगतियां थीं वे उसपर मेरे प्रत्येक आक्रमण को (और ऐसे आक्रमण अनेक थे, फिर चाहे वे खुले हों या छिपे) अधिक गम्भीर और दृढ़तापूर्वक शत्रुता की अपेक्षा छेड़छाड़ या सक्रिय हास-परिहास के रूप में बदल देती थीं। इससे ऊपर चुहल का रूप तो बन जाता था किन्तु मुझे वेदना होती थी। परन्तु इस विषय में मेरे प्रयत्न सदा एक-से सफल नहीं हो पाते थे, फिर चाहे मेरी योजनाएं कितनी ही चालाकी के साथ बनाई गई हों, क्योंकि मेरे नामराशि के स्वभाव में अकृत्रिम एवं शान्त तापसिकता की ऐसी बहुतेरी बातें थीं, जो अपने हास-परिहास की तीक्ष्णता का आनन्द लेते हुए भी, स्वयं परिहास किए जाने से इन्कार करती हैं। मुझे उसमें प्रहार योग्य सिर्फ एक बात मिली थी; यह उसकी एक वैयक्तिक विचित्रता थी और शायद किसी शारीरिक बीमारी से पैदा हुई थी और मेरी अपेक्षा अपनी बुद्धि का कम दिवाला निकालनेवाला प्रतियोगी जिसका लाभ भी न उठाता। मेरे प्रतियोगी के गले या कण्ठ-नलिका में कोई दोष था जिसके कारण वह किसी समय भी फुसफुसाहट से ज्यादा तेज आवाज में बोल ही नहीं सकता था। इस दोष का जो कुछ लाभ मैं उठा सकता था, उसे उठाने से कभी बाज नहीं आया।

विलसन के प्रतिशोध कई प्रकार के होते थे। उसकी व्यवहार-चातुरी का एक रूप ऐसा था जिसने मुझे अत्यन्त व्याकुल कर दिया। उसकी विचक्षणता ने पहिली बार कैसे यह खोज निकाला कि वैसी एक छोटी बात मुझे परेशान कर सकती है, यह एक ऐसा सवाल है जिसे मैं कभी हल नहीं कर पाया,

किन्तु वह उसकी खोज करने के बाद सदा मुझे खिझानेवाला प्रयोग करता रहा। मैंने अपने अशिष्ट समगोत्री तथा गंवार नहीं तो बहुत सामान्य ईसाई नाम के प्रति सदैव ही विरक्ति का अनुभव किया है। वे शब्द मेरे कानों में जहर की तरह लगते थे, और जब स्कूल में मेरे आगमन के दिन ही एक दूसरे विलियम विलसन ने भी उसमें प्रवेश किया तो मेरा ही नाम धारण करने के कारण मुझे उसपर क्रोध आ गया; उस नाम से तो मुझे इसलिए और चिढ़ हो गई कि उसे एक ऐसे अपरिचित ने धारण कर रखा था जो इसके दो बार उच्चारण किए जाने का कारण था,—ऐसा आदमी जो सदैव मेरे सामने रहेगा और स्कूल के सामान्य जीवन में जिसके किए कार्यों को, इस घृणित नामैक्य के कारण, प्रायः मेरा समझ लिए जाने का भ्रम होगा।

इस प्रकार मेरे अन्दर जो खीझ की भावना पैदा हुई, वह मेरे प्रतियोगी एवं मेरे बीच नैतिक वा शारीरिक समरूपता की प्रत्येक घटना के साथ दृढ़ और प्रबल होती गई। उस समय तक तो मुझे इस उल्लेखनीय तथ्य का ध्यान ही न था कि हम दोनों एक ही उम्र के हैं, लेकिन इतना मैं देखता था कि हम लोगों की ऊंचाई एक-सी है और नाक-नक्श में भी हम बहुत ज्यादा विषम नहीं हैं। ऊंची कक्षाओं में हमारी नातेदारी की जो अफवाह फैल गई थी, उससे भी मेरे मन में बड़ी कड़ुवाहट पैदा हो गई। संक्षेप में हम दोनों के बीच मन, शरीर या स्थिति के किसी भी सादृश्य के संकेत से मैं जितना अस्थिर हो उठता था उतना और किसी बात से नहीं (यद्यपि मैं अपनी इस अस्थिरता को बहुत छिपाकर रखता था)। किन्तु वास्तविकता यह है कि मेरे लिए ऐसा विश्वास करने का कोई कारण न था कि (सिवाय नातेदारीवाली अफवाह के) इस समानता पर हमारे स्कूली साथी कोई टीका-टिप्पणी करते हैं या उसकी ओर ध्यान भी देते हैं। हां, यह बात स्पष्ट थी कि वह इसको हर पहलू से और उतनी ही दृढ़ता से देखता था, जैसा कि मैं, किन्तु इस साम्य की स्थिति में से उसने मुझे खिझाने का एक फलप्रद क्षेत्र ढूंढ़ निकाला, यह तो, जसा मैं पहिले कह

चुका हूं, उसकी असाधारण मर्मभेदिनी बुद्धि का प्रमाण है।

उसका साधन मेरी नकल करने में पूर्णता प्राप्त करने का प्रयत्न था। वह वाणी और कार्य दोनों में मेरी नकल करता था और उसने बड़े प्रशंसनीय ढंग पर अपना अभिनय किया। मेरी पोशाक की नकल कर लेना तो बड़ा सरल था; मेरी चाल और अंग-भंगी की नकल में भी उसे ज्यादा कठिनाई नहीं हुई, और दैहिक दोष के बावजूद मेरी आवाज भी उसकी नकल से अछूती नहीं रह सकी। मेरे प्रखर स्वर की नकल की चेष्टा उसने अवश्य ही नहीं की किन्तु मूलध्वनि एक-सी थी, और उसकी अनोखी फुसफुसाहट या धीमी आवाज तो ऐसी होती थी मानो मेरी आवाज की ही प्रतिध्वनि हो।

उसके इस अनोखे आकृति-चित्रण ने (क्योंकि इसे ठीक-ठीक व्यंग्यचित्र नहीं कहा जा सकता) मुझे कितना परेशान किया, इसे बताने की चेष्टा मैं नहीं करूंगा। मुझे बस एक ही सान्त्वना थी और वह यह कि उसकी इस नकल पर केवल मेरा ध्यान जाता था और इस ज्ञान तथा मेरे नामराशि की विचित्र व्यंग्य-भरी मुस्कानों को केवल मुझे सहन करना पड़ता था। मुझे लगता था कि मेरे कलेजे में वांछित प्रभाव उत्पन्न कर देने से सन्तुष्ट हो जो डंक उसने चुभोया है उसपर वह मन ही मन अवज्ञा की हंसी हंसता था। उसकी चतुराईपूर्ण कारंवाइयों की सफलता से सहज ही जो सार्वजनिक प्रशंसा उसे प्राप्त हो सकती थी उसके प्रति वह निपट उपेक्षा की वृत्ति रखता था। स्कूल को उसके इरादे का कोई पता क्यों नहीं चलता, उसे उसकी सफलता का ज्ञान क्यों नहीं होता और वह उसके तिरस्कार या उपहास में क्यों शामिल नहीं होता, यह बात महीनों तक मेरे लिए ऐसी पहेली बनी रही, जिसका समाधान मैं कर नहीं पाता था। शायद उसकी नकल इस कोटि की होती थी कि वह सरलता से उसे समझ नहीं पाता या ज्यादा सम्भव यह लगता है कि मेरी सुरक्षा का कारण नकलची का वह उत्कृष्ट प्रदर्शन रहा होगा जो अपने मूल की पूरी भावना को केवल मेरे वैयक्तिक चिन्तन तथा झल्लाहट के लिए ही विकसित करके दिखाता है,

वह चित्र के वाह्याकार की उपेक्षा करता है,—उस वाह्याकार की जो चित्रकला में मन्दबुद्धि लोगों के दर्शन का एक मात्र विषय है।

मैं एकाधिक बार संरक्षण एवं बुज़ुर्गी की उस घृणोत्पादक वृत्ति के विषय में कह चुका हूं जो वह मेरे प्रति ग्रहण किए हुए था, इसी प्रकार मैं मेरी इच्छा में वार-वार उसके वेतकल्लुफ हस्तक्षेप करने की चर्चा भी कर चुका हूं। यह हस्तक्षेप प्रायः सलाह के अशिष्ट रूप में सामने आता था—सलाह जो खुले-खुले नहीं बल्कि संकेत या वक्रोक्ति के रूप में दी जाती थी। मैं उसे विरक्तिपूर्वक ग्रहण करता था और यह विरक्ति मेरी उम्र के साथ प्रबल होती गई। फिर भी इतने दिनों बाद भी उसके प्रति न्याय करने के लिए मुझे स्वीकार करना चाहिए कि मुझे किसी ऐसे अवसर की याद नहीं है जब मेरे प्रतिद्वन्द्वी ने उन त्रुटियों या भूलों के पक्ष में कोई राय दी हो जो उसकी-सी कच्ची उम्र एवं प्रतीयमान अनुभवहीनता में आम तौर से दिखाई पड़ती है; मैं यह भी स्वीकार करता हूं कि सामान्य प्रज्ञा और सांसारिक विवेक में नहीं तो अपने नैतिक ज्ञान में वह मेरी अपेक्षा कहीं बढ़ा-चढ़ा था, और यदि मैंने उसकी सार्थक फुसफुसाहटों में गर्भित उन सलाहों को इस तरह अस्वीकार न किया होता तो शायद आज मैं कुछ ज्यादा अच्छा और ज्यादा सुखी मनुष्य होता—परन्तु उस समय तो मैं उन फुसफुसाहटों के प्रति तीव्र घृणा रखता था और उनका घोर तिरस्कार करता था।

जो कुछ हो रहा था उसके अन्त में उसकी अप्रिय देखरेख के प्रति मैं अत्यन्त क्षुब्ध हो उठा, और जिसे मैं उसकी असहनीय हेकड़ी समझता था उसका अनुदिन अधिकाधिक विरोध करने लगा। मैं ऊपर कह चुका हूं कि स्कूली साथी के रूप में प्रारम्भिक वर्षों में मेरा-उसका जो सम्बन्ध था वह आसानी से मित्रता में परिवर्तित हो सकता था किन्तु विद्यालय में मेरे निवास के उत्तरकालिक महीनों में, यद्यपि उसके सामान्य व्यवहार में मेरे प्रति हस्तक्षेप की कुछ न कुछ कमी निस्सन्देह हो गई थी, किन्तु मेरी भावनाएं उल्टे उसी मात्रा में बढ़कर घृणा के रूप में बदल चुकी थीं। मैं सम-

भता हूं कि एक मौके पर उसने इसे ताड़ लिया और तब से मुझसे दूर रहने लगा या दूर रहने का अभिनय करने लगा।

यदि मेरी याददाश्त ठीक है तो लगभग इसी ज़माने में एक बार उससे मारपीट हो गई; इसमें उसका सामान्य आत्मनियन्त्रण दूर हो गया और इस समय उसने ऐसी स्पष्ट मुद्रा में बातें कीं और काम किया जो उसकी प्रकृति के बिलकुल प्रतिकूल थीं। उसके उच्चार, उसके ढंग और सामान्य आचरण में मैंने कुछ ऐसी बात पाई या यह कहें कि मैंने पाने की कल्पना की जिससे पहले तो मैं चकित हुआ और बाद में उसके प्रति मुझमें गहरी दिलचस्पी पैदा हो गई। दिलचस्पी का कारण यह था कि इस घटना ने मेरे बिलकुल प्रारम्भिक शिशुकाल के धुंधले दृश्य साकार कर दिए—ऐसे ज़माने की प्रचण्ड, अस्पष्ट तथा संकुल स्मृतियां मुझे कुरेदने लगीं जब स्मृति पैदा भी नहीं हुई थी। मुझे पीड़ित करनेवाले उस मनोवेग का मैं इससे ज्यादा अच्छी तरह वर्णन नहीं कर सकता कि बड़ी कठिनाई से मैं इस विश्वास को हटा पाया कि मैं और मेरे सामने खड़ा प्राणी दूर के किसी युग में, भले वह असीमित रूप से दूर हो, एक-दूसरे से परिचित रहे हैं। यह भ्रान्ति जिस शीघ्रता से आई थी उसी शीघ्रता से चली भी गई। और मैंने यहां इसका ज़िक्र अपने और अपने अप्रतिम नामराशि के बीच हुई अन्तिम बातचीत वाले दिन की व्याख्या करने के लिए किया है।

असंख्य उपविभागों वाले उस विशाल प्राचीन भवन में कई बहुत बड़े कमरे थे। इन कमरों में एक-दूसरे से आने-जाने की सुविधा थी और इन्हींमें अधिकांश छात्र सोया करते थे। जैसा कि इस प्रकार की कुनियोजित इमारतों में स्वाभाविक है, इसमें भी बहुतेरे छोटे-छोटे कोने और कन्दराएं थीं जिन्हें डा० ब्रैसबी के अर्थचातुर्य ने शयनागारों में परिवर्तित कर दिया था—यद्यपि अत्यन्त लघु कोठरियां होने के कारण उनमें एक-एक ही व्यक्ति रह सकता था। इन छोटी कोठरियों में से एक में विलसन का निवास था।

शरदारम्भ की एक उदास और तूफानी रात को, जब स्कूल के पंचम वर्ष का अन्त समीप आ रहा था, और उपरिलिखित मारपीट को चंद दिन ही

हुए थे, सबको निद्रामग्न देख, मैं बिस्तरे से उठा; हाथ में लैम्प लिए हुए अपने कमरे से निकला और संकरे मार्गों के बीच से चोर की भांति गुज़रता हुआ अपने प्रतियोगी के कमरे में पहुंचा। उसकी कीमत पर इस प्रकार की दुःशील सक्रिय योजना का षड्यन्त्र मैं बहुत दिनों से कर रहा था किन्तु अभी तक बराबर असफल होता आ रहा था। इस समय, मेरा इरादा यह था कि अपनी योजना को कार्यान्वित करूं। फलतः मैंने निश्चय कर लिया कि जिस विद्वेष से मैं जल रहा था उसका पूरा प्रभाव उसे अनुभव कराके छोड़ूंगा। उसकी कोठरी के पास पहुंचकर मैंने लैम्प बाहर रख दिया, उसे एक ढक्कन से ढक दिया और तब नीरव, चुपचाप, कोठरी में घुसा। एक कदम आगे बढ़कर उसकी प्रशान्त श्वासक्रिया की ध्वनि सुनता रहा। जब मुझे विश्वास हो गया कि वह गहरी नींद में सो रहा है, तब बाहर जाकर रोशनी उठा लाया और उसे लिए हुए उसकी शय्या की ओर बढ़ा। उसकी शय्या के चतुर्दिक पर्दे लगे थे; अपनी योजना की पूर्ति के लिए मैंने धीरे-धीरे और बिना कोई आवाज़ किए उनको हटा दिया। निद्रित प्राणी के ऊपर प्रकाशमान किरणें तथा उसके चेहरे पर मेरी आंखें साथ-साथ पड़ीं। मैंने उसे देखा, क्षण-भर में भावना की जड़ता और बर्फीली ठिठुरन मेरे शरीर में फैल गई; मेरी छाती फूलने लगी, मेरे घुटने टूटने लगे, मेरे सम्पूर्ण प्राणशक्ति पर एक निरभिप्राय किन्तु असहनीय भय छा गया। सांस के लिए हांफते हुए, मैंने लैम्प को उसके चेहरे के और निकट झुकाया। क्या यह—यह विलियम विलसन की मुखाकृति है? मैंने देखा, निश्चित रूप से देखा कि उसीकी मुखाकृति है किन्तु मैं जूड़ी के फिट की भांति कांपता हुआ कल्पना कर बैठा कि मुखाकृति उसकी नहीं है। वहां ऐसा क्या था जिसने मुझे इस प्रकार भ्रमित कर दिया? मैं ताकता रहा—और मेरा दिमाग असंख्य असंगत विचारों के बीच चक्कर खाता रहा। अपने जागरण-काल के उल्लास में वह ऐसा नहीं दिखाई पड़ता था, निश्चित रूप से ऐसा नहीं। वही नाम, वही चेहरा-मोहरा, विद्यालय में आगमन का वही दिन। फिर मेरी चाल, मेरी आवाज़, मेरी आदतों और

मेरे रंग-ढंग की उसके द्वारा हठपूर्ण परन्तु निरर्थक नकल। क्या यह सचमुच मानवीय सम्भावना की सीमा के अन्दर है कि जो कुछ इस समय मैं देख रहा था वह उसी व्यंग्यपूर्ण अनुकृति—नकल—के निरन्तर अभ्यास का परिणाम था? विस्मयाभिभूत तथा एक सम्पूर्ण शरीर में रेंगते हुए कम्प से ग्रस्त हो मैंने लैम्प को बुझा दिया; कोठरी से चुपचाप बाहर आ गया और तुरन्त ही उस जीर्ण विद्यालय की इमारत से बाहर निकल आया—फिर कभी उसके अन्दर प्रवेश न करने के लिए।

चंद महीने तो मैंने घर पर ही बेकारी में बिताए; फिर ईटन के विद्यालय में प्रवेश ले लिया। इस लघु मध्यान्तर में डा० ब्रैंसबी की पाठशाला की घटनाओं की मेरी स्मृति बहुत क्षीण हो गई—कम से कम जिन भावनाओं के साथ मैं उन्हें याद करता था उसकी प्रकृति तो बदल ही गई थी। नाटक का सत्य—उसका दुःखान्त अनुभव—अब नहीं रह गया था। अब मैं अपनी इन्द्रियों के साक्ष्य या प्रमाण पर संशय करने लगा था और शायद ही कभी उस विषय का ख्याल आता था। आता भी था तो मनुष्य का भोलापन किस सीमा तक जा सकता है, इसपर आश्चर्य होता था; जो कल्पना आनुवंशिक रूप से मुझे विरासत में मिली थी, उसकी जीवन्त शक्ति पर हंसी भी आती थी। फिर ईटन में मेरी जो जिन्दगी थी उससे मेरी संशयालुता में कमी आने की भी कोई संभावना न थी। विचारहीन गलतियों के जिस भंवर में मैंने वहां जाते ही अपने को बेलगाम डाल दिया था, वह पंक एवं मल के अतिरिक्त मेरे सम्पूर्ण अतीत को बहा ले गया था—सम्पूर्ण ठोस एवं गम्भीर प्रभाव उसमें डूब गए थे और पूर्वजीवन की अत्यधिक छिछोरी बातें ही याद रह गई थीं।

किन्तु मैं यहां अपनी विपन्न लम्पटता की विकास-रेखा का वर्णन करने नहीं बैठा हूं—ऐसी लम्पटता जो सदा संस्था के नियमों का उल्लंघन करने में व्यस्त रहती थी किन्तु उसकी पकड़ में आने से बचती रहती थी। बिना किसी लाभ के अपराधों में बिताए तीन वर्षों ने मुझे पापपूर्ण आदतों में अभ्यस्त बना दिया था और असाधारण रूप से मेरे शारीरिक आकार-प्रकार

में भी वृद्धि कर दी थी। इसी ज़माने की बात है कि आत्महीन लम्पटता में पूरा सप्ताह बिताने के बाद मैंने अपने कमरे में गुप्त सुरापान के लिए सबसे आवारा लड़कों के एक छोटे-से दल को निमन्त्रित किया था। हम रात को काफी देर बाद एकत्र हुए, क्योंकि बदमाशियां ठेठ सुबह तक चलने वाली थीं। मदिरा तो खुले आम बह रही थी किन्तु उससे खतरनाक और प्रलोभनों का भी वहां अभाव नहीं था। इसका परिणाम यह हुआ कि जब पूर्व क्षितिज पर उषा की सुनहली आभा फूटने लगी तब हमारा प्रलापपूर्ण अमिताचार अपनी पूरी ऊंचाई पर था; मदिरा और पत्तों (जूए के कार्डों) से बुरी तरह प्रमत्त, मैं असहनीय भ्रष्टता से भी अधिक किसी बात के लिए सहपान का प्रस्ताव करने जा ही रहा था जब मेरे कमरे का दरवाज़ा ज़ोर की आवाज़ के साथ खुल गया, यद्यपि वह अधखुला ही था, मेरा ध्यान अचानक उसकी ओर घूम गया। इसके साथ ही बाहर से एक नौकर की आवाज़ सुनाई दी। उसने कहा कि कोई आदमी बहुत जल्दी में है और बातचीत करने के लिए मुझे हाल में बुला रहा है।

तीक्ष्ण मदिरा के प्रभाव से उत्तेजित होते हुए भी इस आशातीत बाधा के कारण मैं चकित की अपेक्षा प्रसन्न ही अधिक हुआ। तुरन्त ही मैं लड़खड़ाता हुआ चल पड़ा और चन्द कदम चलने के बाद इमारत के दर्शककक्ष में जा पहुंचा। इस नीचे और छोटे कमरे में कोई लैम्प नहीं टंगा हुआ था, न उस क्षीण उषा की आभा के अतिरिक्त, जो अर्द्धवृत्तात्मक एक खिड़की से अन्दर आ रही थी, वहां दूसरा कोई प्रकाश ही आ रहा था। देहरी पर पांव रखते ही मुझे एक युवक की आकृति दिखाई दी जो करीब-करीब मेरी ही ऊंचाई का था और उस समय मेरी उन्मत्त कल्पना को विचित्र रूप में ऐसा प्रतीत हुआ कि वह एक धवल प्रातःकालीन कश्मीरी फ्राक पहिने हुए है। मुझे यह भी मालूम हुआ कि फ्राक उसी भांति के नवीन फैशन में कट-कर बना हुआ है जो उस समय पहिनी मेरी पोशाक का है। उस धुंधली रोशनी में इतनी बात की कल्पना तो मैंने कर ली किन्तु उसके चेहरे के नाक-नक्श को मैं पहिचान नहीं पाया। कमरे में मेरे प्रवेश करते ही वह

जल्दी-जल्दी चलकर मेरे पास आ गया और ढिठाई-भरी हुई अधीरता के साथ मेरी बांह पकड़कर धीरे से मेरे कानों में ये शब्द कहे—"विलियम-विलसन।" एक क्षण में मैं पूरी तरह होश में आ गया।

अजनबी के ढंग और मेरी आंखों तथा रोशनी के बीच उठी उसकी उंगली की थरथराहट में कोई ऐसी बात थी जिसने मुझे निपट विस्मय से भर दिया। किन्तु यह वह बात नहीं थी जिसने मुझे इतनी तीव्रता के साथ हिला दिया; यह तो उसकी अनोखी, धीमी, फुफकारती हुई वह वाणी, और सबके ऊपर वह धीरे से कहे हुए थोड़े, सरल, परिचित शब्दों की प्रकृति, स्वर तथा ध्वनि थी, जो बीते हुए दिनों की हजारों स्मृतियों की भीड़ की भीड़ लिए हुए आई और वैद्युतिक तोपखाने की भांति तीव्र प्रहार से मेरी आत्मा को विचलित कर दिया। इसके पहिले कि मैं अपनी ज्ञानेन्द्रियों का उपभोग करने योग्य होता, वह चला गया।

यद्यपि यह घटना मेरी विशृंखल कल्पना पर स्पष्ट प्रभाव डालने में असफल नहीं हुई, फिर भी वह जितनी स्पष्ट थी उतनी ही क्षणिक भी। यह अवश्य है कि चंद हफ्तों तक मैं सच्चाई के साथ खोज में लग गया था, और यह भी सच है कि उन दिनों मैं अस्वस्थ अटकलबाजियों में खो गया था। मैंने उस अनोखे व्यक्ति का, जो इस प्रकार सतत मेरे मामलों में हस्तक्षेप कर रहा था और मुझे अपनी निन्दात्मक राय से परेशान कर रहा था, परिचय अपनी ग्रहण शक्ति या अनुभूति से छिपाने की चेष्टा नहीं की। परन्तु यह विलसन कौन था, क्या था? और वह कहां से आ गया? फिर उसका मतलब क्या था? इन मुद्दों पर मैं अपने को सन्तुष्ट न कर पाता था; उसके बारे में केवल इतना ही पता मैं लगा सका कि उसके कुटुम्ब में कोई आकस्मिक घटना ऐसी हुई थी जिससे ठीक उसी दिन तीसरे पहर उसे भी डा० ब्रैंसबी की पाठशाला छोड़कर चले जाना पड़ा था जिस दिन कि मैं वहां से भाग खड़ा हुआ था। अल्पावधि के बाद मैंने इस विषय में कुछ सोचना ही छोड़ दिया। मैं यहा से आक्सफोर्ड चल देने के विचार में डूब गया। और शीघ्र ही मैं वहां चला भी गया। मेरे माता-पिता के अदूरदर्शितापूर्ण अहम्

ने मेरे लिए ऐसा प्रबन्ध कर दिया और इतनी वार्षिक वृत्ति बांध दी कि मैं अपने हृदय के लिए पहिले से ही अत्यन्त प्रिय विलासिता में मनमाने ढंग से रह सकता था और ग्रेट ब्रिटेन के सबसे धनिक जमींदारियों के सबसे विलासी वारिसों के साथ खर्च करने में टक्कर ले सकता था।

पापाचरण के ऐसे साधनों के सुलभ हो जाने के कारण मेरा शरीररच-नाबद्ध स्वभाव और भी उत्कटता के साथ प्रकट हुआ और अपने राग-रंग के उन्मत आकर्षण में मैंने शिष्टता के सामान्य प्रतिबन्धों को भी धता कर दिया। अपने अमिताचार के ब्योरों को रोक देना मुझे वाहियात मालूम हुआ। इतना ही कहना काफी है कि खाऊ-उड़ाऊ लोगों के बीच मैंने सबको मात कर दिया। उन दिनों यूरोप की इस सबसे लंपटतापूर्ण यूनिवर्सिटी में जो दुर्वृत्तियां आम थीं, सामान्य थीं उनकी लम्बी सूची में मैंने कितने ही नवीन दुष्कर्मों की वृद्धि की।

इतना होते हुए भी शायद ही इसपर विश्वास किया जाएगा कि मैं यहां सज्जनता की स्थिति से इतना गिर गया था कि पेशेवर जुआड़ियों की जघन्यतम कलाओं से भी परिचय प्राप्त कर लिया और उनके घृणित विज्ञान में दक्षता प्राप्त करने के बाद अपनी पहिले से ही बहुत अधिक आय को और ज्यादा बढ़ाने के लिए उसे नियमित रूप से अपने दुर्बलमना छात्रबन्धुओं पर आज़माना भी शुरू कर दिया। जैसा भी हो, यह एक तथ्य है। सम्पूर्ण पुरुषोचित एवं सम्मानार्ह भावना के विरुद्ध इस अपराध की गुरुता ही दण्ड-भय के प्रति उस उपेक्षा का एक मात्र नहीं तो प्रधान कारण थी जिसके साथ मैं उसपर अमल कर रहा था। हमारे अत्यन्त परित्यक्त साथियों में से ऐसा कौन था जो अपनी प्रज्ञा के स्पष्टतम साक्ष्य का तिरस्कार करके भी उन विधियों एवं मार्गों के प्रति विश्वास न करता जो स्वानन्दी, साफ और उदार विलियम विलसन—आक्सफर्ड का सबसे भला और उदार सामान्य-जन—इस जुए में अपनाता था—वह विलसन (उसके पराश्रयी चाटुकार साथियों के शब्दों में) जिसकी दुर्बलताएं जवानी और निरंकुश अभिरुचियों की दुर्बलताएं थीं; जिसकी भूलें उसकी अनुकरणातीत सनकें थीं और

जिसके काले से काले पापाचार सावधानीरहित जोश से भरे अपव्यय मात्र थे ?

जब वहां अपने को इस प्रकार व्यस्त रखकर मैंने सफलतापूर्वक दो वर्ष बिता दिए थे तब यूनिवर्सिटी में एक तरुण, नये-नये रईस बने श्रीमंत ग्लेन-डिनिग का प्रवेश हुआ। सूचना मिली की वह बड़ा धनवान है और सम्पत्ति उसे भी बड़ी सरलता से प्राप्त हुई है। बहुत जल्द मैंने देख लिया कि वह मन्द बुद्धिवाला है। बस, मैंने उसे अपने कौशल का उपयुक्त विषय बनाने का निश्चय कर लिया। मैं उसके साथ अक्सर (पत्ते) खेलने लगा, और जुआड़ी की आम चालबाज़ी के साथ उसे काफी बड़ी रकमें जीत लेने दिया —उसे अधिक प्रभावपूर्ण ढंग मे अपने जाल में फंसाने के लिए। अन्त में जब मेरी योजना पक गई तो (इस इरादे से कि यह भेंट अन्तिम और निर्णायक होगी, मैं उससे एक साथी (श्री प्रेस्टन) के कमरे में मिला, जिसकी हम दोनों के साथ समान रूप से घनिष्ठता थी किन्तु जिसके प्रति न्याय करने के लिए हमें इतना कह देना चाहिए कि उस बेचारे को मेरे इरादे के प्रति ज़रा भी शंका न थी। अपने इरादे को ऊपर से सुन्दर रंग देने के लिए मैंने यह भी प्रबन्ध कर लिया था कि आठ या दस आदमियों का एक दल वहां मौजूद रहे, साथ ही मैंने इस बात की सावधानी रखी मानो ताश का खेल पहिले से नियोजित न होकर आकस्मिक हो और मेरे सोचे हुए शिकार के प्रस्ताव पर ही शुरू हो। इस भ्रष्ट विषय को थोड़े में कहें तो ऐसे मौकों पर आम तौर से जो निम्न धूर्तताएं अपनाई जाती हैं उनमें से एक का भी त्याग नहीं किया गया और यह बड़े ही आश्चर्य की बात है कि अब भी कोई आदमी उनके प्रति इतना मोहित हो सकता है कि उनका शिकार हो जाए।

रात बड़ी देर तक हमारी बैठक चलती रही और मैंने ऐसे कौशल से काम लिया कि अन्त में ग्लेनडिनिग मेरा एकमात्र प्रतिद्वंद्वी रह गया। इस समय जो खेल चल रहा था वह मेरा प्रिय खेल भी था। दल के और लोगों ने, जो हमारे इस खेल में दिलचस्पी रखते थे, अपने कार्ड फेंक दिए थे और

अब हम दोनों के इर्द-गिर्द केवल दर्शक रूप में खड़े थे। ग्लेनर्डिनिग, जो मेरी चालों में फंसकर रात की शुरुआत में ही छककर पी चुका था, अब ताश फेंटने, बांटने या खेलने में ऐसी अनियन्त्रित उत्तेजना प्रदर्शित करने लगा, जिसकी आंशिक कल्पना तो उसके नशे में बुत होने के कारण की जा सकती थी परन्तु जिसका कारण पूरी तरह समझ सकना कठिन था। बहुत जल्द वह, बहुत बड़ी रकम से, मेरा कर्ज़दार हो गया। अब उसने पोर्ट (एक मदिरा) की एक लम्बी घूंट गले के नीचे उतार दी और वही किया जिसकी मैं बड़े धीरज के साथ पूर्वकल्पना कर चुका था। हमारे पहिले के बहुत बड़े दांव को उसने दुगना करने का प्रस्ताव किया। मैंने हिचकिचाहट प्रकट करते हुए ऐसा अभिनय किया जैसे मुझे यह पसन्द नहीं, मैं बार-बार इन्कार करता रहा, यहां तक कि उसे क्रोधपूर्ण शब्दों में विरोध करने का मौका देकर मैंने खेल को एक कटाकटी का रूप दे दिया और अन्त में उसकी बात मान ली। इसका जो परिणाम हुआ उसने यह प्रदर्शित कर दिया कि मेरा शिकार मेरे जाल में किस कदर फंस चुका है। घण्टे-भर से भी कम समय में उसका कर्ज चौगुना बढ़ गया। कुछ समय से मैं देख रहा था कि मदिरा के कारण उसके चेहरे पर जो लालिमा आ गई थी वह दूर होती जा रही थी किन्तु अब तो मुझे देखकर आश्चर्य हुआ कि वह भयानक रूप से पीली पड़ गयी है। हां, मैं कहता हूं कि मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने ग्लेनर्डिनिग के बारे में जो उत्सुक पूछताछ की थी उसमें तो मुझे यही बताया गया था कि वह अपार धनराशि का स्वामी है, और अभी तक जो रकम वह हार चुका था, वह यद्यपि अपने में काफी बड़ी थी किन्तु यह मेरी कल्पना के बाहर था कि वह उसे गम्भीर रूप से खिझा सकती है—फिर जिस गहराई के साथ वह प्रभावित हो रहा था, उसकी तो बात ही क्या थी। मेरे ध्यान में तो यही बात आई कि जो शराब अभी-अभी उसने पी है वही इसका कारण है। स्वार्थपूर्ण रुचि के अभाव के कारण नहीं बल्कि अपने साथियों की नज़र में अपने चरित्र और शील की रक्षा के ख्याल से मैं निश्चित ही इस बात पर ज़ोर देने जा रहा था कि अब खेल खत्म कर दिया जाए कि मेरे पास खड़े लोगों की कुछ

अभिव्यक्तियों और ग्लेनडिनिंग के मुंह से निकले अत्यन्त निराशासूचक उद्‌गार के कारण मैं समझ गया कि वर्तमान परिस्थिति में मैंने उसका सर्वनाश कर दिया है, और वह सबकी दया का पात्र हो चुका है—वह दया जो एक राक्षस के जाल से भी उसकी रक्षा कर सकती थी।

यह कहना कठिन है कि अब मेरा बर्ताव क्या होता। मेरे शिकार की दयनीय स्थिति ने सबके ऊपर उलझन-भरी उदासी का पर्दा डाल दिया था। कुछ क्षण के लिए एक गहरा और अटूट मौन छा गया। इस लघु अवधि में मैंने अनुभव किया कि दल के अपेक्षाकृत कम पतित लोगों की घृणा एवं उपालम्भ से भरी हुई अनेक जलती नजरें मेरे ऊपर पड़ रही हैं जिनसे मेरे गालों में सनसनाहट पैदा हो गई है। मैं यह भी स्वीकार करता हूं कि एक आकस्मिक और असामान्य हस्तक्षेप से जो इसके बाद हुआ, कुछ देर के लिए मेरे हृदय का असह्य भार हट गया। कमरे के चौड़े, भारी और मोड़दार दरवाजे एक प्रबल, प्रधावित प्रचण्डता के साथ अकस्मात्, पूरी तरह खुल गए और जैसे किसी जादू से कमरे की सब बत्तियां बुझ गईं। बुझते-बुझते उन बत्तियों के प्रकाश में हमें इतना ही आभास हुआ कि मेरी ही ऊंचाई के लबादा पहिने एक अजनबी ने कमरे में प्रवेश किया है। किन्तु अब चारों ओर पूरा अंधेरा छा गया था, और हम लोग सिर्फ इतना अनुभव कर रहे थे कि वह हमारे बीच खड़ा है। इस अशिष्टता ने हम सब लोगों को जिस गहरे आश्चर्य में डाल दिया था, उससे किसी के उबरने के पहिले ही हमें उस अनधिकार प्रवेशकर्त्ता की आवाज सुनाई दी।

उसने धीमी, स्पष्ट और कभी न भुलाई जा सकने वाली फुसफुसाहट में कहा—ऐसी फुसफुसाहट में जिसने मेरी हड्डियों की मज्जा तक को हिला दिया—"सज्जनो, मैं इस आचरण के लिए कोई क्षमायाचना नहीं करता, क्योंकि ऐसा करने में मैं केवल कर्तव्य का पालन कर रहा हूं। लार्ड ग्लेनडिनिंग पर जिस आदमी ने आज रात ताश के इस खेल में विजय प्राप्त की है, उसके यथार्थ चरित्र के विषय में, निश्चय ही, आप अज्ञान में हैं। इसलिए मैं आपको यह अत्यन्त आवश्यक जानकारी प्राप्त करने का एक

सत्वर एवं निर्णायक उपाय बताया हूं। कृपया फुर्सत में उसकी बाईं आस्तीन के कफ (कलाईपट्टी) के भीतरी अस्तर की तथा उन कतिपय लघु पैकेटों की परीक्षा कर लीजिए जो उसके कसीदा की हुई प्रभाती आवरण की बड़ी-बड़ी जेबों में मिलेंगे।"

जब वह बोल रहा था तो निस्तब्धता इतनी गहरी थी कि फर्श पर एक सुई का गिरना भी सुना जा सकता था। अपनी बात खतम करके वह तुरन्त चला गया, वैसे ही आकस्मिक रूप से, जैसे वह आया था। क्या मैं अपने उद्वेग को प्रकट कर सकता हूं, या मुझे प्रकट करना चाहिए? क्या मैं कहूं कि मैंने अभिशप्त के सम्पूर्ण भयानक त्रास का अनुभव किया? मुझे सोचने-विचारने के लिए भी अधिक समय नहीं था। उसी जगह मुझे अनेक हाथों ने कठोरतापूर्वक पकड़ लिया और तुरन्त रोशनी का फिर से प्रबन्ध किया गया। अब तलाशी शुरू हुई। मेरी आस्तीन के अस्तर में इस तरह के खेल में प्रयुक्त सब कार्ड मिल गए और मेरे रैपर की जेबों में अनेक ऐसे कार्डों की गड्डियां बरामद हुई जो खेल के कार्डों के प्रतिरूप थे। मतलब, खेल में धोखाधड़ी के लिए जो कुछ मैं करता था, सब प्रकट हो गया।

इस लज्जाजनक अन्वेषण पर यदि लोग तिरस्कारपूर्वक चीख पड़ते तो शायद मेरे ऊपर उतना प्रभाव न पड़ता जितना उस मौन अपमान एवं व्यंग्य-पूर्ण गम्भीरता का पड़ा जिसके साथ इस अन्वेषण को साथियों ने ग्रहण किया।

बहुमूल्य रोएं से निर्मित अत्यन्त शानदार एक लबादे को झुककर अपने पांव के नीचे से उठाते हुए मेरे मेजबान ने कहा—"मि० विलसन, यह आपकी सम्पत्ति है।" (मौसिम ठण्डा था इसलिए अपने कमरे से चलते समय मैंने अपने रैपर के ऊपर यह लबादा डाल लिया था किन्तु खेल के स्थान पर पहुंचकर उसे उतार कर रख दिया था) फिर (उस पोशाक की तहों की ओर तीव्र मुस्कान-भरी नजर डालते हुए) कहा—"यहां मैं आपकी चतुराई का और ज्यादा प्रमाण खोजने को कर्तव्य की सीमा से अधिक मानता हूं। जो कुछ हम देख चुके वही काफी है। मुझे आशा है कि आप अक्सफोर्ड छोड़कर चले जाने—कम-से-कम मेरा कमरा तुरन्त छोड़ देने की आवश्यकता

अनुभव कर चुके होंगे।"

उस समय मैं जिस प्रकार धूलि-पतित और अपमानित हो चुका था उसमें यह सम्भव है कि मैं उसपर शारीरिक आघात करके इस मर्मभेदी भाषा के प्रति अपना रोष प्रकट करता किन्तु इसी क्षण मेरा सारा ध्यान एक अत्यन्त विस्मयकारी तथ्य की ओर खिंच गया। जो लबादा मैंने अपने कमरे से विदा होते समय पहिना था वह अत्यन्त मूल्यवान पशम का बना था। मैं यहां यह नहीं बताऊंगा कि वह कितना दुर्लभ या मूल्यवान था। जिस फैशन पर वह बनाया गया था वह भी मेरा अपना अनोखा आविष्कार था, क्योंकि ऐसी छिछोरी बातों में, वाहियात दांभिकता की सीमा तक, मैं नकचढ़ा था, इसलिए जब मि० प्रेस्टन ने फर्श से उठाकर उसे मेरे हाथों में थमा दिया और मैं कमरे के मोड़दार दरवाज़े तक पहुंचा, तो आतंक के हद तक पहुंचे हुए आश्चर्य के साथ मैंने देखा कि मेरा लबादा तो पहिले से ही मेरे कंधे पर पड़ा हुआ है (जिसपर शायद मैंने असावधानी की स्थिति में रख लिया होगा) और जो दूसरा मुझे भेंट किया गया है वह हर बात में, यहां तक कि छोटी से छोटी तफसील की बातों में भी, पहिले का ही प्रतिरूप है। अब मुझे याद आया कि जिस अद्‌भुत मानव ने इस सर्वनाशकारी ढंग से मेरा भेद खोल दिया था, वह भी अपने को लबादे में लपेटे हुए था। मेरे सिवा हमारी पार्टी के और किसी आदमी ने तो कोई लबादा पहिना नहीं था। अपने दिमाग को कुछ-कुछ स्थिर करके मैंने प्रेस्टन द्वारा दिया गया वह लबादा ले लिया और किसीके भांपने के पूर्व ही उसे अपने लबादे के ऊपर डालकर उपेक्षा के साथ दृढ़ पर रोषपूर्ण डग रखता हुआ कमरे के बाहर चला गया, और दूसरे दिन, सुबह होने के पहिले ही आतंक एवं लज्जा की गहरी वेदना लिए जल्दी-जल्दी आक्सफोर्ड से यूरोप महाद्वीप की यात्रा पर रवाना हो गया।

मेरा भागना निष्फल हुआ। मेरी अमंगल नियति मानो और भी उल्लसित हो मेरा पीछा करने लगी तथा यह सिद्ध कर दिया कि उसके रहस्यमय शासन का अभी केवल आरम्भ हुआ है। मैंने मुश्किल से पेरिस में पैर रखे ही थे कि मुझे उस घृणित अभिरुचि का नया प्रमाण मिल गया जो मेरे मामलों

ने यह विलसन ने रहा था। साल पर साल बीतते गए और मुझे उससे कोई राहत नहीं मिली। गुण्डा ! रोम में वह मेरी महत्त्वाकांक्षा के बीच प्रेत की भांति अनधिकारपूर्वक आ पड़ा। वही बात वियेना, बर्लिन और मास्को में भी घटित हुई। सच पूछें तो वह कौन-सी जगह थी जहां मुझको अपने हृदय में उसे शाप देने का तीक्ष्ण कारण न रहा हो ? आखिरकार उसके अनवर्य अत्याचार से भयग्रस्त हो मैं उसी प्रकार भाग खड़ा हुआ जैसे आदमी महामारी से डरकर भागता है। मैं पृथ्वी के छोर तक गया। *मेरा भागना व्यर्थ हुआ* ।

स्वयं अपनी आत्मा से गुप्त सम्बन्ध स्थापित करके बार-बार मैंने ये प्रश्न पूछे—वह कौन है ? वह कहां से आया है ? उसका उद्देश्य क्या है ? अविनीत निरीक्षण के प्रमुख लक्षणों, रूपों और प्रणालियों की सूक्ष्म जांच की, किन्तु उसमें भी मुझे ऐसी कोई विशेष सामग्री नहीं मिली कि मैं उसपर अनुमान लगाता। हां, मुझे इतना जरूर स्पष्ट हो गया कि पिछले दिनों जिन अनेक उदाहरणों में उसने मेरा रास्ता काटने की चेष्टा की थी उनका अभिप्राय मेरी उन योजनाओं या कार्यों को असफल कर देना मात्र था जो पूर्णतः कार्यान्वित होने पर भयानक अनिष्ट में परिणत हो जाते। पर इस प्रकार दर्पपूर्वक अपने हाथ में अधिकार ले लेने का वस्तुतः यह लचर औचित्य है। स्वयं सोचने एवं कार्य करने के प्राकृतिक अधिकारों को ऐसे दुराग्रहपूर्ण, ऐसे अपमानजनक रूप में मुझसे छीन लेने की यह बहुत ही नगण्य क्षतिपूर्ति है।

मैं यह लक्ष्य करने को भी विवश हुआ कि एक लम्बे अर्से से मेरा पीड़क (मेरे जैसे रूप-रंग एवं परिधान धारण करने की अपनी सनक को अद्भुत दक्षता के साथ पूरा करता हुआ भी) मेरी इच्छा में अपने विविध हस्तक्षेपों को ऐसे ढंग से कार्यान्वित करता है कि कभी क्षण-भर को भी मैं उसके चेहरे की बनावट को देख नहीं पाता। विलसन चाहे जो हो, यह तो उसके छल या अपराध की सीमा थी। क्या एक क्षण के लिए भी वह ऐसी कल्पना कर सकता था कि ईटन में मेरी भर्त्सना करने वाले, आक्सफोर्ड में मेरी

इज्जत नष्ट करनेवाले, रोम में मेरी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति में बाधा डालनेवाले, पेरिस में मेरे प्रतिशोध में आड़े आनेवाले, नेपुल्स में मेरे प्रचण्ड प्रणय को निष्फल कर देनेवाले या मिस्र में चेष्टा को मेरा लोभ कहकर रोक देनेवाले, अपने प्रमुख शत्रु, दूषित प्रतिभाशाली आदमी के रूप में अपने बचपन के स्कूली दिनों के विलियम विलसन को, अपने उस नामराशि को, अपने साथी को, डा० ब्रैसबी की पाठशालावाले अपने घृणाई और भयावने प्रतियोगी को, देख नहीं पाऊंगा, ? असम्भव !—किन्तु मुझे नाटक के अन्तिम घटनापूर्ण दृश्य तक पहुंचने में शीघ्रता करने दीजिए।

इस निरंकुश प्रभुता के आगे मैं इस सीमा तक निढाल हो चुका था। स्वभावत: मैं जिस गहरे श्रद्धाभिभूत भय की मनोभावना के साथ विलसन के उन्नत चरित्र, श्रेष्ठ विवेक, प्रकट सर्वव्यापकता और सर्वशक्तिमानता को देखता था तथा इसके साथ ही उसकी प्रकृति और मान्यताओं की कतिपय विशेषताओं के प्रति आतंक की भावना ने जिस प्रकार मुझे प्रोत्साहित किया था उसने मेरे मन पर यह छाप बैठा दी थी कि मैं बिलकुल ही अशक्त और असहाय हूं तथा इसके कारण उसकी निरंकुश इच्छा के आगे मैंने निर्विवाद रूप से, यद्यपि तीव्र अनिच्छा के साथ, कंधा डाल दिया था। अन्तिम दिनों में मैंने अपने को पूर्णत: मदिरा देवी के हाथ में सौंप दिया और मेरे वंशानुगत स्वभाव पर उसके उन्मादक प्रभाव ने मुझे नियन्त्रण के प्रति अधिकाधिक अधीर बना डाला। मैंने बड़बड़ाना, हिचकिचाना और प्रतिरोध करना शुरू कर दिया। क्या वह मेरी कल्पना मात्र थी जिसने मुझे यह विश्वास करने को बाध्य कर दिया कि ज्यों-ज्यों मेरी दृढ़ता में वृद्धि होती जाएगी मेरे पीड़क का उसी हिसाब से ह्रास होता जाएगा ? चाहे जो भी बात रही हो, अब मैं एक ज्वलन्त आशा की प्रेरणा का अनुभव करने लगा और अन्त में अपने गुप्त विचारों में एक दृढ़ एवं निराशोन्मत निश्चय को पल्लवित कर लिया कि मैं अब अपने को गुलाम बनाने के लिए आत्मसमर्पण नहीं करूंगा।

१८—के कार्निवाल (रोमन कैथलिक आनन्दोत्सव) के दिनों में मैं

रोम में था। उन्हीं दिनों वहां के एक सामंत ड्यूक दी ब्रोगलियो के महल में होनेवाली एक छद्म-क्रीड़ा (जिसमें लोग छद्म-वेश बनाकर आते हैं) में मैं शामिल हुआ। मदिरा के टेबुल पर सामान्य दिनों की अपेक्षा कहीं मुक्त होकर मैंने मनमानी की; अब जनाक्रान्त कमरों के दम घोंटनेवाले वातावरण में मेरा मन सहनशक्ति की सीमा के बाहर तक खीझ उठा। उस पार्टी की भीड़ में से अपनी राह बनाने की कठिनाई ने भी मेरी इस खीझ में कुछ कम वृद्धि नहीं की। बात यह थी कि मैं उत्कण्ठा-पूर्वक बूढ़े और शिथिल दी-ब्रोगलियो की स्वानन्दी, सुन्दरी पत्नी के पास पहुंचना चाहता था—किस अनुचित उद्देश्य से, यह मैं न बताऊंगा। निर्लज्जतापूर्ण आत्मविश्वास के साथ उसने पहिले ही से मुझे कहला भेजा था कि वह किस छद्म परिधान में रहेगी। मैंने इस समय दूर से उसकी एक झलक पा ली थी और जल्दी-जल्दी उसके पास तक पहुंचने के प्रयत्न में था। ठीक इसी समय मुझे अनुभव हुआ कि किसीने अपना हलका हाथ मेरे कन्धे पर रख दिया है, और इसके बाद मेरे कान में वही सदा याद आनेवाली, मन्द, घिनौनी फुसफुसाहट!

क्रोध के पूरे बवण्डर में मैं तुरन्त उस आदमी की ओर, जिसने इस प्रकार मेरे कार्य में हस्तक्षेप किया था, घूम गया, और प्रबल वेग से उसका गला पकड़ लिया। मेरी आशा के अनुरूप वह ठीक मेरे समान कपड़े पहिने था—एक लम्बा स्पेनी ढंग का लबादा तथा काले रेशमी कपड़े का मुखावरण, जिससे उसकी सम्पूर्ण मुखाकृति ढकी हुई थी।

रोष से कांपती आवाज़ में मैंने कहा—"बदमाश!" मेरे द्वारा उच्चरित प्रत्येक अक्षर जैसे मेरी रोषाग्नि के लिए ईंधन बन गया। "बदमाश! धूर्त! शापित गुण्डे! तुम मृत्यु के दिन तक मेरा पीछा नहीं कर पाओगे। मेरे पीछे-पीछे चुपचाप चले आओ, नहीं तो तुम जहां खड़े हो वहीं मैं तुम्हें छुरा भोंक दूंगा।" और मैं उस कमरे के बीच से अपना रास्ता बनाता हुआ बगल के उपकक्ष में पहुंच गया—अपने साथ उसे भी घसीटता ले गया। उसने प्रतिरोध नहीं किया।

उस लघु कक्ष में पहुंचकर मैंने आवेशपूर्वक उसे अपने से दूर धकेल दिया। वह दीवार से टकराकर लड़खड़ा गया; मैंने दांत पीसते हुए दरवाज़ा बन्द कर लिया। फिर उसे अपनी तलवार निकालने का आदेश दिया। क्षण-भर के लिए वह हिचकिचाया, किन्तु फिर एक हलके उच्छ्वास के साथ चुपचाप, उसने भी तलवार निकाल ली और अपनी रक्षा के लिए तैयार हो गया।

प्रतियोगिता बड़ी अल्पकालिक थी। मैं हर तरह की आवेगमयी उत्तेजना से उबल रहा था; उस समय मुझे अपने एक बाजू में हजारों आदमियों की स्फूर्ति और शक्ति का अनुभव हो रहा था। अपने बल से बस कुछ क्षणों में ही मैंने उसे कमरे के काष्ठस्तर के ऊपर धर दबोचा और इस प्रकार उसे अपनी दया के ऊपर निर्भर देख, पाशविक प्रबलता के साथ अपनी तलवार उसके कलेजे में घुसेड़ दी—बार-बार घुसेड़ता गया।

इसी समय किसीने दरवाज़े की कुण्डी खोलने की कोशिश की। मैंने जल्दी से बढ़कर उसके प्रवेश को रोक दिया और तुरन्त ही अपने मरते हुए प्रतियोगी के पास लौट आया। किन्तु मुझे वहां जो कुछ दिखाई पड़ा और उसने मुझे जिस आश्चर्य और आतंक से अभिभूत कर दिया, उसका ठीक-ठीक चित्रण मानव की कौन-सी भाषा कर सकती है? क्षण-भर के लिए ही मेरी आंखें वहां से हटी थीं किन्तु उतनी ही देर में उस लघु प्रकोष्ठ के दूर के सिरे की व्यवस्था एवं सजावट में पर्याप्त परिवर्तन हो चुका था। वहां एक बड़ा शीशा रखा हुआ था, जबकि पहिले वहां कुछ भी न दिखाई पड़ा था, और ज्यों ही आतंक की पराकाष्ठा में मैं उसके निकट गया तो देखा कि मेरी ही मूर्ति, मेरी छाया पीली मुखाकृति के साथ एवं खून में लथ-पथ, दुर्बल लड़खड़ाते कदमों के साथ, मुझसे मिलने को बढ़ती चली आ रही है।

मैं कहता हूं कि मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, किन्तु वैसा था नहीं। यह मेरा प्रतियोगी था, यह विलसन था जो मृत्यु की वेदना से छटपटाता मेरे सामने खड़ा था। उस चेहरे की अनोखी रेखाओं में से एक भी ऐसी नहीं थी जो

मेरी न हो। उसका मुखौटा और लबादा एक ओर फर्श पर, जहां उसने उन्हें फेंक दिया था, पड़े हुए थे।

हां, वह विल्सन ही था, परन्तु अब वह फुसफुसाहट की आवाज में नहीं बोलता था और मुझे ऐसा लगा कि मैं ही बोल रहा था, जब उसने कहा—

"तुमने विजय पाई: मैं पराजित हूं। किन्तु अब से आगे के लिए तुम भी मृत हो—संसार और उसकी आशाओं के लिए मृत। मुझमें ही तुम्हारा अस्तित्व था,—और मेरी मृत्यु में, इस छाया में, जो तुम्हारी ही है, देख लो, कैसी परिपूर्णता के साथ तुमने अपनी हत्या कर डाली है!"

आदमी, जो चुक गया !

[पिछले वगावू एवं किकापू युद्धाभियान की एक कहानी]

इस समय मुझे याद नहीं आ रहा है कि उस वस्तुतः सुदर्शन ब्रेवेट ब्रिगेडियर जेनरल जॉन ए० बी० सी० स्मिथ के साथ मेरा प्रथम परिचय कब और कहां हुआ था। इतना तो निश्चित है कि किसी ऐसी सार्वजनिक सभा में, जो निश्चय ही किसी बड़े महत्वपूर्ण विषय को लेकर हुई होगी, और जिसके स्थान का नाम मैं अकारण ही भूल गया हूं, किसीने मेरा परिचय उनसे कराया होगा। दरअसल बात यह है कि इस परिचय के समय मैं इस प्रकार की थरथराहट और घबराहट से भर उठा था कि समय और स्थान की कोई निश्चित छाप ही मन पर नहीं रह गई। शरीर-रचना से ही मैं घबरा जाने वाला हूं—मेरे साथ यह एक पारिवारिक दोष है, और मैं इसे दूर नहीं कर पाता। विशेषतः जहां कोई भेद की बात होती है—कोई ऐसी बात जिसको मैं ठीक-ठीक समझ नहीं पाता—वहां मुझमें उत्तेजना की दयनीय स्थिति पैदा हो जाती है।

यहां मैंने जिस व्यक्ति का उल्लेख किया है उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व में कुछ विलक्षणता थी—हां, विलक्षणता, यद्यपि यह शब्द भी मेरे आशय को पूर्णतया प्रकट करने में असमर्थ है। यह कुछ क्या था, इसे बता सकना मेरे लिए असम्भव था। शायद वह ऊंचाई में छः फुट रहा होगा, और उसकी उपस्थिति अनोखे रोबवाली थी। उस सम्पूर्ण मानव में विशिष्टता की मुद्रा थी, जिससे उसके श्रेष्ठ संस्कार एवं उच्च वंशगौरव का पता लगता था। इस विषय पर—स्मिथ के शरीर-दर्शन विषय पर—मुझे सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों का वर्णन करने में एक प्रकार का विषादयुक्त सन्तोष होता है। उसका केश-

युक्त मस्तक ऐसा था जो ब्रूटस को भी सम्मानित कर सकता था—उससे अधिक समृद्ध रूप से लहराते या कान्तिमान केश कहां मिल सकते हैं ? यह केशसमूह काला स्याह था—और यही रंग, या कहिए कोई रंग नहीं, उसके अकल्पनीय गलमुच्छों का भी था। आप देखते हैं इन गलमुच्छों के बारे में तो जोश के बिना बात ही नहीं कर सकता। यह कहने में कोई अत्युक्ति नहीं होगी कि इस पृथ्वी पर वे युगल गलमुच्छें सबसे सुन्दर थीं। वह मुंह को घेरे हुए थीं और कभी-कभी मुंह, जो उनके परिमाण में आसमान था, उनमें अंशत: छिप जाता था। जैसे दांतों की कल्पना की जा सकती है, उनमें उसके दांत बिलकुल मोती की लड़ी-से और अत्यन्त कान्तियुक्त तथा धवल थे। प्रत्येक उपयुक्त अवसर पर, उनके बीच से होकर अत्यन्त स्पष्ट, सुरीली और शक्तिमती वाणी निकलती थी। आंखों के मामले में भी मेरा परिचित व्यक्ति विशेष रूप से समृद्धिशाली था। उसके नयन-युगल में से एक-एक अनेक सामान्य नयनों के बराबर था। वे आंखें गहरे कपिश वर्ण की, बहुत बड़ी-बड़ी—आयताकार और प्रकाशपूर्ण थीं। और उनमें जब-तब उपयुक्त मात्रा में वह आकर्षक वक्रता प्रकट होती रहती थी जो अभिव्यक्ति को सार्थक बनाती है।

जेनरल का वक्ष, उन सब वक्षों में निश्चित रूप से सर्वोत्तम था, जिन्हें मैंने देखा है। आप जिन्दगी-भर लगे रहकर भी उसके अद्भुत समानुपात–सुडौलपन—में कोई दोष नहीं निकाल सकते। इस दुर्लभ विशिष्टता के कारण युगल स्कन्ध ऐसे बन गए थे जो संगमर्मर की अपोलो (मूर्ति) को अपनी लघुता की चेतना की लज्जा से भर देते। मुझे सुन्दर कन्धे देखने की एक झक है और मैं कह सकता हूं कि इससे पहले मैंने उन्हें परिपूर्ण रूप में कभी नहीं देखा। उसकी भुजाएं भी प्रशंसनीय रूप से गठित हुई थीं और चूंकि दाहिनी भुजा स्लिंग या गलपट्टी में बंधी हुई थी, उससे बाईं का सौन्दर्य और बढ़ गया था। फिर उसके अधोअंग कुछ कम सुन्दर न थे। ऐसे मामलों के प्रत्येक पारखी ने स्वीकार किया था कि पांव बहुत अच्छे हैं। उनमें न तो मांस की बहुत अधिकता थी, न बहुत कमी थी—न उनमें

कठिनता थी, न भंगुरता। उसकी जंघास्थि से अधिक सुन्दर मोड़ की मैं कल्पना ही न कर सकता था, और जो वहिर्जंघास्थि समानुपातिक पिंडलियों की रचना करती है उसके पश्चाद्भाग में भी बस उतनी ही उठान थी जो उचित है। मैं तो ईश्वर से यही कामना करता हूं कि मेरा तरुण एवं प्रतिभाशाली मित्र मूर्तिकार चिपनचिपिनों ने ब्रेवेट ब्रिगेडियर जेनरल जॉन ए० बी० सी० स्मिथ के पांव देखे होते।

किन्तु यद्यपि ऐसे पूर्णतः सुन्दर-सुदर्शन मनुष्य उतने सुलभ नहीं हैं जैसे सुलभ तर्क या कृष्णबदरियां (काली बेरें) हैं, फिर भी मैं अपने को यह विश्वास न दिला सका कि जिस कुछ के विषय में मैं उल्लेख कर चुका हूं उसका एक मात्र कारण उसकी शरीर-सम्पत्ति की अत्युत्कृष्टता है। शायद उसका स्रोत, उसका ढंग, उसका बर्ताव हो—किन्तु मैं फिर भी निश्चित रूप से नहीं कह सकता। उसकी चाल में कठोरता नहीं थी; एक प्रकार का तकल्लुफ था—उसके प्रत्येक पद-संचार में एक प्रकार की नपी-तुली, और मैं वैसा कह सकूं तो, आयताकार सूक्ष्मता—निश्चितता थी, जो किसी और नाटे आकार के व्यक्ति में होती तो उसमें कृत्रिमता, प्रदर्शन, आडम्बर या विवशता की दुनिया की गंध आती किन्तु उसके जैसे आयामवाले भद्र जन में देखकर उसे प्रशंसनीय कोटि की गम्भीरता और प्रगल्भता अर्थात् संक्षेप में महत् समानुपात की मर्यादा के खाते में ही रखा जा सकता था।

जिस कृपालु मित्र ने मुझे जनरल स्मिथ के सामने परिचय के लिए उपस्थित किया था, उन्होंने उसी क्षण मेरे कान में उस मनुष्य के विषय में धीरे से कुछ शब्द कहे थे। "वह एक विलक्षण आदमी है—बहुत ही विलक्षण आदमी, बल्कि इस युग का सबसे विलक्षण आदमी कहो। वह औरतों में विशेष रूप से प्रिय है—मुख्यतः अपने साहस की उच्च ख्याति के कारण।"

"उस विषय में तो वह अप्रतिम है—अत्यन्त दुस्साहसिक है—प्रचण्ड द्वन्द्वयोद्धा है, इसमें जरा भी गलती न समझना।" मेरे मित्र ने कहा, फिर अपनी आवाज बहुत धीमी कर दी—अपने स्वर-रहस्य से मुझे कम्पित करते हुए।

"हां, प्रचण्ड द्वन्द्वयोद्धा। मैं कहता हूं कि इसे उसने दक्षिण के भयानक दलदली युद्ध में, जो बगाबू तथा किकापू इण्डियनों के साथ लड़ा गया था, अच्छी तरह साबित कर दिया है। (यहां मेरे मित्र ने अपनी तर्जनी उंगली अपनी नाक की ओर रखकर अपनी आंखें कुछ फैला दीं) हे भगवान! बस खून और बिजली की कड़क! शौर्य में अद्भुत। तुमने सुना ही होगा? हां, जरूर सुना होगा?...यही है वह आदमी..."

इसी बीच खुद जेनरल ने नजदीक आया देख, मेरे मित्र का हाथ पकड़ लिया और हमारी बातचीत में हस्तक्षेप करते हुए कहा—"अरे जिन्दा आदमी! तुम क्या कर रहे हो? कैसे हो?" जब मित्र ने मुझे परिचय के लिए पेश किया तो उसने किंचित कड़ाई परन्तु गहराई के साथ अभिवादन किया। उस समय मैंने सोचा (और मैं अब भी वैसा ही समझता हूं) कि मैंने उससे स्पष्ट और उससे शक्तिमती वाणी कभी नहीं सुनी, न तो कहीं उससे बढ़िया दंतावली ही देखी। किन्तु इतना मैं जरूर कह देना चाहता हूं कि चूंकि मित्र-द्वारा फुसफुसाकर कही गई बातों के कारण मेरी दिलचस्पी बगाबू एवं किकापू युद्धाभियान के वीर नायक में बहुत बढ़ गई थी इसलिए उस वक्त उस बातचीत में बाधा पड़ जाने से मुझे दुःख हुआ था।

किन्तु इसके बाद ब्रेवेट ब्रिगेडियर जेनरल जॉन ए० बी० सी० स्मिथ की मजेदार बातें सुनकर मेरा वह असन्तोष बहुत कुछ दूर हो गया। इस समय मेरा मित्र कहीं चला गया और हम दोनों काफी देर एकान्तवार्ता करते रहे। मुझे उस बातचीत से न केवल खुशी हुई बल्कि सचमुच ज्ञान भी प्राप्त हुआ। मैंने इससे पहले ऐसा धाराप्रवाह बोलनेवाला वक्ता, या इससे अधिक सामान्य जानकारी रखनेवाला आदमी, नहीं देखा था। किन्तु उस समय मेरे मन में जो बात सबसे ज्यादा प्रमुख रूप से उठ रही थी—मेरा मतलब है बगाबू युद्ध की रहस्यमयी परिस्थितियों से—उसके विषय में उसने संकोच के कारण कुछ नहीं कहा, और जहां तक मेरा सम्बन्ध है मेरे मन में बार-बार उस विषय को छेड़ने की उत्सुकता होते हुए भी शिष्टाचारवश मैंने उसे नहीं उठाया। मैंने यह भी देखा कि उस वीर सैनिक को

दार्शनिक विषयों पर तथा वैज्ञानिक एवं यांत्रिक आविष्कारों की तीव्र गति के बारे में वार्ता करने में ज्यादा दिलचस्पी है। मैं चाहे जो बातचीत छेड़ता और चाहे जिस तरफ भी उसे ले जाने की चेष्टा करता, घूम-फिरकर वह इन्हीं विषयों पर आ जाता था।

वह कहता—"इसके समान और कुछ नहीं है। हम एक अद्भुत जाति के लोग हैं और एक अद्भुत युग में जी रहे हैं। पैराशूट एवं रेलपथ, मानुष-जाल एवं स्प्रिंगदार बन्दूकें ! हमारी वाष्पचालित नौकाएं प्रत्येक सागर में हैं और लन्दन तथा टिम्बकटू के बीच नभाऊ बैलूनों की नियमित यात्राएं शुरू ही होनेवाली हैं (और एक तरफ का किराया सिर्फ बीस पौण्ड—लगभग तीन सौ रुपये—मात्र होगा) और विद्युतीय चुम्बकत्व (इलेक्ट्रो-मैगनेटिक्स) के महत् सिद्धान्तों के लागू होने पर तुरन्त जो परिणाम निकलेगा और उनका जो महत् प्रभाव सामाजिक जीवन पर, कलाओं पर, व्यापार पर, साहित्य पर पड़ेगा, उसका हिसाब कौन लगा सकता है ? फिर मैं आपसे कहता हूं, बात इतने तक ही नहीं है, आविष्कारों की प्रगति की सचमुच कोई सीमा नहीं है। सबसे विलक्षण, सबसे चमत्कारपूर्ण, और मुझे उसमें इतना और जोड़ने दीजिए, मिस्टर-मिस्टर थामसन, मेरा ख्याल है यही आपका नाम है, कि सबसे उपयोगी, निश्चित रूप से सर्वाधिक उपयोगी वे यांत्रिक रचनाएं हैं, जो नित्य कुकुरमुत्तों की तरह या मैं और अलंकारिक भाषा में कहूं तो टिड्डों की तरह—हां टिड्डों की तरह हमारे चतुर्दिक् पैदा होती जा रही हैं, मि० थामसन !"

यह तो निश्चित ही है कि मेरा नाम थामसन नहीं है, किन्तु कहने की आवश्यकता नहीं कि जब मैं जेनरल स्मिथ से विदा हुआ तो उस मनुष्य के विषय में मेरी दिलचस्पी बहुत ज्यादा बढ़ गई थी और उसकी वार्ता-शक्ति के बारे में मेरे मन में प्रशंसा के भाव थे तथा मैंने यह भी गम्भीरता के साथ समझ लिया था कि यांत्रिक आविष्कार के इस युग में जीते हुए हम कैसी मूल्यवान सुविधाओं का उपभोग कर रहे हैं। किन्तु अभी तक मेरी उत्कण्ठा को सन्तोष नहीं हुआ था, इसलिए मैंने निश्चय कर लिया कि मैं

ब्रिगेडियर जेनरल के बारे में अपने परिचितों से पूछकर और पता लगाऊंगा, तथा उन महत्त्वपूर्ण घटनाओं का ज्ञान प्राप्त करूंगा जिनमें बगाबू एवं किकापू युद्धों के बीच उसने महत्त्वपूर्ण अभिनय किए थे।

इसके लिए जो पहला अवसर मुझे मिला उसका उपयोग करने का मैंने तुरन्त निश्चय कर लिया। बात यह थी कि एक रविवार को मैं रेवेरण्ड डा० ड्रममप के गिर्जे में पहुंच गया। यह धर्मोपदेश का समय था। मैं विशिष्टजनों के मंच पर बैठा था और मैंने देखा कि मेरे बगल में ही मेरी योग्य और बातूनी दोस्त कुमारी टबीथा टी बैठी हुई है। ऐसी अनुकूल स्थिति के लिए मैंने ईश्वर का धन्यवाद किया। मैं बहुत अच्छी तरह से समझता था कि यदि कोई आदमी ब्रिगेडियर जेनरल जॉन ए० बी० सी० स्मिथ के बारे में कुछ जानता है तो वह निश्चय ही टबीथा है। मैंने पहले कुछ भूमिका बांधी और फिर एकदम निजी बातचीत छेड़ दी।

मेरे प्रश्न के उत्तर में उसने कहा—"स्मिथ ! जेनरल जॉन ए० बी० सी० क्यों नहीं कहते ! ओह ! मैं तो समझती थी कि उसके विषय में तुम सब कुछ जानते हो। यह तो विलक्षण आविष्कारों का युग है। भयानक बात है वह। किकापू लोग तो खूनी राक्षस होते ही हैं। वह वीर की भांति लड़े—शौर्य की विलक्षणताएं—अमर ख्याति ! स्मिथ ! ब्रेवेट ब्रिगेडियर-जेनरल जॉन ए० बी० सी० ।—"तुम तो जानते ही होगे कि वही है वह आदमी···"

इसी क्षण डाक्टर ड्रममप ने ऐसा पदाघात किया कि मुझे लगा मानो वेदी ही लुढ़ककर मेरे कानों में आ गई है, फिर उन्होंने बड़ी ऊंची आवाज में कहना शुरू किया—"मनुष्य—जो मनुष्य नारी के पेट से पैदा हुआ है, उसे जीने के लिए बहुत थोड़ा समय मिला है—वह जन्मता है और फूल की भांति तोड़ लिया जाता है !" मैंने मंच की छोर की ओर देखा और धर्माध्यक्ष की उत्तेजित नजर देख समझ गया कि जिस रोष के कारण वेदिका टूटते-टूटते बची, वह उक्त महिला और मेरे बीच की फुसफुसाहटों से और तीखा हो गया है। इसका कोई उपाय नहीं था, इसलिए मैं शान्त होकर बैठ गया और मर्यादायुक्त मौन की शहादत के बीच उस महत्त्वपूर्ण उपदेश

का शेषांश सुनता रहा।

दूसरे दिन रात को ज़रा देर से मैं रैण्टीपोल थियेटर पहुंच गया। मुझे पूरा विश्वास था कि वहां सुशीलता एवं मनरंजना के उन नमूनों, अर्थात् कुमारी अराबेला तथा कुमारी मिराण्डा कागनोसेण्टी के बाक्स (स्वतन्त्र दर्शक-कक्ष या कटघरा) में प्रवेश करते ही मेरी आकांक्षा और उत्सुकता तृप्त हो जाएगी। थियेटर दर्शकों से खचाखच भरा था और वह श्रेष्ठ दुःखान्त अभिनेता, क्लाईमाक्स, अभिनय कर रहा था। मुझे अपनी बात समझाने में कुछ कठिनाई हुई क्योंकि हमारा बाक्स स्लिप (वह स्थान जहां अभिनेता रंगमंच पर आने के पूर्व खड़ा होता है) के बिलकुल निकट और मंच के सामने ही था।

अन्त में मेरे प्रश्न का आशय समझकर कुमारी अराबेला ने कहा—"स्मिथ ? स्मिथ ? जेनरल जॉन ए० बी० सी० तो नहीं ?"

मिराण्डा ने भी ध्यानावस्थित होकर पूछा—"स्मिथ ? ईश्वर मंगल करे। कभी आपने उससे अच्छी सूरत देखी है ?"

"कभी नहीं मैडम, किन्तु मुझे बताइए···"

"या ऐसी अनुपम शोभा देखी है ?"

"नहीं, बिलकुल नहीं।···किन्तु कृपया मुझे बताइए···"

"अथवा मांचिक प्रभाव का ऐसा उदाहरण ?"

"मैडम !"

"अथवा शेक्सपियर के यथार्थ सौन्दर्यचित्रों का इससे अधिक सूक्ष्म चित्रण ? कृपया उस पांव को तो देखिए।"

"बकवास !" और मैं पुनः उसकी बहिन की ओर पलट गया।

वह बोली—"स्मिथ ? क्यों, जेनरल जॉन ए० बी० सी० क्यों नहीं ? भयानक घटना थी वह, थी न ? वे राक्षस, वे बगावू लोग। जंगली ! किन्तु हम विलक्षण आविष्कारों के युग में रह रहे हैं।···स्मिथ।···हां, हां। महान व्यक्ति। पूरा द्वन्द्वयोद्धा···अमर ख्याति-शौर्य की विलक्षणताएं आपने नहीं सुनीं ! (ये शब्द उसने चीखते हुए-से कहे)। ईश्वर कल्याण

करे···क्यों, वही है वह आदमी···"

इस समय क्लाईमाक्स मेरे कानों में चीख उठा—

"वह मधुर द्राक्षालता या और जग के सर्व मधुरस
दे न सकते हैं तुम्हें उस मधुर निद्रा का सरस सुख
जो तुम्हें कल मिल चुका है।"

इसके बाद वह अपनी मुष्टिका मेरे सामने इस तरह बराबर हिलाने लगा कि मैं बर्दाश्त न कर सका; मुझसे बर्दाश्त नहीं हुआ। मैं कान्नोसेंटी कुमारियों को छोड़ तुरन्त दृश्यपट के पीछे चला गया। मैं चाहता था कि उस बदमाश अभिनेता की अच्छी तरह खबर लूं।

एक दिन सुन्दरी विधवा श्रीमती कैथलीन ओ ट्रम्प की सांध्यगोष्ठी में मैं इस विश्वास के साथ गया कि वहां इस प्रकार की निराशा का अनुभव नहीं होगा। तदनुसार, ज्योंही ताशक्रीड़ा वाले टेबल के सामने बैठा और मेरी कमनीया आतियेया मेरी पार्टनर बन गई, त्योंही मैंने वे प्रश्न छेड़ दिए जिनका समाधान मेरी शान्ति के लिए इतना जरूरी हो उठा था।

मेरी पार्टनर ने कहा—"स्मिथ? जेनरल जॉन ए० बी० सी० क्यों नहीं? बड़ी भयानक बात थी वह, थी न? क्या, तुमने डाईमण्ड (ईंट) कहा?—भयानक राक्षस, वे किकापू लोग। मि० टैटिल, आप ख्याल करें तो हम लिस्ट (ताश का एक खेल) खेल रहे हैं—जो भी हो, यह आविष्कारों का युग है—निश्चित रूप से जिसके विषय में कोई कह सकता है सर्वोत्तम युग। आप फ्रेंच बोलते हैं? आह, बड़ा वीर-पूर्ण द्वन्द्वयोद्धा।··· नहीं, हार्ट्स (पान), मि० टैटिल···मैं इसमें विश्वास नहीं करती···अमर ख्याति और वह सब शौर्य की विलक्षणताएं। कभी नहीं सुना? ओह, ईश्वर रक्षा करे, वही है वह आदमी···('मैन')···"

कमरे के सुदूर कोने में कोई स्त्री (मैन अर्थात् आदमी को किसी कैप्टेन मैन का नाम समझकर) बीच में रोककर बोल पड़ी—"मैन? कैप्टेन मैन? क्या तुम लोग कैप्टेन मैन और द्वन्द्वयुद्ध की बात कर रहे हो?—ओह, मैं जरूर सुनूंगी। कहो, कहते चलिए श्रीमती ओ ट्रम्प।···हां आगे

चलिए, सुनाइए।" और श्री ओ ट्रम्प सचमुच आगे चलने, कहने लगी—"किसी कैप्टेन मैन के बारे में, जो या तो गोली मार दिया गया था या फिर फांसी पर लटका दिया गया था, या फिर उसे गोली भी मारी गई होगी और फांसी पर भी लटकाया गया होगा। "हां! श्रीमती ट्रम्प।" और वह आगे कहती गई, और मैं बस भाग खड़ा हुआ। उस रात ब्रेवेट ब्रिगेडियर जेनरल जॉन ए० बी० सी० स्मिथ के बारे में और कुछ जान सकने की कोई सम्भावना नहीं रह गई थी।

इतने पर भी मैंने इस विचार के साथ अपने को शान्त कर लिया कि दुर्भाग्य का ज्वार मेरे विरुद्ध सदा ही नहीं रहेगा। इसलिए मनोरमा देवी सुशीला श्रीमती पिराउती के 'राउट' (संध्याकीलन प्रीतिभोज) में जाकर जानकारी प्राप्त करने का मैंने पूर्ण निश्चय कर लिया।

जब हम दोनों पार्टी के बीच चक्कर लगा रहे थे तो श्रीमती पी० मेरे प्रश्न के उत्तर में बोलीं—"स्मिथ ?—स्मिथ ? जेनरल जॉन ए० बी० सी० क्यों नहीं ? बगाबुओं का वह भयानक काण्ड। था न ? भयानक प्राणी, वे इण्डियन ! अपने पदांगुष्ठों को मोड़ लो, मैं तुमसे शर्मिन्दा हूं—बड़े साहस का आदमी, बेचारा ! किन्तु यह आविष्कार का विलक्षण युग है। अरे प्यारे दोस्त, मेरी सांस रुक रही है···निपट दुस्साहसी···शौर्य की विलक्षणताएं···कभी नहीं सुनीं ? मैं इसे विश्वास ही नहीं कर सकती···मुझे बैठना पड़ेगा और तब तुमसे कहूंगी—स्मिथ ! क्यों, वही है वह आदमी···"

ज्योंही मैं श्रीमती पिराउती को एक आसन पर बैठाने को लिए जा रहा था कि कुमारी बास-ब्लू चीख उठीं—"मैन-फ्रेड, मैं कहती हूं। क्या किसीने उसकी-सी कथा कहीं सुनी है ? वह मैन-फ्रेड ही है। मैं कहती हूं—मैन-फ्राईडे नहीं।" और मिस बास-ब्लू ने बड़े शासकीय ढंग पर मुझे संकेत किया, और मुझे श्रीमती पी० को छोड़कर लार्ड बायरन के किसी पद्य-नाटक के शीर्षक झगड़े का फैसला करने के उद्देश्य से जाना पड़ा। यद्यपि मैंने अतिशीघ्रता के साथ घोषित किया कि संभ्या शीर्षक

मैन-फ्रेड नहीं मैन-फ्राईडे है किन्तु जब मैं लौटकर पिराउती को खोजने लगा तो वह मुझे नहीं मिली। और मैं वहां से बास-ब्लुओं की सारी जाति के विरुद्ध तीव्र शत्रुता की भावना लेकर चला आया।

अब मामला सचमुच गम्भीर हो चला, इसलिए मैंने अपने एक विशेष मित्र श्री थियोडोर सिनवेट से तुरन्त मिलने का निर्णय किया, क्योंकि मैं जानता था कि कम से कम यहां तो मुझे निश्चित जानकारी-जैसी कोई न कोई चीज मिल ही जाएगी।

उन्होंने शब्दों को खींचते हुए, अपने खास लहजे में कहा—"स्मिथ ? स्मिथ ? जेनरल जॉन ए० बी० सी० तो नहीं ? किका-पु···पु···पू लोगों के साथ भीषण मामला था, था न ? बोलो। क्या तुम ऐसा नहीं समझते ?—निपट दु स्···सा-ह···मी। बड़ी करुणा की बात है। विलक्षण आविष्कारक युग है। शौर्य की कि···लक्···क्षणता···एं। और हां, यह तो बताओ तुमने कभी कैप्टेन मैन के बारे में सुना है ?"

"भाड़ में जाएं कैप्टेन मैन।" मैंने कहा—"कृपया तुम अपनी कहानी जारी रखो।"

"ओह ! अच्छा ! अच्छा !! स्मिथ ? ब्रिगेडियर-जेनरल जॉन ए० बी० सी० ? मैं कहता हूं—(इस समय श्री एस० ने अपनी नाक की ओर उंगली रखना उचित समझा)। मैं कहता हूं, तुम इस समय यह कहना तो नहीं चाहते कि सचमुच, ईमानदारी के साथ, दरअसल, तुम स्मिथ के उस मामले को उस तरह नहीं जानते जैसा मैं जानता हूं ? स्मिथ ? जॉन ए० बी० सी० ? क्यों, मुझे माफ करो, वही है वह आ···आ···द···द···मी···"

मैंने विनयपूर्वक पूछा—"श्री सिनीवेट ! क्या वह छद्मवेशी हैं ?"

"न···नहीं। पर न तो वह चांद में रहनेवाला आदमी है !"

मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि ऐसा जवाब देकर जान-बूझकर मेरा अपमान किया गया है। मैंने घोर असन्तोष के साथ तुरन्त वह स्थान छोड़ दिया, और पक्का निश्चय कर लिया कि इस असज्जनोचित आचरण तथा दुःशील के लिए शीघ्र ही मैं श्री सिनीवेट से समझ लूंगा।

किन्तु जो जानकारी मैं चाहता था उसके लिए इस तरह की बाधाओं के बाद भी मैं निराश नहीं हुआ। अभी इसके लिए एक स्रोत बाकी था। मैं सीधे फुहारे के पास ही जाऊंगा ; मैं खुद जेनरल से भेंट करूंगा और उनसे इस जघन्य रहस्य-खण्ड का साफ शब्दों में समाधान करने के लिए कहूंगा। कम से कम वहां तो वाक्छल के लिए कोई अवसर नहीं रहेगा। मैं स्पष्ट, निश्चयात्मक और निर्णायक रूप ग्रहण करूंगा। मैं गुझिया की भांति छोटा और टैसीटस या माण्टेस्क्यू[1] की भांति संक्षिप्त रहूंगा।

मैं बड़े तड़के ही वहां जा पहुंचा। मालूम हुआ कि जेनरल अभी परिधान-सज्जा में लगे हैं। मैंने कहलाया कि मैं अविलम्बनीय कार्य से आया हूं। एक बूढ़े हब्शी खिदमतगार ने, जो उस समय मौजूद था, तुरन्त मुझे शयनागार में पहुंचा दिया। कमरे में पहुंचते ही मैंने गृहस्वामी के लिए इधर-उधर नजर दौड़ाई किन्तु मुझे उस समय उसका दर्शन नहीं हुआ। मेरे रास्ते में पांव के पास बहुत भद्दा दिखनेवाला कोई एक गट्ठर पड़ा था, चूंकि उस समय मैं बहुत प्रसन्न मुद्रा में नहीं था, मैंने उसे ठोकर मार-कर एक तरफ हटा देने की कोशिश की।

"ओह ! ओह ! कैसा शिष्टाचार है!" गट्ठर से बहुत धीरे से, दुर्बलतम और अत्यन्त विचित्र स्वर में, चीक और सिसकारी के बीच, एक आवाज निकली—ऐसी आवाज जो मैंने जीवन में और कभी नहीं सुनी।

मैंने आतंकित होकर, करीब-करीब चिल्लाकर, कहा—"हां, मैं देखता हूं कि यह शिष्टाचार तो है ही।" और तेजी से कमरे के दूसरी छोर पर जा पहुंचा।

गट्ठर से फिर सिसकारी-सी फूटी—"मेरे प्यारे दोस्त ! ईश्वर मुझ-पर कृपालु हों। क्या···क्या···क्या···क्यों···क्या मामला है ? मुझे सच-मुच विश्वास है कि आप मुझे बिलकुल नहीं जानते।"

जहां तक मेरे लिए सम्भव था, दीवार के पास जाकर और प्रतिवाद की मुद्रा में दोनों हाथ उठाए हुए मैंने कहा—"नहीं···नहीं···नहीं। तुमको

१. प्रसिद्ध विचारक और लेखक।

नहीं जानता—तुमको जानता—तुमको जानता—तुमको बिलकुल नहीं जानता।" और गट्ठर पर आंखें गड़ाए हुए मैंने उस हब्शी खिदमतगार की ओर एक बार असन्तोषपूर्ण तिरछी नज़र फेरते हुए पूछा—"तुम्हारे मालिक कहां हैं ?"

"हा ! हा ! हा ! ही ! ही ! ही !" मानव-परिवार के उस मज़ेदार नमूने ने ठहाका मारकर कहा। उस समय उसका मुंह कानों तक फैल गया था और उसकी तर्जनी उंगली मुंह के पास तक उठकर उस गट्ठर की ओर इस प्रकार इशारा कर रही थी जैसे पिस्तौल से उसका निशाना साध रही हो।

"हा ! हा ! हा! ही! ही!ही! क्या? आप मास(मास्टर, मालिक) स्मिफ (स्मिथ) को चाहते हैं ? क्यों, वही तो है।"

इसपर मैं क्या कह सकता था—क्या कह सकता था ? लड़खड़ाकर मैं एक आरामकुर्सी पर बैठ गया, और फैली हुई आंखों तथा खुले मुंह से उस महदाश्चर्य के समाधान की प्रतीक्षा करने लगा।

उसी गट्ठर से फिर आवाज़ आई—"विचित्र बात है कि आप मुझे नहीं जानते, है न ऐसा ही ?" मैंने देखा कि वह गट्ठर फर्श पर पड़ा अव्याख्येय रूप में, कुछ विकसित होता जा रहा है। किन्तु अब भी सिर्फ एक पांव दिखाई पड़ रहा था।

"आश्चर्य है कि तुम मुझे नहीं जानते। यही बात है न ? पाम्पी, वह पांव मुझे दो।" बस, पाम्पी ने गट्ठर को एक बहुत सुन्दर कार्क का बना पांव, जो अच्छी तरह वस्त्राच्छादित था, दे दिया। गट्ठर ने उसे क्षण-भर में पेंच से कस लिया और तब मेरी आंखों के सामने सीधा खड़ा हो गया।

जैसे स्वगत कहते हुए वह बोला—"बड़ी खूंखार लड़ाई थी वह। किन्तु किसीको बगाबुओं और किकापुओं से लड़ना ही नहीं चाहिए, क्योंकि उनसे लड़ते हुए यह सोचना कि सिर्फ नोच-खरोंच के साथ लौट आवेंगे, मूर्खता है। पाम्पी, यदि तुम वह बांह उठा दो तो मैं तुम्हारा धन्यवाद करूंगा। (फिर मेरी ओर मुड़कर) कार्क के नकली पांव के लिए टामस

निश्चय ही सर्वोत्तम कारीगर है, वह ७९ नम्बर रेस स्ट्रीट में रहता है। मैं तुम्हें उसके पते का कार्ड ही दे दूंगा, किन्तु मेरे दोस्त, यदि तुम्हें कभी बांह की ज़रूरत पड़े तो उसके लिए मैं विशप के नाम की सिफारिश करूंगा।" अब पाम्पी ने बांह उठाकर कस दी।

"तुम कह सकते हो कि उस लड़ाई में हमें बड़ी मुसीबत उठानी पड़ी। ओ सुअर! मेरे कंधे और सीना भी लगा दे न। पेटिट सर्वोत्तम कंधे बनाता है किन्तु सीने के लिए तुम्हें डकरो के पास जाना पड़ेगा।"

"सीना!" मैंने कहा।

"पाम्पी, क्या तुम अभी तक उस गलमुच्छे को तैयार नहीं कर पाए? खोपड़ी का ऊपरी आवरण बनाना मुश्किल काम है, किन्तु तुम दाल ओर्मे के यहां सिर का ऐसा सुन्दर केशावरण प्राप्त कर सकते हो।"

"सिर का केशावरण?"

"अरे ओ हब्शी के बच्चे! मेरी दंतावली? अच्छी दंतावली के लिए तुम्हें तुरन्त पार्मलीज के यहां जाना चाहिए; दाम तो ज्यादा लेता है परन्तु काम अच्छा करता है। बगाबू नायक ने अपनी राइफल के कुंदे से मेरा भुर्ता बना दिया तो मुझे कितनी ही चीजें निगलनी पड़ीं (दांत टूटकर पेट में चले गए)।

"राइफल का कुंदा! गिराकर भुर्ता कर दिया—अरे मेरी आंखें! हां, हां, मेरी आंखें—पाम्पी, सुअर के बच्चे, इन्हें लगा दे न। ये किकापू आंख निकाल लेने में सुस्ती नहीं करते। किन्तु वह चतुर शिल्पी है, वह डाक्टर विलियम्स। तुम कल्पना नहीं कर सकते कि उसकी बनाई हुई आंखों से मैं कितनी अच्छी तरह देखता हूं।"

अब मेरी समझ में यह साफ-साफ आने लगी कि मेरे सामने जो व्यक्ति है वह मेरा नव-परिचित ब्रेवेट ब्रिगेडियर जेनरल जॉन ए० बी० सी० स्मिथ के सिवा और कोई नहीं है। पाम्पी द्वारा विविध अंगों के लगा देने के बाद उस आदमी के रूप-रंग में विचित्र परिवर्तन दिखाई पड़ा। हां, आवाज अब भी मुझे परेशानी में डाले हुए थी, किन्तु वह रहस्य भी शीघ्र ही खुल गया।

जेनरल ने चीखकर कहा—"पाम्पी, ओ सुअर ! मैं समझता हूं कि जीभ के बिना ही मुझे बाहर जाना पड़ेगा।"

अब हब्शी माफी मांगते हुए, अपने मालिक के पास गया और उनका मुंह खोलकर विचित्र-सी दीख पड़नेवाली कोई मशीन ऐसी चतुराई के साथ फिट कर दी कि मैं उसकी कल्पना भी नहीं कर सका। परन्तु वैसा करते ही, पलक मारते, जेनरल का सारा चेहरा-मोहरा बदल गया। अब जब वह बोला तो उसकी आवाज में वही सुरीलापन और शक्ति आ गई थी जो मैंने पहिली बार परिचय के समय देखी-सुनी थी।

"बदमाशों का नाश हो।" उसने ऐसी स्पष्ट वाणी में कहा कि मैं चकित हो उठा—"बदमाशों का नाश हो। उन्होंने न केवल मेरे मुंह और तालु पर आघात किया बल्कि कम से कम सात बटे आठ भाग मेरी जीभ भी काट ली। जीभ आदि बनाने में, सम्पूर्ण अमेरिका में बोनफाण्टी के बराबर दूसरा आदमी नहीं है। मैं विश्वासपूर्वक तुमसे उसकी सिफारिश कर सकता हूं (यहां जेनरल अभिवादन की मुद्रा में झुका) और ऐसा करने में मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है।"

मैंने यथासम्भव सर्वोत्तम रूप में उसकी इस कृपा को स्वीकार किया और अपने मित्र से तुरन्त विदा लेकर आ गया। इस समय मैं सारे मामले को अच्छी तरह समझ चुका था और उस रहस्य का भी मुझे पूरा ज्ञान हो चुका था, जिसने इतने लम्बे अर्से तक मुझे परेशान रखा था। अब सब कुछ प्रत्यक्ष था। मामला बिलकुल साफ था। ब्रेवेट ब्रिगेडियर जेनरल जॉन ए० बी० सी० स्मिथ ही वह आदमी था,—

वह आदमी जो चुक गया था !

भुतहा मकान

वह शरद का एक उदास, अंधेरा और निस्तब्ध दिवस था। आसमान में बादल बहुत नीचे तक झुक आए थे। सारे ही दिन मैं अपने घोड़े पर चढ़ा देश के एक अत्यन्त निर्जन प्रान्त में चलता रहा था; अन्त में शाम होते-होते मुझे विषादपूर्ण अशर भवन की झलक दिखाई पड़ी। मैं नहीं जानता कि बात क्या थी किन्तु उस इमारत की पहली झलक के साथ ही मेरे अंदर एक असहनीय उदासी-सी छा गई। मैं उसे ठीक ही असहनीय कह रहा हूं, क्योंकि वीरान या भयानक की कठोर से कठोर प्राकृतिक प्रतिमाओं को भी मन सामान्यतः जिस आधे सुख की भावना के साथ ग्रहण करता है और जिसके कारण उदासी एवं दुःख की मात्रा कम हो जाती है, वह यहां अनुपस्थित थी। मैं अपने सामने फैले दृश्य को, उस इकले मकान को, प्रदेश की सीधे-सादे भूदृश्यों से पूर्ण विशेषताओं को देखता रहा। फिर फीकी दीवारों, खुली आंखों-जैसी खिड़कियों, इधर-उधर उगे कुरूप पौधों को, जीर्ण वृक्षों के सफेद तनों को आत्मा की ऐसी घोर थकान के साथ ताकने लगा जिसकी शायद मैं अफीमचियों के दिवास्वप्नों या पिनकों के साथ ही तुलना कर सकता हूं—जैसे बहुत ही सामान्य जीवन में मेरा पतन हो गया हो—जैसे पर्दा भयानक रूप से गिर गया हो। हृदय बर्फ की भांति ठण्डा और कठोर हो गया। लगा, जैसे वह डूबा जा रहा है, रोगी-दुःखी हो गया है। विचारों में समाप्त न होनेवाली ऐसी खिन्नता छा गई कि कल्पना की कोई स्फूर्ति उन्हें उदात्त की सीमा तक ले जाने में समर्थ न थी। मैं ठहरकर सोचने लगा कि यह क्या बात है; वह क्या है जिसने अशर भवन का ख्याल आते ही, मुझे इस तरह शिथिल कर दिया है? यह एक ऐसा रहस्य था, जिसका

कोई समाधान नहीं दीख पड़ता था। फिर ज्यों-ज्यों मैं विचार करने लगा, मेरे मन पर कितनी ही ऐसी छायामयी कल्पनाएं छा गईं, जो मेरी पकड़ में नहीं आती थीं। तब मैं इस असन्तोषजनक निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए बाध्य हो गया कि निःसंशय, अत्यन्त सरल प्राकृतिक पदार्थों के ऐसे समुच्चय होते हैं जो इस प्रकार हमें प्रभावित करने की सामर्थ्य रखते हैं किन्तु उन शक्ति के कारणों की जानकारी या विश्लेषण कर सकना—हमारे वश के बाहर है। मैं सोचने लगा कि दृश्य की विशेषताएं या चित्र के ब्यौरों के क्रम की भिन्नता मात्र दुःखपूर्ण छाप के बल को पूर्णतः नष्ट कर देने या उसे कम कर देने को काफी होगी। इस विचार पर आचरण करते हुए मैं अपने घोड़े की लगाम खींचकर और उसे आगे बढ़ाकर एक ऐसी काली एवं धुंधली झील की ढलुई कगार पर पहुंच गया जो इमारत के पास अपनी शान्त प्रभा में फैली हुई थी। वहां से एक ऐसी थरथराहट के साथ जो पहिले से अधिक उत्तेजनकारी थी, मैंने नीचे की ओर भूरी सेवार की (झील में पड़ती) उलटी परछाइयों, वृक्षों के भयानक तनों तथा रिक्त और आंखों-जैसी खिड़कियों पर अपनी नज़र गड़ा दी।

यह सब होने पर भी मैंने अपने कुछ सप्ताहों के इस प्रवास को उसी शोकाच्छन्न हवेली में बिताने का निश्चय किया। उसके स्वामी रोडेरिक अशर बचपन के मेरे अत्यन्त सदय मित्रों में थे, पर उनसे मिले अब कई साल बीत चुके थे। किन्तु पिछले दिनों उनका एक पत्र देश के सुदूर भाग में मुझे मिला था, जिसके अति आवश्यक रूप का जवाब स्वयं उपस्थित होकर ही दिया जा सकता था। पत्र की लिखावट से स्नायविक उत्तेजना का प्रमाण मिलता था। उसमें लेखक ने तीक्ष्ण शारीरिक अस्वस्थता की बात लिखी थी—उनके विचार से वह एक दयनीय मानसिक रचना से दबे जा रहे थे। अपने सर्वोत्तम, बल्कि एक मात्र निजी मित्र के रूप में उन्होंने मुझे देखने की उत्कट इच्छा प्रकट की थी। उनका ख्याल था कि शायद मेरी संगत की प्रफुल्लता से उनके रोग का शमन होने में एक सीमा तक सहायता मिलेगी। यह सब, और इससे अधिक भी और बहुत-सी बातें जिस ढंग पर

लिखी गई थीं—तथा उनके अनुरोध में उनके हृदय का जो प्रतिबिम्ब था—उसके कारण मेरे लिए हिचकिचाहट की कोई गुंजाइश न रह गई थी, और मैंने उनके अनुरोध को, जिसे मैं अब भी असाधारण समझता हूं, तुरन्त स्वीकार कर लिया।

यद्यपि बचपन में हम घनिष्ठ मित्र और सहयोगी थे किन्तु सच पूछें तो मुझे अपने मित्र के बारे में बहुत ही कम ज्ञान था। उनकी गम्भीरता अत्यधिक तथा स्वभावगत हो गई थी। मुझे इतना पता तो था कि उनका अत्यन्त प्राचीन वंश स्वभाव के एक विचित्र अनुभव, मिजाज के एक अनोखे एहसास के लिए प्रसिद्ध रहा है और वह लम्बे युगों के बीच भव्यकला की अनेक कृतियों के रूप में अपने को अभिव्यक्त करता आया है। और पिछले दिनों भी उदार परन्तु संकोचयुक्त दान-दाक्षिण्य के बार-बार किए जानेवाले कामों में प्रकट होता रहा है। इसके अतिरिक्त संगीतविज्ञान के पारम्परिक एवं आसानी से पहिचान में आनेवाले सौन्दर्य की अपेक्षा शायद उसकी जटिलताओं के प्रति उसकी और भी भावमयी भक्ति रही है। इन बातों के अलावा इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथ्य का पता भी मुझे लग गया था कि अशर जाति के तने से, उसके युगों से सम्मानप्राप्त होते हुए भी, किसी भी समय कोई कालजयी शाखा नहीं फूटी, दूसरे शब्दों में सारा कुटुम्ब सीधी सन्तति के रूप में ही चलता आया है। जब मैं अपने विचार-जगत् में उन लोगों के प्रकट स्वभाव के साथ मकान के स्वभाव की पूर्ण एकता की बात लेकर भ्रमण कर रहा था और जब मैं उस सम्भव प्रभाव की बात सोच रहा था जो शताब्दियों के लम्बे व्यवधान में एक ने दूसरे पर डाला होगा तो मैं इसी अयोग्यता, इसी कमी की बात सोच रहा था। शायद पार्श्ववर्ती या गोत्रज संतति के इस अभाव तथा उसके परिणामस्वरूप नामयुक्त दायभाग—विरासत—के बराबर पिता से पुत्र के प्रति इस हस्तान्तरण के कारण ही रियासत के मूल नाम की जगह यह अनोखा संशयपूर्ण नाम—अशर भवन—पड़ गया होगा। यह एक ऐसा नाम था जो इसका उपयोग करनेवाले किसानों के बीच, वंश एवं वंशगत हवेली

दोनों के लिए प्रयुक्त होता था।

मैंने ऊपर कहा है कि ऊपर से झील के अन्दर देखने के मेरे बालकोपम (मूर्खतापूर्ण) प्रयोग का एक मात्र परिणाम यही हुआ कि मेरा वह पहिला विलक्षण प्रभाव और गहरा हो गया। इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि मेरे अन्धविश्वास में तीव्र वृद्धि की चेतना में—मैं क्यों न इसे ऐसा कहूं?—स्वयं उस वृद्धि की गति को और तेज़ कर देने का ही काम किया। मैं बहुत पहिले से इस बात को जानता रहा हूं कि आतंक के मूलाधार से पैदा होने-वाले सभी मनोवेगों पर परस्पर विरोध का यह नियम लागू होता है। और शायद यही एक कारण रहा होगा कि जब मैंने झील में पड़नेवाली भवन की परछाई से अपनी आंखें फिर भवन की ओर उठाई तो मेरे मन में एक विचित्र कल्पना उठ खड़ी हुई—एक हास्यास्पद कल्पना जिसका जिक्र मैं केवल इसलिए कर रहा हूं कि जो मनोवेग मुझे पीड़ित कर रहा था उसकी प्रबल शक्ति को व्यक्त कर सकूं। मैंने अपनी कल्पना को इतना प्रभावित कर लिया था कि मुझे सचमुच विश्वास हो गया कि सम्पूर्ण हवेली और तत्सम्बद्ध क्षेत्र में एक विचित्र वातावरण फैला हुआ है—ऐसा वातावरण जिसका आकाश की मुक्तवायु के साथ कोई वास्ता नहीं है बल्कि जो जीर्ण-शीर्ण वृक्षों, भूरी दीवार, तथा प्रशान्त झील से एक अप्रसरणशील भाप या गैस के रूप में उठ रहा है और जो सुस्त, निष्क्रिय, आभासिक और सीसे जैसी आभावाला है। कुछ देर बाद इस चेतना को, जो निश्चय ही स्वप्न रूप रही होगी, बलात् दूर करके मैंने और अच्छी तरह से उस इमारत को देखना शुरू किया। मुझे लगा कि उसकी मुख्य विशेषता उसकी अत्यन्त प्राचीनता ही है। लम्बे युगों ने उसे बड़ा बदरंग बना दिया था। सम्पूर्ण बाह्याकृति कीड़ों-मकोड़ों और मकड़ियों के जाले से भरी हुई थीं किन्तु इन सबके बावजूद इमारत में विशेष ध्वंस या टूटफूट के चिह्न नहीं थे। कहीं से कोई चुनाई गिरी नहीं थी, किन्तु जब एक ओर वह अपने सम्पूर्ण अंग-उपांगों के साथ खड़ी हुई थी तो दूसरी ओर अलग-अलग छिद्रयुक्त पत्थरों को देखने से उसमें क्षय या बरबादी के चिह्न स्पष्ट दिखाई पड़ते थे। इन दोनों

स्थितियों के बीच विचित्र विरोध था। इमारत में बहुत कुछ ऐसा था जो ऐसी पुरानी श्रेष्ठ काठ की चीज़ों की याद दिलाता था जो युगों तक किसी तहखाने में पड़ी रही हों और जिन्हें बाहर की हवा न लगी हो। व्यापक ह्रास के इन संकेतों के अलावा इमारत में कमज़ोरी या अस्थायित्व के और कोई लक्षण नहीं थे। शायद बड़े ध्यान से जांच-पड़ताल करनेवाले निरीक्षणकर्ता को सामने की ओर छत से निकलकर टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं में दीवार के नीचे तक फैली और झील के निष्कम्प जल में खो जानेवाली कोई दरार दिखाई पड़ जाए, तो दूसरी बात है।

इन सब बातों को देखता हुआ एक छोटे रास्ते से मैं भवन तक पहुंचा। एक खिदमतगार ने मेरे घोड़े को थाम लिया और मैंने हाल को जानेवाले गाथिक गुम्बददार मार्ग में प्रवेश किया। वहां से एक चाकर, चुपचाप अनेक अंधेरे और जटिल मार्गों से मुझे अपने मालिक के कक्ष की ओर ले चला। रास्ते में मैंने जो कुछ देखा उससे मेरे उन अस्पष्ट मनोवेगों में वृद्धि ही होती गई जिनके बारे में मैं पहिले कह चुका हूं। मेरे चारों ओर की वस्तुएं जैसे छतों की नक्काशियां, दीवारों के धूमिल पर्दे, फर्श की आबनूसी श्यामता, मेरे पदचाप से खड़खड़ाती हुई छायाचित्रों-सी कुल-चिह्नवाली ट्राफियां, सब ऐसी थीं जिन्हें मैं बचपन से ही देखने का अभ्यस्त था। यद्यपि इसे न स्वीकार करने में मैं हिचकिचाता था (कि वह सब मेरे लिए कितना परिचित था), फिर भी यह देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा था कि वे मामूली चीज़ें मुझ में जो कल्पाएं लगा रही हैं वे कितनी अपरिचित हैं। ऊपर चढ़ते हुए एक सीढ़ी पर परिवार के चिकित्सक से मेरी भेंट हो गई। उसे देखकर मैंने सोचा कि उसके चेहरे पर हलकी चालबाज़ी और परेशानी का मिला-जुला भाव है। उसने कांपते हुए मुझे सलाम किया और आगे बढ़ गया। अब नौकर ने एक दरवाज़ा खोला और मुझे अपने मालिक के कमरे में प्रविष्ट कर दिया।

अब मैंने अपने को जिस कमरे में पाया वह बहुत बड़ा तथा असामान्य रूप से ऊंचा था। खिड़कियां लम्बी, संकरी और नुकीली थीं, और काले

बलूती फर्श से इतनी अधिक ऊंचाई पर थीं कि अन्दर से उन तक पहुंचना असम्भव था। जालीदार शीशों से छनकर आती हुई लालिमायुक्त ज्योति में मेरे इर्द-गिर्द के अपेक्षाकृत बड़े पदार्थ स्पष्ट दिखाई पड़ रहे थे, किन्तु आंखें कमरे के सुदूर कोनों अथवा गुम्बदयुक्त जालीदार छत तक पहुंचने में असमर्थ हो रही थीं। दीवारों पर गहरे रंग के पर्दे पड़े हुए थे। सामान्यतः फर्नीचर परिमाण में अधिक, कष्टप्रद, जीर्ण एवं जर्जर था। बहुत-सी किताबें एवं वाद्ययंत्र जहां-तहां फैले हुए थे किन्तु दृश्यपट को जीवन-शक्ति देने में असमर्थ थे मुझे अनुभव हुआ कि मैं शोकमग्न वातावरण में सांस ले रहा हूं। वहां कठोर, गहरे और अविमोच्य विषाद का वातावरण छा रहा था और सब वस्तुओं में समा गया था।

मेरे प्रवेश करनेपर अशर एक सोफे से,जिसपर वह पांव लम्बेकर लेटा हुआ था, उठा और ऐसे प्रसन्नता-भरे जोश के साथ मेरा स्वागत किया कि मुझे पहिले प्रतीत हुआ कि उसमें अत्यभिनीत मैत्री का, दुनियादार आदमी के बलात् प्रयत्न द्वारा प्रकट सौहार्द का भाव है। किन्तु उसके चेहरे पर नजर पड़ते ही मुझे उसकी पूर्ण निश्छलता का विश्वास हो गया। हम दोनों बैठ गए, और कुछ देर तक, जब वह चुप था, मैं उसकी ओर कुछ दया और कुछ विस्मय के साथ देखता रहा। मुझे निश्चय हो गया कि रोडरिक अशर जिस प्रकार बदल गया है इतनी छोटी अवधि में वैसा भयानक परिवर्तन किसी मनुष्य में न हुआ होगा। बड़ी कठिनाई से मैं विश्वास कर सका कि मेरे सामने बैठा हुआ आदमी मेरे प्रारम्भिक बालपन का वही साथी है। फिर भी उसके चेहरे की बनावट सदा ही आकर्षक रही है। मुर्दे का-सा पीला रंग, बड़ी-बड़ी आर्द्र एवं अनुपम रूप से प्रकाशमान आंखें, पतले, अत्यन्त विवर्ण परन्तु बहुत ही सुन्दर मोड़वाले ओंठ, सूक्ष्म यहूदी माडेल की नाक किन्तु ऐसी बनावटों के लिए असाधारण रूप से चौड़े नथने, सुन्दरतापूर्वक ढला चिबुक, जो ऊंचा उठा न होने में नैतिक स्फूर्ति के अभाव की सूचना दे रहा था, मकड़ी के जाले से भी पतले और मुलायम बाल, ये विशेषताएं तथा कनपटी के ऊपरी भाग का असाधारण विस्तार

सब मिलकर एक ऐसी मुखाकृति की रचना करते थे जिसे आसानी से भुला नहीं जा सकता । किन्तु, इन विशेषताओं की प्रभुताशालिनी प्रकृति तथा उनसे जो अभिव्यक्ति इस समय फूट रही थी। उनके बीच इतना अधिक परिवर्तन दिखाई पड़ता था कि मुझे यही सन्देह होने लगा कि मैं बातें किससे कर रहा हूं। इस समय चमड़ी पर जो डरावना पीलापन छा रहा था तथा आंखों में जो विलक्षण चमक आ गई थी उसने मुझे सबसे ज्यादा चौंकाया, बल्कि भीत कर दिया। रेशमी बाल भी, बिना किसी संभाल के, जहां-तहां उग रहे थे, और अपनी उद्धत बारीक रचना के साथ, वे सिर से नीचे आने की जगह मानो उसपर तैर रहे थे और उनको देखकर चेष्टापूर्वक भी उनके बेढंगेपन के साथ सरल मानवता के किसी विचार का तारतम्य बैठाने में मैं अपने को असमर्थ पाता था।

अपने मित्र के आचरण में एक असम्बद्धता—एक असंगति की ओर तुरन्त मेरा ध्यान गया, और मुझे जल्द ही मालूम हो गया कि यह सब अपने स्वभावजन्य कम्पन, अपने अत्यधिक स्नायविक उत्तेजन पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए किए गए क्षीण एवं निरर्थक संघर्षों की मालिका के कारण उत्पन्न हुआ है। उसके पत्र से और बाल्यकाल की कुछ आदतों की स्मृतियों के कारण तथा उसकी विलक्षण शारीरिक बनावट एवं स्वभाव के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों के कारण भी मैंने इस प्रकार की किसी न किसी बात के लिए अपने को तैयार कर रखा था। कभी वह उल्लसित हो उठता, कभी विषण्ण हो जाता था। यही परिवर्तन उसकी वाणी में भी दिखाई पड़ता था। जब पाशविक आवेश पूर्णतः विलुप्त हो जाता था तब उसकी आवाज में एक प्रकार की कम्पनशील अनिश्चितता रहती थी किन्तु शीघ्र ही वह एक ऐसे ऊर्जस्वित संक्षिप्त उद्‌गारों की प्रजाति में परिवर्तित हो जाती थी—वह आकस्मिक, वजनदार, स्वराहीन, रिक्त-सी लगनेवाली व्याख्या—वह सीसे-सी, स्वयं-संतुलित तथा पूर्णतः आरोह-अवरोहयुक्त सधी कण्ठध्वनि जो नशे में धुत पियक्कड़ अथवा असंशोधनीय अफीमची के गम्भीरतम उत्तेजन के क्षणों में दिखाई-सुनाई पड़ती है।

इसी प्रकार वह मेरे आगमन के हेतु, मुझे देखने की अपनी एकाग्र कामना तथा मेरे द्वारा उसे प्राप्त होनेवाली सान्त्वना के विषय में बात करता रहा। किंचित् विस्तार के साथ उसने बताया कि वह खुद अपने रोग की प्रकृति के बारे में क्या ख्याल रखता है। उसने कहा कि यह एक शरीर-रचना का क्रिया-गत एवं पारिवारिक दोष है; यह एक ऐसा दोष है जिसकी ओषधि खोजने में वह निराश हो चुका है। इसके तुरन्त बाद ही उसने कहा—यह केवल एक स्नायविक व्याधि है जो निश्चित रूप से शीघ्र ही दूर हो जाएगी। वह अनेक अप्राकृतिक मनोवेगों में अपने को प्रकट करती है। जब वह उनका ब्यौरेवार वर्णन करने लगा तो उनमें से कुछ ने मुझे आकर्षित एवं विस्मित कर दिया—यद्यपि, सम्भवतः कथा जिस ढंग से कही जा रही थी उसका बोझ भी मैं अनुभव कर रहा था। वह इन्द्रियों की अस्वस्थ तीक्ष्णता बहुत से पीड़ा पा रहा था; केवल अत्यन्त फीका और स्वादहीन भोजन ही वह ग्रहण कर पाता था; कुछ खास बुनावट के कपड़े ही वह पहन सकता था; समस्त फूलों की सुगन्ध उसके लिए उत्पीड़नकारी थी; हलकी रोशनी में भी उसकी आंखें दुखने लगती थीं; तंत्रवाद्यों से निकलनेवाली विचित्र ध्वनियां उसे सुनाई पड़ती थीं किन्तु वे उसे आतंकित नहीं कर पाती थीं।

मैंने पाया कि वह भय की विशृंखल प्रजातियों का प्रतिबद्ध दास बन गया है। उसने कहा—"मैं इस शोचनीय व्याधि में नष्ट हो जाऊंगा—मुझे नष्ट होना ही है। इस तरह, बस इसी तरह, और किसी तरह नहीं, मैं विलीन हो जाऊंगा। मैं भविष्य में होनेवाली घटनाओं से डरता हूं। वे घटनाएं खुद अपने तईं डरावनी नहीं हैं, किन्तु अपने परिणाम में भयानक हैं। मैं ऐसी, किसी भी घटना, फिर चाहे वह बिलकुल मामूली ही क्यों न हो, का ख्याल आते ही कांप उठता हूं, जो आत्मा के इस असहनीय कम्पन को प्रभावित करती है। निश्चय ही उसके पूर्ण प्रभाव को छोड़, खतरे से मुझे कोई भय नहीं लगता। मुझे अनुभव होता है कि घबराहट की, इस दमनीय स्थिति में, भय के घातक राक्षस के साथ संघर्ष करते हुए, मुझे जीवन और विवेक दोनों का अनिवार्यतः त्याग करना पड़ेगा।"

बीच-बीच में, और खण्डित तथा अस्पष्ट संकेतों द्वारा मुझे उसकी मानसिक दशा की एक और अनोखी बात मालूम हुई। जिस इमारत में वह रह रहा था और जिसके बाहर वह वर्षों से निकला नहीं था, उसके विषय में वह कई अन्धविश्वासपूर्ण विचारों से जकड़ा हुआ था। उसे एक ऐसे प्रभाव का अनुभव होता था जिसकी कल्पित शक्ति का उसने ऐसे धुंधले और छायात्मक रूप में वर्णन किया कि उसे यहां फिर से दोहराना मुश्किल है। मतलब उसने एक ऐसे प्रभाव की बात कही जो उसके पारिवारिक भवन के केवल आकार और सामग्री की कुछ विशिष्टताओं ने, लम्बे काल तक अप्रतिरोध के कारण, उसकी मनोदशा पर डाली है—एक प्रभाव जो भूरी दीवारें और बुर्जियों तथा जिस धुंधली झील की ओर वे सब देखती हैं उसकी बनावट ने, उसके जीवन की धृति या मनोरचना पर डाला है।

हिचकिचाहट के साथ उसने यह भी स्वीकार किया कि जो विचित्र विषाद उसपर छा गया है उसके एक ज्यादा स्वाभाविक तथा कहीं ज्यादा प्रत्यक्ष उद्गम की खोज जबर्दस्त तथा लम्बे समय से चल रही उस बीमारी—बल्कि स्पष्टतः आती हुई मौत—में की जा सकती है जो अत्यन्त मृदुल रूप से प्यारी बहिन, और कितने ही वर्षों से उसकी एकमात्र साथी—धरती पर उसकी एक मात्र रिश्तेदार—भोग रही है। ऐसी कटुता के साथ, जिसे मैं कभी भूल नहीं सकता, उसने कहा—"उसकी मौत, अशरों की प्राचीन जाति के अन्तिम चिह्न के रूप में, मुझे अकेली छोड़ जाएगी।" जब वह यह बात कह रहा था तो लेडी मेडेलीन (इस नाम से उसे पुकारा जाता था) कक्ष के सुदूर भाग से धीरे-धीरे गुजरीं और मेरी उपस्थिति पर ध्यान दिए बिना, लुप्त हो गईं। मैंने उनकी ओर अत्यन्त आश्चर्य के साथ, जिसमें भय भी मिला हुआ था, देखा। उनकी शक्ल-सूरत, उनका ढंग, उनकी आकृति—अपने सूक्ष्म से सूक्ष्म विकास में—सब कुछ बिलकुल वैसी ही थी जैसी मेरे पास बैठे हुए रोडेरिक अशर की थी। जब मेरी दृष्टि उनके लौटते पदों का अनुसरण कर रही थी तो मुझे अनुभव हुआ जैसे मुझपर मूर्च्छना छाती जा रही है। जब आखिरकार उनके वहां से निकल जाने पर दरवाजा

बन्द हुआ तो मेरी नज़र स्वभावत: भाई के चेहरे की ओर घूमी किन्तु उसने अपना मुंह झुककर अपने हाथों में छिपा लिया था और मैं इतना ही देख सका कि उसकी सूखी-सिकुड़ी उंगलियों पर, जिनके बीच से होकर कितने ही आविष्ट अश्रुबिन्दु टपक रहे थे, असाधारण पीलापन छा गया है।

लेडी मैडेलीन की बीमारी ने बहुत दिनों से उनके चिकित्सक की बुद्धि को भ्रमित कर रखा था। एक स्थिर उदासीनता, शरीर का क्रमिक क्षय, तथा मृगी जैसा प्राय: आने किन्तु शीघ्र ही शान्त हो जानेवाला दौरा—यही सब असाधारण निदान थे। अभी तक वह स्थिर भाव से अपने रोग का भार उठाए जा रही थी और अन्तिम रूप से खाट नहीं पकड़ी थी। किन्तु जैसा रात को उसके भाई ने अकथनीय उत्तेजना के साथ मुझे बताया कि मकान में मेरे आगमन की संध्या से ही उसने यमराज की विनाशिनी शक्ति के प्रति आत्मसमर्पण कर दिया है—और मुझे ज्ञात हो गया कि उसकी सूरत-शक्ल की जो झलक मुझे मिली वही मेरे लिए अन्तिम होगी,—कम से कम जीवित अवस्था में उस महिला को मैं फिर न देख पाऊंगा।

इसके बाद के कुछ दिनों में न तो उसके भाई ने उसका नाम लिया, न मैंने ही कुछ चर्चा की। इस अवधि में मैंने अपने मित्र का विषाद दूर करने की हर तरह से चेष्टा की। हम साथ-साथ चित्रांकन करते और पढ़ते थे। या फिर मैं बैठ जाता और जैसे स्वप्न में होऊं, उसके वाणी-मुखरित गिटार के उद्दाम स्वर सुनता रहता। ज्यों-ज्यों यह घनिष्ठता गहरी और गहरी होती गई, और मैं उसके अन्तर्मन के क्षेत्रों में अबाध रूप से प्रवेश करता गया त्यों-त्यों अधिकाधिक तीक्ष्णता के साथ मेरे सामने यह बात स्पष्ट होती गई कि ऐसे मानस को प्रसन्न एवं उत्साहित करने की सम्पूर्ण चेष्टा व्यर्थ है जिससे उसीके अन्दर प्रच्छन्न गुण की भांति निकलकर अन्धकार की अजस्रधारा, विषाद के असमाप्य विकिरण की भांति नैतिक एवं भौतिक जगत् के पदार्थ मात्र को डुबाती जा रही है।

अशर भवन के स्वामी के साथ एकान्त में बैठकर बिताए गए अनेक घण्टों की स्मृति सदा मुझमें बनी रहेगी। फिर भी उन सब अध्ययनों या

कार्यों की यथार्थ प्रकृति की कोई धारणा आप तक पहुंचा सकने का मेरा प्रयत्न विफल ही होगा, जिनमें उसने मुझे सम्बद्ध कर दिया या जिनका रास्ता दिखाया। एक उत्तेजित एवं अत्यन्त विपर्यस्त आदर्शवादिता ने सब-पर एक (गन्धकीय) ज्वलन्त दीप्ति फैला दी थी। उसके लम्बे आशु शोकगीत—मर्सिये—सदा मेरे कानों में ध्वनित होते रहेंगे। और चीज़ों के साथ मुझे सदा दुःखपूर्वक इस बात की याद बनी रहेगी कि संगीतकार वान वेबर के अन्तिम चक्रनृत्यगीत (वाल्ज़) की उद्दाम शैली में कैसी अनोखी विकृति एवं वृद्धि उसने की थी। जिन चित्रों पर उसकी विपुल कल्पना विचारमग्न हुई थी और जो उसके स्पर्श के ऊपर स्पर्श से एक ऐसी अस्पष्टता में खो गए थे जिनपर मैं और भी ज्यादा पुलकित होकर कांप उठा था—क्योंकि मैं जानता नहीं था कि क्यों कांप रहा हूं—उन (चित्रों) से मैं एक अल्पांश लेकर विकसित करने की निरर्थक चेष्टा करता था—ऐसे अल्पांश को जो केवल लिखित शब्दों की सीमा में आ सकता हो। अपनी रेखाकृतियों—डिज़ाइनों—की निपट सरलता के कारण, उनकी नग्नता के कारण वह ध्यान और श्रद्धा आकर्षित करता था। यदि कभी कोई आदमी किसी विचार को पेण्ट कर सका हो तो वह आदमी रोडरिक अशर था। उस समय मेरे चतुर्दिक जो परिस्थिति थी, उसमें कम से कम मेरे लिए उस विषादरोगी द्वारा अपने कैनवस—चित्रपट—पर फेंके हुए शुद्ध अमूर्ती-करणों या अमूर्त बिम्बों से ऐसे असहनीय संभ्रम की गहराई फूट रही थी जिसकी एक छाया भी प्रसिद्ध चित्रकार फ़ुसेली के दीप्त परन्तु अत्यधिक ठोस चित्रों को देखते समय मेरे अन्दर नहीं उभरी थी (अर्थात् फ़ुसेली के मनोरम चित्र इतने ठोस थे कि उसकी छाया को भी न छू सकते थे।)

मेरे मित्र की छायाचित्रात्मक धारणाओं में एक ऐसी है जिसमें सूक्ष्मी-करण, अमूर्तीकरण की भावना का उतनी कठोरतापूर्वक पालन नहीं किया गया। उसका शब्दों में एक हलका आभास दिया जा सकता है। इस लघु-चित्र में एक बहुत ही लम्बे और आयताकार तहखाने या सुरंग के भीतरी हिस्से को दिखाया गया था। तहखाने या सुरंग की दीवारें नीची, चिकनी,

सफेद तथा सपाट हैं। चित्र के कतिपय सहकारी संकेतों से मालूम होता था कि कक्ष पृथ्वीतल के नीचे बहुत गहराई पर स्थित है। उसके महद् विस्तार के किसी भाग में भी निकासी का कोई मार्ग नहीं था, न उसमें किसी प्रकार के प्रकाश का कोई कृत्रिम स्रोत या उपाय था—फिर भी प्रबल किरणों की धारा फैली हुई थी और सब कुछ भयानक एवं असंगत ज्योति में डूबा था।

मैंने ऊपर रोगी के श्रवणेन्द्रिय की स्नायु की अवस्थ दशा की बात कही है, जिसके कारण उसके लिए, तंत्रवाद्यों की कुछ ध्वनियों को छोड़कर, हर तरह का संगीत असह्य हो गया था। एक तरह से उसने अपने को गिटार की संकुचित सीमा में बन्दी कर लिया था। बहुत कुछ यही उसकी वाद्य-कला के अनोखेपन का कारण था। किन्तु जिस उत्तप्त सरलता से वह अपनी आशु कविताएं करता था, उसका कोई कारण नहीं बतलाया जा सकता। उसकी इस अद्भुत कल्पनासृष्टि के स्वर और शब्द शायद उस गहरे मनोसंचय एवं केन्द्रीकरण के परिणाम होंगे जो अत्युत्कृष्ट कृत्रिम उत्तेजन या स्फूर्ति के विशिष्ट क्षणों में ही दिखाई पड़ता है। इन भावमयी असम्बद्ध कविताओं में से एक के शब्द अब भी मेरी स्मृति में बने हुए हैं। शायद जिस रूप में उसने इसे सुनाया होगा उससे मैं बहुत ज्यादा प्रभावित हुआ हूंगा। मैंने उसके आशय की जिस रहस्यमयता की कल्पना की उसमें मेरे मन में यह भावना उदय हुई कि अशर को पहली बार इस बात की पूरी चेतना हुई है कि उसका उच्च विवेक इस कल्पनाकाव्य के सिंहासन पर टूटकर बिखर गया है। इन पद्यों को उसने 'भुतहा महल' के शीर्षक से लिखा था और उसकी चन्द पंक्तियां नीचे दी जाती हैं :

(१)

दिव्य देवदूतों से पूरित हरित तलहटी में गिरिवर की,
ऊंचा मस्तक किये खड़ा था कभी एक प्रासाद निरन्तर।
वह तुषार-सा धवल महल था, भव्य रूप-महिमा से मण्डित,
और बना था वह *विचार* राजाधिराज के राजक्षेत्र में।

उसकी आधी भी सुंदरता होगी और न किसी भवन में,
जिसपर देवदूत ने अपने पंखों से छाया की होगी।

(२)

पीत, भव्य, सौन्दर्य-समन्वित, उषा-किरण-सी अतिशय स्वर्णिम
उच्च पताकाएं उड़ती थीं उसके मंगलमय शिखरों पर।
(है प्राचीन युगों की गाथा, बहुत दिनों की मर्म कथा है)
मधुर और सुखकर उस युग में शीतल मंद सुगंध समीरण।
इठलाता इसके प्राचीरों पर सुगंध की वर्षा करता।

(३)

उस सुखकर घाटी के यात्री द्वय प्रकाशपूरित गवाक्ष से
देखा करते थे भूतों का नृत्य, मधुर वीणा के स्वर पर—
जो होता था अग्निवर्ण उस सिंहासन के पास चतुर्दिक।
और वहां उस सिंहासन पर महती निज महिमा से मण्डित,
बैठ सहज वैभव में राजा देखा करते थे यह नर्तन।

(४)

मुक्ता और लाल मणि-मण्डित सिंहद्वार था हृदय-विमोहक,
उससे प्रतिध्वनियों के अगणित चारणदल आते रहते थे—
जिनका मधुर धर्म था मंजुल सुन्दरता के मृदुल स्वरों में
अपने राजा के विवेक-प्रज्ञा की विरुदावली सुनाना।

(५)

किन्तु शोकदर्शक परिधानों में प्रेतों ने किया आक्रमण
ध्वस्त कर दिया राजा का वह सुख से पूरित राज्य मनोरम
(आओ रो लें, क्योंकि न होगा फिर प्रभात उस वीराने में)
और भवन में तथा चतुर्दिक जो समृद्धि हंसती-खिलती थी,
आज जीर्ण युग की समाधि में दफनाई वह, धुंधली स्मृति है।

(६)

यात्रीगण अब भी उस घाटी की यात्रा करने आते हैं,
किन्तु देखते अब वे हैं रक्तिम आभामय उस गवाक्ष से
बड़े-बड़े विकराल प्रेत गण नाच रहे जो विषम सुरों पर।
और भयानक तीव्र गतिमती तूफानी सरिता-सी भीषण,
बदरंगे दरवाजे से बीभत्स रूप में शोर मचाती—
सदा भीड़ चलती रहती है भीषण अट्टहास-सी करती
और कभी मुस्कान न भूले उसके ओठों पर खिलती है।

मुझे अच्छी तरह याद है कि इस गान में जो संकेत थे उनके कारण हमारे अन्दर ऐसी विचार-शृंखला उठ खड़ी हुई जिसमें अशर की एक राय व्यक्त होती दिखाई पड़ी। उसका उल्लेख मैं उसके अनोखेपन के कारण नहीं कर रहा हूं (यद्यपि दूसरे लोग उसे ऐसा ही ख्याल करते थे) बल्कि जिस दृढ़ता के साथ वह उसे बनाए हुए था, उसके कारण कर रहा हूं। इस राय का सामान्य रूप यह था कि वनस्पति-मात्र में संवेदना या चेतना होती है। किन्तु उसकी विशृंखल कल्पना में इस विचार ने और दुस्साहसिक रूप ग्रहण कर लिया था और कुछ स्थितियों में वह इस सीमा को लांघकर प्राणहीन (जड़) जगत् पर भी उसका आरोप करता था। उसके पूर्ण विस्तार या उसके प्रबोधन की सरमस्ती को प्रकट करने के लिए मुझे शब्द नहीं मिल रहे हैं। किन्तु जैसा कि मैं पहले संकेत कर चुका हूं, उसके इस विश्वास का सम्बन्ध उसके पूर्वजों के गृह के भूरे पत्थरों से था। वह कल्पना करता था कि इन पत्थरों की सहस्थिति, उनके क्रम, उनपर फैले हुए छत्रकों या कुकुरमुत्तों और चतुर्दिक् खड़े ह्रासमान वृक्षों—सबके ऊपर इस व्यवस्था के लम्बे काल तक अबाध रूप में सहे जाने तथा झील के प्रशान्त जल में उनके पुनर्द्वयीकरण में उस संवेदना या चेतना की शर्तें मौजूद हैं। वह कहता था कि "इस संवेदनशीलता का प्रमाण (और जब वह बोल रहा था तो मैं चकित हो उठा) *जलाशय और दीवारों* के इर्द-

गिर्द उनके अपने एक वातावरण का क्रमिक परन्तु निश्चित घनीकरण है। इसका परिणाम उस मौन परन्तु आग्रही और भयानक प्रभाव में देखा जा सकता है जिसने शताब्दियों से उसके वंश की नियति की रचना की है और जिसके कारण मैं वह हूं जो तुम मुझे अब देख रहे हो, और जो मैं था।" ऐसी राय की आलोचना न तो आवश्यक है, और न मैं उसे करने जा रहा हूं।

जो पुस्तकें हम साथ-साथ बैठकर पढ़ते थे, और जो वर्षों तक इस रोगी मानव के मानसिक अस्तित्व का अंग ही बन गई थीं वे सब भी उसकी इस मनोसृष्टि के अनुकूल ही थीं। (हम मैकियावेली की बेलफेगर, स्वीडेनबर्ग की स्वर्ग और नरक—हेवेन ऐण्ड हेल, निकोलास क्लिम होलबर्ग की प्रच्छन्न यात्रा का विवरण, टीक की नील सागर की यात्रा तथा कम्पानेला के सूर्य-नगर—सिटी आफ सन आदि पुस्तकें पढ़ते थे)। खास तौर से एक दुर्लभ एवं विचित्र पुस्तक 'विस्मृत गिर्जे का विवरण' को वह बार-बार तथा बड़े ध्यान से पढ़ा करता था।

एक शाम को मेरे मित्र ने अकस्मात् मुझे बताया कि लेडी मैडेलीन अब जीवित नहीं हैं। इसके बाद उसने कहा कि उसका इरादा लाश को अन्तिम रूप से समाधिस्थ करने के पूर्व एक पखवारे तक इसी मकान के एक तहखाने में रखने का है। इस आश्चर्यजनक प्रस्ताव का जो भौतिक कारण बताया गया, उसका विरोध मैं कर ही कैसे सकता था। (जैसा उसने बताया) भाई ने यह निश्चय इसलिए किया था कि मृत बहिन की बीमारी एक अजीब ढंग की रही है। मृतात्मा के बारे में उसके चिकित्सकों ने जो धृष्ट एवं उत्कण्ठापूर्ण प्रश्न पूछे थे उनका तथा परिवार के कबरिस्तान के बहुत दूर तथा खुले स्थान में होने का भी उसे ख्याल था। मुझे उस आदमी का कुटिल चेहरा-मोहरा याद आ गया जो मेरे आगमन के प्रथम दिन सीढ़ी पर चढ़ते हुए मुझे मिला था तो मैंने इस प्रस्ताव का, जो एक निर्दोष हिफाज़ती कारंवाई के सिवाय और कुछ नहीं था, विरोध नहीं किया।

अशर के अनुरोध पर मैंने इस अस्थायी मृतक-संस्कार की व्यवस्था

करने में खुद भी मदद दी। कफन पहिनाने के बाद केवल हमीं दोनों ने उसे उसके आश्रय-स्थान तक पहुंचाया। जिस तहखाने में हमने उसे रखा, वह बहुत दिनों से बन्द था, यहां तक कि हमारे टार्चों की रोशनी भी उसके अवपीड़क वातावरण में धुंधली पड़ गई और उसकी कुछ विशेष जांच-पड़ताल का मौका हमें नहीं मिला। यह एक छोटा, सीलनयुक्त तहखाना था जिसमें कहीं से भी प्रकाश आने का कोई साधन नहीं था। इमारत के जिस भाग में मेरा शयन-कक्ष था उसके ठीक नीचे बड़ी गहराई पर वह स्थित था। देखने से स्पष्ट मालूम होता था कि सुदूर सामंती युगों में कभी कारागार के रूप में और बाद के दिनों में बारूद या इसी प्रकार की ज्वलन-शील वस्तुओं के गोदाम के रूप में इसका उपयोग होता रहा होगा क्योंकि इसकी फर्श के एक भाग और मेहराबदार मार्ग के अन्तर्भाग पर सर्वत्र तांबे की खोल चढ़ी हुई थी। लोहे के भारी कपाट भी इसी प्रकार सुरक्षित रखे गए थे और जब खोलते समय वह कब्जों पर घूमता था तो उससे असाधारण रूप से तेज खरखराहट की आवाज होती थी।

अपने शोकपूर्ण भार को इस भयावने कक्ष में रखकर, हमने अभी तक बन्द कफन बक्स के ढक्कन को हटा दिया और मृत महिला के मुंह पर नजर डाली। यहां भी भाई-बहिन के चेहरे-मोहरे के निपट साम्य ने मुझे चौंका दिया। शायद मेरी मनोदशा का अनुमान कर अशर ने चंद बातें मुझे बताई जिनसे मैं समझ सका कि मृतात्मा और उसका भाई दोनों जुड़वां बच्चे थे और उन दोनों के बीच सदैव ही मुश्किल से समझ में आनेवाली सहानुभूति बनी रही थी। जो हो, हम बहुत देर तक मृतात्मा पर दृष्टि स्थिर नहीं रख सके क्योंकि एक प्रकार की भीति के बिना हम उसे देख नहीं सकते थे। यौवन की प्रौढ़ावस्था में ही जिस बीमारी ने इस प्रकार उस महिला को दफन कर दिया वह, मूर्च्छावाली सभी बीमारियों की भांति, उसके सीने और मुख पर लालिमाभा का व्यंग्य छोड़ गई थी। वह उसके ओठों पर भी वह संशयपूर्ण थिरकती हुई मुस्कान छोड़ गई थी जो मृत्यु में इतनी भयानक हो जाती है। हमने ढक्कन को फिर रखकर उसे पेंचों स

कस दिया और लोहे का वह द्वार बन्द करके, कठिनाई से अपना रास्ता बनाते हुए इमारत के कुछ कम अंधेरे ऊपरी भाग में लौट आए।

और जब तीक्ष्ण शोक के कुछ दिन बीत गए, तो मेरे मित्र की मानसिक अव्यवस्था में कुछ ध्यान देने योग्य परिवर्तन दिखाई पड़ा। उसका सामान्य ढंग लुप्त हो चुका था। सामान्यत: जिन कामों में वह अपना समय बिताता था उनकी अब उपेक्षा होने लगी या फिर वे भुला दिए गए। वह एक कमरे से दूसरे में, कमरे-कमरे में तेज़, विषम, निरुद्देश्य पगों से चहलकदमी करने लगा। चेहरे के पीलेपन पर और डरावनी आभा छा गई। उसकी आंखों में जो विशेष चमक थी वह बिलकुल ही लुप्त हो गई। उसकी वाणी में कभी-कभी आ जानेवाली भर्राहट अब नहीं रही, और अत्यन्त भयातुरता का कम्पन उसकी आवाज़ का स्थायी अंग बन गया। कभी-कभी तो मुझे ऐसा भी लगता था कि उसका निरन्तर अशान्त मन किसी उत्पीड़क रहस्य से झगड़ रहा है और उसे प्रकट करने के लिए वह आवश्यक साहस पैदा करने की कोशिश कर रहा है। जब मैं उसे घण्टों तक शून्य में इस प्रकार ताकते देखता था मानो अपना सारा ध्यान लगाकर वह किसी कल्पित आवाज़ को सुन रहा हो तो मैं इसे उसके उन्माद के अव्याख्येय विभ्रम के खेल समझकर चुप हो जाता था। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि उसकी दशा मुझे दहला देती थी—भय मुझमें समा जाता था। मैंने अनुभव किया कि उसके मनोराज्यनिर्मित किन्तु प्रभावशाली अंधविश्वास, धीरे-धीरे पर निश्चित गति से, मुझपर छाते जा रहे हैं।

लेडी मैडेलीन के शव को तहखाने में रखने के बाद सातवां या आठवां दिन था कि रात को बहुत देर से मैं सोने गया। उस समय मुझे ऐसी भावनाओं की पूरी शक्ति का अनुभव हुआ। घण्टे पर घण्टे बीतते गए परन्तु मेरी शय्या के पास नींद फटकी तक नहीं। तर्क करके, मन को समझाकर मैंने उस घबराहट को दूर करने की कोशिश की। मैंने मन में यह विश्वास जमाने की कोशिश की कि जो अनुभव मुझे हो रहा है उन सबका नहीं तो अधिकांश बातों का कारण कमरे के उदासी से भरे फर्नीचर के उन गहरे

रंग वाले एवं जीर्ण पर्दों के छायाचित्रात्मक प्रभाव के कारण है जो बढ़ते हुए तूफान के झकोरों से उड़-उड़कर अशान्त भाव से दीवारों पर इधर-उधर टकराते हैं और बार-बार मेरी शय्या पर मंडराते हैं। किन्तु मेरे प्रयत्नों का कोई नतीजा नहीं निकला। एक अदम्य कंपकंपी धीरे-धीरे मेरे सारे शरीर में फैलती गई और अन्त में निष्कारण घबराट का दुःस्वप्न मेरी छाती पर सवार हो गया। उसे बड़े संघर्ष के बाद एक झटके के साथ मैंने दूर कर दिया और तकियों पर कुछ ऊंचा उठकर कमरे के घोर अन्धकार के बीच देखने की कोशिश की। सिवाय इसके कि मैं यह कहूं कि किसी प्रेरित भावना के कारण मैं वैसा करने को विवश हो गया, मैं नहीं बता सकता कि क्यों तूफान के बीच-बीच में कम होने पर रह-रहकर न जाने कहां से आनेवाली धीमी परन्तु निश्चित ध्वनि को सुनने में मेरे कान लग गए। अकारण परन्तु असहनीय भय के प्रबल मनोवेग ने मुझे पूरी तरह अपने वश में कर लिया; मैं अपने कपड़े एक ओर फेंककर उठ खड़ा हुआ और कमरे में तेज़ी से इधर-उधर चक्कर काटते हुए उस दयनीय स्थिति से अपने को उबारने की कोशिश करने लगा जिसमें मैं गिर पड़ा था।

इस तरह मैं दो ही चार चक्कर लगा पाया था कि निकट की सीढ़ी पर एक हलकी पगध्वनि ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींच लिया। तुरन्त मैंने पहिचान लिया कि यह पगध्वनि अशर की है। क्षण-भर बाद ही उसने धीरे से मेरे दरवाज़े पर थपकी दी और एक लैंप लिए हुए प्रवेश किया। सदैव की भांति उसका चेहरा उस समय भी मुर्दे-सा पीला पड़ रहा था, किन्तु उसकी आंखों में एक प्रकार के उन्मत्त उल्लास की छाया थी, सारे अंग-विन्यास से एक नियंत्रित मूर्छना, एक हिस्टीरिया फूटी पड़ती थी। उसके ढंग से मैं डर गया किन्तु जिस एकान्त को मैं इतनी देर से सहन कर रहा था उसमें कोई भी चीज उससे तो अच्छी ही थी। मैंने तो राहत की सांस लेते हुए उसकी उपस्थिति का स्वागत ही किया।

अपने इर्द-गिर्द कुछ क्षण तक ताकने के बाद उसने सहसा कहा—

"और तुमने उसे नहीं देखा ? तब तुमने उसे नहीं देखा ? किन्तु ठहरो, तुम उसे देखोगे।" इतना कहकर, अपने लैम्प को बड़ी सावधानी के साथ किसी पर्दे से छिपाते हुए वह एक भारी खिड़की के पास पहुंचा और उसे पूरी तरह तूफान के लिए खोल दिया।

आनेवाले झकोरे के प्रबल आक्रोश ने हमें जैसे धरती से ऊपर उठा दिया। रात सचमुच बड़ी तूफानी परन्तु साथ ही बहुत ही सुन्दर थी—वह अपने त्रास एवं सौन्दर्य दोनों में अनोखी थी। हमारे नजदीक कहीं कोई बवण्डर—वात्याचक्र—एकत्र हो गया होगा, क्योंकि वायु की दिशा में बार-बार प्रबल परिवर्तन हो रहे थे। बादल बहुत घने हो गए थे और इतने नीचे झुक आए थे कि इमारत की मीनारों से टकराते-से जान पड़ते थे। इतने पर भी हम साफ-साफ देख रहे थे कि बड़ी जीवनमयी स्फूर्ति एवं वेग के साथ वे चारों ओर से एक-दूसरे पर दौड़ते आते हैं और टकरा जाते हैं किन्तु वहां ही जमे हैं, दूर नहीं हटते। मैंने कहा है कि बादलों की सघनता भी हमें यह सब देखने से विरत नहीं कर पा रही है, फिर भी हमें कहीं चांद या तारों की झलक नहीं दिखाई पड़ती, न कहीं बिजली की कोई चमक ही है। किन्तु एक फीकी आभायुक्त पर स्पष्टतः दिखाई पड़नेवाले किसी गैसीय कोहरे के अप्राकृतिक प्रकाश में भीमाकार चंचल वाष्प-पुंजों के निम्नस्तर तथा आसपास का सम्पूर्ण क्षितिज एवं उसके पदार्थ चमक रहे थे तथा उसने भवन पर भी अपना आवरण-सा डाल रखा था।

मैंने अशर को बलात् खिड़की से कुर्सी की ओर ले जाते हुए कांपकर कहा—"तुम्हें यह सब नहीं देखना चाहिए—तुम इसे नहीं देखोगे। ये बातें तुम्हें विस्मित करती हैं किन्तु ये केवल वैद्युतिक घटनाएं-भर हैं और इनमें कोई असामान्यता नहीं है। यह भी हो सकता है कि वे झील की भयावनी दलदली सड़ांध के कारण पैदा हुई हों। हम इस खिड़की को बन्द किए देते हैं। हवा बहुत ठण्डी है और तुम्हारे लिए हानिकर है। देखो, यह तुम्हारी प्रिय पुस्तक है। मैं पढ़ता हूं, तुम सुनो। इस तरह हम साथ बैठकर यह

भयावनी रात काट देंगे।"

जिस पुरानी पुस्तक को मैंने हाथ में उठा लिया वह थी सर लांकलाट कैनिंग की 'उन्मत्त दुखिया' (Mad Trist) किन्तु मैंने गम्भीरता के साथ नहीं, करुण विनोद में ही उसे उसकी प्रिय पुस्तक कहा था क्योंकि सच पूछें तो उस पुस्तक के अशोभन विस्तार में मेरे मित्र की उच्च एवं आध्यात्मिक आदर्शवादिता के लिए कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती। पर उस समय पास में वही किताब थी और मेरे अन्दर एक धुंधली आशा उग आई कि बुराइयों की पराकाष्ठा के इस वृत्तान्त में शायद इस स्नायुरोगी के उत्तेजित मन को कुछ राहत मिल जाए। उसको एक प्रकार के उग्र, श्रमपूर्ण उल्लास के साथ उस कहानी को सुनते देखा तो अपनी योजना की सफलता के लिए अपने को धन्यवाद दिया।

पढ़ते-पढ़ते मैं कथा के उस प्रसिद्ध अंश पर पहुंच गया था जहां ट्रिस्ट का वीर नायक ईथेलरेड संन्यासी की कुटिया में शान्तिपूर्वक प्रवेश न पा सकने पर जबर्दस्ती उसमें घुसने का निश्चय करता है। पुस्तक के ही शब्दों में कहानी यों आगे बढ़ती है—

"और ईथेलरेड ने, जो स्वभाव से ही साहसी था, फिर इस समय तो मदिरा से और प्रबल एवं उन्मत्त हो रहा था, हठी एवं दुराग्रही संन्यासी से समझौते तथा शान्ति के साथ बातचीत करने का रास्ता छोड़ दिया; वह अपनी पीठ पर वर्षा की बूंद गिरती हुई अनुभव कर रहा था, फिर उसे बढ़ते हुए तूफान का भी भय था इसलिए उसने ताबड़तोड़ दरवाजे पर डण्डे का प्रहार करना शुरू कर दिया और अपने लोहे के दस्ताने पहिने हाथों के लिए उसके तख्ते तोड़कर जगह बना ली। फिर हाथ डालकर सब कुछ उखाड़कर इस जोर के साथ फेंका कि सारा जंगल कांप उठा।"

यह वाक्य समाप्त कर मैं कुछ चमत्कृत हो उठा और क्षण-भर के लिए रुका, क्योंकि मुझे ऐसा लगा मानो उस कथा में वर्णित घटना जैसी ही अस्पष्ट आवाज इमारत के किसी सुदूर हिस्से से या उसके आसपास से मेरे कानों में आ रही है। एक बार तो मैंने अपने मन में कहा कि शायद

यह सब मेरी उत्तेजित कल्पना का ही प्रभाव हो। शायद उस घटना के साथ बाहर उमड़ते-घुमड़ते एवं तुमुल ध्वनि करते तूफ़ान के साम्य ने मन में ऐसी भ्रान्ति पैदा की होगी। उधर से ध्यान हटाकर मैंने कहानी आगे बढ़ाई—

"किन्तु ईथेलरेड ने जब अन्दर प्रवेश किया तो उसका क्रोध एवं विस्मय यह देखकर और बढ़ गया कि सन्यासी का कहीं पता नहीं है, उसकी जगह एक नाग अपने शल्कमय वृहदाकार शरीर और अग्निमयी जिह्वा के साथ पड़ा हुआ है। वह स्वर्ण प्रासाद पर, जिसका फर्श चांदी का था, पहरा देता हुआ बैठा था। दीवार पर चमचमाते हुए पीतल की एक ढाल लटक रही थी, जिसपर निम्नलिखित शब्द अंकित थे—

वीर विजेता ही प्रवेश इसके अन्दर कर पाएगा,
जो मारेगा नाग, वही यह ढाल जीत ले जाएगा।

"ईथेलरेड ने डण्डे से नाग पर भयानक प्रहार किया। नाग उसके सामने गिर पड़ा और उसकी विषैली सांस टूट गई। गिरते समय उसने ऐसा भयानक चीत्कार किया कि ईथेलरेड ने वैसी आवाज़ कभी सुनी न थी। उसने उस आवाज़ से बचने के लिए अपने कान बन्द कर लिए।"

यहां मैं अचानक फिर रुका और अत्यन्त प्रबल विस्मय की भावना के साथ मैंने निश्चित रूप से सुना कि कहीं दूर से बीच-बीच में रुक-रुककर धीमी किन्तु कठोर तथा अत्यन्त असाधारण चीत्कार-सी आवाज आ रही है। कथा-लेखक द्वारा वर्णित नाग की चीख की जो कल्पना मेरे मन पर छा गई थी, यह आवाज उसीकी प्रतिरूप-सी लग रही थी।

यह जो दूसरी बार ऐसा असाधारण संयोग हुआ उससे मेरे अन्दर हजारों परस्पर-विरोधी मनोभाव मुखरित हो उठे। मैं उनसे दबता जा रहा था। इन मनोभावों में भय और विस्मय दोनों की प्रधानता थी। किन्तु अब भी मेरे मन में इतना विवेक था कि अपने किसी भी अनुभव की बात कहकर मुझे अपने साथी की उत्तेजना बढ़ानी नहीं चाहिए। मैं

निश्चित रूप मे यह नहीं जानता था कि उसने भी वह आवाज सुनी है या नहीं, यद्यपि पिछले कुछ क्षणों से उसके चेहरे पर विचित्र परिवर्तन दिखाई पड़ रहा था। पहले वह मेरे ठीक सामने बैठा था, परन्तु अब धीरे-धीरे करके उसने अपनी कुर्सी इस तरह घुमा ली थी कि उसका मुंह कमरे के दरवाजे के ठीक सामने हो गया था और मैं उसके चेहरे के एक अंश को ही देख सकता था। मैंने इतना देखा कि उसके ओठ इस तरह हिल रहे हैं जैसे वह धीरे-धीरे कुछ बुदबुदा रहा हो। उसका सिर उसके सीने पर लटक गया था—फिर भी उसकी खुली स्थिर आंखों की एक झलक पाकर मैं इतना समझ चुका था कि वह सोया नहीं है। उसके शरीर की हरकत भी इस विचार का खण्डन कर रही थी क्योंकि वह निरन्तर दाहिने-बायें लहरा रहा था। जल्दी-जल्दी इन सब बातों को नजर में रखकर मैंने सर लांकलाट की पुस्तक आगे पढ़नी शुरू की—

"नाग के भयानक क्रोध से बचकर, पीतल की उस ढाल की बात का विचार करते हुए वीर नायक ने अपने रास्ते से कंकाल को हटा दिया और चांदी के फर्श के ऊपर से गुजरते हुए उस जगह पहुंचा जहां दीवार से वह ढाल लटक रही थी। किन्तु उसके अपने पास तक पहुंचने की प्रतीक्षा न करके ढाल खुद ही फर्श पर उसके पांव के पास तुमुल एवं भयानक ध्वनि करती हुई गिर पड़ी।"

मेरे ओठों से ये शब्द निकले ही होंगे कि जैसे सचमुच पीतल की कोई ढाल उसी क्षण चांदी के फर्श पर जोरों के साथ गिरी; मुझे एक स्पष्ट, खोखली, धात्विक एवं झंकृत परन्तु घुटी-घुटी-सी ध्वनि सुनाई पड़ी। मैं बहुत घबरा गया और ऐंठकर अपने पैरों पर खड़ा हो गया, किन्तु अशर उसी तरह इधर से उधर, उधर से इधर हिल रहा था। मैं तेजी से उसकी कुर्सी के पास पहुंच गया। उसकी आंखें सामने की ओर स्थिर थीं और उसका सारा शरीर पत्थर से भी कड़ा हो गया था। किन्तु ज्योंही मैंने उसके कन्धे पर हाथ रखा, उसका सारा शरीर जोर से कांप उठा और उसके ओठों पर एक फीकी मुस्कान थिरक गई। मैंने देखा कि वह धीरे-धीरे

पर तीव्र गति से कुछ बड़बड़ा रहा है, जैसे उसे मेरे वहां होने का भान न हो। उसके कन्धे पर झुककर किसी तरह मैं उसके शब्दों का भयावना तात्पर्य समझ सका। वह कह रहा था—

"तुम नहीं सुन रहे हो ?—हां, मैं सुन रहा हूं, मैंने उसे सुना है। बड़ी देर तक—देर तक—कितने ही मिनटों, कितने ही घंटों, कितने ही दिनों तक मैंने उसे सुना है। फिर भी मुझे साहस नहीं हुआ—दुखिया और अप-दार्थ जैसा कि मैं हूं—मुझे साहस नहीं हुआ कि उसके बारे में कुछ कहूं। *हमने उसे जीवित कब्र में रख दिया है*। मैं अब तुम्हें बताता हूं कि मैंने पहली बार उसके हिलने-डुलने की आवाजें उस खोखली टिकथी पर सुनी थीं। कई-कई दिन पहले मैंने उन्हें सुना था, फिर भी मैं साहस न कर सका, *कुछ कहने का साहस नहीं कर सका*। और अब—आज रात—ईथेल रेड···हा ! हा !—संन्यासी की कुटिया के दरवाज़े का टूटना, नाग का मरण-चीत्कार, ढाल के गिरने की ध्वनि, बल्कि यों कहो कि कफन का फट जाना, लोहे के कब्ज़ों का घूमना और तहखाने के ताम्रावृत मार्ग में उसके संघर्ष ! ओह, मैं कहां उड़ जाऊं ? क्या वह अभी यहां नहीं आ पहुंचेगी ? क्या वह मुझे मेरी जल्दबाज़ी के लिए उलाहना देने तेज़ी से आ नहीं रही है ? क्या मैं सीढ़ियों पर उसकी पगध्वनि नहीं सुन रहा हूं? क्या मुझे उसके हृदय की भारी और भयावनी धड़कन नहीं सुनाई पड़ रही है ? पागल !" और कहते-कहते वह ज़ोरों से उछलकर खड़ा हो गया और जैसे उस चेष्टा में वह अपनी आत्मा खोता जा रहा हो, चीख उठा—"पागल ! *मैं तुमसे कहता हूं कि इस समय वह दरवाज़े के बाहर खड़ी है।*"

और जैसे उसके उद्गार की दैवी ऊर्जा में किसी जादू की शक्ति आ गई हो, जिस भारी पुरातन दरवाज़े की ओर वक्ता ने संकेत किया था, उसके भारी आबनूसी जबड़े (किवाड़) धीरे-धीरे खुलते दिखाई पड़े और हमने देखा उस मुक्त द्वार पर अशर की लेडी मैडेलीन की भव्य, कफन में लिपटी मूर्ति खड़ी है। उसके श्वेत परिधान पर खून के धब्बे हैं और शुष्क

कंकाल के अंग-प्रत्यंग पर, हर हिस्से पर घोर संघर्ष के चिह्न स्पष्ट हैं। क्षण-भर वह इधर-उधर कांपती और लड़खड़ाती खड़ी रही, उसके बाद एक मृदु रोती चीख के साथ अन्दर की ओर अपने भाई के ऊपर गिर पड़ी। अंतिम मरण-वेदना के बाद वह भाई के लिए अपनी वह लाश छोड़ गई जो उन भयानकताओं का शिकार हो गई थी जिसका डर भाई को था।

मैं भय के मारे उस कमरे और उस कोठी से अपनी जान लेकर भाग खड़ा हुआ। अब भी तूफान अपने पूरे जोश पर था। जब मैं कोठी की ओर जानेवाले मार्ग को पार कर रहा था तो देखा कि रास्ते पर एक प्रबल प्रकाश फैल गया। मैं घूमकर देखने लगा कि यह असाधारण ज्योति कहां से आ रही है ? क्योंकि मेरे पीछे तो सिर्फ वह विशाल भवन और उसकी छाया मात्र थी। देखा, प्रकाश पूर्ण अस्त होते हुए रक्तिम चंद्र का है; वह पहले ज़रा-सी दीखती हुई उस दरार के बीच से दिखाई पड़ रहा था जो छत से नींव तक टेढ़ी-मेढ़ी चली गई थी। मैं उधर देख ही रहा था कि वह दरार तेज़ी से चौड़ी होने लगी; तूफान का एक भयानक झोंका आया और मेरे देखते-देखते उपग्रह (चांद) का सम्पूर्ण गोलक फटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया। जब मैंने देखा कि इमारत की सुदृढ़ दीवारें टूट-टूट-कर गिर रही हैं; सहस्रों जलधाराओं के फट पड़ने की भयानक शोर सुनाई पड़ रहा है और अशर भवन के ध्वंसावशेष को मेरे पांवों के पास फैली हुई गहरी झील ने निष्ठुरतापूर्वक चुपचाप अपनी गोद के अन्दर ले लिया है तो मेरा सिर घूम गया।

ड्यूक आमलेट

(डक दो ल आमलेत)

सद्यः किया प्रवेश (मित्र ने) शीतलतर जगती में।

—काउपर

आलोचना ने ही कीट्स का विनाश-साधन किया। और वह कौन था जिसकी मृत्यु एन्द्रीमाशे[1] के कारण हुई ? पतित प्राणी ! दी ल आमलेत एक अबाबील से नष्ट हो गया। इसकी कहानी बहुत संक्षिप्त है—एपीसियस की आत्मा ! मेरी मदद कर।

सुनहले पिंजड़े की यह छोटे पंखोंवाली, सैलानी, मोहक, द्रवणशील और तन्द्रिल चिड़िया अपने दूर देश पेरू से 'शोशे द आं' (पेरिस का एक भाग) लाई गई थी। प्रथम शाही मालकिन ला बेलिसीमा से साम्राज्य के छः सामन्तों ने इस आनन्दी चिड़िया को ड्यूक आमलेट तक पहुंचाने का काम किया था। और यह सब श्रम 'केवल प्रेम-वश' किया गया था।

उस रात ड्यूक अकेले ही भोजन करनेवाला था। अपने निवास के एकान्त में वह एक नायाब सोफे पर लेटा हुआ था। इस सोफे को प्राप्त करने के लिए उसे अपने बादशाह, केडेट के मशहूर सुलतान, के प्रति स्वामिभक्ति का बलिदान करना पड़ा था और उससे भी बढ़कर बोली बोलनी पड़ी थी।

---

१. मांटफ्लुरी। 'पारनॅसी रिफामं' के लेखक ने उसे अपने-आप यों व्यक्त करते दिखाया है—"जो भी मेरी मृत्यु का कारण जानना चाहे उसे यह नहीं पूछना चाहिए कि मैं बुखार, जलोदर या गठिया किस रोग से मरा; उसे जानना चाहिए कि मेरी मृत्यु एन्द्रोमाशे से हुई।"

वह अपना चेहरा तकिये में छिपा लेते हैं—घड़ी घंटा बजाती है। अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने में असमर्थ हो वह एक जैतून निगल जाते हैं। इसी समय मधुर संगीत के साथ द्वार धीरे-धीरे खुलता है, और ओह ! वह सबसे नाजुक चिड़िया सबसे अनुरक्त मनुष्य के सामने है ! पर ड्यूक के चेहरे पर कैसी अकथनीय निराशा छा गई है?—"भयानक! कुत्ता ! बपतिस्माकारी ! चिड़िया ! हे ईश्वर ! दीन पंखी ! जिसके पंख तुमने नोच डाले हैं और मेरे सामने बिना कागज में सजाये ला परोसा है !" अधिक कहना बाहुल्य मात्र है, निराशा के भयानक दौरे में ड्यूक के प्राण-पखेरू उड़ गए।

"हा ! हा ! हा !" श्रीमन्त ने अपनी मृत्यु के तीसरे दिन गुहार लगाई।

"ही ! ही ! ही !" शैतान ने दर्पपूर्वक ऊपर उठते हुए धीरे से उत्तर दिया।

ड्यूक आमलेट ने तुर्की-बतुर्की जवाब दिया—"क्यों, आप यह गंभीर भाव से तो नहीं कह रहे हैं ? मैंने पाप जरूर किया है किन्तु श्रीमान् एक क्षण विचार तो कर लें।—मुझे विश्वास है कि ऐसी बर्बर धमकियों को कार्यरूप में परिणत करने का इरादा आपका न होगा।"

"नहीं, क्यों नहीं ?" श्रीमन्त सम्राट ने कहा—"चलो, नंगे हो जाओ।"

"नंगा हो जाऊं ? वाह वा ! बहुत खूब ! क्या सुन्दर विचार है ! नहीं, महाशय, मैं नंगा नहीं होऊंगा। आप होते कौन हैं ? भला, मैं आमलेट का ड्यूक, फ्वाएग्रास का राजकुमार, जो अभी-अभी वयस्क हुआ है, 'मजूरकियाद' का लेखक, एकादमी का सदस्य, आपके कहने-भर से बूदों द्वारा आज तक बनाया सबसे सुन्दर पतलून तथा रोम्बर द्वारा बनाए सबसे अच्छे ड्रेसिंग गाउन को उतारकर रख दूं ? फिर कागज से अपने बाल बाहर निकालने तथा दस्ताने उतारने में जो तकलीफ मुझे होगी, उसकी तो बात ही क्या की जाए ?"

"मैं कौन हूं ? आह, ठीक ! मैं बाल-ज़ेबब हूं, फ्लाई का राजा। मैंने अभी-अभी तुम्हें हाथीदांत जड़े सन्दली ताबूत से बाहर निकाला है। तुम्हें विचित्र तरह से इत्र-फुलेल लगाया गया था और चालान के अनुसार ही लेबिल तुमपर लगा था। मेरे श्मशानों (कब्रगाहों) के इंस्पेक्टर वेलियल ने तुम्हें भेजा है। बुर्दों के बनाए जिस पतलून की तुम इतनी तारीफ कर रहे हो वह एक अच्छा-सा सूती जांघिया-भर है और जिस गाउन की तुमने इतनी शेखी बघारी है वह तुम्हारा लम्बा-चौड़ा कफन मात्र है।"

ड्यूक ने जवाब दिया—"श्रीमन्त, इस तरह मेरा अपमान करके आप बच नहीं सकते। जल्द ही मैं आपसे इस अपमान का बदला लेने का प्रबन्ध करूंगा। महोदय, मैं शीघ्र ही आपको सूचित करूंगा। तब तक के लिए अलविदा।" और ड्यूक ने शीघ्र ही शैतान की उपस्थिति से दूर चले जाने का यत्न किया किन्तु एक प्रहरी फिर उन्हें पकड़ लाया। इसपर ड्यूक आंखें मल-मलकर घूरने लगे, फिर जमुहाई ली और अपने कन्धों को उचकाया। फिर कुछ सोचा। अपनी अभिज्ञा के विषय में सन्तुष्ट हो जाने के बाद उन्होंने अपनी चारों ओर की परिस्थिति का विहगावलोकन किया।

कक्ष तो बड़ा शानदार था। यहां तक कि ड्यूक आमलेट ने भी कहा कि स्थान जैसा होना चाहिए वैसा ही है। वह न बहुत लम्बा था, न ज्यादा चौड़ा था, किन्तु उसकी ऊंचाई ? ओह ! वह भयावह थी। उसमें कोई छत न थी, बिलकुल नहीं, बल्कि उसकी जगह घने अग्निवर्णी बादलों के चक्कर खाते हुए पुंज थे। ऊपर की ओर देखते हुए श्रीमन्त का सिर चक्कर खाने लगा। ऊपर से किसी अज्ञात आरक्तिम धातु की एक जंजीर लटक रही थी, जिसका ऊपरी सिरा बादलों में जाकर खो गया था। उसके निचले हिस्से में एक बड़ा आकाशदीप लटक रहा था। ड्यूक को लगा कि कोई लालमणि है किन्तु उससे निकलनेवाली ज्योति इतनी घनी, इतनी शान्त और इतनी भयंकर थी कि फारस ने भी कभी वैसी ज्योति की पूजा न की होगी, घेबर ने कभी उसकी कल्पना न की होगी, और अफीम के नशे में, फूलों की सेज पर पड़े हुए, अपोलो देवता के सामने मुंह किए

किसी मुसलमान ने भी उसका सपना न देखा होगा। ड्यूक उसकी प्रशंसा में कुछ बुदबुदाकर रह गया।

कमरे के कोने गवाक्ष—आले—के रूप में मोड़ दिए गए थे। इनमें से तीन पर महदाकार मूर्तियां रखी थीं। उनका सौन्दर्य यूनानी, उनकी विरूपता मिस्री, तथा उनका समष्टिगत प्रभाव फ्रांसीसी, था। चौथे आले पर जो मूर्ति थी उसपर पर्दा पड़ा हुआ था और वह बहुत बड़ी भी नहीं थी किन्तु उसका गावदुम टखना और पादुकायुक्त चरण दिखाई पड़ रहे थे। ड्यूक आमलेट ने (घबराकर) एक हाथ अपने हृदय पर रखा, अपनी आंखें बन्द कर लीं और फिर जो उन्हें ऊपर उठाया तो देखा कि श्रीमान् शैतान मुस्करा रहे हैं।

किन्तु चित्र ! क्यूप्रिस ! एस्तार्ते ! एस्तोरेथ ! हजारों के चित्र ! (चित्रकार) राफेल ने भी इन्हें देखा होगा। जरूर, राफेल यहां आ चुका है, क्योंकि उसने भी···का चित्र नहीं बनाया था जिसके कारण उसकी निन्दा हुई थी ? चित्र ! ये चित्र ! क्या वैभव है ! हाय रे ! इन निषिद्ध सुन्दरियों की ओर देखते हुए उनके सुनहले चौखटों की कलात्मकता पर कौन ध्यान देगा जो स्फीत दीवारों पर सो रहे हैं ?

किन्तु ड्यूक का हृदय अपने अन्दर बैठा जा रहा है, बेहोश-सा हुआ जा रहा है। परन्तु जैसा तुम समझ रहे हो, यहां के वैभव से उसका सिर नहीं चकरा रहा है, न उन अनेक गंधपात्रों के मादक श्वास के ही कारण उसपर बेहोशी छा रही है। यह ठीक है कि इन सभी चीजों के विषय में उसने बहुत-कुछ विचार किया था किन्तु इस समय तो वह भयाक्रान्त हो गया है क्योंकि एकमात्र पर्दारहित (खुली) खिड़की से जो बीभत्स दृश्य उसे दिखाई पड़ रहा है वह रौरव की अग्नि से भी भयानक है।

बेचारा ड्यूक ! यह कल्पना वह कैसे न करता कि उस हाल में जो वैभवपूर्ण, इन्द्रियासक्त तथा अमरण संगीत ध्वनियां फैली हुई हैं वे खिड़की के ऐन्द्रजालिक चौखटों की कीमियागरी से ही छनकर आ रही हैं और वे बेआस और अभिशप्त लोगों के चीत्कार और आर्त्तनाद के सिवा और कुछ

नहीं हैं। और वहां भी, वहां उस सोफे पर भी वह कौन हो सकता है? वह लघु स्वामी तो नहीं? नहीं, देवता है वह, जो इस तरह बैठा है मानो मर्मर पत्थर को काटकर बनाया गया हो और जिसके विवर्ण मुख पर एक तीखी मुस्कान की रेखा फैली हुई है।

किन्तु इस समय कुछ करना ज़रूरी है—मतलब यह कहने का है कि कोई फ्रांसीसी एकदम से मूच्छित नहीं होता। फिर श्रीमन्त को कोई बखेड़ा खड़ा कर देने से घृणा है। ड्यूक आमलेट फिर अपने होश-हवास में आ जाते हैं। एक टेबल पर कुछ तलवारें रखी हुई थीं, कुछ बर्छे भी थे। ड्यूक ने—से काफी दिनों तक द्वन्द्वयुद्ध का प्रशिक्षण प्राप्त किया था और अब तक उसमें छः आदमियों का सफाया भी कर चुके थे। इसलिए उन्हें अपनी सुरक्षा की कुछ उम्मीद होती है। वे दो बर्छों को उठाकर परखते हैं, और अनुकरणीय शालीनता के साथ, एक चुन लेने के लिए शैतान-राज के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। भयावह! श्रीमन् सम्राट तलवारबाज़ी नहीं करते!

किन्तु ताश का खेल! क्या सुन्दर विचार है? श्रीमन्त ड्यूक की स्मृति सदा ही अच्छी रही है। वह 'एबे गोल्तिये' की पुस्तक 'दायबेल' (शैतान) का मनन कर चुके हैं। उसमें कहा गया है—"शैतान कभी ताश के एकार्ते नामक खेल से इन्कार नहीं कर सकता।"

किन्तु (शैतान के लिए) 'चांस क्या होगा? सच है—वह निराशोन्मत्त है किन्तु वैसा निराशोन्मत्त नहीं जितना ड्यूक है। फिर वह प्रच्छन्न भी तो है। फिर क्या उसने भी फादर लेब्रां को नहीं पढ़ा है और क्या वह वेतां क्लब का सदस्य नहीं है? उसने कहा—"यदि मैं हारा तो यह मेरी दोहरी हार होगी। (अपने कंधे हिलाकर) और मैं जीता तो इस सबसे मुक्ति पा जाऊंगा। अच्छा, पत्ते फेंटो।"

श्रीमन्त (ड्यूक) सावधानी के साथ, सोच-समझकर खेलने लगे। और श्रीमन् सम्राट को तो अपने विषय में पूर्ण विश्वास था ही। कोई दर्शक देखता तो यही समझता कि फ्रांसिस और चार्ल्स खेल रहे हैं। श्रीमन्त ड्यूक केवल अपने खेल के विषय में सोच रहे थे। श्रीमन्त सम्राट कुछ भी

नहीं सोच रहे थे, वह पत्ते फेंट रहे थे। ड्यूक ने काटा।

पत्ते बंट गए। ट्रम्प खोला गया—वह, वह बादशाह निकला। नहीं नहीं—वह रानी थी। श्रीमन् सम्राट ने उसके मर्दाने परिधान पर कटाक्ष किया। ड्यूक ने अपना हाथ हृदय के ऊपर रखा।

वे खेल रहे हैं। ड्यूक गिनते हैं। एक हाथ पूरा हो गया। श्रीमन्त सम्राट बुरी तरह हार रहे हैं। वह मुस्कराते हैं और मद्यपान कर रहे हैं। इसी बीच ड्यूक एक पत्ता खिसका देते हैं।

शैतान-राज ने काटते हुए कहा—"इस बार तुम्हारी पीसने की बारी है।" श्रीमन्त ड्यूक ने सिर झुकाकर स्वीकार किया, पत्ते बांटे और धीरे से उठाकर छिपाए हुए बादशाह को मेज पर रख दिया।

श्रीमान् सम्राट (शैतान) खीझे-से दिखाई पड़े।

यदि सिकन्दर सिकन्दर न होता तो वह दायोजीनिस होता। और ड्यूक ने विदा लेते हुए श्रीमान् सम्राट को विश्वास दिलाया कि यदि वह आमलेट का ड्यूक न होता तो उसे शैतान होने में कोई ऐतराज न होता।

बोतल में प्राप्त पाण्डुलिपि

मुझे अपने देश और अपने कुटुम्ब के विषय में कुछ ज्यादा नहीं कहना है। कुरीतियों के कारण एक लम्बे अर्से से मुझे अपने देश के बाहर और अपने कुटुम्ब से कटकर रहना पड़ा है। पैतृक सम्पत्ति के कारण मुझे असाधारण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला और बचपन में ही अध्यवसायपूर्वक जो ज्ञानराशि मैंने प्राप्त की थी, उसे मेरे ध्यानावस्थित मन ने व्यवस्थित कर दिया था। सबसे ज्यादा आनन्द मुझे जर्मन नीतिवादियों के ग्रन्थों में मिलता था—यह आनन्द कुछ उनके मुखरित उन्माद के प्रति असंगत प्रशंसा-भाव के कारण नहीं था, किन्तु जिस आसानी के साथ मेरा कठोर चिन्तन उनकी भ्रांतियों को देख लेता था, उसके कारण था। मुझपर बहुधा प्रतिभा की शुष्कता का आरोप लगाया गया है,—मुझमें कल्पना की जो कमी है उसे अपराध की संज्ञा दी गई है और मेरी सम्मतियों में जो तीव्र संशय का रंग था उसको लेकर सदा ही मुझे बदनाम किया गया है। मैं मानता हूं कि भौतिक दर्शन के प्रति तीव्र अभिरुचि ने इस युग की सामान्य त्रुटि से मेरे मस्तिष्क को भी किंचित् रंग दिया था; मेरा मतलब यहां हर बात का, जरूरत हो या न हो, उस विज्ञान के सिद्धान्तों के साथ जोड़ देने की प्रवृत्ति से है। सब मिलाकर मेरे लिए अन्धविश्वास की मिथ्याग्नि द्वारा सत्य के क्षेत्र से दूर हटाये जाने की सबसे कम सम्भावना थी। मैंने यह सब भूमिका यहां इसीलिए दी है कि जो अविश्वसनीय कहानी मैं कहने जा रहा हूं उसे अनगढ़ कल्पना का प्रलाप न समझकर ऐसे मस्तिष्क का निश्चयात्मक अनुभव समझा जाए जिसके लिए कल्पना के दिवास्वप्नों का कभी कोई अस्तित्व नहीं रहा।

वैदेशिक यात्राओं में कई साल बिताने के बाद, १८——में समृद्ध एवं जनसंकुल जावाद्वीप के बटाविया बन्दरगाह से मैं सुण्डा द्वीपपुंज की यात्रा पर रवाना हुआ। यह प्रवास शुद्ध यात्री के रूप में था, मेरे मन में एक तरह की स्नायविक अशान्ति भर गई थी और वह एक दानव की भांति मेरा पीछा कर रही थी। इस यात्रा में और कोई प्रलोभन या प्रेरणा न थी।

जिस जहाज़ से मैं यात्रा कर रहा था, वह मलाबारी सागौन से बम्बई में निर्मित और ताम्रपटयुक्त लगभग चार सौ टन का सुन्दर जहाज़ था। उसमें लकद्वीप से कच्ची रुई और तेल लादा गया था। इनके अलावा नारियल के रेशे, देशी खांड, घी, नारियल तथा अफीम के चन्द बक्से भी उसमें थे। यह सब बुरी तरह ठूंसा हुआ था, जिसके कारण जहाज़ डगमग हो रहा था।

जब हम रवाना हुए, मामूली-सी हवा चल रही थी। कई दिनों तक हम जावा के पूर्वी समुद्र-तट पर चलते रहे। सिवाय इसके कि बीच-बीच में द्वीपपुंज के छोटे-छोटे टापुओं के दर्शन हो जाते थे, हमारी यात्रा में कुतूहल पैदा करनेवाली कोई घटना नहीं हुई।

एक दिन मैं जहाज़ के पिछले भाग के कटघरे पर झुका हुआ समुद्र की ओर देख रहा था कि मुझे उत्तर पश्चिम क्षितिज पर एक अनोखा एकान्त मेघखण्ड दिखाई पड़ा। अपने रंग के कारण तथा इस कारण भी कि बटाविया से रवाना होने के बाद पहली बार वह दिखाई पड़ा था, उसने मुझे आकर्षित किया। मैं सूर्यास्त तक उसे बड़े ध्यान से देखता रहा। सूर्यास्त होते-होते वह पूर्व और पश्चिम सब तरफ फैल गया। क्षितिज पर वाष्पपुंज की एक लम्बी रेखा फैल गई। इसके बाद मेरा ध्यान धुंधले-रक्तिम चन्द्रोदय और सागर की विलक्षण प्रकृति की ओर खिंच गया। समुद्र में बड़ी तेज़ी से परिवर्तन हो रहा था और समस्त जलराशि असामान्य रूप से पारदर्शक हो गई थी। यद्यपि नीचे पेंदी मुझे स्पष्ट दिखाई दे रही थी, फिर भी लट्ठे से नापकर मैंने देख लिया कि जहाज़ १५ फैथम या धनु (लगभग ९० फुट) की गहराई में है। वायु असहनीय रूप से गरम हो गई, और उसपर सर्पिल

धुन्ध छा गई, कुछ वैसी ही जैसी उत्तप्त लोहे से निकलती है। ज्यों-ज्यों रात बढ़ने लगी, वायु की प्रत्येक श्वास बन्द होती गई और चारों ओर ऐसी निस्तब्धता छा गई जिसकी कल्पना करना भी कठिन है। जहाज के पृष्ठ-वंश पर मोमबत्ती बिलकुल निष्कम्प जल रही थी और दो उंगलियों के बीच लम्बा बाल कहीं से हिलता-डुलता नहीं दिखाई पड़ता था। कप्तान ने कहा कि उसे किसी प्रकार के खतरे का कोई आभास नहीं है और चूंकि हम तट की ओर खिंचे चले जा रहे थे, उसने पाल तानने और लंगर उठा लेने का आदेश दिया। कोई पहरा नहीं बिठाया गया और मांझी, जिनमें मलय लोग ही अधिक थे, डेक या छत पर जाकर लेट गए। मुझे किसी आगामी संकट का पूर्वाभास-सा हो रहा था; मैं नीचे चला गया। जो कुछ लक्षण दिखाई पड़ रहे थे उससे मुझे ऐसा मालूम पड़ता था कि सिमूम—लू का अंधड़ या तूफान—आनेवाला है। मैंने कप्तान को अपनी आशंका बताई भी किन्तु उसने मेरी बात पर कुछ ध्यान नहीं दिया और बिना कोई उत्तर दिए ही मेरे पास से चला गया। मेरे मन में बेकली थी इसलिए मैं सो न सका और आधी रात के लगभग उठकर छत—डेक—पर पहुंचा। मैंने अन्तिम सीढ़ी पर पांव रखा ही होगा कि एक ऊंची, प्रबल आवाज से चौंक पड़ा। यह आवाज कुछ वैसी ही थी जैसी चक्की के पहियों के तीव्र गति से घूमने पर पैदा होती है और इसके पहले कि मैं उसका आशय समझ पाऊं, मैंने देखा, जहाज अपने केन्द्र में कांप रहा है। दूसरे ही क्षण फेन का भयानक विस्तार हमारी शहतीरों पर चढ़ बैठा और हमारे आगे-पीछे सब ओर दौड़ता हुआ पूरी छत पर फैल गया।

किन्तु तूफान की प्रचण्डता ही, बहुत-कुछ, जहाज के उद्धार का कारण सिद्ध हुई। जहाज पूरी तरह पानी के अन्दर आ गया और उसके मस्तूल गिर पड़े, फिर भी क्षण-भर बाद वह समुद्र से ऊपर उठा और तूफान के प्रबल बोझ से लड़खड़ाता हुआ अन्त में सीधा खड़ा हो गया।

मेरे लिए यह कहना असम्भव है कि किस जादू से मैं नष्ट होने से बच गया। जरा होश आने पर मैंने देखा कि पानी के रेले से बहकर मैं जहाज के

पृष्ठ भाग के कटघरे और पतवार के बीच फंसा पड़ा हूं। बड़ी कठिनाई से मैं अपने पांवों पर खड़ा हुआ और उद्भ्रान्त की भांति चारों ओर नजर दौड़ाने लगा। देखा, हम उत्तुंग तूफानी लहरों के बीच में हैं। हम पहाड़ की तरह ऊपर उठे और उफनते हुए फेनिल सागर की गोद में थे और रेलों की प्रबलता की तो कल्पना करना भी कठिन है। कुछ देर बाद एक बूढ़े स्वीडन-वासी की, जो जहाज छूटते-छूटते आ चढ़ा था, आवाज मेरे कानों में आई। जितनी भी शक्ति मुझमें शेष थी, सब एकत्र करके मैंने उसे पुकारा और लड़खड़ाता हुआ मेरे पास आ गया। हमें जल्द ही यह बात मालूम हो गई कि इस दुर्घटना में सिर्फ हमीं दोनों बच गए हैं। डेक (छत) पर जितने भी लोग थे, हम दोनों को छोड़, सब बह गए थे। कप्तान और मांझी निश्चय ही मर गए होंगे क्योंकि वे केबिन में सो रहे थे, और केबिन में पानी भरा हुआ था। बिना कोई मदद पहुंचे हम जहाज की रक्षा के लिए क्या कर सकते थे, फिर हमारे प्रयत्न इसलिए भी अवरुद्ध हो गए कि हर क्षण हमारे सामने समुद्र-गर्भ में चले जाने का खतरा उपस्थित था। हमारा केबुल तूफान के पहले ही आघात में कच्चे सूत की भांति दो टुकड़े हो गया था, नहीं तो शायद हम उसी क्षण डूब गए होते। भयानक वेग से हम समुद्र के सामने बहे जा रहे थे और पानी बार-बार हमारे ऊपर चढ़ आता था। जहाज बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था किन्तु हमारे लिए प्रसन्नता की बात इतनी ही थी कि पम्प अब भी अनवरुद्ध थे और हमारी लदान की स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ था। सिमूम (बवण्डर) का रोष कुछ शान्त हो चला था और अब हमें वायु के आघातों का कोई विशेष भय न था। किन्तु हमें विश्वास था कि बाद में समुद्र में जो ज्वार आएगा उसमें हम इस ध्वस्त अवस्था के कारण निश्चित रूप से नष्ट हो जाएंगे इसलिए कातर भाव से हवा के पूरी तरह बन्द हो जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। भगवत्कृपा से हमारा भय शीघ्र फलित होता नहीं दीख पड़ा। पांच दिन और रात हमारा जीर्ण एवं ध्वस्त पोत हवा के रेले से इस तीव्र गति से चलता रहा जिसका हिसाब लगाना मुश्किल है। इसमें सन्देह नहीं कि

सिमूम के प्रथम आघात से इस समय की तूफानी हवाओं की तुलना नहीं की जा सकती फिर भी मैंने जीवन में जितने तूफान देखे हैं उनमें वह अब भी सबसे भयानक था। इस अवधि में हम थोड़ी-सी खांड़, जो हम किसी तरह निकाल सके, पर किसी तरह अपने को जीवित रख रहे थे। पहले चार दिनों तक हम दक्षिण-पूर्व और दक्षिण की ओर चलते रहे; बीच-बीच में इधर-उधर भी बह जाते थे। न्यू हालैण्ड के तट तक हम जरूर गए होंगे। पांचवें दिन ठण्ड बहुत बढ़ गई, यद्यपि हवा की गति अब उत्तर की ओर हो गई थी। सूर्य उगा किन्तु उसके प्रकाश में रुग्ण पीलापन था; वह क्षितिज पर थोड़ी दूर तक लड़खड़ाता रहा। उससे कोई स्पष्ट प्रकाश विकीर्ण नहीं हो रहा था। बादल दिखाई नहीं पड़ रहे थे, फिर भी हवा में तेजी थी और वह अस्थिर आवेश एवं रोष में बह रही थी। जहां तक हम अनुमान कर सकते थे वह दोपहर का समय रहा होगा जब सूर्य की ओर पुनः हमारा ध्यान आकर्षित हुआ। उससे कोई विशेष प्रकाश तो नहीं मिल रहा था, हां, एक धुंधली, मूर्छित किरणहीन आभा जरूर फूट रही थी। उफनते समुद्र में अस्त होने के कुछ पहले अकस्मात् उसकी केन्द्रीय दीप्ति समाप्त हो गई—जैसे किसी अगोचर शक्ति ने जल्दी से आकर उसे बुझा दिया हो। जब वह अगाध सागर की गोद में समाने के लिए तेजी से दौड़ा चला जा रहा था तब एक धुंधले रजत वृत्त-सा रह गया था।

हम लोग निरर्थक ही छठे दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे—मेरे लिए वह दिन नहीं आया, और स्वीडनवासी के लिए तो कभी आया ही नहीं। इसके बाद तो हमारे चारों ओर ऐसा अन्धकार फैल गया कि जहाज से २० कदमों की दूरी की चीज भी हमें नहीं दिखाई पड़ती थी। हम एक शाश्वत निशा में घिर गए थे। उष्ण कटिबन्ध के क्षेत्र में हम जिस फास्फोरसयुक्त सामुद्रिक चमक को देखने के आदी थे, वह भी वहां नहीं थी। हम यह भी देख रहे थे कि यद्यपि तूफान अब भी जोश-खरोश के साथ जारी है किन्तु समुद्र-तरंगों पर अब वह फेन नहीं है जो अभी तक हम देखते आ रहे थे। हमारे चारों ओर भय, आतंक, उदासी और अन्धकार का उफनता हुआ मरुस्थल फैला था।

बूढ़े स्वीडनवासी के प्राणों में धीरे-धीरे अन्धविश्वासजन्य भय समाता जा रहा था; मेरी अपनी आत्मा मौन कुतूहल में लिपटी हुई थी। हमने जहाज की देखभाल, निरर्थक मानकर, छोड़ दी थी और रक्षार्थ केन्द्रीय मस्तूल से अपने को बांध लेने के बाद हम लोग तीखेपन के साथ समुद्र-जगत् की ओर देख रहे थे। हमारे पास न तो समय जानने का कोई साधन था, न हम कहां हैं, इसीका कुछ अनुमान कर सकते थे। किन्तु हमें इतना भान अवश्य था कि आज तक कोई जलयानयात्री दक्षिण में जितनी दूर जा सका है, उससे हम और आगे हैं। आश्चर्य तो हमें इस बात पर हो रहा था कि हिम-शिलाओं के रूप में मिलनेवाली सामान्य बाधाओं से हमारी भेंट क्यों नहीं हो रही है। इस बीच हर क्षण के अन्तिम क्षण होने का भय तो लगा ही हुआ था—प्रत्येक उत्तुंग तरंग मानो हमें डुबाने ही आती थी। मैं जिन सम्भावनाओं की कल्पना कर सकता था, हिलोरें उससे कहीं उग्र थीं। यह एक चमत्कार-सा लगता था कि हम उनमें तुरन्त डूब नहीं गए। मेरे साथी ने मुझे बताया कि लदान का बोझ बहुत हलका हो गया है, उसने हमारे जहाज की श्रेष्ठता के विषय में भी मुझे बताया किन्तु मुझे स्वयं आशा के निराशा में परिणत होने की अनुभूति हो रही थी इसलिए बड़ी उदासी के साथ मैंने अपने को उस मृत्यु के लिए तैयार कर लिया जिसे कोई भी शक्ति एक घण्टे से ज्यादा देर के लिए स्थगित नहीं कर सकती थी, क्योंकि हर नाट (६०८० फुट की समुद्री दूरी) के साथ, जो जहाज तय करता था, काले भीम सागरों की उफान बढ़ती और निराशाजनक रूप से भयानक होती जा रही थी। कभी हम उत्तुंग गिरिशिखरों की ऊंचाई पर पहुंचकर हांफ उठते, कभी किसी जलीय नरक में ऐसे वेग से गिरते कि चक्कर आने लगता—ऐसे नरक में जहां की हवा निष्क्रिय और प्रवाहहीन होती और जहां सागर-दानव (क्रेकन) की नींद में बाधा डालनेवाला कोई शब्द सुनाई नहीं पड़ता था।

हम ऐसे ही एक खड्ड की तलहटी में थे कि रात की निस्तब्धता को भंग करती हमारे साथी की एक चीख चारों ओर फैल गई। मेरे कानों में

चीखते हुए उसने कहा—"देखो ! देखो ! हे सर्वशक्तिमान भगवान ! देखो देखो !" उसके कहते ही मैंने देखा कि हम जिस महत् गह्वर में हैं उसके किनारों पर रक्तिम प्रकाश की धुंधली, उदास जगमगाहट फैलती जा रही है और हमारे डेक पर उसकी आभा पड़ रही है। जब मैंने आंखें ऊपर उठाईं तो जो कुछ देखा उससे मेरे रक्त की गति बंद हो गई। ठीक हमारे सिर पर, बहुत ऊंचे, उस गह्वर की कगार के ऊपर लगभग चार हज़ार टन का एक भीमाकार जहाज़ चक्कर खा रहा था। यद्यपि वह अपनी ऊंचाई से सौ-गुनी ऊंची लहर के शिखर पर झूल रहा था किन्तु उस स्थिति में भी उसका जो आकार स्पष्ट दिखाई पड़ रहा था उसे देखकर कहा जा सकता था कि वह उस लाइन के सभी जहाज़ों से आकार-प्रकार में बड़ा है। उसका महत् ढांचा गहरे मलीन काले रंग का था और उसपर कहीं कोई उत्कीर्ण लेख या चिह्न नहीं दिखाई पड़ता था। हां, पीतल की बनी तोपों की एक पंक्ति उसके अनावृत वामांग से बाहर निकली दीख रही थी और उसके पालिश किये हुए वहिर्तल से असंख्य सामरिक लालटेनों की लपटें निकल रही थीं। ये लालटेनें जहाज़ की बल्लियों के इधर-उधर झूल रही थीं। किन्तु जिस बात ने हमें भय एवं आश्चर्य से मुख्यतः प्रेरित किया वह यह थी कि उस अतिप्राकृत समुद्र के जबड़ों में समाकर और उस बेरोक अंधड़ के बीच रहकर भी वह सब कुछ अपने पाल के सहारे सहन कर रहा था। जब हमने पहली बार उसे देखा तब धुंधली और भयावनी खाड़ी से सागर-दानव की भांति ऊपर उठती हुई उस (जहाज़) की महती चोटियां ही हमें दिखाई पड़ी थीं। भयानक आतंक के एक क्षण-भर वह उस घूर्णित तरंग-शृंग पर ठहरा दिखाई पड़ा—जैसे अपनी भव्यता के ध्यान में मग्न हो गया हो; फिर कांपने लगा, लड़खड़ाया और नीचे आ गया।

मैं नहीं जानता कि इस समय कौन-सा आकस्मिक आत्म-नियन्त्रण मेरे मन-प्राण पर छा गया। लड़खड़ाता हुआ परन्तु निर्भय होकर मैं अपने विनाश की प्रतिक्षा करने लगा। खुद हमारे जहाज़ ने भी संघर्ष करना छोड़ दिया था और समुद्र-गर्भ में समाता जा रहा था। नीचे आते हुए जहाज़

के धक्के से उसके उस हिस्से पर आघात लगा जो पहिले से ही पानी के नीचे था। इसका अनिवार्य परिणाम यह हुआ कि दुर्निवार प्रचंडता के साथ मैं उन अजनबी जहाज की बल्लियों पर जा गिरा।

ज्यों ही मैं गिरा जहाज लहरों के दबाव से करवट लेने लगा और उसके कारण जो गड़बड़ी पैदा हुई उसके बीच माँझियों का ध्यान मेरी ओर नहीं गया और मैं आसानी के साथ एक बड़े झरोखे से, जो अंशतः खुला हुआ था, होकर एक फलके में जा छिपा। मैं यह नहीं कह सकता कि यह सब मैंने क्यों किया। उस जहाज के नाविकों को पहिली बार देखते ही मुझपर जो एक नामरहित अस्पष्ट आतंक छा गया था, शायद वही इसका प्रमुख कारण था। मैं एक ऐसी जाति के लोगों पर विश्वास करने को तैयार न था जिसमें अनेक नवीनताओं, संदेहों और आतंकों के लक्षण देख चुका था। इसलिए मैंने उस कक्ष में अपने छिपने का स्थान बना लेना उचित समझा। मैंने कुछ तख्तों को इधर-उधर करके अपने छिपने का ऐसा स्थान बना लिया कि जहाज की बड़ी-बड़ी शहतीरों के बीच जब चाहे जाकर छिप सकता था।

मैंने अपना यह काम मुश्किल से पूरा किया होगा कि मुझे वहां किसी के पदशब्द सुनाई पड़े और मैं झट वहां छिप गया। एक आदमी मेरे छिपने के स्थान के पास से गुजरा। आहट से मालूम हुआ कि उसके कदम क्षीण और अस्थिर हैं। मैं उसका चेहरा तो नहीं देख सका किन्तु उसकी सामान्य आकृति को देखने का मौका मुझे मिल गया। स्पष्टतः उसमें बहुत बड़ी उम्र तथा उसकी दुर्बलता के लक्षण थे। आयु के भार से उसके घुटने कांप रहे थे और उसका सारा शरीर लड़खड़ा रहा था। वह अपने-आप किसी ऐसी भाषा के कुछ शब्द बुदबुदा रहा था जो मेरी समझ के बाहर थी। वह पुराने एवं जीर्ण नक्शों तथा अनोखे औजारों की ढेर में कुछ टटोल रहा था; उसमें द्वितीय बचपन की दुःशीलता तथा देवता की गम्भीर मर्यादा दोनों का मिश्रण था। कुछ देर बाद वह छत पर चला गया और मैंने उसे फिर नहीं देखा।

इस समय मेरे प्राणों पर एक ऐसी भावना ने अधिकार कर लिया था

जिसका कोई नाम मैं नहीं बता सकता——एक ऐसा मनोवेग जिसका विश्लेषण सम्भव नहीं, जिसके लिए अतीत के पाठ अपर्याप्त हैं और मुझे भय है कि भविष्य भी जिसकी कोई कुंजी उपस्थित न कर पाएगा। मेरी जैसी मनोरचना वाले आदमी के लिए यह अन्तिम निष्कर्ष बुरा है। अपनी धारणाओं की प्रकृति से मैं कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकता——मैं जानता हूं कि कभी संतुष्ट नहीं हो सकता। इसलिए इसमें आश्चर्य की बात नहीं कि ये धारणाएं अनिश्चित हैं क्योंकि उनका जन्म ऐसे स्रोतों से हुआ है जो बिलकुल अनोखे हैं। मेरी आत्मा में एक नई चेतना, एक नई संज्ञा ही जुड़ गई है।

जब मैंने पहिली बार उस भयावने जहाज़ की छत पर पांव रखे थे तब से बहुत दिन बीत गए हैं और मैं समझता हूं कि मेरी नियति की किरणें, एक केंद्र, एक फोकस पर एकत्र हो रही हैं। अचिन्त्य लोग ! इस प्रकार के ध्यान में लीन जो मेरी समझ के बाहर है; वे मेरे पास से, बिना मेरी ओर कोई ध्यान दिए, गुज़र जाते हैं। मेरे लिए छिपकर रहना गलत है क्योंकि वे देख नहीं पाएंगे। अभी-अभी मैं मेट की आंखों के सामने से होता आ रहा हूं, और बहुत समय नहीं बीता जब मैं कप्तान के निजी कक्ष में भी हो आया और वहां से लिखने की यह सब सामग्री ले आया जिसका इस समय उपयोग कर रहा हूं और पहिले भी कर चुका हूं। समय-समय पर मैं यह विवरणी लिखता रहूंगा। यह सच है कि शायद इसे दुनिया तक पहुंचाने का अवसर मुझे न मिल पाएगा किन्तु मैं अपने प्रयत्न में नहीं चूकूंगा। अन्तिम क्षण में मैं इस पाण्डुलिपि को एक बोतल में बंद करके समुद्र में प्रवाहित कर दूंगा।

एक ऐसी घटना हो गई है जिसने मुझे सोचने का एक और अवसर प्रदान किया है। क्या ये सब बातें एक अशास्य भवितव्यता के खेल हैं ? मैं छत पर पहुंच गया था, वहां से मैंने अपने को नीचे की ओर लोहे-लक्कड़ के बीच फेंक दिया था और किसीका ध्यान इस ओर नहीं गया। अपने भाग्य की विलक्षणता के विचार में खोए-खोए ही, अचेतनावस्था में, मेरे पास खूबसूरती के साथ तहाकर रखे हुए अतिरिक्त पाल के किनारे पर मैंने

ब्रश से कुछ लिख मारा। अब वह अतिरिक्त पाल (स्टॅडिंग सेल) जहाज पर फैल गया है और उसपर मेरे ब्रश के लेपन से बना 'खोज' (डिसकवरी) शब्द दिखाई पड़ रहा है।

पिछले दिनों जहाज की बनावट के सम्बन्ध में मैंने अनेक पर्यवेक्षण किये हैं। भलीभांति शस्त्रसज्जित होते हुए भी वह युद्धपोत नहीं है। उसकी रचना, मस्तूल तथा सामान्य प्रावधान सभी इस प्रकार की कल्पना का निषेध करते हैं। वह क्या नहीं है, इसकी कल्पना तो मैं कर सकता हूं, परन्तु वह क्या है, इसे बताना असम्भव है। उसके अद्भुत ढांचे, उसकी विचित्र धन्नियों, उसके बृहदाकार, कैनवस-निर्मित बहुल कक्षों, उसके अत्यन्त सादे अग्रांग तथा पुरातन पृष्ठ भाग को देखकर न जाने क्यों जब-तब मेरे मन में परिचित वस्तुओं से संबद्ध संवेदनाएं जाग उठती थीं और स्मृति की उन अस्पष्ट परछाइयों के साथ पुरातन विदेशी गाथाएं और अतीत के युग घुलमिल जाते थे।

मैं जहाज की शहतीरों को देखता रहा हूं। वह ऐसी सामग्री से बना है जो मेरे लिए अज्ञात हैं। जिस लकड़ी का प्रयोग किया गया है, वह ध्यान से देखने पर इस काम के अयोग्य मालूम पड़ती है। ज़रा सोचिए तो, कीड़ा-खाई ये लकड़ियां अपने छिद्र-बाहुल्य के कारण भी ऐसे समुद्रों में संतरण के लिए कैसे उपयुक्त हो सकती हैं, फिर आयु के कारण उनकी अक्षमता और जीर्णता का ख्याल तो कीजिए। मेरा यह पर्यवेक्षण विलक्षण प्रतीत होगा किन्तु इस लकड़ी में स्पेनी सागौन की सब विशेषताएं दिखाई पड़ती हैं—ऐसे स्पेनी सागौन की, जिसे किसी अप्राकृतिक उपाय से फुला दिया गया हो।

उपर्युक्त वाक्य पढ़ते हुए एक पुराने ऋतुहत डच नाविक की बात मेरे स्मृतिपट पर उदित हो उठती है। जब भी उसके कथन की सच्चाई पर कोई शंका प्रकट की जाती थी तो वह कहा करता था—"यह बात उतनी ही सत्य है जितना वह समुद्र जिसमें समुद्री नाविक के जीवित शरीर के समान खुद जहाज भी आयाम में बढ़ता जाता है।"

लगभग एक घंटा हुआ होगा, जब मैं मांझियों के एक झुण्ड में घुस गया। उन लोगों ने मेरी ओर कोई ध्यान नहीं दिया और यद्यपि मैं उन सबके बीचोंबीच खड़ा था किन्तु वे मेरी उपस्थिति के बारे में बिल्कुल बेखबर थे। जैसे आदमी की चर्चा मैं अपने छिपने के स्थान की बात कहते समय कर चुका हूं, इन सबपर किसी सम्मानार्ह पुरातन युग की छाप थी। उनके घुटने दुर्बलता के कारण कांपते थे, जर्जरता के कारण उनके कंधे झुककर दोहरे हो रहे थे और उनकी झूलती हुई चमड़ियां हवा में खड़खड़ाती थीं, उनकी आवाज धीमी, प्रकम्पित और टूटी हुई थी, उनकी आंखें वर्षों के नजले से चमकती थीं और उनके भूरे बाल तूफान में भयानक रूप से लहरा उठते थे। उनके इर्द-गिर्द के डेक के हर हिस्से पर युगजीर्ण अनोखी बनावट के गणित-यंत्र फैले हुए थे।

कुछ देर पहिले मैंने एक अतिरिक्त पाल के लटकाने का वर्णन किया था। उस समय से वायु-गति से वियुक्त हो जाने के कारण जहाज अपनी भयानक चाल से दक्षिण की ओर ऐसे नारकीय सागर-क्षेत्र में जा रहा था जिसकी मनुष्य कल्पना भर कर सकता है। मैंने अभी-अभी डेक को छोड़ दिया है क्योंकि वहां ठहरे रहना मेरे लिए असम्भव हो गया था, यद्यपि मांझियों को मेरे कारण वहां कोई असुविधा नहीं थी। मुझे यह चमत्कारों में एक चमत्कार मालूम पड़ता है कि हमारी बृहदाकृति एक बार सदा के लिऐ जलमग्न नहीं हो रही है। निश्चय ही हम अमरता के किनारे पर निरंतर घुमड़ते रहेंगे किन्तु गह्वर में अन्तिम छलांग नहीं मारेंगे। मैंने जीवन में जितनी उत्तुंग तरंगें देखी हैं उनसे सहस्रगुनी भीमाकार तरंगों के बीच से भी हम बाणगतिवाले समुद्रकाक की-सी सरलता के साथ फिसलते चले जा रहे हैं, और विशाल जल-तरंगें, अतल के दानवों की भांति हमारे ऊपर सिर उठाए हुए हैं—ऐसे दानवों की भांति जिनका दोष घुड़कियों और धमकियों तक सीमित है और जिन्हें सर्वनाश करने से रोक रखा गया है। इस तरह जो बार-बार हम बचते जाते हैं उसका एक ही प्राकृतिक कारण समझ में आता है मुझे कल्पना करनी ही होगी कि जहाज किसी प्रबल

धारा या फिर तरंगों की किसी प्रचण्ड तटीय टक्कर के प्रभाव में है।

मैंने आमने-सामने खड़े होकर और खुद उसके ही कक्ष में कप्तान को देखा है किन्तु जैसी कि मुझे आशा थी, उसने मेरी तरफ कोई ध्यान ही नहीं दिया। यद्यपि उसके रूप-रंग में कोई ऐसी बात नहीं थी जो उसके इंसान से कुछ कम या ज्यादा होने की ओर इशारा करती फिर भी उसे देखते हुए मेरे मन में अदम्य श्रद्धा और आतंक की भावना भर गई। इस श्रद्धाभाव में आश्चर्य के मनोवेग का भी मिश्रण था। ऊंचाई में वह मेरे बराबर ही होगा, अर्थात् लगभग ५ फुट ८ इंच। उसका शरीर गठा हुआ है किन्तु न तो वह बहुत तगड़ा है, न उसमें कोई और उल्लेखनीय विशेषता दिखाई पड़ती है। किन्तु उसके चेहरे पर अभिव्यक्ति की जो विलक्षणता छाई हुई है; उसपर बुढ़ापे का जो गहरा, अद्‌भुत और हृदयोन्मेषकारी साक्ष्य दिखाई पड़ता है वह इतना पूर्ण, इतना चरम है कि मेरे प्राणों में एक वचनातीत भावना भर जाती है। उसके माथे पर यद्यपि बहुत कम सिलवटें किन्तु उसपर असंख्य वर्षों की छाप मालूम पड़ती है। उसके भूरे बालों मे अतीत बोलता है, और उसकी उनसे भी ज्यादा भूरी आंखें भविष्य की दर्पण हैं। उसके कक्ष का सम्पूर्ण फर्श विचित्र लौहग्रसित कागदों, जीर्ण वैज्ञानिक यन्त्रों और अप्रचलित तथा बहुत दिन पूर्व विस्मृत नक्शों से भरा हुआ था। उसका सिर उसके हाथों पर झुका हुआ था और अपनी अग्निमयी चंचल आंखों से एक कागद को देख रहा था जो मेरी समझ से कोई राज्यादेश था और जिसपर किसी सम्राट के हस्ताक्षर थे। वह अपने तईं उसी प्रकार बुदबुदा रहा था जिस प्रकार पूर्वोल्लिखित प्रथम मांझी बुदबुदाया था जिसे मैंने अपनी छिपने की कोठरी में देखा था : किसी विदेशी भाषा के धीमे स्वर में उच्चरित कुछ शब्द। यद्यपि बोलनेवाला मेरे निकट था किन्तु मुझे लगा उसकी आवाज एक मील दूर से आ रही हो।

जहाज और उसकी सारी चीजें पुराकालकी प्रेरणाओं से पूर्ण हैं। नाविक जहां-तहां इस प्रकार चलते हैं जैसे समाधिस्थ शताब्दियों के प्रेत हों; उनकी आंखों में एक उत्सुक एवं विफल अर्थ दिखाई पड़ता है और सामरिक लालटेनों

की प्रबल चमक में उनकी आकृतियां हमारे मार्ग से गुजरती हैं तो मुझे कुछ ऐसा अनुभव होता है जैसा पहिले कभी नहीं हुआ, यद्यपि मेरी सारी जिन्दगी पुरासामग्री के व्यवसाय में ही गुज़री है और बालबेक, टाडमोर तथा पर्सीपोलिस के ध्वस्त स्तम्भों की छाया मुझमें भरी हुई है—ऐसा अनुभव जिसने मेरी आत्मा को वीरान कर दिया है।

जब मैं अपने चारों ओर देखता हूं तो पहिले की इन आशंकाओं के लिए लज्जित अनुभव करता हूं। अभी तक के तूफ़ान में यदि मैं कांपता रहा हूं तो उस हवा और समुद्र की लड़ाई में क्या मैं भौचक्का-सा नहीं खड़ा रहूंगा जिसकी प्रचण्डता प्रकट करने के लिए अंधड़ और सिमूम जैसे शब्द अपर्याप्त और प्रभावहीन हैं? जहाज़ के आस-पास शाश्वत निशा की अंधियारी और फेनरहित जल की अशान्ति है, किन्तु थोड़ी दूर पर, हमारी दोनों ओर, अस्पष्ट और बीच-बीच में, हिम की सीमाकार प्राचीरें दिखाई पड़ रही हैं; निर्जन आकाश में उनका सिर उठा हुआ है, और वे जगत् की दीवारों की भांति लग रही हैं।

मैं कल्पना कर ही रहा था कि देखता हूं, जहाज़ धारा में पड़ गया है —यदि ऐसा कहकर उस ज्वार को प्रकट करना सम्भव हो जो श्वेत हिम-शृंग के पास चीत्कार करते हुए दक्षिण की ओर प्रवहमान हो और जिसमें इतना वेग हो जैसा महाप्रपात की भयंकर गति में होता है।

मेरे मनोवेगों में जो भय समाया हुआ है उसकी कल्पना करना भी नितान्त असम्भव है, किन्तु इस निराशा के बीच भी इन भयावने क्षेत्रों के रहस्य-भेद की उत्सुकता मुझपर छाई हुई है और उसके लिए मैं मृत्यु के वीभत्स से वीभत्स पक्ष को गले लगाने को तैयार हूं। इतना स्पष्ट है कि हम किसी उत्कण्ठापूर्ण जानकारी की ओर तीव्र गति से दौड़े जा रहे हैं—किसी ऐसे रहस्य की ओर जिसे कभी प्रकट नहीं किया जा सकता और जिसकी सिद्धि ही विनाश है। शायद यह धारा हमें दक्षिण तक ही पहुंचा दे, कम से कम ऐसी विलक्षण कल्पना करने के लिए सम्भावनाएं तो उपस्थित हैं ही।

मांझी डेक पर अशांत एवं कम्पित चरणों से घूम रहे हैं, किन्तु उनके चेहरों पर नैराश्य की उदासीनता की जगह आशा की उत्कण्ठा ही अधिक दिखाई दे रही है।

इस बीच भी वायु हमारे पृष्ठभाग में मौजूद है और चूंकि हमारे पास कनवैस का ढेर है, बीच-बीच में जहाज पूरा समुद्र के ऊपर उठ जाता है। ओह ! भय के ऊपर भय ! अचानक हमारे दाहिने और बायें हिम-शिलाएं अपने मुंह खोल देती हैं ;—अब हम समकेन्द्रिक वृत्तों में बार-बार घूम रहे हैं; एक ऐसी विशाल गोल रंगशाला के चारों ओर मूर्छित-से चक्कर लगा रहे हैं जिसकी दीवारों की ऊंचाइयां अन्धकार और दूरी में खो गई हैं। किन्तु अब मुझे अपनी नियति के विषय में सोचने के लिए बहुत कम समय बच गया है; वृत्त, घेरे तेजी के साथ छोटे होते जा रहे हैं, अब हम उन्मत्त भाव से भंवर की गोद में पैठते जा रहे हैं और चीखते, गर्जते, उछलते समुद्र तथा तूफान के बीच जहाज लड़खड़ा रहा है। और हे ईश्वर ! वह जलगर्भ में समाता जा रहा है।

बोन-बोन

जो भी आदमी—के राज्यकाल में रोयेन की गली 'ले फेब्रे' के उस छोटे-से कैफे (काफी हाउस, स्वल्पाहारगृह) में गया होगा, वह इस बात से इन्कार नहीं करेगा कि पियरे बोन-बोन असाधारण गुणों वाला रेस्तरां-मालिक था। इससे तो कोई और भी इन्कार नहीं कर सकता कि पियरे बोन-बोन अपने समय के ज्ञान-विज्ञान में भी समान रूप से दक्ष था। इसमें सन्देह नहीं कि अपने समय के अनुसार उसकी मिठाइयां अत्युत्तम थीं किन्तु वह कौन-सी कलम है जो उसके प्रकृति-सम्बन्धी निबन्धों, उसके आत्मा-सम्बन्धी विचारों, उसके प्रेतात्मा-सम्बन्धी पर्यवेक्षणों के साथ न्याय कर सकती है? यदि उसके आमलेट,[1] यदि उसके फ्रिकांगदो[1] अद्वितीय थे, तो उस जमाने का कौन साहित्यकार ऐसा था जो बोन-बोन के विचारों को सुनने-जानने के लिए उससे दूना समय देने को तैयार नहीं था जितना वह शेष सब विद्वानों के सम्पूर्ण विचारों के कूड़े के लिए देता था? बोन-बोन ने ऐसे पुस्तकालयों को उलट-पुलट डाला था जिसे दूसरे किसीने कभी पलटा न होगा; उसने इतना पढ़ा था जितना पढ़ने की कल्पना भी कोई नहीं कर सकता; उसने इतना समझा और ग्रहण किया था जिसे समझने की सम्भावना भी किसी के दिमाग में नहीं आ सकती। यद्यपि उसके जमाने में रोयेन में कुछ ऐसे भी लेखक थे जो कहते थे कि उसकी उक्तियों में न तो अकादमी की विशुद्धता है, न लाइसियम (साहित्यिकी : एक साहित्यिक संस्था) की गहराई है; यद्यपि उसके सिद्धान्त सर्वसाधारण की समझ के बाहर थे, किन्तु इन बातों से यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि वे समझ में आने लायक नहीं थे। मैं

१. मांसाहार के विविध पदार्थ

समझता हूं कि वे इतने स्वयंसिद्ध थे कि बहुत-से लोग उन्हें दुर्ज्ञेय मान बैठते थे। यह बोन-बोन ही था जिसके प्रति काण्ट अपने अध्यात्मज्ञान के लिए ऋणी था। किन्तु वह न तो अफलातूनवादी था, न, सच कहें तो, अरस्तूवादी ही था, फिर वह अपना मूल्यवान समय फिकैशे[1] या फैसीली[1] ग्रेड् के आविष्कार में लगाने की जगह आधुनिक लीबनिज़ की भांति किसी संवेदना के विश्लेषण या नैतिक विवादों के बीच तेल-पानी को एक करने में नष्ट करने के लिए तैयार नहीं था। बिल्कुल नहीं। बोन-बोन यूनानी भी था और इतालवी भी। वह पूर्वसिद्ध विधि से तर्क करता था। वह अनुमानात्मक तर्क भी करता था। उसके विचार सहज-निसर्गजात थे। वह ग्रोविज्ञोन के ज्यार्ज में विश्वास रखता था; वह बोंजेरियों में विश्वास रखता था। असल में वह बस बोनबोनिस्ट (अपना ही अनुयायी) था।

मैंने तत्त्वज्ञानी का उल्लेख रेस्त्रां-स्वामी के रूप में भी किया है। पर मैं नहीं चाहता कि मेरा कोई मित्र यह ख्याल करे कि अपने खान्दानी पेशे को बोन-ब्रोन इसलिए करता था कि लोग उस पेशे की मर्यादा और महत्त्व को समझें। ऐसी बात बिल्कुल नहीं थी। यह कहना कठिन था कि वह दोनों कार्यों में से किसमें अधिक गौरव का अनुभव करता है। उसकी राय थी कि मानसिक शक्तियों का पेट की सक्षमता से घनिष्ठ सम्बन्ध है। मेरा मतलब यह हर्गिज़ नहीं है कि तत्त्वज्ञानी के विरुद्ध में पेटूपन का यह कोई दूसरा आरोप लगा रहा हूं। यदि पियरे बोन-बोन में अपनी दुर्बलताएं थीं—और कौन ऐसा महापुरुष है जिसमें हज़ार-हज़ार दुर्बलताएं नहीं होतीं?—तो वे कुछ विशेष महत्त्व की न थीं, बल्कि वे ऐसी थीं जो दूसरे लोगों में गुण मानकर वर्णित की गई हैं। इस कथा में उसके उल्लेख की ज़रूरत न थी परन्तु जिस प्रबलता के साथ वह उसके सामान्य स्वभाव से सहसा निकलकर सामने आ जाती थी उसके कारण यह बात लिख रहा हूं कि वह लाभ उठाने का कोई मौका हाथ से नहीं जाने देता था।

इसका मतलब यह नहीं कि वह लोभी था,—ऐसा कुछ नहीं। तत्त्व-

१. आमिषाहार व विविध पदार्थ

ज्ञानी के संतोष के लिए यह आवश्यक नहीं था कि सौदा उसीके हित में हो। यदि सौदा हो सके तो किसी भी तरह का व्यापार हो, कोई भी शर्त हो, कोई भी परिस्थिति हो, उसे कर लेता था और उसके बाद कई-कई दिनों तक उसके चेहरे को विजय की मुस्कान दीप्त करती रहती थी और आंखें चमकाकर वह अपनी बुद्धिमानी का प्रमाण उपस्थित करता रहता था।

किसी भी युग में ऐसे अनोखे विनोद पर लोगों का ध्यान जाना और उनके लिए उसकी चर्चा करना स्वाभाविक था। तब फिर हमारी कथा का सम्बन्ध जिस युग से है उसमें यह अनोखापन लोगों का ध्यान न आकर्षित करता तो एक आश्चर्य की ही बात होती। किन्तु शीघ्र ही इस बात की भी रिपोर्ट सामने आ गई कि ऐसे मौकों पर बोन-बोन की मुस्कान उसकी उस सरल खीस से भिन्न होती है जिसके साथ वह अपने ही मज़ाक पर हंसता या अपने परिचितों का स्वागत करता है। अनेक उत्तेजक बातें बताई जाती थीं। ऐसी कहानियां कही जाती थीं कि किस तरह जल्दबाज़ी में उसने फलां-फलां सौदे किए जिसके लिए फुर्सत में उसे पश्चात्ताप करना पड़ा। उसकी अकथ क्षमताओं, अस्पष्ट कामनाओं, तथा अपने मतलब के लिए अप्राकृतिक प्रवृत्तियों के ग्रहण करने के उदाहरण पेश किए जाते थे।

तत्वज्ञानी में दूसरी भी दुर्बलताएं थीं, किन्तु वे हमारे गम्भीर विचार के योग्य नहीं है। उदाहरणार्थ, असाधारण गहराईवाले ऐसे मनुष्य कम ही मिलते हैं जिनका झुकाव बोतल की ओर न हो—हां, इस प्रवृत्ति का कारण उत्तेजना है या उस गहराई का ही प्रमाण है, यह कहना असम्भव है। जहां तक मैं जानता हूं, बोन-बोन इसे बहुत सूक्ष्म अनुसंधान के योग्य नहीं मानता था, और मैं भी नहीं मानता। किन्तु यह नहीं माना जा सकता कि ऐसी पुरातन प्रवृत्ति या आदत के विषय में बोन-बोन अपनी साहित्यिकता और अपने आमलेट-प्रेम के बीच स्वयंप्रेरित विवेक न करता रहा होगा। उसके लिए मेदोक[1] और सातर्न[1] वैसी ही थी, जैसे कैटुलए और होमर थे। वह जैसे सॅट पीरे के घूंट लेता हुआ किसी तर्कविधि के साथ

१. विविध फ्रांसीसी मदिराएं

खेल करता था वैसे ही 'क्लो द वाउजियो' के साथ बैठकर किसी बात के बखिए उधेड़ सकता था। एकान्त के किसी निश्चित समय में वह वांग द ब्रूर्गोग' (बर्गण्डी मदिरा) के साथ विहार करता था। परन्तु बाद में के दिनों में तत्त्वज्ञ बोन-बोन के स्वभाव में एक विलक्षण गहराई एवं रहस्यवादिता आ गई। इस रहस्यवादिता पर उसके प्रिय जर्मन ग्रंथों के अध्ययन से जादूटोने का रंग चढ़ गया था।

जिस जमाने की बात हम कह रहे हैं, उस जमाने में लेफेब्रे वीथी के उस छोटे-से कैफे में प्रवेश करना, किसी प्रतिभावाले व्यक्ति के पवित्र-स्थान में प्रवेश करने के समान था। रोयेन में ऐसा एक भी रसोइया नहीं था जो आपसे यह न कहता कि बोन-बोन प्रतिभावान व्यक्ति है। उसकी बिल्ली तक इसे समझती थी और प्रतिभावान व्यक्ति के सामने जाकर अपनी दुम हिलाना भूल जाती थी। उसका बड़ा जल-कुत्ता इसे जानता था और मालिक के आने पर कान और नीचे का जबड़ा गिराकर अपनी लघुता प्रकट करता था। पर यह भी सत्य है कि इस अभ्यासजन्य सम्मान का अधिकांश तत्त्वज्ञानी के शारीरिक रूप के कारण था। मैं कहने को बाध्य हूं कि उल्लेखनीय बाह्याकृति का असर पशुओं तक पर पड़ता है। और रेस्त्रां-स्वामी की बाह्याकृति में ऐसी बहुतेरी बातें थीं जो चतुष्पादों को प्रभावित कर सकती हैं। उस लघु महान की चालढाल में ही एक विलक्षण महनीयता थी, जो केवल शारीरिक आयतन के द्वारा पैदा नहीं की जा सकती। यद्यपि बोन-बोन मुश्किल से तीन फुट ऊंचा रहा होगा और उसका सिर बहुत ही छोटा था, फिर भी उसके पेट की गोलाई को, तोंदीलेपन को उदात्तता की सीमा तक पहुंचती वैभवशालिता से रहित देखना असम्भव था। उसके आकार में कुत्ता और मानव को निश्चय ही उसकी उपलब्धियों का आभास होता रहा होगा और उसकी विराटता में उसकी अमर आत्मा के लिए उपयुक्त आश्रयस्थान के दर्शन होते रहे होंगे।

१. विविध फ्रांसीसी मदिराएं

यहां मैं बाह्य तत्त्वज्ञानी के रूपरंगत तथा परिधान के विषय में और भी कुछ कहना चाहता हूं। मेरे नायक के बाल छोटे थे और कंघी से सिर पर सरलता से फैलाए हुए थे। इन बालों पर एक तिरछी सफेद टोपी शोभायमान थी। उसकी जाकिन उस काल के रेस्त्रा-स्वामियों के सामान्य वर्ग द्वारा पाहिनी जानेवाली जाकिन के फैशन की न थी, बाहें जरा बड़ी थीं और कलाई दोहरी थी,—वह उस असभ्य युग की प्रचलित प्रणाली के अनुसार उसी कपड़े की नहीं थी बल्कि जिनोवा के चितकबरे मखमल की थी। उसके स्लिपर चमकीले बैंगनी रंग के थे और ऐसे चित्र-विचित्र थे कि उठे हुए अंगूठे न होते या जिल्द की दीप्तिमयी आभा न होती तो वे जापान के बने समझ लिए जाते। उसके ब्रिचेज (तंग पायजामा) पीले साटन जैसे किसी वस्त्र के थे। उसका आसमानी नीले रंग का लबादा गहरी लाल पट्टियों से निर्मित था और उसके कंधे से होता शरीर पर यों फैला था जैसे सुबह की धुंध सर्वत्र फैली होती है। उसके दर्शन से होने वाले सामान्य प्रभाव को देखकर बेनेवेनुता के वे उल्लेखनीय शब्द याद आ जाते थे कि यह कहना कठिन है कि "पियरे बोन-बोन सचमुच स्वर्ग का पक्षी था, या पूर्णता का स्वर्ग ही था।"

मैं कह चुका हूं कि ले फेब्रे बीथी के उस छोटे-से कैफे में प्रवेश करना किसी प्रतिभावाले व्यक्ति के पवित्र स्थान में प्रवेश करना था।—किन्तु केवल प्रतिभावाला आदमी ही उस पवित्रस्थल के गुणों का अन्दाज लगा सकता था। प्रवेश-द्वार के सामने एक साइनबोर्ड लगा था जिसपर एक ओर बोतल और दूसरी ओर समोसा के चित्र बने हुए थे और दूसरी ओर 'बोन-बोन का बोधगृह' शब्द लिखे हुए थे। इस प्रकार दोनों पेशों का बोध हो जाता था।

ड्योढ़ी पर पांव रखते ही इमारत का सम्पूर्ण अन्तरंग भाग आंखों के सामने आ जाता था। पुराने ढंग का एक लम्बा, नीची उठान का कमरा ही कैफे का एक मात्र स्थान था। इस कक्ष के एक कोने पर तत्त्वज्ञानी की शय्या थी। पर्दों की भरमार तथा यूनानी ढंग के चंदोवे ने उसे शानदार

और आरामदेह बना दिया था। विपरीत कोने में भोजनागार तथा पुस्तकालय थे। भोजनालय की अलमारी पर शास्त्रार्थ की तश्तरी चुपचाप पड़ी थी। इधर अद्यतन नीतिशास्त्र से भरा चूल्हा पड़ा था, उधर पुस्तकों की खिचड़ी फैली हुई थी; कहीं मांस भूनने की झंझरी के साथ जर्मन नीतिशास्त्र की जिल्दें हाथ मिला रही थीं और कहीं यूसेबियस के पास टोस्ट का कांटा पड़ा था। कड़ाही में प्लेटो (अफलातून) आराम से लेटा था और थूकदानी पर समसामयिक हस्तलिपियां चुनी हुई थीं।

और बातों में बोन-बोन कैफे अपने समय के अन्य स्वल्पाहारगृहों जैसा ही था। दरवाजे के सामने ही एक बड़ा आतिशदान मुंह बाये पड़ा था। आतिशदान की दाहिनी ओर एक कपबोर्ड पर तरह-तरह की लेबिल लगी हुई बोतलें सजी हुई थीं। उनमें मूजो, चेम्बरटिन, सेंटज्याजं, बोर्दे, मीदो, सातर्न, लाफिते इत्यादि मदिराएं, अपनी अन्य अपेक्षाकृत अप्रसिद्ध बहिनों के साथ, पान किये जाने के लिए, मौजूद थीं। छत से सांकल के सहारे लौहनिर्मित एक लैंप लटका हुआ था, जिससे कमरे में धुंधला प्रकाश फैल रहा था।

इसी जगह की बात है। घोर सर्दी—शिशिर—के दिन थे, जब एक रात को बारह बजे, अपनी विलक्षण मोटाई के विषय में कुछ देर तक पड़ोसियों की बातें सुनने के बाद, पियरे बोन-बोन ने सबको बाहर निकाल दिया, और विक्षुब्ध मन से चमड़े की गद्दीवाली आरामकुर्सी पर लेटा दहकती हुई आग का सुख भोगने लगा।

यह रात उन भयानक रातों में से एक थी जो शताब्दी के बीच एक ही दो बार आती हैं। बर्फ बड़ी-बड़ी शिलाओं के रूप में नीचे फिसलती जा रही थी और भयानक अन्धड़ में बोन-बोन का कैफे जड़ से कांप उठता था। उग्र वायु चिमनी से आकर तत्त्वज्ञानी की शय्या के पर्दों को बुरी तरह हिला देती थी और उसके कारण खाद्यपात्र तथा पुस्तकें इधर-उधर बिखर गई थीं। बाहर का साइनबोर्ड तूफान के झोंकों में जोर से खड़खड़ा उठता था और ठोस बलूत के स्तंभों से टकराकर रुदनशील ध्वनि उत्पन्न करता था।

मैंने ऊपर कहा है कि आतिशदान के पास अपने नित्य के स्थान पर बैठने हुए बोन-बोन अपनी शान्त मुद्रा में नहीं था। दिन-भर ऐसी कई चिन्ताजनक बातें होती रही थीं कि उसके चिन्तन की शान्ति भंग हो गई थी। बनानी एक चीज थी, और बन दूसरी गई थी; जब वह नीतिशास्त्र के एक सिद्धान्त की खोज में लगा था तब चूल्हे पर रखा पात्र उलटकर गिर पड़ा था, और सबसे बड़ी बात तो यह कि जिस सौदे को तय करने में वह सदा ही हर्ष का अनुभव करता था वह किसी तरह न तय हो सका था। इन चिन्ताओं में रात की भयानकता भी मिल गई थी जिससे उसकी घबड़ाहट बढ़ गई थी। जिस बड़े जल-कुकुर का जिक्र पहिले किया जा चुका है, उसे सीटी देकर उसने नज़दीक बुला लिया और अशान्त भाव से कुर्सी पर बैठ गया। अब उसकी नज़र कक्ष के दूरस्थ भाग की ओर गई जिसके दुराग्रही अन्धकार को दहकती आग का प्रकाश भी पूरी तरह दूर नहीं कर पा रहा था। किस मतलब से वह उधर देख रहा था, उसे खुद नहीं मालूम, परन्तु उसका निरीक्षण-कार्य पूरा कर लेने पर उसने एक छोटा टेबुल, जो किताब-कागजों से भरा हुआ था, अपने नज़दीक खींच लिया और अगले दिन प्रकाशित होनेवाली एक बृहदाकार पाण्डुलिपि के संशोधन में डूब गया।

कमरे से एक कराहती फुसफुसाहट आई—"मोंसिये बोन-बोन, मुझे कोई जल्दी नहीं है।"

घबड़ाकर टेबुल को गिराता हुआ हमारा नायक उठ खड़ा हुआ और आश्चर्य से चतुर्दिक देखता हुआ बोला—"राक्षस।"

"बिल्कुल ठीक।" आवाज ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया।

शय्या पर अपनी पूरी लम्बाई में पसरी हुई किसी चीज को देखकर तत्त्वज्ञानी बोला—"बिल्कुल ठीक। क्या चीज बिल्कुल ठीक है? तुम यहां कैसे आए?"

अनधिकार प्रवेशकर्ता ने कहा—"मैं कह रहा था,—हां, मैं कह यह रहा था कि मुझे समय का कोई अभाव नहीं है और जिस काम के लिए मैं आया हूं उसकी तुरन्त आवश्यकता भी नहीं है। संक्षेप में मेरा मतलब यह

है कि आपके अपना व्याख्या-कार्य पूरा कर लेने तक मैं ठहर सकता हूं।"

"मेरी व्याख्या ! यह बात है !—तुम कैसे जानते हो, तुम्हें यह बात कैसे समझ में आई कि मैं व्याख्या लिख रहा हूं ? हे ईश्वर !"

"हुश !" उस आकृति ने पतली तीखी आवाज में कहा। फिर वह जल्दी से शय्या पर से उठकर एक ही छलांग में हमारे नायक के पास आ गई और उसके कारण सिर पर झूलता लैंप बल खाकर पीछे हट गया।

यद्यपि तत्वज्ञानी विस्मित था किन्तु इसके कारण अजनबी के चेहरे-मोहरे और परिधान का पर्यवेक्षण करने में उसे कोई बाधा न हुई। वह मूर्ति बहुत दुबली किन्तु सामान्य से कहीं ज्यादा ऊंची थी, काले कपड़े का एक धूमिल चुस्त सूट पहिने थी जो एक शती पूर्व की शैली में कटा-बना था। देखने से मालूम होता था कि ये वस्त्र उससे कहीं नाटे कद के आदमी के लिए बनाए गए होंगे। उसके टखने और कलाइयां कई इंच तक खुली हुई थीं किन्तु उसके जूतों में जो एक जोड़ी शानदार बकसुए लगे हुए थे वे उसके परिधान के दूसरे हिस्सों की गरीबी को झुठला रहे थे। उसका सिर खला हुआ और पूर्णतः गंजा था, केवल पिछले भाग में कुछ बाल थे जिससे एक काफी लम्बी चोटी लटक रही थी। पार्श्वकांचयुक्त हरा चश्मा प्रकाश की चमक से आंखों की रक्षा कर रहा था; साथ ही हमारे नायक को उनके रंग या बनावट का पता नहीं चलने देता था। सारे शरीर पर कहीं कमीज का नामोनिशान न था। हां, एक गंदा सफेद गलबन्ध कण्ठ के चारों ओर बड़ी सफाई के साथ बंधा हुआ था, और उसके सिरे दोनों पार्श्वों में लटक रहे थे जिससे अनजाने ही सही उसके पादरी होने का शुबहा होता था। उसकी सूरत-शकल और रंग-ढंग में और भी कई ऐसी बातें थीं जिनसे इस सन्देह की पुष्टि होती थी। अपने बायें कान के ऊपर, आधुनिक क्लर्क की भांति, वह प्राचीनों की लेखनी जैसी कोई चीज रखे हुए था। उसके कोट के सामने वाली एक जेब में एक छोटी काली पुस्तक, जो फौलाद की क्लिप में बंधी हुई थी, दिखाई पड़ रही थी। पता नहीं संयोगवश या कैसे पुस्तक कुछ इस तरह रखी हुई थी कि पुश्ते पर अंकित उसके नाम 'कैथोलिक

क्रिया-पद्धति' (रायचुएल कैथलीक) के सफेद अक्षर बाहर से दिखाई पड़ रहे थे। उसके शरीर पर ऊपर से नीचे तक विषण्णता, यहां तक कि मुर्दे-सा पीलापन छाया हुआ था। माथा ऊंचा था और उसपर गहरे चिन्तन की रेखाएं थीं। मुख के कोने नीचे की ओर इस प्रकार खिंचे हुए थे कि उनसे अत्यन्त विनीत विनम्रता का पता लगता था। जब वह हमारे नायक की ओर आया तो उसके हाथ जुड़े हुए थे। उसने एक दीर्घ निःश्वास लिया। उस समय उसकी दृष्टि में इतनी पवित्रता थी कि उसका प्रभाव पड़े बिना रह नहीं सकता था। जब तत्त्वज्ञानी ने अजनबी का सन्तोषजनक रूप से पर्यवेक्षण कर लिया तो रोष के समस्त चिह्न उसके चेहरे से दूर हो गए; उसने बढ़कर उससे हाथ मिलाया और लाकर एक आसन पर बैठा दिया।

किन्तु तत्त्वज्ञानी के मनोभाव में जो आकस्मिक परिवर्तन हो गया उससे यह समझना कि अजनबी के प्रभाव से वैसा हुआ, बिल्कुल गलत होगा। बोन-बोन ऐसा नहीं था कि उसपर किसीकी बाह्याकृति का कोई प्रभाव पड़ता। जो आदमी मनुष्यों एवं वस्तुओं का ऐसा खरा ज्ञाता था उसके लिए यह असम्भव था कि वह अपने आतिथ्य की सीमा में अनधिकार प्रवेश करने वाले अजनबी के वास्तविक चरित्र को न समझ पाया हो। अजनबी के पांवों की बनावट काफी महत्त्वपूर्ण थी। उसके नितम्ब के पिछले भाग में सूजन थी जो हिल रही थी और उसके कोट का निचला भाग स्पन्दित हो रहा था। जरा खयाल तो कीजिए कि जिस आदमी के लिए सदा ही उसके मन में शुद्ध सम्मान की भावना रही हो सहसा उसका सत्संग-लाभ होने पर हमारे नायक को कितना सन्तोष हुआ होगा। फिर भी वह इतना विचक्षण था कि अपने वास्तविक मनोभावों का पता नहीं लगने देता था। उसे सहसा जो सम्मान प्राप्त हुआ था उसके प्रति वह अपनी चेतना को प्रकाशित नहीं करना चाहता था। उसका उद्देश्य इतना ही था कि अजनबी से बातचीत करके कुछ ऐसे नैतिक विचारों की जानकारी प्राप्त कर ले जिन्हें अपने आगामी प्रकाशन में शामिल करके मानव जाति को प्रकाश दे सके और खुद अपने को भी अमर कर ले,—ऐसे विचार जो अजनबी की बड़ी उम्र

और सदाचार-शास्त्र में उसके विख्यात पाण्डित्य से प्राप्त हो सकते थे।

ऐसे प्रबुद्ध विचारों से प्रेरित होकर हमारे नायक ने अजनबी से बैठने का अनुरोध किया, इसके साथ ही आग में कुछ और लकड़ियां डाल दीं और टेबुल पर विन द मुज़ाओ (एक तीक्ष्ण मदिरा) की चन्द बोतलें लाकर रख दीं। इतनी तैयारी कर लेने के बाद वह अजनबी के सामने अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गया और इस बात की प्रतीक्षा करने लगा कि कैसे बातचीत शुरू करे। किन्तु कभी-कभी बड़ी चतुराई से बनाई हुई योजनाएं भी व्यवहार में असफल हो जाती हैं। आगन्तुक के प्रथम शब्दों से ही वह हक्काबक्का होकर रह गया।

उसने कहा—"मैं देखता हूं कि तुम मुझे जानते हो, बोन-बोन! हा! हा! हा! हे! हे! हे! ही! ही! ही! हो! हो! हो! हू! हू! हू!" और अपने चेहरे की सारी पवित्रता को दूर फेंकते हुए ऐसा मुंह बाया कि वह कानों तक फैल गया और उसके विषैले, टेढ़े-मेढ़े दांत दिखलाई पड़ गए। फिर वह अपना सिर पीछे की ओर फेंककर इतने ज़ोर से, भयानक रूप में और देर तक हंसता रहा कि काले कुत्ते ने भी चूतड़ के सहारे बैठे हुए, मुंह ऊंचा करके उस कोरस में उसका साथ दिया। और बिल्ली घबराकर दूर कोने में भाग गई और वहां से चीखने-गुर्राने लगी।

तत्त्वज्ञानी ने ऐसा कुछ नहीं किया। वह दुनियादार था और कुत्ते की तरह हंसना या बिल्ली की तरह अशिष्ट आचरण करना उसके लिए सम्भव न था। हां, उसे यह देखकर कुछ विस्मय ज़रूर हुआ कि उसके अतिथि की जेब की किताब पर जो 'रायचुएल कैथलीक' (कैथलिक क्रियापद्धति) शब्द सफेद अक्षरों में उभरे हुए थे उनका रूप और रंग दोनों बदल रहा था। कुछ ही क्षणों में मूलनाम की जगह 'रूजीशेर दे कोंगदाने' (Regitre des Condamnes) अर्थात् 'सज़ायाफ्ताओं का रजिस्टर' शब्द वहां लाल अक्षरों में चमकने लगे। इस चमत्कारपूर्ण परिस्थिति के कारण बोन-बोन के जवाब में परेशानी का रंग आ गया, जो दूसरी अवस्था में शायद न आ पाता।

तत्त्वज्ञानी ने कहा—"क्यों, महाशय, सच्ची बात कहें, तो मेरा विश्वास

है कि आप हैं, मेरा आशय है कि मैं सोचता हूं, कल्पना करता हूं—मुझे एक हलका, बहुत हलका-सा खयाल है कि यह उल्लेखनीय सम्मान···"

महापुरुष ने बीच में बाधा दी—"ओह ! आह ! हां !—बहुत ठीक, ज्यादा कहने की जरूरत नहीं; मैं समझ रहा हूं कि क्या बात है।" यह कहते हुए उसने अपना हरा चश्मा उतार लिया और उसे अपने कोट की बांह से पोंछकर अपनी जेब में रख लिया।

किताबवाली घटना से तो बोन-बोन पहले ही चकित था, अब उसने जो कुछ देखा उससे तो उसके आश्चर्य का आर-पार ही न रहा। अपने अतिथि की आंखों का रंग देखने की उत्सुकता से जो उसने नजर ऊपर उठाई तो देखा कि न वे काली हैं, जिसका उसे पूर्वानुमान था,—न तो भूरी हैं, जिसकी कल्पना की जा सकती थी—न तो पिंगलवर्णी हैं, न नीली हैं; वे पीली, लाल, सफेद, हरी या ऊपर आकाश, नीचे पृथ्वी या सागर में पाए जानेवाले किसी भी रंग की नहीं हैं। पियरे बोन-बोन ने साफ-साफ देख लिया कि हिजमेजेस्टी की न केवल आंखें नहीं हैं बल्कि कभी वहां थी, इसका भी कोई चिह्न नहीं है क्योंकि जिस जगह प्रकृत्या आंखों को होना चाहिए था वहां मरे मांस का एक लोथड़ा था।

ऐसे विचित्र दृश्य के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करने को तत्वज्ञानी कैसे भूल सकता था। उसे आश्चर्य हुआ कि हिज़ेमेजेस्टी ने तुरन्त शिष्ट एवं सन्तोषजनक उत्तर दिया।

"आंखें ! मेरे प्रिय बोन-बोन ! तुमने आंखों के बारे में पूछा ? ओह ! आह ! मैं देख रहा हूं ! जो भद्दी चीजें छपकर फैल गई हैं, मैं देखता हूं कि उन्होंने मेरे शारीरिक रूप के बारे में तुम्हें गलत विचार दिए हैं। आंखें ! सच है, आंखें, पियरे बोन-बोन, अपनी ठीक जगह पर हैं। तुम कहोगे—ठीक जगह तो सिर है। तुम्हें इन आंखों की अनिवार्य आवश्यकता है। फिर भी मैं तुम्हें विश्वास करा दूंगा कि मेरी दृष्टि तुम्हारी दृष्टि से कहीं ज्यादा पैनी है। मैं देख रहा हूं कि उस कोने में एक बिल्ली है—एक खूबसूरत बिल्ली। उसे देखो। अच्छी तरह देखो। हां, अब बताओ, बोन-बोन, क्या

तुम उसकी खोपड़ी से निकलते विचारों, धारणाओं, चिन्ताओं को देख रहे हो ? यह बात ! तुम नहीं देख सकते। वह सोच रही है कि हम उसके मानस की गहराई की तारीफ कर रहे हैं। अभी-अभी वह इस निर्णय पर पहुंची है कि मैं पादरियों-पुरोहितों में सबसे सम्मान्य हूं, और यह कि तुम दार्शनिकों में सबसे ज्यादा दिखाऊ हो, फालतू हो। इस तरह तुम देख सकते हो कि मैं पूर्णतः अन्धा नहीं हूं। मेरे पेशे के लिए जिन आंखों की बात तुम पूछ रहे हो, वे भारमात्र हैं; किसी भी समय टोस्ट पकाने वाले लोहे या चम्मचवाले कांटे से निकाल दी जाने के लायक। मैं मानता हूं कि तुम्हारे लिए ये अनिवार्यतः आवश्यक हैं और बोन बोन तुम उनका ठीक तरह से उपयोग करने की कोशिश करो। मेरी दृष्टि तो मेरी आत्मा है।"

इस जगह अतिथि ने टेबुल पर रखी शराब खुद ढालकर पी और एक बड़ा प्याला बोन-बोन, के लिए भरकर उससे अनुरोध किया कि बिना सोच-विचार के पी जाए और बिल्कुल आराम से बैठे।

जब आगन्तुक के अनुरोध का पालन करते हुए बोन-बोन ने अपना चश्मा उतार लिया तो हिज़मेजेस्टी उसके कन्धे को थपथपाते हुए फिर बोलने लगे—"तुम्हारी किताब बहुत बुद्धिमत्तापूर्ण है पियरे ! बहुत बुद्धिमत्तापूर्ण है तुम्हारी किताब ! मेरे मन के अनुकूल है। किन्तु मेरे विचार से विषयक्रम में कुछ सुधार की जरूरत है। तुम्हारी बहुत-सी धारणाएं मुझे अरस्तू की याद दिलाती हैं। वह तत्त्वज्ञानी मेरे अत्यन्त घनिष्ठ परिचितों में से था। जिस तरह गलती करके खुश होने के उसके स्वभाव को मैं पसन्द करता था, वैसे ही उसकी दुःशीलता के लिए भी उसे चाहता था। उसने जो कुछ लिखा है उसमें केवल एक ही ठोस सत्य है, और उसके लिए भी उसकी मिथ्या बातों पर तरस खाकर, करुणापूर्वक मैंने ही उसे संकेत दिया था। पियरे बोन-बोन ! मेरा अनुमान है जिस दैवी नैतिक सत्य की ओर मेरा इशारा है उसे तुम अच्छी तरह जानते होगे।"

"मैं नहीं कह सकता···"

"नहीं ! अच्छा, मैंने ही अरस्तू को बताया था कि छींक के द्वारा

मनुष्य अपनी नासिका से फालतू विचारों को निकाल फेंकते हैं।"

अपने लिए एक बड़ा पात्र मदिरा से भरते हुए तथा आगन्तुक की उंगलियों में सुंघनी की डिब्बी थमाते हुए तत्त्वज्ञानी ने कहा—"सचमुच—(हिचकी)—यही बात है।"

सुंघनी की डिब्बी लेने से इंकार करते हुए हिज़ मेजेस्टी आगे कहने लगे—"अफलातून के लिए भी, किसी समय, मेरे दिल में मित्रवत् स्नेह था। बोन-बोन, तुम अफलातून को तो जानते ही होगे ? नहीं ? तो मैं हज़ार बार क्षमा मांगता हूं। एक दिन वह एथेंस के पार्थेनन में मुझसे मिला और कहा कि वह एक विचार के लिए परेशान है। मैंने उसे जो विचार दिया वही उसके दर्शन का मूलाधार है।"

"क्या आप कभी रोम भी गए थे ?" रेस्त्रां-स्वामी ने माउज़े मदिरा की दूसरी बोतल खतम करते हुए तथा आलमारी मे 'बिन द चेम्बरतिन' नामक दूसरी मदिरा की बड़ी बोतल निकालते हुए पूछा।

दुष्ट, कुछ इस तरह जैसे किसी किताब से कोई पद गा रहा हो, बोला, "केवल एक बार मोशिये बोन-बोन, केवल एक बार। एक समय ऐसा आया था जब पांच साल तक विद्रोह चलता रहा और उस अवधि में प्रजातंत्र के पास अफसर नहीं रह गए, कोई न्यायालय नहीं रह गया। केवल पंचायतें थीं किन्तु उन्हें कोई शासनाधिकार नहीं था। उस समय, मोशिये बोन-बोन, केवल उस समय मैं रोम में था, इसलिए मुझे उसके किसी दर्शन का कोई पार्थिव परिचय नहीं है।"

"आप एपीक्यूरस के बारे में क्या समझते हैं ? आप एपीक्यूरस के बारे में (—हिचकी—) क्या खयाल रखते हैं ?"

"किसके बारे में मैं क्या खयाल रखता हूं ?" बदमाश ने आश्चर्य के साथ कहा—"निश्चय ही आपका आशय एपीक्यूरस में कोई गलती निकालने का नहीं है। मैं एपीक्यूरिस के बारे में क्या खयाल करता हूं ? आप क्या मेरी बात कह रहे हैं ? मैं ही तो एपीक्यूरस हूं। मैं ही वह दार्शनिक हूं जिसने दायोजीनिस लारेत्स द्वारा प्रशंसित तीन सौ पुस्तकें लिख डाली हैं।"

अब तक तत्त्वज्ञानी के दिमाग पर मदिरा का प्रभाव होने लगा था, इसलिए उसने कहा—"यह झूठ है !"

हिज़ मेजेस्टी बोले—"बहुत अच्छा महोदय ! बहुत ठीक महाशय।"

रेस्त्रां-स्वामी ने फिर दोहराया—"यह झूठ है, यह (-हिचकी-) झूठ है।"

शान्तिपूर्वक बदमाश ने कहा—"आप अपनी ही बात मान लीजिए।" उधर बोन-बोन ने हिज़ मेजेस्टी को पराजित करने के बाद चेम्बरतिन (मदिरा) की दूसरी बोतल खतम करना अपना कर्तव्य समझा।

आगन्तुक बोला—"जैसा मैं अभी कुछ देर पहले कह रहा था, आपकी उस किताब में बहुत-सी बलात् निकाले हुए निष्कर्ष हैं, मोशिये बोन-बोन ! उदाहरण के लिए, आत्मा-सम्बन्धी वाहियात बातों का क्या मतलब है ? जरा बताइए तो महोदय, आत्मा क्या है ?"

अपनी पाण्डुलिपि की ओर इशारा करते हुए तत्त्वज्ञानी ने कहा—"आत्मा ! (–हिचकी–) असंदिग्ध रूप से···"

"नहीं, महोदय।"

"संशयरहित।"

"नहीं, महोदय।"

"अखण्डनीय···"

"नहीं, महोदय।"

"प्रामाणिक रूप से···"

"नहीं, महोदय।"

"निर्विवाद···"

"नहीं, महोदय।"

(हिचकी)

"नहीं, महोदय।"

"और सब प्रश्नों के परे एक······"

"नहीं, महोदय ! आत्मा ऐसी कोई चीज नहीं है।" (इस समय तक तत्त्वज्ञानी चेम्बरतिन की तीसरी बोतल समाप्त कर चुका था।)

"तब—(हिचकी)—कृपया बताइए वह क्या है ?"

"वह न यहां है, न वहां है, मोशिये वोन-वोन !" हिज़ मेजेस्टी ने विचार की मुद्रा में कहा—"मैंने स्वाद लिया है—मतलब यह कि मुझे कुछ बहुत बुरी, और कुछ बहुत अच्छी आत्माओं को जानने का अवसर मिला है।" यहां बदमाश अपने ओंठ चाटने लगा और अज्ञान में ही उसका हाथ अपनी जेब की किताब पर पड़ गया। अब तो उसे छींकों का दौरा ही आ गया।

हिज़ मेजेस्टी ने कहना जारी रखा :—

"एक आत्मा थी क्रेटिनस की-गनीमत। एरिस्तोफनीस; गतिशील। अफलातून : उत्कृष्ट—आपका अफलातून नहीं बल्कि हास्यरस का कवि अफलातून। आपका अफलातून तो सेरबेरस के पेट को उलट देता। फो:। और देखने दीजिए। नोवियस, एन्ड्रोनिकस, प्लूरस तथा तेरेंसियश भी तो थे। फिर लुसीलियस और कैटुलस, नासो, तथा क्विन्तियस फ्लैकस के नाम याद आते हैं—प्यारा क्विन्ती ! जब वह मेरे दिल बहलाव के लिए एक पार्थिव गान गा रहा था तब मैं एक कांटे पर उसे शुद्ध श्रेष्ठ हास्य में, सिझा रहा था।—टोस्ट बना रहा था। तब से मैं उसे इसी नाम से पुकारता हूं। किन्तु ये रोमी तो सुवास चाहते हैं। एक मोटा यूनानी उनके-जैसे एक दर्जन के बराबर होता है; फिर वह अपनी शक्ति स्थिर रखता है जो क्विराइत के लिए नहीं कहा जा सकता। आइए आपके सातंन[1] का स्वाद लें।"

वोन-वोन ने मदिरा की बोतलें हाथ में दे दीं परन्तु इस समय उसे कमरे में दुम हिलने की-सी ध्वनि का बोध हुआ। हिज़ मेजेस्टी में यह बड़ी भद्दी बात थी किन्तु तत्वज्ञानी ने उसपर कोई ध्यान नहीं दिया, हां काले जल-कुक्कुर को लात मारकर चुप रहने को कह दिया। आगन्तुक आगे कहने लगा···

"मैंने देखा कि होरेस में भी बहुत कुछ अरस्तु-जैसा ही स्वाद है—आप जानते हैं, मुझे विविधता का शौक है। मीनाण्डर से मैं तेरेंसियश का

१- एक फ्रांसीसी मदिरा

अनुमान नहीं लगा सकता था। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि नासो प्रच्छन्न रूप में निकान्दर ही है। वर्जीलियस में थियोक्राइतस की झंकार थी। मार्तियल को देखकर मुझे आर्किलोकस का ख्याल आता था और टीरस लिवी निश्चित रूप से पालीवियस के सिवा दूसरा कुछ नहीं था।"

बोन-बोन ने हिचकी के रूप में जवाब दिया और हिज़ मेजेस्टी ने आगे कहना शुरू किया।

"परन्तु मेरा एक झुकाव है मोशिये बोन-बोन ! यदि मुझमें कोई झुकाव है तो वह तत्वज्ञानी के लिए है। फिर भी मैं यह कहना चाहता हूं महोदय, कि हर आदमी नहीं जानता कि तत्वज्ञानी का चुनाव कैसे किया जाता हैं। लम्बे (तत्वज्ञानी) अच्छे नहीं होते, और जो सर्वोत्तम होते हैं, उनकी यदि सावधानी के साथ खाल नहीं उधेड़ी जाती तो ईर्ष्या के कारण उनसे बदबू आने लगती है।"

"खाल नहीं उधेड़ी जाती ?"

"मेरा आशय है कि यदि उन्हें लाश से बाहर नहीं किया जाता।"

"आप चिकित्सक के (-हिचकी-) बारे में क्या सोचते हैं ?"

"उनका नाम न लीजिए।—उख ! उख ! (इस समय हिज़ मेजेस्टी को ज़ोर की उबकाई आ गई) मैंने एक के सिवा किसी का स्वाद नहीं चखा है। वह बदमाश पाखण्डी ! उससे हींग की गन्ध आती थी ! उख ! उख ! उख ! पकड़कर उसे शूकरालय के ठण्डे जल में खूब गच्चा दिया, तब उसने मुझे हैज़े की गोली दी।"

"बदमाश ! (हिचकी) बटिका-मंजूषा का गर्भस्राव !" और तत्व-ज्ञानी ने एक बूंद आंसू गिरा दिया।

आगन्तुक ने कहना जारी रखा—"अन्ततोगत्वा, यदि कोई भद्रजन जीवित रहना चाहता है तो उसे एक-दो से कहीं ज्यादा चतुर होना चाहिए। हम लोगों के विचार से मोटा चेहरा कूटनीतिज्ञता का प्रमाण है।"

"यह कैसे ?"

"क्यों कभी-कभी हम लोगों को खाद्यसामाग्री के लिए कैसी परेशानी

होती है। आपको जानना चाहिए कि जैसी उमसदार जलवायु हमारी है उसमें दो-तीन घण्टे से ज्यादा देर तक स्फूर्ति बनाए रखना असम्भव है, और मृत्यु के अनन्तर तो यदि तुरन्त ही नमक के घोल में नहीं रखा गया तो शरीर से दुर्गन्ध आने लगती है—समझ रहे हो? जब आत्माएं सामान्य ढंग से हमें समर्पित की जाती हैं तो उनसे सड़ांध आने का भय बराबर बना रहता है ।"

"(हिचकी ! - हिचकी !) हे ईश्वर। तब आप कैसे काम चलाते हैं ?"

अब लोह लैम्प और उग्रता के साथ हिलने लगा। राक्षस अपने आसन पर थोड़ा उठ गया, किन्तु किंचित निःश्वास छोड़कर उसने अपने ऊपर पुनः नियन्त्रण स्थापित कर लिया।

"काम चलाने के कई ढंग हैं। हममें से अधिकांश तो अधभूखे रहते हैं; दूसरे कुछ नमक-चटनी से काम चला लेते हैं। अपने तईं तो मैं अपनी स्फूर्तियां जीवित शरीरों से ही खरीद लेता हूं। उस अवस्था में वे ठीक बनी रहती हैं ।"

"किन्तु शरीर (-हिचकी-) शरीर ?" तत्वज्ञानी ने सातर्न की बोतल खाली करते हुए कहा।

"शरीर, शरीर ? पर शरीर का क्या ? ओह ! आह ! मैं देख रहा हूं। पर महोदय, शरीर तो इस सौदे से प्रभावित होता नहीं। मैंने अपने समय में इस तरह की असंख्य खरीदें की हैं, किन्तु पार्टियों को कभी कोई असुविधा नहीं हुई । केन थे, निमरोद थे, नीरो एवं कैलीगुला थे; दायोनीसियश तथा पिसीट्रेटस थे; इनके अलावा हजारों और थे जो अपने जीवन के उत्तरकाल में यह नहीं जानते थे कि आत्मा का होना, आत्मा का रखना किस चिड़िया का नाम है। महोदय, फिर भी इन आदमियों ने समाज को शोभित किया। आज भी अ—हैं जिन्हें हम आप दोनों ही जानते हैं। क्या उनकी सारी मानसिक एवं शारीरिक शक्तियां उनके काबू में नहीं हैं ? उनसे अच्छी सूक्तियां कौन लिखता है ? उनसे अधिक विचक्षणता के

साथ कौन तर्क करता है ? कौन—पर ठहरिए। उनका अनुबन्धपत्र मेरे पाकिट बुक में है।"

इतना कहकर उसने लाल चमड़े का एक बटुआ निकाला। बटुए में से उसने बहुत से कागज बाहर निकाले। बोन-बोन ने एक झांकी में देख लिया कि उनमें से कुछ पर माछो—माजा—रिच अक्षर तथा फैलीगुला एवं एलिजावेथ शब्द लिखे हुए हैं। हिज मेजेस्टी ने इनमें से एक छोटा-सा कागज निकाला और उनमें से निम्नलिखित शब्द जोर-जोर से पढ़ना शुरू किया।—

"कतिपय मानसिक धर्मस्वों का, जिनका ब्यौरा देना अनावश्यक है, विचार करते हुए और एक हजार लुइजे[1] के बदले में, एक साल एक मास की उम्र में इसके द्वारा अनुबन्धवाहक को उस छाया पर जिसे आत्मा कहते हैं, सम्पूर्ण अधिकार, अंग-उपांगों सहित, दे रहा हूं। (हस्ताक्षर) अ······(यहां हिज मेजेस्टी ने एक नाम दोहराया जिसे और अधिक स्पष्ट करना मैं अपने लिए उचित नहीं समझता।)

उसने और आगे कहा—"अ···एक बुद्धिमान मनुष्य है किन्तु मोशिये बोन-बोन, आपकी तरह उसे भी आत्मा के विषय में भ्रम है। आत्मा एक छाया ! बेहूदी बात है यह मोशिये बोन-बोन ! आत्मा एक छाया है ! हा ! हा ! हा !—हे ! हे ! हे ! हू ! हू ! हू ! सिर्फ कीमा की हुई छाया (Fricasseed Shadow) का खयाल कीजिए।

"सिर्फ कीमा की हुई (हिचकी) छाया का ख्याल कीजिए।" हमारे नायक ने, जिसकी क्षमताएं हिज मेजेस्टी के प्रवचन से ऊर्जस्वित हो उठी थीं, प्रतिध्वनिमात्र की।

"केवल कीमा की हुई—(हिचकी)—छाया का खयाल कीजिए। हत्तेरे की ! (हिचकी, आक् छीं) यदि मैं ऐसा ही (हिचकी) लंठ था, तो मेरी आत्मा मिस्टर (आक् छीं) !"

"मोशिये बोन-बोन, तुम्हारी आत्मा ?"

१. एक सिक्का।

"हां, महोदय—(हिचकी)—मेरी आत्मा—"

"क्या ?"

"छाया नहीं है। चुत् !"

"मेरे कहने का आशय यह नहीं था—"

"हां महोदय, मेरी आत्मा (हिचकी, आक्छीं) हां, महोदय।"

"मेरा आशय इस बात पर ज़ोर देने का नहीं था—"

"मेरी आत्मा (हिचकी) विलक्षण रूप से इसके योग्य—(हिचकी)"

"क्या, महोदय ?"

"स्ट्यू[1]।"

"हा !"

"साउफली; सूफी[2]।"

"आड !"

"फ्रिकाशे[3]।"

"ऐसा !"

"रैग आउट या फ्रिकांदो। और देखिए मैं आपको (हिचकी) सस्ते में दे दूंगा।"

हिज़ मेजेस्टी ने शान्तिपूर्वक, साथ ही अपने आसन से उठते हुए, कहा—"ऐसी बात मैं सोच भी नहीं सकता।"

तत्वज्ञानी टकटकी लगाये देखता रह गया।

"इस समय मेरा पेट भरा है।" हिज़ मेजेस्टी ने कहा।

"(हिचकी) ओह !" तत्वज्ञानी ने कहा।

"मेरे पास अभी पैसे नहीं हैं।"

"क्या ?"

"फिर यह मेरी अशिष्टता होगी—

"महाशय।"

"—कि मैं आपकी वर्तमान परिस्थिति···"

१. २. ३. मांस के विविध व्यंजन।

(हिचकी)

"—का लाभ उठाऊं।"

हिज मेजेस्टी ने अभिवादन किया और विदा हो गए—किस ढंग से, इसका तत्वज्ञानी को ठीक पता नहीं लगा, किन्तु बड़े प्रयत्न से बदमाश पर फेंकी हुई बोतल से छत से झूलती पतली चेन टूट गई और लैम्प के ऊपर गिरने से तत्वज्ञानी जमीन पर चित पड़ गया।

छाया

[एक आख्यायिका]

तुम जो इसे पढ़ रहे हो, अब भी जीवितों में गिने जाते हो किन्तु मैं जो लिख रहा हूं बहुत दिनों पूर्व छायाओं के लोक में जा चुका हूंगा। क्योंकि निश्चय ही विचित्र बातें घटित होंगी, और गुप्त बातें जानकारी में आएंगी, तथा ये स्मारक जब आदमियों की नज़र से गुज़रेंगे उसके पहिले कितनी ही सदियां गुज़र चुकी होंगी। और जब लोग इन्हें देखेंगे तब भी कुछ ऐसे होंगे जो इन पर अविश्वास करेंगे; कुछ ऐसे होंगे जो सन्देह करेंगे और बहुत थोड़े ऐसे होंगे जो लोहे की कलम से अंकित इन चरित्रों में सोच-विचार की पर्याप्त सामग्री पाएंगे।

वह साल आतंकों का साल था—वह आतंक से भी अधिक गहरी ऐसी भावनाओं का साल था, जिनके लिए धरती पर कोई नाम नहीं है। अनेक चिह्न एवं लक्षण दिखाई पड़ चुके थे, और दूर-दूर तक, जल और थल पर, महामारी के काले पंख फैल गए थे। जो ग्रहों और नक्षत्रों के जानकार थे, उन्हें यह मालूम था कि आकाश-मण्डल में अमंगल की छाया है, और दूसरों के साथ मुझ यूनानी ओइनोज़ को भी स्पष्ट हो गया था कि सात सौ चौरानवेवां वर्ष का वह परिवर्तन काल आ गया है जब मेष-राशि के आगमन के साथ गुरु भयंकर शनि के रक्तवृत्त में आ मिला है। यदि मैं गलती नहीं कर रहा हूं तो आकाश की विलक्षण प्रकृति, न केवल पृथवी के भौतिक-मण्डल में बल्कि मानवजाति के प्राणों, कल्पनाओं एवं चिन्तनों में भी परिलक्षित होने लगी थी।

टोलेमायस नाम के एक धुंधले नगर के भव्य हाल की दीवारों के अन्दर,

रात के वक्त हम सात आदमी गुलाबी मदिरा की बोतलें खोले बैठे थे। पीतल के एक बहुत ऊंचे द्वार के अलावा हमारे उस कमरे में आने का कोई दूसरा रास्ता नहीं था। इस द्वार की रचना मिस्त्री कोरीनोज द्वारा हुई थी और दुर्लभ कारीगरी की चीज होने के कारण वह अन्दर से सांकलों में बंधा था। उस धुंधले कमरे में जो काले पर्दे लटक रहे थे उनके कारण हमारी नजरों से चांद, फीके तारे तथा निर्जन सड़कें ओझल थीं। किन्तु अमंगल की स्मृति एवं आभास इस तरह दूर नहीं किए जा सकते कि हमारे चतुर्दिक ऐसी वस्तुएं थीं जिनका कोई स्पष्ट-विवरण नहीं दे सकता—भौतिक एवं आध्यात्मिक वस्तुएं। वातावरण में भारीपन—दम घुटने की अनुभूति—चिन्ता—और हम सबके ऊपर अस्तित्व की वह भयंकर अवस्था जो स्नायुओं को उस समय अनुभव होती है, जब ज्ञानेन्द्रियां जीवित तथा जाग्रत रहती हैं किन्तु चिन्तन की शक्तियां, सुप्त पड़ी होती हैं। एक प्रकार का मृत भार हमारे ऊपर छाया हुआ था। वह हमारे अंग-प्रत्यंग पर, घर के फर्नीचर पर, यहां तक कि उन बोतलों पर भी, जिनसे हम मदिरापान कर रहे थे, फैला हुआ था। सभी चीजें दमित दबी हुई-सी थीं और उस बोझ से झुक गई थीं—हमारे कक्ष को प्रकाशित करनेवाले सप्त लौह प्रदीपों की ज्योतियों के अलावा सभी चीजों का यही हाल था। प्रकाश की ऊंची पतली रेखाओं में अपने को ऊपर उठाए हुए वे प्रदीप-लैम्प पाण्डुर एवं निष्कंप जल रहे थे। आबनूस के जिस गोलमेज के इर्द-गिर्द हम बैठे हुए थे उसपर उनकी चमक से दर्पण बनता था उसमें हम सब बैठे हुए लोग अपने ही चेहरे-मोहरे का पीलापन तथा अपने साथियों की झुकी हुई आंखों की अशान्त चमक देखते थे। फिर भी हम हंसते थे और अपने ढंग से खुश भी नजर आते थे। हमारा यह वातोन्मत्त जैसा (हिस्ट्रीरिकल) था। हम हंसते थे और अनाक्रियोन के गीत भी गाते जा रहे थे, जिसे पागलपन ही कहा जा सकता है। हम खूब छककर पी रहे थे—यद्यपि वह गुलाबी मदिरा हमें खून की याद दिला रही थी। क्योंकि तरुण, ज्वायलस शक्ल में हमारे कमरे का एक अधिवासी और था। वह

मुर्दा, पूरी लम्बाई में लेटा हुआ था, कफन से ढका हुआ—इस दृश्य की प्रतिभा और प्रेत ! हाय ! वह हमारी हंसी-खुशी में शरीक नहीं था—सिवाय इसके कि उसका प्लेग से विकृत चेहरा तथा उसके नयन, जिनमें से मृत्यु महामारी की आधी ही आग बुझ पाई थी, हमारे रागरंग में उतना ही भाग लेते जान पड़ते थे जितना मुर्दे उन लोगों के राग-रंग में ले सकते हैं जिनको अभी मरना है। किन्तु, यद्यपि मैं ओइनोज़ अनुभव कर रहा था कि मृतात्मा की आंखें मुझपर लगी हुई हैं, फिर भी मैं अपने को जबर्दस्ती उनकी अभिव्यक्ति की तीक्ष्णता का दर्शन करने से वंचित रख रहा था तथा उस आबनूसी दर्पण की गहराई में स्थिर रूप से ताकते हुए तियोस के पुत्र के गाने अपनी तेज़ एवं सुरीली आवाज़ में गाता जा रहा था। किन्तु क्रमशः मेरे गाने बंद हो गए और उनकी प्रतिध्वनियां भी, दूर कमरे के रोमल पर्दों पर लहरांती हुई क्षीण एवं अस्पष्ट होती गईं, और अन्त में समाप्त हो गई। और यह लो ! जिन रोमल पर्दों में जाकर गायन की ध्वनियां समाप्त हो गई थीं, उन्हीं से एक काली और अस्पष्ट छाया निकली—कुछ ऐसी छाया, जैसी आकाशस्थ धूमिल चांद किसी मानव की आकृति से रच देता है। किन्तु वह छाया न तो मानव की थी, न देवता की, न और किसी परिचित चीज़ की थी। कुछ देर तक तो वह कमरे के पर्दों पर कांपती-हिलती रही, अन्त में पीतल के द्वार की सतह पर पूरी तरह दृष्टि में आती हुई, ठहर गई। किन्तु छाया अस्पष्ट, आकारहीन तथा अनिश्चित थी; वह न तो मनुष्य की छाया थी, न देवता या ईश्वर की—वह न तो यूनान के ईश्वर की, न चैल्डिया के ईश्वर की, न किसी मिस्री ईश्वर की छाया थी और वह छाया पीतल के दरवाज़े पर द्वार के स्तम्भपीठ के गुम्बद के नीचे, ठहरी रही। वह न तो हिलती थी, न कुछ बोलती थी; बस वहां स्थिर हो गई और बनी रही। और यदि मेरी याददास्त ठीक है, तो जिस दरवाज़े पर वह छाया स्थित थी, वह कफन से ढके हुए तरुण ज्वायलस के पैरों के ठीक सामने ऊपर की ओर था। किन्तु हम सात, जो वहां एकत्र थे, उन पर्दों के बीच से छाया को जाते हुए देखकर भी, उसकी ओर स्थिर

आंखों से देखने का साहस न कर सके, बल्कि हमने अपनी आंखें झुका लीं और आबनूस के दर्पण की गहराई में बराबर ताकते रहे। और अन्त में, मैं ओईनोज, ने धीरे से कुछ शब्द बुदबुदाते हुए उस छाया से पूछा कि उसका घर कहां है और नाम क्या है। और छाया ने उत्तर दिया—"मैं *छाया* हूं, और मेरा निवास टोलेमायस के भूगर्भस्थित समाधिस्थान—मुर्दों के तहखाने—में है। दूषित केरोनियन नहर की सीमा पर स्थित हेल्यूजन के धुंधले मैदानों के समीप ही वह जगह है।" सुनते ही हम सब सातों अपने स्थान से भयग्रस्त हो और हड़बड़ाकर उठ गए और कांपने तथा थरथराते हुए भौंचक्के-से खड़े रहे, क्योंकि छाया की आवाज की ध्वनि में किसी एक प्राणी की ध्वनि नहीं थी वरं बृहत् प्राणिसमूह की ध्वनि थी; उसके शब्द की लय में भिन्नता थी और वह दुनिया से विदा हो गए हजारों दोस्तों के सुस्मृत एवं परिचित स्वरों में हमारे कानों को सुनाई पड़ी।

घण्टाघर का शैतान

आम तौर पर हर आदमी जानता है कि दुनिया में सबसे अच्छा स्थान है—या, हाय, था—वोण्डरवोटीमिटिस नामक डच गांव। किन्तु चूंकि वह रास्ते से हटकर और मुख्य सड़कों से दूर रह जाता है इसलिए मेरे पाठकों में से बहुत कम ने उसके दर्शन किए होंगे। इसलिए जिन्हें उसे देखने का सौभाग्य नहीं मिला है उनके लाभ की दृष्टि से मैं उसका कुछ हाल-चाल यहां लिख रहा हूं। और वहां के निवासियों के प्रति सार्वजनिक सहानुभूति प्राप्त करने के लिए मैं उन दुर्घटनाओं का इतिहास यहां देना चाहूंगा जो उसकी सीमा के अन्दर अभी पिछले दिनों हुई है। जो कोई मुझे जानता है उसे इस बात में कोई शंका नहीं होगी कि मैं स्वयं अपने ऊपर ओढ़े हुए इस कर्त्तव्य को अपनी सम्पूर्ण योग्यता, कठोर निष्पक्षता, तथ्यों के सावधान परीक्षण तथा इंगलिश- सज्ञ के लिए योग्य विशेषज्ञों के प्रमाण-संकलन के साथ पूरा करूंगा।

पदकों, पाण्डुलिपियों तथा शिलालेखों की सहायता से मैं जो कुछ जान सका हूं उसके आधार पर निश्चित रूप से कह सकता हूं कि वोण्डरवोटीमिटिस कस्बा अपनी स्थापना के काल से बराबर उसी रूप में रहा है जिस रूप में आज वर्तमान है। जहां तक उसकी स्थापना या जन्म का सवाल है मैं उसका जवाब उस अनिश्चित निश्चितता के साथ ही दे सकता हूं जो बाज अवसरों पर गणितज्ञ अलजबरा के किसी सूत्र पर आरोपित करते हैं। उसके स्थापना काल के विषय में मैं यही कहूंगा कि जो भी पुराना काल खोज का हो सकता है वह उसे दिया जा सकता है।

वोण्डरवोटीमिटिस नाम की व्युत्पत्ति क्या है या वह किस शब्द का

अपभ्रंश है, इसके विषय में भी, दुःखपूर्वक मुझे कहना पड़ता है कि, मैं निश्चित रूप से कुछ कह सकने में असमर्थ हूं। इस सूक्ष्म विषय पर लोगों की राय अनेक प्रकार की है, कुछ के विचार विद्वत्तापूर्ण, कुछ के मूर्खता से भरे हुए, कुछ के उग्र हैं। उनमें से मैं किसी पूर्णतः सन्तोषजनक बात का चुनाव नहीं कर सकता।

इस प्रकार वोण्डरवोटीमिटिस की स्थापनातिथि या उसके नाम की व्युत्पत्ति के बावजूद, जैसा मैं पहिले भी कह चुका हूं इस बात में कोई सन्देह नहीं किया जा सकता कि वह सदा से उसी रूप में स्थित रहा है जिस रूप में उसे हम इस युग में पाते हैं। कस्बे के बूढ़े से बूढ़े आदमी को इसके किसी भाग के किसी दूसरे रूप में होने का स्मरण नहीं है बल्कि इस प्रकार की किसी सम्भावना को वह अपमान समझता है। यह कस्बा एक ऐसी पूर्णतः गोलाकार घाटी में है जिसकी परिधि चौथाई मील के लगभग होगी। वह चारों ओर से सुन्दर पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इसकी चोटी पर चढ़ने का कभी किसी आदमी ने साहस नहीं किया। इसके लिए वे बहुत अच्छा कारण यह बताते हैं कि उनको विश्वास ही नहीं है कि उसकी दूसरी ओर कोई चीज है।

घाटी के प्रांगण में (जो बिल्कुल समतल है और जिसमें चौड़े टाइल लगे हुए हैं) एक कतार में गोलाकार साठ मकान एक के बाद एक चले गए हैं। इनका पिछवाड़ा पहाड़ियों की ओर है और सब की दृष्टि समान रूप से मैदान के केन्द्रबिन्दु की ओर है। यह केन्द्रबिन्दु हर मकान के अगले मुख्यद्वार से ६० गज की दूरी पर स्थित है। हर एक मकान के सामने एक छोटा बगीचा है। बगीचे में जाने आने के लिए गोलाकार मार्ग बने हैं। हर बगीचे में एक धूपघड़ी और २४ पातगोभी के पौधे हैं। सब मकानों में ऐसी समरूपता है कि एक से दूसरे का भेद करना कठिन है। अत्यन्त प्राचीन होने के कारण उनके स्थापत्य की शैली विचित्र है किन्तु इस कारण उनकी मनोरमता या चित्रोपमता में कोई कमी नहीं आई है। वे अच्छी तरह सिझाए हुए छोटी ईंटों से बने हैं। ईंटों का रंग लाल है; उनके सिरे काले हैं। इसके कारण दीवारें बड़े शतरंज-पटल-सी दिखाई पड़ती हैं। तिकोने

छज्जे आगे की ओर झुके हुए हैं, मुंडेरे ओरी के ऊपर के शेष भवनांश-जितने बड़े हैं। खिड़कियां संकरी और गहरी हैं; उनमें छोटे-छोटे शीशे जड़े हैं और कितने ही झरोखे दिखाई पड़ते हैं। छत पर लम्बी और मोड़-दार खपरैलों का बाहुल्य है। सारा लकड़ी का काम गहरे रंग में हैं; उनके आस-पास खूब खुदाई हुई है पर उस खुदाई की शैली में कोई विशेष विविधता नहीं है। वोण्डरवोटीमिटिस के संगतराश केवल दो ही पदार्थों की खुदाई करना जानते थे—एक मेज़घड़ी (टाइमपीस), दूसरा पत्तागोभी। किन्तु इन चीज़ों को वे बहुत अच्छी तरह बनाते थे और जहां भी छेनी चलाने का मौका मिलता था, वहां वे उन्हें विलक्षण चतुराई के साथ उत्कीर्ण करते थे।

बाहर से देखने में ये मकान जैसे एक-से थे, अन्दर से भी उसी प्रकार समान थे। उनमें जो फर्नीचर था वह भी एक ही ढंग का था। फर्श चतुष्कोण टाइलों से बनी हुई थी; मेज़-कुर्सियां कालेरंग की लकड़ी की बनी थीं; उनके पाए पतले और टेढ़े थे। अंगीठी के ऊपर के आले चौड़े और ऊंचे थे; उनमें सामने की ओर न केवल—घड़ियां और गोभियां उत्कीर्ण थीं बल्कि असली टाइमपीस भी थी, जो जोरों से टिक-टिक करती थी। यह घड़ी बिल्कुल बीच में ऊंचे पर रखी थी और आले के दोनों ? पर एक-एक पातगोभी दिखाई पड़ रही थी। प्रत्येक पातगोभी और घड़ी (टाइमपीस) के बीच एक चीनी की मूर्ति रखी हुई थी। इस चीनी का पेट खूब बड़ा था और उस पेट के बीच एक बड़ा गोला छेद था जिसके ज़रिए एक जेबघड़ी का मुंह दिखाई पड़ रहा था।

अंगीठियां बड़ी-बड़ी और गहरी थीं और उनकी सलाखें वक्र और भयानक दिखाई पड़ती थीं। उनमें बराबर दीप्त अग्नि जलती रहती थी। आग पर एक बड़ा बर्तन रखा था जिसमें शूकर-मांस तथा अन्य पदार्थ पका करते थे और गृहस्वामिनी उसकी देख-रेख में लगी रहती थी। वह नारी, मोटी वृद्ध महिला है, उसकी आंखें नीली हैं और चेहरा लाल है; लाल-पीली किनारियों से चित्रित बड़ी-सी टोपी लगाए हुए है। उसकी पोशाक

नारंगी-रंग की है और गंगाजमनी-सूत एवं ऊन मिलाकर बनाई हुई है। वह पीछे की ओर काफी बड़ी, और कमर के पास पतली है। दूसरी दृष्टियों से भी वह छोटी है क्योंकि उसके पांव की पिंडलियों के मध्य तक ही पहुंचती है। पिंडलियां मोटी हैं; उसके टखने भी वैसे ही हैं, किन्तु उसके पास उनको ढकनेवाले हरे मोजों की जोड़ी है। गुलाबी चमड़े के उसके जूते अनेक पीले फीतों से इस प्रकार बंधे हैं कि पातगोभी की आकृति बन जाती है। उसके बाएं हाथ में एक छोटी पर भारी डच (जेब) घड़ी है—दाहिने हाथ से वह मांसादि के लिए कड़छी लिए है। उसके बगल में एक मोटी चितकबरी बिल्ली खड़ी है जिसकी पूंछ से एक चमकती खिलौने की गजरघड़ी बंधी है जिसे लड़कों ने विनोद के लिए बांध दिया है।

लड़के, जिनकी संख्या तीन है, सबके सब, बगीचे में हैं और सुअरों की देखभाल कर रहे हैं। उनमें हर एक दो फुट ऊंचा है। वे तिकोने हैट (टोपी) जंघों तक का बैंगनी वेस्टकोट, मृगचर्म का घुटन्ना, लाल ऊनी मोजे, सफेद बक्सुएयुक्त भारी जूते तथा सीप के बटन लगे लम्बे कोट पहिने हुए हैं। हर एक के मुंह में पाइप तथा दाहिने हाथ में छोटी घड़ी है। वह कश लेता और घड़ी देखता है, फिर घड़ी देखता और कश लेता है। सुअर, चर्बीले एवं सुस्त हैं और इस समय पातगोभी के गिरे हुए पत्तों को खा रहे हैं तथा बीच-बीच में उस खेल-घड़ी को पीछे की ओर लात से मार भी देते हैं जो बच्चों ने उनकी पूंछ में भी इसलिए बांध दी है कि वे भी बिल्ली-जैसे ही सुन्दर दिखाई पड़ें।

दरवाजे के ठीक सामने ऊंची पीठवाली, नीचे से चर्मभण्डित आराम-कुर्सी पर, जिसके पांव मुड़े हुए हैं, वृद्ध गृहस्वामी स्वयं बैठे हैं। वह अत्यधिक मोटा तथा नाटा आदमी है; उसकी आंखें बड़ी-बड़ी और गोल हैं, ठुड्ढी दोहरी, बड़ी-सी है। उसकी पोशाक लड़कों की पोशाक-जैसी है और इस विषय में मुझे कुछ ज्यादा कहने की जरूरत नहीं मालूम पड़ती। फर्क इतना ही है कि उसका पाइप लड़कों के पाइप से बड़ा है और वह ज्यादा जोर से कश ले सकता है। उसकी तरह उसके पास भी एक घड़ी है किन्तु वह

उसे अपने जेब में रखे हुए है। सच पूछिए तो उसे घड़ी देखने से ज्यादा जरूरी काम करने हैं; वह काम क्या हैं; मैं अभी बताऊंगा। वह अपना दाहिना पांव बाएं घुटने पर रखे हुए बैठा है; उसकी मुद्रा गम्भीर है और मैदान के केन्द्र में स्थित किसी उल्लेखनीय पदार्थ पर कम से कम उसकी एक आंख तो स्थिर रूप से लगी हुई है।

वह पदार्थ नगर-परिषद् (टाउन कौंसिल) के भवन के शिखर पर स्थिर है। टाउन कौंसिल के सदस्य सब छोटे-छोटे गोलमटोल बुद्धिमान-आदमी हैं। उनकी आंखें बड़ी-बड़ी और गोल हैं; मोटी दोहरी ठुड्ढी है; उनके कोट कस्बे के सामान्य अधिवासियों की अपेक्षा ज्यादा लम्बे और जुतों के बक्सुए ज्यादा बड़े हैं। कस्बे में मेरे आगमन के बाद से उनकी कई विशेष बैठकें हो चुकी हैं और उनमें तीन महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत किए गए हैं :—

१. पुरानी परम्पराओं को बदलना गलत है,
२. वोण्डरवोटीमिटिस के बाहर कुछ भी अच्छा नहीं है।
३. हम अपनी घड़ियों और पातगोभियों पर जमे रहेंगे।

परिषद् के विचारकक्ष के ऊपर ही शिखर है और शिखर के अन्दर एक घण्टाघर है, जहां कस्बे का गौरव और चमत्कार, वोण्डरवोटीमिटिस कस्बे की महती घड़ी स्थिर है और सदा स्थित रही है। और जितने भी बूढ़े लोग अपने दरवाजों के आगे आरामकुर्सियों पर बैठे हैं उन सबकी आंखें इसी पदार्थ की ओर लगी हुई हैं।

इस महत् घड़ी के सात पहलू हैं जो घण्टाघर की सात दिशाओं से दिखाई देते हैं, इसलिए उसे सब मकानों से सरलतापूर्वक देखा जा सकता है। घड़ी के मुख के ये सब पहलू काफी बड़े और श्वेत हैं और उनके बीच सुइयां भारी और काली हैं। वहां एक आदमी रहता है जिसका एक मात्र कर्त्तव्य है घड़ी की देखभाल करना। पर यह नौकरी बड़े ही आराम की, लगभग क्रियारहित है, क्योंकि वोण्डरवोटीमिटिस की इस महत् घड़ी में कभी कोई खराबी पैदा होने की बात किसी को मालूम नहीं है। कुछ दिनों पहिले तक

तो इसकी कल्पना करना भी नास्तिकता मानी जाती थी। प्राचीन से प्राचीन जिस ज़माने का पुरातत्वज्ञों को पता है, उस ज़माने से बराबर वह नियमित समय पर घण्टा बजाती रही है। यही बात गांव की अन्य छोटी-बड़ी घड़ियों के बारे में भी सत्य है। समय ठीक रखने के लिए उससे अच्छा दूसरा स्थान नहीं था। जब (घण्टाघर) की बड़ी घड़ी बारह बजे कहना ठीक समझती तो उनकी सभी आज्ञापालक अनुगामिनियां भी उसी के साथ अपने कण्ठ खोल देतीं और प्रतिध्वनि की भांति उसके शब्द दोहरातीं। संक्षेप में, भले ग्रामवासी न केवल अपने विशिष्ट भोजन पर आसक्त थे बल्कि अपनी घड़ियों पर भी गर्व करते थे।

जो लोग आरामदेह पदों पर काम करते हैं उनके प्रति लोगों का न्यूनाधिक सम्मान रहता ही है, और चूंकि वोण्डरवोटीमिटिस का घण्टाघर-वाला अत्यन्त आरामदेह पद पर है इसलिए वह दुनिया में सर्वाधिक सम्मानित व्यक्ति भी है। उसके कोट का पुछल्ला बहुत लम्बा है—उसका पाइप, उसके जूते का बक्सुआ,—उसकी आंखें, उसका पेट गांव के किसी भी बूढ़े अधिवासी से बड़े हैं, और जहां तक ठुड्डी का सवाल है, वह औरों की न केवल दूनी, बल्कि तिगुनी है।

अभी तक हमने वोण्डरवोटीमिटिस की सुखद अवस्था का ही चित्र खींचा है—हाय ! ऐसे सुन्दर चित्र को भी अधोगति का अनुभव करना पड़ा।

वहां के सबसे बुद्धिमान अधिवासियों में बहुत दिनों से एक कहावत प्रचलित रहती है—पहाड़ियों के ऊपर से कोई शुभ वस्तु नहीं आ सकती और सचमुच ऐसा मालूम पड़ता है कि इन शब्दों में भविष्यवाणी का कुछ-न-कुछ अंश था। परसों की बात है, दोपहर होने में सिर्फ पांच मिनट बाकी थे कि पहाड़ी की चोटी पर पूर्व की ओर एक अनोखी चीज दिखाई पड़ी। ऐसी घटना ने स्वभावतः सबका ध्यान आकर्षित किया और आरामकुर्सियों पर बैठे हर एक वयोवृद्ध व्यक्ति ने भीतिपूर्वक अपनी एक आंख उस पदार्थ की ओर लगा दी किन्तु अब भी वह एक आंख घण्टाघर की घड़ी पर ही

लगाए रहा।

जब बारह बजने में तीन मिनट रह गया तो वह विचित्र पदार्थ स्पष्टत: एक क्षुद्राकृति विदेशी तरुण मानव के रूप में दिखाई पड़ा। वह बड़ी तेजी के साथ पहाड़ियों से नीचे उतर रहा था इसलिए शीघ्र ही प्रत्येक आदमी ने उसे अच्छी तरह देख लिया। वोण्डरवोटीमिटिस में जितने आदमी कभी देखे गए होंगे, उनमें वह सबसे विचित्र था। उसका चेहरा गहरे सुंघनी रंग का था; उसकी नाक लम्बी, सुग्गे-जैसी थी, आंखें मटर-जैसी छोटी और गोल थीं; मुंह चौड़ा था; सुन्दर दन्तावली थी, जिसे जान पड़ता है, दिखाने को वह बड़ा उत्सुक था क्योंकि बार-बार खीस निपोरता था। मूंछें और गल-मुच्छे ऐसे थे कि मुंह का और हिस्सा अच्छी तरह दिखाई ही न पड़ता था। सिर खुला हुआ था और केश भलीभांति संवारे हुए थे। पोशाक में एक चुस्त, दो-पुंछी काला कोट (जिसकी एक जेब से सफेद रूमाल का काफी बड़ा भाग बाहर निकला हुआ दिखाई देता था), काला पश्मीने का बना घुटन्ना, काला रेशमी मोजा, काले सैटिन के फीतों के गुच्छों से युक्त ठिगाना पंप-जूता था। एक कांख में वह एक बड़ा टोप और दूसरी में अपने कद से कम से कम पांचगुने आकार का बेला (फिडिल) दबाए हुए था। उसके बाएं हाथ में स्वर्ण-निर्मित सुंघनी की डिबिया थी, जिससे नीचे उतरते हुए और हर तरह के कदम जमीन पर रखते हुए, अत्यधिक आत्म-सन्तोष के भाव से बार-बार सुंघनी निकालकर सूंघता चलता था। ईश्वर रक्षा करें। वोण्डरवोटीमिटिस के गम्भीर ग्रामवासियों की आंखों के सामने यह एक विचित्र दृश्य था।

यदि साफ-साफ कहें तो खीस निपोरने के बावजूद उस आदमी का चेहरा धृष्ट और कुटिल था, और जब वह चक्कर काटता गांव में घुसा तो उसके जूतों की शक्ल-सूरत ने लोगों में एक प्रकार की शंका पैदा कर दी, और जिन ग्रामवासियों ने उस दिन उसे देखा उनमें से बहुतेरे उस सफेद रूमाल के नीचे झांकने के लिए बहुत कुछ करने को तैयार थे, जो उसके कोट की जेब से बाहर लटक रहा था। किन्तु जिस बात ने उनके अन्दर

सबसे अधिक और उचित असन्तोष पैदा किया वह यह थी कि वह बदमाश छैल कभी स्पेनी नृत्य (फैनडैंगो) के से पद रखता, कभी लट्टू की तरह चक्कर खाता हुआ चल रहा था परन्तु उसे इसकी ज़रा भी कल्पना न थी कि पद-संचालन में सम रखने-जैसी भी कोई चीज़ होती है।

किन्तु गांव के भले लोगों को पूरी तरह अपनी आंखें खोलने का मौक़ा ही न मिला क्योंकि दोपहर होने, बारह बजने में सिर्फ़ आध मिनट रह गया था। ठीक इसी समय वह बदमाश उनके बीच कूद पड़ा और बैलेंस करता तथा एक पांव पर नाचता हुआ कबूतर की भांति झपटकर नगरपरिषद् के घण्टाघर पर चढ़ गया; जहां आश्चर्यचकित घण्टावाला स्तंभित मर्यादा के साथ तम्बाकू के कश लगा रहा था। बदमाश ने उसकी नाक पकड़कर इधर-उधर धक्का दिया, फिर अपना बड़ा टोप उसके सिर पर दे मारा; उससे उसकी आंखों एवं मुंह पर आघात किया, और फिर अपनी वह भीमाकार बेला उठाकर उससे तब तक उसकी अच्छी तरह पिटाई करता रहा कि घण्टेवाले के अत्यधिक मोटे होने और बेला या फिडिल के बिल्कुल खोखले होने के कारण ऐसी आवाज़ होने लगी मानो सारंगी-वादक दल के ढोलकिए फुहड़पन के साथ ढोल बजा रहे हों।

पता नहीं, इस अनुचित आक्रमण की क्या प्रतिहिंसात्मक प्रतिक्रिया वहां के अधिवासियों में होती किन्तु अब बारह बजने में आधा सेकेण्ड ही रह गया था; बड़ी घड़ी बजने वाली ही थी और परम्परा के अनुसार सबके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण और आवश्यक था कि वे अपनी घड़ियों की तरफ ध्यान रखते। परन्तु यह भी स्पष्ट दिखाई पड़ रहा था कि इस समय वह बदमाश घण्टाघर की घड़ी के साथ कुछ छेड़छाड़ कर रहा है यद्यपि उसको ऐसा करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। परन्तु चूंकि इसी समय घड़ी घण्टा बजाने लगी, किसीको उसके कार्यों की ओर ध्यान देने का मौका न रहा और सब लोग घण्टे सुनने में लग गए।

घड़ी ने कहा—एक।

वोण्डरवोटीमिटिस में आरामकुर्सियों पर बैठे हुए वृद्ध जन ने दोहराया

—येक। उसकी अपनी घड़ी ने भी कहा—येक। उसके घर की आलमारी पर रखी घड़ी ने कहा—येक। लड़कों की घड़ियों ने कहा—येक और बिल्लियों एवं शूकरों की पूंछ से बंधी घड़ियों ने भी दोहराया—'येक'।

बड़ी घड़ी आगे चली—'दो।'

और सबने दोहराया—'दू।'

'तीन। चार। पांच। छः। सात। आठ। नौ। दस।' घड़ी बोलती गई।

'थीन। तार। फांच। शे। ज़ात। ओत। नाव। डस।' दूसरों ने दोहराया।

'ग्यारह।' बड़ी घड़ी बोली।

'गारः।' छोटियों ने स्वीकृति दी।

'बारह।' बड़ी घड़ी ने कहा।

'बाराः।' दूसरों ने, पूर्ण सन्तोष के साथ, अपनी आवाज़ें धीमी करते हुए, उत्तर दिया।

'ठीक बाराः है।' उन सबने कहा और अपनी घड़ियां रख दीं किन्तु बड़ी घड़ी का काम अभी खत्म नहीं हुआ था।

'तेरह।' कहा उसने।

'यह क्या ?' नाटे वृद्ध भलेमानुषों ने कहा। उनके चेहरे भय से पीले पड़ गए; तम्बाकू पीने की नलिकाएं (पाइप) उनके मुंह से गिर पड़ीं और सबके दाहिने पांव बाएं घुटने से हटकर नीचे आ गए।

"यह क्या?" चीखकर वे बोले—"टेरह ! टेरह ! हे भगवान, यह, यह टेरह बजे हैं !"

और इसके बाद जो भयंकर दृश्य वहां दिखाई पड़ा, उसे ध्यान करने से लाभ क्या है ? सारा गांव शोरगुल, चीत्कार-उद्गार की शोकजनक स्थिति में डूब गया।

"यह सब क्या हो रहा ?" सब लड़के चिल्ला पड़े।

"मेरे खाने का क्या हुआ ? वह सब तो नष्ट हो गया है।" गृहिणियां चिल्लाईं।

"हमारा पाइप कहां गया?" सब बूढ़े चीख उठे–"आश्चर्य! इस क्षण सब चुक गए।" और उन्होंने बड़े गुस्से के साथ उन्हें फिर से भरा और अपनी आरामकुर्सियों पर पीछे की ओर लेटते हुए उन्होंने इतने ज़ोर के साथ और इतनी तेज़ी से कश लगाने शुरू किए कि सारी घाटी अभेद्य धुएं से भर गई।

इस बीच सारी पातगोभियां लाल पड़ गईं और छोटी घड़ियों पर भी मानो बड़ी घड़ी का जादू चल गया। फर्नीचर पर जो घड़ियां खचित थीं, वे मानो जादू के ज़ोर से नाचने लगीं और आलमारियों पर रखी घड़ियां किसी तरह अपना क्रोध शान्त न कर सकीं और इस तरह बार-बार तेरह बजाने लगीं और उनके लंगर या दोलक (पेण्डुलम) इस तरह घूमने और टकराने लगे कि देखने में भी भयानक लगता था। किन्तु इससे भी खराब बात यह हुई कि न तो बिल्लियां और न शूकर अपनी पूंछों में बंधी घड़ियों के इस दुर्व्यवहार को सहन करने में समर्थ थे और वे जगह-जगह उछल-कूदकर, शोर मचाकर, भौंककर, धक्के देकर, लोगों के अधोवस्त्रों के नीचे दौड़कर ऐसा तहलका मचाने लगे जिसकी कल्पना करना भी मुश्किल है। इस दृश्य को और बीभत्स बनाने के लिए घण्टाघर में घुसा हुआ वह बदमाश बराबर प्रयत्न करता जा रहा था। धुएं के बीच कभी-कभी उसकी झलक मिल जाती थी। वह घण्टाघर में वहां के रक्षक, जो पीठ के बल ज़मीन पर लेट गया था, की तोंद पर सवार था और अपने दांतों से घण्टे की रस्सी को दबाए सिर से बराबर उसे इधर-उधर हिलाते हुए निरन्तर ऐसी प्रचण्ड ध्वनि पैदा कर रहा था कि कान नहीं दिया जाता था। वह महती बेला उसकी गोद में पड़ी थी जिसपर अपने दोनों हाथों से वह हर तरह के सुर बराबर बजाता जा रहा था।

वहां की ऐसी बुरी हालत देख, खीझकर मैं वहां से चल दिया और अब ठीक समय एवं सुखाद्य के हर प्रेमी से सहायता की अपील कर रहा हूं। आइए, हम सब दल बांधकर उस गांव को चलें और उस बदमाश को घण्टाघर से निकालकर वोण्डरवोटीमिटिस में पुनः प्राचीन परम्परा तथा व्यवस्था की स्थापना कर दें।

लीजिया

"और उसमें एक संकल्प सोया है जो कभी मरता नहीं। संकल्प के रहस्यों को, उसकी शक्ति को कौन जानता है? ईश्वर स्वयं एक महन् संकल्प है जो अपनी एकाग्रता के कारण सब वस्तुओं में समाया हुआ है। मानव देवदूतों, अथवा मृत्यु के प्रति भी पूर्णतः कंधा कभी नहीं डालता; ऐसा वह तभी करता है जब उसका शिथिल संकल्प दुर्बल हो जाता है।"—जोजेफ ग्लैनविले।

मुझे यह बिल्कुल याद नहीं है कि कैसे, या ठीक-ठीक कहां, लेडी लीजिया से मेरा प्रथम परिचय हुआ था। तब से लम्बे युग बीत गए हैं और बहुत कष्ट सहने के कारण मेरी स्मृति दुर्बल पड़ गयी है। या यह भी हो सकता है कि *इस समय* मैं इन मुद्दों को ध्यान में ले आने में असमर्थ हो गया हूं, क्योंकि मेरी प्रियतमा के चरित्र, उसकी दुर्लभ विज्ञता, उसके अनोखे पर शान्त सौंदर्य और उसकी उन्मेषकारी एवं मोहक, मृदु, संगीत-मयी वाणी ने धीरे-धीरे पर प्रच्छन्न भाव से इस प्रकार मेरे हृदय में प्रवेश किया और मार्ग बनाया था कि मुझे कुछ पता ही न चल पाया था। हां, मुझे इतना विश्वास जरूर है कि मैं उससे राइन के पास के किसी बड़े, पुराने एवं क्षयशील नगर में मिला था। उसके परिवार के विषय में उसी के मुंह से मैंने सुना है और इसपर अविश्वास नहीं किया जा सकता कि यह बहुत पुराने जमाने से चला आ रहा है। लीजिया! ऐसे अध्ययन में तल्लीन होने के कारण, जिसने दुनिया की सब बाहरी छापों को धुंधला कर दिया है, केवल इसी मधुर शब्द—लीजिया—से मैं कल्पना में अपनी आंखों के सामने उसकी प्रतिमा खड़ी कर पाता हूं, जो अब जीवित नहीं है। और

इस समय जब मैं यह लिख रहा हूं, एकाएक यह बात मुझे याद आ जाती है, कि, जो मेरी सखी और मंगेतर थी, जो अध्ययन में मेरी सहभागिनी बनी और बाद में मेरी प्राणप्रिया पत्नी हुई, उसका पैतृक नाम तो मैं *कभी जान ही नहीं पाया*। यह लीजिया पर चालाकी से उसे छिपाने का अभियोग है, या मेरे प्रेम की गहराई कि मैंने इस विषय पर जानने-पूछने की कभी कोशिश ही नहीं की ? या फिर मेरी अपनी सनक थी —अत्यन्त भावोद्वेगमयी भक्ति के मन्दिर में एक भावुकताभरी भेंट ? स्वयं इस तथ्य की धुंधली-सी याद मुझे आ रही है; तब इसमें आश्चर्य की क्या बात है कि मैं उन परिस्थि-तियों को बिल्कुल भूल गया होऊं जिनमें हमारे इस प्रेम का जन्म हुआ था ? और यदि कभी उस भावना ने, जिसका नाम रोमांस है, प्रणय-स्वच्छन्दता है, या जैसा वे कहते हैं मूर्तिपूजक मिश्र की वह अज्ञात, धूम्रपंखी आस्तो-फेत देवी ने, जो अशुभ विवाहों का अधिनायकत्व करती है, कभी वैसा किया हो तो निश्चय ही मेरे विवाह पर उसने अपनी छाया प्रसारित की होगी।

परन्तु एक प्यारा विषय, जरूर है जिस पर मेरी स्मृति मुझे धोखा नहीं देती अर्थात् लीजिया की देहयष्टि, उसकी रूपाकृति। कद में वह लम्बी थी, तन्वंगी थी और अन्तिम दिनों में तो सूख भी गई थी। उसकी महिमा का, उसके चेहरे-मोहरे की शान्त सरलता का, या उसके पद संभार के अचिन्त्य हलकेपन और मृदुलता का चित्रण करने का मेरा प्रयास व्यर्थ है। वह एक छाया कि भांति आती थी और चली जाती थी। अपने बन्द अध्ययन-कक्ष में उसके आगमन का ज्ञान मुझे तभी होता था जब वह मेरे कंधे पर अपने नाजुक हाथ रखकर अपनी क्षीण मधुर वाणी में कुछ गा उठती थी। मुख के सौन्दर्य से कोई कुमारिका उसकी बराबरी नहीं कर सकती :—अफीम की स्वप्नाभा-सा एक काल्पनिक, प्राणोन्मादकारी दृश्य, जो इन्द्रलोक की कन्यायों के निद्रित प्राणों के चतुर्दिक छाए छाया-चित्रों से भी अधिक दिव्य है। फिर भी उसका चेहरा-मोहरा उस निय-मित सांचे में ढला हुआ नहीं था, काफिरों या मूर्तिपूजकों के प्राचीन

साहित्य में भ्रमवश जिसकी पूजा करने की शिक्षा दी गई है। बेकन ने सभी प्रकार के सौन्दर्य के बारे में लिखते हुए ठीक ही लिखा है—कोई ऐसा असाधारण सौन्दर्य नहीं होता जिसके अनुपातों में कोई विचित्रता न हो। मैं देखता था कि यद्यपि लीजिया के नाक-नक्श में प्राचीन शास्त्रीय नियमितताएं नहीं हैं, यद्यपि मैं देखता था कि उसकी सुन्दरता सचमुच असाधारण है, और अनुभव करता था कि उसमें विचित्रता भी समाई हुई है, फिर भी मैं अनियमितता ढूंढने या विचित्र की अपनी कल्पना बनाने में सदा असफल रहा। मैंने उसके उच्च, पीतवर्ण ललाट की परीक्षा की और उसे निर्दोष पाया। ऐसी दिव्य महिमा के लिए ऐसे शब्द का प्रयोग कैसा रूखा, प्राणहीन, लगता है। उसकी चमड़ी विशुद्धतम हाथी दांत की बराबरी करती थी; उस (मुख) का उन्नत विस्तार एवं शान्ति, कर्णपटी के ऊपर के प्रदेशों का मधुर उभार, फिर काले, चमकीले, घने एवं प्राकृतिक रूप से घुंघराले, रेशमी-सी लहराती केशराशि। मैंने नाक की नाजुक रेखाओं की ओर देखा तो मालूम हुआ कि यहूदियों के सुन्दर पदकों के अतिरिक्त और कहीं मैंने ऐसी पूर्णता के दर्शन नहीं किए हैं। चर्मतल की वही समृद्ध चिकनाई, वही सुग्गे-सी शान्त उठान वही मुक्त भाव व्यक्त करनेवाले सामंजस्यपूर्वक मुड़े हुए नथने। मैंने उसके मधुर मुख की ओर देखा। यहां तो सम्पूर्ण स्वर्गिक पदार्थों की विजय थी—लघु ओष्ठ की भव्य मोड़, अधर की कोमल, कामनाबहुल तन्द्रा—कपोलकूप की क्रीड़ा एवं रंग की वाणी—दंतपंक्तियों की चमत्कृत करनेवाली दीप्ति, उसकी शान्त, मृदु फिर भी उल्लसित प्रकाश से पूर्ण मुस्कान की दंतावली पर पड़नेवाली पवित्र किरणें। मैंने चिबुक की रचना पर ध्यान दिया। वहां भी चौड़ाई की वही सुष्ठुता, महिमा की वही मृदुता, आध्यात्मिकता की वही पूर्णता पाई जो यूनानी सूर्यदेवता (अपोलो) की मुखाकृति में दिखाई पड़ती है। इसके बाद मैंने लीजिया के आयत लोचनों की ओर झांककर देखा।

उसकी आंखों के लिए सुदूर प्राचीन में हमें कोई नमूना नहीं मिलता। वे हमारी जाति की सामान्य आंखों की अपेक्षा बहुत बड़ी थीं। वे नोर्जहद

की घाटी में रहनेवाले फिर्के के मृगनयनों से कहीं अधिक पूर्ण थीं। फिर भी बीच बीच में, केवल अत्यन्त उत्तेजना या उत्कण्ठा के क्षणों में ही, लीजिया की इस विशेषता का पता चलता था। और ऐसे क्षणों में उसका सौन्दर्य—शायद मेरी उत्तप्त कल्पना में ऐसा लगता रहा हो—ऐसे प्राणियों का सौन्दर्य मालूम पड़ता था जो धरती के ऊपर के या उसके प्राणियों से भिन्न हों—तुर्कों की पौराणिक हाउरी के समान। पुतलियां चमकीली और काली थीं और उनपर गहरे काले रंग की लम्बी बरौनियां फैली हुई थीं। कुटिल, वक्र भवें भी उसी रंग की थीं। उन आंखों में जो विचित्रता मैंने पाई वह उनकी गढ़न या रंग या दीप्ति से अलग ही थी और *अभिव्यक्ति* से सम्बद्ध थी। परन्तु अभिव्यक्ति शब्द भी अर्थहीन-सा जान पड़ता है क्योंकि उसकी ध्वनि में आध्यात्मिक के प्रति न जाने कितना अज्ञान छिपा है। लीजिया की आंखों की अभिव्यक्ति ! मैंने न जाने कितने घण्टे उस पर विचार करते बिता दिए होंगे। मध्य ग्रीष्म की एक पूरी रात मैंने उसकी गहराई का पता लगाने में बिता दी थी। वह क्या बात थी जिसमें डेमोक्रिप्स के कूप से अधिक गहराई थी और जो मेरी प्रियतमा की पुतलियों के अन्दर छिपी थी ? क्या *था* वह ? उस रात मुझपर इसे जानने का भूत सवार हो गया था। वे आंखें ! वे बड़ी-बड़ी, वे दीप्तमयी, वे दैवी आंखें ! वे मेरे लिए लीडा की दो तारिकाओं के समान बन गईं और मैं उनका परम भक्त ज्योतिषी-सा बन गया। रात-दिन एक क्षण के लिए भी उनकी चितवन का अगम्य अर्थ मेरी आत्मा से दूर नहीं हुआ।

मनोविज्ञान के अनेक अचिन्त्य विरोधाभासों में इससे अधिक उद्वेक-जनक दूसरी बात नहीं है—और जिसपर स्कूलों में कोई ध्यान नहीं दिया जाता—कि जो बात बहुत दिन पहले भूली जा चुकी है, उसको जब हम याद करने की कोशिश करते हैं तो वह स्मृति की पकड़ में आती-सी, उसके छोर पर उदित होती-सी मालूम पड़ती है किन्तु अन्त में याद आने से रह जाती है। इस प्रकार अनेक बार लीजिया की आंखों की गहरी छानबीन करते हुए

मुझे अनुभव हुआ है कि उनकी अभिव्यक्ति के रहस्य के पूर्ण ज्ञान तक मैं पहुंच रहा हूं किन्तु वह ज्ञान मेरा अपना हो नहीं पाया और अन्त में मेरी पकड़ से दूर चला गया है। और सब में विचित्रतम रहस्य तो यह है कि मैंने जगत् के सामान्य से सामान्य पदार्थ में उस अभिव्यक्ति की वृतरेखा के दर्शन किए हैं। मेरे कथन का तात्पर्य यह है कि जब लीजिया का सौन्दर्य मेरे प्राणों में, मेरी आत्मा में इस प्रकार समा गया जैसे कि वह किसी मन्दिर में प्रतिष्ठत हो, तो भौतिक विश्व के अनेक पदार्थों के प्रति मुझे उसी भावना की अनुभूति होने लगी जो उसकी बड़ी-बड़ी और प्रकाश-मान आंखों को देखकर मेरे अन्दर होती थी। तेजी से बढ़ती हुई द्राक्षालता देखते हुए या किसी पंतग, तितली और जलधारा को देखकर वह भावना अकस्मात मेरे अन्दर जगमगा उठी है। मैंने सागर और टूटकर गिरते हुए तारे में उसका अनुभव किया है। मैंने अतिवृद्धजनों की चितवनों में उसके दर्शन किए हैं। आकाश-दर्शन में दो-एक तारिकाओं का निरीक्षण करते समय मैंने उसका अनुभव किया है। तंत्रवाद्यों की कुछ ध्वनियों को सुनकर तथा पुस्तकों के कुछ वाक्यों को पढ़ते हुए मैं उससे भर गया हूं। अन्य असंख्य उदाहरणों में से मुझे जोज़ेफ ग्लैनविल की किसी पुस्तक के शब्द याद आ रहे हैं जिन्होंने मेरे अन्दर सदा ही वह भावना पैदा की है :—"और उसमें एक संकल्प सोया है जो कभी मरता नहीं। संकल्प के रहस्यों को, उसकी शक्ति को कौन जानता है ? ईश्वर स्वयं एक महत संकल्प है जो अपनी एकाग्रता के कारण सब वस्तुओं में समाया हुआ है। मानव देवदूतों, अथवा मृत्यु के प्रति भी, पूर्णतः "कन्धा कभी नहीं डालता; ऐसा वह तभी करता है जब उसका शिथिल संकल्प दुर्बल हो जाता है।"

लम्बे युगों, और उनके बाद के चिन्तन ने मुझे इस पुराने अंग्रेज नीतिवादी और लीजिया के चरित्रांश के बीच एक दूरागत सम्बन्ध खोज निकालने में समर्थ किया है। सम्भवतः उसके अन्दर विचार, कार्य एवं वाणी की एक *सघनता* थी, जो ऐसी महती इच्छाशक्ति का परिणाम वा संकेत थी, जिसने हमारे लम्बे सम्पर्क के बीच अपने अस्तित्व का दूसरा और स्पष्ट

प्रमाण उपस्थित करने में सफलता नहीं पाई। जितनी भी स्त्रियों का ज्ञान मुझे आजतक हुआ है उनमें से बाहर से शांत एवं चिर-अचंचल लीजिया कठोर लालसा के तूफानी गिद्धों की बहुत बुरी तरह शिकार थी। उस लालसा का कोई अन्दाज मैं नहीं कर पाता था; केवल उन आंखों के जादुई प्रसार से उसका कुछ संकेत मिलता था जो एक साथ ही मुझे प्रमु-दित और भीत कर देती थीं। इसी प्रकार उसकी अत्यन्त क्षीण वाणी के ऐन्द्रजालिक राग, आरोह-अवरोह, विशिष्टता एवं अनुद्विग्नता से या उसके मुंह से निकले शब्दों की उस प्रचण्ड ऊर्जा से उसका कुछ आभास मिलता था, जो अपने कहने के प्रतिकूल ढंग के कारण दुगना प्रभाव उत्पन्न करती थी।

मैंने लीजिया के पाण्डित्य के बारे में भी कहा है : वह अगाध था — ऐसा जिसे मैंने औरतों में कहीं नहीं सुना। प्राचीन भाषाओं में वह बहुत विज्ञ थी, और जहां तक युरोप की आधुनिक बोलियों का ज्ञान मुझे है, मैंने उनमें उसे कभी गलती करते नहीं पाया। कितना ही प्रशंसनीय विषय हो और इस कारण वह चाहे कितना ही दुर्बोध हो, उसपर बिना कोई गलती किए वह बोल सकती थी। कैसी विलक्षणता और भावविह्वलता के साथ, मेरी पत्नी के स्वभाव की यह बात, इतने दिनों बाद भी मेरे ध्यान में आ रही है। मैंने कहा है कि उसका ज्ञान ऐसा था, जैसा मैंने स्त्रियों में कहीं नहीं सुना। ऐसा मनुष्य कहां जीवित है, जो उसकी तरह, नैतिक, प्राकृतिक तथा गणितीय विज्ञानों के सम्पूर्ण क्षेत्र को सफलतापूर्वक पार कर गया हो? मैं उस समय तो देख नहीं पाया था परन्तु आज स्पष्ट देख रहा हूं कि लीजिया का ज्ञान विराट था, विस्मयकारी था। परन्तु हमारे विवाह के आरम्भिक वर्षों में भी उसकी असीम श्रेष्ठता का इतना ज्ञान मुझे था कि मैं शिशु के विश्वास के साथ, अपने को उसके हाथ में छोड़ देता था और वह आध्यात्मिक शोध के जटिल विश्व में, जिसमें मैं उन दिनों उलझा हुआ था, मेरा पथ-प्रदर्शन करती थी। बहुत कम लोग इन दुर्बोध विषयों के अध्ययन में पड़ते थे और उनका ज्ञान भी लोगों को बहुत कम था परन्तु

जब वह मेरे अध्ययन में मेरे ऊपर झुकी हुई मेरा मार्गदर्शन करती थी तो कैसी विजय-भावना, कैसे गहरे आनन्द, तथा कैसी दिव्य आशा की अनुभूति मुझे होती थी और मेरी आंखों के आगे धीरे-धीरे परन्तु निश्चित परिमाण में ऐसा सुन्दर दृश्य-पटल उघड़ता चला जाता था जिसके भव्य और अब तक अगम मार्ग से चलते हुए मैं विवेक के दैवी एवं दुर्लभ लक्ष्य तक पहुंच सकता था।

इसी से समझा जा सकता है कि जब मैंने कुछ वर्षों के बाद अपनी बद्धमूल आशाओं को पंख उगते और फिर दूर उड़ जाते देखा तो मेरी वेदना कैसी तीखी, कैसी अगम होगी। लीजिया के बिना मेरी हालत अन्धकार में टटोलते शिशु की भांति हो गई। जिस इन्द्रियातीत, परम ज्ञान की शोध में हम तल्लीन थे उसके अनेक रहस्य उसकी उपस्थिति और उसके पढ़ने मात्र से प्रकाशित हो उठते थे। झिलमिलाते हुए और स्वर्णिम अक्षर शनिश्चरी गति की अपेक्षा भी अधिक निष्क्रिय लगने लगते थे, मानों उसकी आंखों की उज्जवल दीप्ति की आवश्यकता अनुभव कर रहे हों। फिर जिन पृष्ठों के पढ़ने में मैं लगा था उन पर उन आंखों का प्रकाश कम पड़ने लगा। लीजिया बीमार पड़ गई। उसकी विलक्षण आंखों में अत्यधिक दीप्ति आ गई; पीली उंगलियों पर कब्र का पारदर्शक मोमी रंग छा गया और उसके उन्नत भाल की नीली शिराएं अत्यन्त मृदु मनोभावों के उतार-चढ़ाव में प्रचण्ड वेग से उभरने और बैठने लगीं। मैं समझ गया कि वह मर जायगी—तब मैं जी-जान लड़ाकर मृत्यु से लोहा लेने लगा, और मुझे आश्चर्य हुआ कि मृत्यु के साथ संघर्ष करने में मेरी प्रेममई पत्नी मुझसे भी आगे है। उसके दृढ़ स्वभाव में बहुत-कुछ ऐसा था जिससे मुझे विश्वास हो गया था कि मृत्यु उसके पास अपनी समस्त विभीषिकाएं छोड़कर आएगी, किन्तु वैसा नहीं हुआ। उस काली छाया (मृत्यु) से जिस भीषणता के साथ वह लड़ी, उसे शब्दों में प्रकट नहीं किया जा सकता। मैं उस करुण दृश्य पर छटपटाता रह गया। मैं उसे सान्त्वना देता, उसे समझाता किन्तु जीवन की जो प्रबल प्यास उसमें थी, जीने की, केवल जीने की, उसे देखते

हुए सान्त्वना देना या तर्क करना मुझे बिलकुल गलत मालूम पड़ा। फिर भी, भयानक यंत्रणाओं से जूझते हुए भी उसके चेहरे-मोहरे की बाहरी शान्ति में जरा भी कमी नहीं आ पाई, बल्कि उसकी वाणी और मृदु, और धीमी, होती गई। किन्तु तब भी मैंने धीरे से कहे हुए उन शब्दों के भयानक अर्थ पर विचार नहीं किया। उस मानवेतर राग वा संगीत-प्रवाह को मोहित-भाव से सुनते हुए मेरा मस्तिष्क चक्कर खाने लगा था।

इसमें तो मुझे कभी कोई सन्देह था ही नहीं कि वह मुझे प्यार करती थी, और इस बात को भी मैं सरल-भाव से जान सकता था कि उसके समान हृदय में प्रेम की प्रभुता कोई सामान्य भावना की प्रभुता नहीं हो सकती थी। किन्तु केवल मृत्यु में ही मैं जान सका कि उसकी प्रीति में कैसी शक्ति थी। घण्टों वह मेरा हाथ अपने हाथ में लिए एक ऐसे हृदय के उद्गार प्रकट करती जाती, जिसकी प्रबल भक्ति मूर्तिपूजा के समक्ष हो उठी थी। ऐसी आत्मस्वीकृतियों के योग्य मैं कहां था? और जब वह मुझपर वह मंगल की वर्षा कर रही थी तब उस कृत्य के बीच में ही मेरी प्रियतमा का उठ जाना ही क्या मेरे भाग्य में लिखा था? क्या मैं इसी के योग्य था? किन्तु इस विषय पर अधिक कुछ कहना मेरी सहनशक्ति के बाहर है। मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि लीजिया के स्त्रियोचित से भी अधिक प्रेमोत्सर्ग में—जिसके मैं सर्वथा अयोग्य था, और जो मुझपर व्यर्थ ही व्यय किया गया—ही मैं उसकी जीवन की सच्ची और प्रचण्ड कामना के सिद्धान्त को पहिचान सका था—उस जीवन की कामना, जो इस तेजी के साथ दूर भागा जा रहा था। इस प्रचण्ड कामना को—जीने की इच्छा की उत्कण्ठापूर्ण प्रबलता को—चित्रित करने की शक्ति मुझमें नहीं है; उसे व्यक्त करने योग्य वाणी मेरे पास नहीं है। मुझे ऐसा लगता है कि मैं उसकी उन्मत्त, लगभग आदर्शान्वित प्रवृत्ति को उस महती छाहा (मृत्यु) की शक्ति, भीति और महिमा से भयानक संघर्ष करते फिर देख रहा हूं। परन्तु वह मिट गई। उसका महत् संकल्प और अधिक कठोर शक्ति के सामने पराजित होगया। और उसकी लाश की ओर देखते हुए मैं जोजेफ ग्लैनविक के अनोखे वाक्य के

बारे में सोच रहा था:—"और उसमें एक संकल्प सोया है, जो कभी मरता नहीं। संकल्प के रहस्यों को, उसकी शक्ति को कौन जानता है ? ईश्वर स्वयं एक महत् संकल्प है जो अपनी एकाग्रता के कारण सब वस्तुओं में समाया हुआ है। मानव, देवदूतों अथवा मृत्यु के प्रति भी, पूर्णतः कंधा कभी नहीं डालता । ऐसा वह तभी करता है जब उसका शिथिल संकल्प दुर्बल हो जाता है।"

वह मर गई — और शोक से धूल में कुचला हुआ मैं, राइन के पास के उस धुंधले एवं ह्रासोन्मुख नगर की अपने निवास-स्थान की एकांत निर्जनता को अब सहन नहीं कर सका। मेरे पास उस चीज़ का अभाव नहीं था जिसे दुनियां दौलत कहती है। लीजिया अपने साथ उससे कहीं ज्यादा, बहुत ही अधिक, दौलत लाई थी जितनी सामान्यतः मानव के भाग्य में लिखी होती है। इस लिए थकानभरे एवं निरुद्देश्य प्रवास के चन्द महीनों के बाद, मैंने इंग्लैण्ड के वनांचल के ऐसे स्थान में, जहां मनुष्यों का आवागमन बहुत ही कम था, एक मठ-भवन ख़रीद लिया और उसकी मरम्मत कराई। उस इमारत की धूमिल एवं निर्जन विशालता, उस क्षेत्र की जंगली भीषणता तथा दोनों से सम्बद्ध अनेक करुणा एवं परम्परागत स्मृतियां मेरे उस सब कुछ भाग्य-भरोसे छोड़ देने की भावना के सर्वथा अनुकूल थीं जिसके कारण मैं इस सुदूर एवं असामाजिक प्रान्त में आने को विवश हुआ था। यद्यपि इस भवन से बाह्यतः हरित ह्रास की छाया लिपटी हुई थी और मैंने उसमें बहुत कम फेर-फार कराया था किन्तु बच्चों की-सी विकृति के साथ इस हल्की आशा से मैंने उसे अन्दर शाही शान-शौकत से सजाया कि शायद उसी में मैं अपने संताप को भूल सकूंगा। मैंने अपने बाल्यकाल में भी ऐसी गलतियों का स्वाद लिया था, और अब दुःख में मेरी बुद्धि के सठिया जाने पर वे पुनः लौट आई थीं। मैं अनुभव कर रहा हूं कि उन कीमती और शानदार पर्दों तथा सज्जावस्त्रों में, भव्य मिश्री तक्षणों में, विलक्षण फर्नीचर में गुच्छित स्वर्ण की बेडलमी कालीनों में प्रारम्भिक पागलपन तक की रेखाएं खोजी जा सकती थीं। मैं अफीम का पक्का गुलाम

बन गया था और मेरे कार्य तथा आदेश सब मेरे स्वप्नों के रंग में रंग गए थे किन्तु मैं उन वाहियात बातों की विस्तार से चर्चा करना नहीं चाहता। हां, मैं उस कमरे की—सतत शापग्रस्त कमरे की बात अवश्य कहना चाहूंगा जहां अविस्मरणीय लीजिया की उत्तराधिकारिणी रूप में विवाह-वेदी से त्रिमेन की लेडी रावेना त्रिवेनियन को मैं अपनी पत्नी बनाकर ले गया था।

उस परिणय-कक्ष के स्थापत्य एवं सज्जा की एक भी बात ऐसी नहीं है जो इस समय मेरी आंखों में न फिर रही हो। वधू के दृप्त परिवार के वे प्राणी कहां थे जिन्होंने स्वर्ण की पिपासा के कारण, ऐसी कुमारिका और प्यारी कन्या को ऐसे सजे कक्ष में जाने की अनुमति दी? मैंने ऊपर कहा है कि मुझे कमरे का राई-रत्ती ब्योरा याद है—यद्यपि गम्भीर महत्व के विषय मुझे विस्मृत हैं—पर जहां तक मुझे याद है उस सज्जा एवं प्रदर्शन में कोई क्रम, कोई व्यवस्था नहीं थी। यह कमरा दुर्गाकार भवन के एक उच्च शिखर पर स्थित था, काफी बड़ा और पंचकुनिया था। इस पंचकोण कक्ष के सम्पूर्ण दक्षिण पक्ष में फैला एक वृहत् वातायन था जिसमें वेनिस से मंगाकर सीशे की एक अखण्ड चादर लगवाई गई थी—एक ही शीशा, जिसका रंग सीसे-जैसा था। उसके इस रंग के कारण सूर्य या चंद्र की किरणें अन्दर की चीज़ों पर पैशाचिक आभा डालती थीं। इस महत् वातायन के ऊर्ध्व भाग में कंगूरे की मोटी दीवारों से लिपटकर फैली सोमलता का जालीदार काम था। उदासदर्शन बलूत की लकड़ियों की छत बहुत ऊंची थी और उसमें अर्द्ध-गाथिक शैली की सूक्ष्म नक्काशी की गई थी। बीच में बड़ी-बड़ी कड़ियों से बनी सोने की एक सांकल के सहारे सोने का ही एक वृहदाकार धूमपात्र लटक रहा था, जिसके छिद्रों से निरन्तर रंगीन लपटें निकलती रहती थीं—लपटें जिन्हें देखकर लगता था कि उनमें सर्प की जीवन-शक्ति है। प्राच्य मूर्तियों के रूप में निर्मित उस्मानी एवं स्वर्णिम शमादान जहां-तहां लटक रहे थे। कक्ष में भारतीय शैली का एक वैवाहिक पलंग था जो नीचे पाए का था और ठोस आबनूस को तराशकर बनाया गया था, तथा जिसके ऊपर एक मण्डप था। कक्ष के हर एक कोने में काले

बिल्लौर के बने भीमाकार सैर्कोफेगस खड़े थे। ये लुक्सर की राजकीय समाधियों से लाए गए थे। उनके ढक्कनों पर अत्यन्त प्राचीन भास्कर्यकला का अंकन था। किन्तु कक्ष की परिधान सज्जा सबसे अधिक नायिक थी। अत्यधिक ऊंची दीवारें, ऊपर से नीचे तक, भारी एवं मोटी चित्रयवनिकाओं से ढकी हुई थीं। फर्श की कालीन, आबनूसी पलंग की चादर, पलंग का मण्डप तथा वातायन को अंशतः ढकनेवाली चादरों का अलंकरण सब उन्हीं चित्रयवनिकाओं के रंग-ढंग का था और एक ही पदार्थ से बना हुआ था। यह पदार्थ स्वर्ण-निर्मित बहुमूल्य वस्त्र था। इन वस्त्रों के ऊपर असमान दूरी पर लगभग एक-एक फुट व्यास की घोर काली चित्र-विचित्र शक्लें कढ़ी हुई थीं। किन्तु ये शक्लें तभी अपने असली चित्र-विचित्र रूप में दिखाई पड़ती थीं जब एक विशेष बिन्दु से देखी जाती थीं। एक पुरानी तरकीब से, जो अब आम हो गई है, वे अपने रूप और पहलू बदल देती थीं। जब कोई कमरे में प्रवेश करता था तो वे उसे दानवी आकृतियों के रूप में दिखाई देती थीं किन्तु जब वह आगे बढ़ जाता था तो उनका वह रूप अकस्मात् विलुप्त हो जाता था और ज्यों-ज्यों आगन्तुक एक-एक पग कक्ष में आगे बढ़ता था वह अपने को भयंकर मूर्तियों की असमाप्य पंक्तियों से घिरा पाता था। और इन पर्दों के पीछे से वायु का जो अविराम प्रबल प्रवाह कृत्रिम ढंग से छोड़ा जाता था उससे ऐन्द्रजालिक प्रभाव और भी बढ़ जाता था क्योंकि इससे वे सब मूर्तियां भीषण रूप वाली एवं चंचल चैतन्य से भरी—जीवित सी—दिखाई पड़ने लगती थीं।

ऐसे हालों में—ऐसे परिणयकक्ष में—मैंने अपने विवाह के प्रथम मास के दूषित घण्टे त्रिमेन की उस महिला के साथ बिताए, किंचित् अशान्ति के साथ बिताए। मेरी पत्नी मेरे स्वभाव के भयानक सनकीपन से डरती है, वह मुझसे किनारा करती है, कुछ ज्यादा प्यार नहीं करती, यह सब मुझसे छिपा नहीं रहा, किन्तु इससे कुछ और परिणाम की जगह मुझे खुशी ही हुई। मैं ऐसी घृणा के साथ उससे विरक्ति प्रकट करता था जो मानव की नहीं दानव की चीज़ है। पछतावे की किस गहराई के साथ मेरी स्मृति

वापिस लीजिया की ओर, प्रियतमा, सुन्दरी और समाधिस्थ लीजिया की ओर दौड़ती थी। मैं उसकी पवित्रता, उसकी प्रज्ञा, उसके उच्च स्वर्गीय स्वभाव, उसके प्रबल बल्कि मूर्तिपूजक प्रेम की स्मृतियों में प्रमुदित रहता था। तब उसकी सम्पूर्ण ज्वाला के साथ मेरी अन्तर्प्रेरणा जल उठती थी। अफीम की अपनी पिनकों में (क्योंकि मैं इस मादक द्रव्य की बेड़ियों से स्वभावतः जकड़ा जा चुका था) रात के मौन में मैं ज़ोर-ज़ोर से उसका नाम लेकर पुकारता था; दिन में कन्दरा के परिरक्षित एकान्त में भी मैं ऐसा ही करता था, मानों उस तीव्र उत्कण्ठा, गम्भीर अनुरक्ति और वियुक्त लीजिया के प्रति अपनी कामना के दाहक उत्ताप से मैं उसे पुनः संसार के उस मार्ग पर लाकर खड़ा कर दूंगा जिसे छोड़कर वह चली गई है।

विवाह के दूसरे महीने के आरम्भ के आस-पास की बात है कि लेडी रावेना पर किसी आकस्मिक बीमारी का आक्रमण हुआ। उसके स्वास्थ्य-लाभ की गति बहुत धीमी थी। जिस ज्वर में वह घुल रही थी उसके कारण रात में बेचैनी बहुत बढ़ जाती थी, और अर्द्ध-सुषुप्ति की अशान्त अवस्था में वह शिखर के उस कमरे के अन्दर और आसपास ऐसी ध्वनियों एवं पदगतियों की बात करती थी जिनका उद्गम उसकी कल्पना के अतिरिक्त और कहीं नहीं था; या सम्भव है, खुद कमरे के ऐन्द्रजालिक प्रभावों के कारण उसे ऐसा अनुभव हुआ हो। धीरे-धीरे वह स्वस्थ होने लगी और अन्त में बिल्कुल ठीक हो गई। किन्तु थोड़ा ही समय बीता था कि बीमारी का दूसरा और भयानक आक्रमण उस पर हुआ जिसने उसे वेदना की शय्या पर लिटा दिया। इस बार की बीमारी में उसकी काया, जो यों ही दुबली थी, सदा के लिए टूट गई और फिर कभी नहीं पनपी। यह बीमारी बड़ी चिन्ताजनक थी और डाक्टरों के श्रम एवं ज्ञान का उस पर कोई असर नहीं पड़ रहा था। बीमारी पुरानी हो गयी थी और बढ़ती जा रही थी। देखने से तो यही मालूम पड़ता था कि उसने उसमें ऐसी जड़ जमा ली है कि मानवीय उपायों से दूर नहीं की जा सकती। मैं यह भी देख रहा था कि बीमारी के साथ-साथ उसके स्वभाव में स्नायविक क्षोभ और उत्तेजना

की मात्रा भी उसी परिणाम में बढ़ती जाती है। अब वह भय की ज़रा-ज़रा सी बात से उत्तेजित हो जाती थी। मालूम पड़ता था कि उसके अन्दर का विवेक तेज़ी से लुप्त होता जा रहा है। अब फिर बल्कि बार-बार और दृढ़तापूर्वक वह पर्दों के अन्दर से आती उन ध्वनियों, मृदु ध्वनियों और असाधारण पदचाप की बात करने लगी जो एकाध बार पहिली बीमारी में कर चुकी थी।

सितम्बर का महीना खतम हो रहा था, जब एक रात को उसने बड़ा ज़ोर देते हुए इस विषय पर ध्यान आकर्षित किया। अशान्त निद्रा से अभी-अभी उसकी आंख खुली थी; उस समय कुछ चिन्ता और कुछ एक भय की भावना के साथ मैं उसके कृशित मुख की ओर देख रहा था। मैं उसके आबनूसी पलंग के पास ही भारत की बनी एक गद्देदार मचिया पर बैठा था। वह किंचित् उठंगकर बैठ गई और फुसफुसाते हुए बड़े विश्वास से कहा कि अभी-अभी मैंने वह आवाज़ सुनी है और किसी को चलते-फिरते देखा है पर मुझे कोई आवाज़ नहीं सुनाई पड़ी, न मैंने किसी को वहां देखा। हां, पर्दों के पीछे हवा तेज़ी से चल रही थी और (यद्यपि मैं स्वीकार करता हूं कि जो कुछ मैंने उससे कहा उसमें खुद मुझे विश्वास नहीं था, फिर भी) मैंने उसे समझाने की कोशिश की कि वे क्षीण ध्वनियां और दीवार की शक्लों में परिवर्तन हवा के झोंकों के परिणाम मात्र हैं किन्तु जो सांघातिक पीलापन उसके चेहरे पर फैलता जा रहा था उसने मुझे प्रमाणित कर दिया कि उसे यह सब समझाकर शान्त करने का मेरा प्रयत्न निरर्थक है। मुझे लगा कि वह मूर्च्छित होती जा रही है। आस-पास कोई खिदमतगार भी नहीं था। मुझे याद आ गया कि हलकी मदिरा की वह सुराई कमरे में रखी है जो उसके चिकित्सकों के आदेश पर मंगवाई गई थी और मैं जल्दी-से कमरे की दूसरी ओर उसे लेने गया। किन्तु ज्योंही मैं सिर पर झूलते हुए धूपदान की रोशनी के नीचे पहुंचा, दो विस्मयकारी बातों ने मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। मुझे मालूम पड़ा कि कोई स्पष्ट चीज़ धीरे-से मेरे पास से गुज़री है और धूपदान से निकलती गहरी दीप्ति के बीच मैंने

देखा कि स्वर्णिम कालीन के ऊपर एक धुंधली अस्पष्ट-सी छाया फैली हुई है। किन्तु उस समय मैं अफीम की काफी बड़ी मात्रा ग्रहण करने के कारण उत्तेजित मनोदशा में था इसलिए इन बातों पर विशेष ध्यान न दे सका, न उनके बारे में रावेना से ही कुछ कहा। आगे बढ़ गया, मदिरा लेकर लौटा और उसे मधुपात्र में उंड़ेलकर, मूर्छित होती हुई महिला के मुंह से लगा दिया। अब तक वह कुछ-कुछ होश में आ गई थी इसलिए उसने पात्र स्वयं हाथ में ले लिया; मैं अपने पास की गद्दीदार मचिया पर बैठ गया और मेरी आंखें उसके मुख पर गड़ गई। इसी समय मुझे पलंग के पास, कालीन पर किसी के पैरों की मृदु चाप स्पष्ट सुनाई पड़ी। उसके बाद एक सेकेण्ड के अन्दर ही, जब रावेना मदिरापात्र अपने ओठों से लगाने को उठा रही थी, मैंने देखा—या स्वप्न में मुझे मालूम हुआ हो कि मैं देख रहा हूं—कि कमरे के वातावरण के किसी अदृश्य स्रोत से चमकदार लालमणि के रंग की तीन-चार बड़ी बूंदें उस पात्र में गिर पड़ी हैं। इसे केवल मैंने देखा, रावेना ने नहीं। वह तो बिना किसी हिचकिचाहट के मदिरा पी गई, और मैं परिस्थिति की बात उसे बताने से रुक गया, क्योंकि मेरे विचार से वह किसी ऐसी सघन कल्पना का संकेत थी जो महिला के भय, अफीम, तथा उस समय के प्रभाव के कारण विकृत रूप से सक्रिय हो उठी थी।

फिर भी, मैं इसे अपने से छिपा नहीं सकता कि इस समय के बाद मेरी पत्नी की दशा तेजी के साथ बिगड़ने लगी, यहां तक कि तीसरी रात को उसके सेवकगण उसे मकबरे के लिए तैयार करने लगे, और चौथे दिन मैं उसके कफन ओढ़े हुए शव के पास उसी सुसज्जित कक्ष में अकेला बैठा हुआ था जिसने एक दिन मेरी नववधू के रूप में उसका स्वागत किया था। अफीम-जनित विलक्षण दृश्य, छाया की भांति, मेरी आंखों के आगे नाचने लगे। मैं अशान्त, उद्विग्न नयनों से कभी कमरे के कोनों में रखे शवाधारों को देखता, कभी यवनिकाओं पर उभरती विभिन्न आकृतियों पर नजर डालता और कभी अपने सिर पर लटकते हुए धूपदान की बहुरंगी ज्वालाओं का कम्पन देखता था। इसके बाद जब मैं किसी पिछली रात की

परिस्थितियों की याद करने लगा तो मेरी आंखें धूपदान की आभा के नीचे उस स्थान पर जा पड़ीं जहां मैंने छाया की धुंधली आकृति देखी थी। अब वह वहां नहीं थी इसलिए, कुछ ज्यादा सरलता से मैंने सांस ली और शय्या पर पड़ी कड़ी और विवर्ण आकृति पर नजर डाली। बस, मेरे मन में लीजिया की हजारों स्मृतियां उठ खड़ी हुईं और तूफान का दुर्दान्त आघात करती, मेरे हृदय पर वह सब अकथ वेदना आकर महरा पड़ीं जिसके साथ मैंने उसे इसी प्रकार कफन से ढके जाते देखा था। रात ढलने लगी, तब भी, अपनी एक मात्र तथा सर्वाधिक प्रियतमा की तीक्ष्ण स्मृतियों से पूर्ण हृदय लिए, मेरी आंखें रावेना के शव पर जमी रहीं।

आधी रात रही होगी, या उससे कुछ कम या ज्यादा रहा हो क्योंकि समय पर मैंने ध्यान नहीं दिया था, जब धीर, मृदु किन्तु बिल्कुल स्पष्ट सिसकी ने मेरा दिवास्वप्न तोड़ दिया और मैं चौंक उठा। मुझे ऐसा *अनुभव* हुआ कि वह सिसकी उस आबनूसी पलंग, उस मृत्युशय्या में ही आई है। मैंने मूढ़ाग्रही आतंक के क्लेश के बीच उसे सुनने की चेष्टा की किन्तु फिर वह आवाज सुनाई नहीं पड़ी, मैंने अपनी आंखों पर जोर देकर शव में कोई हरकत देखने की कोशिश की किन्तु कोई भी चीज दिखाई नहीं पड़ी। किन्तु मुझे धोखा तो नहीं हो सकता था। मैंने आवाज *सुनी थी*, फिर चाहे वह कितनी ही धीमी रही हो। मैंने दृढ़ निश्चय के साथ निरन्तर अपना ध्यान शव पर केन्द्रित कर दिया; मेरी सम्पूर्ण आत्मा मेरे अन्दर जाग पड़ी। रहस्य पर प्रकाश डालनेवाली परिस्थिति पैदा होने के पूर्व कितने ही मिनट बीत गए। अन्त में यह स्पष्ट हो गया कि गालों पर और पलकों की शिथिल लघु शिराओं के आस-पास एक बड़ी हलकी और मुश्किल से दिखाई पड़नेवाली रंगाभा फैल गई है। मानव की भाषा जिसे पूरी तरह प्रकट नहीं कर सकती उस अकथ भय और आतंक से मेरा माथा घूम गया और मुझे लगा कि मेरे हृदय की धड़कन बन्द हो रही है तथा मैं जहां बैठा हूं वहीं मेरा अंग-प्रत्यंग कड़ा पड़ता जा रहा है। फिर भी अन्त में, कर्तव्य-भावना ने मुझे अपने ऊपर नियन्त्रण स्थापित करने को प्रेरित किया। मुझे

अब सन्देह नहीं रहा कि उसे समाधिस्थ करने की तैयारी में हमने जल्दबाजी की है, और रावेना अब भी जीवित है। यह आवश्यक था कि तुरन्त कोई उपाय किया जाय, किन्तु वह शिखर का भाग सेवकों वाले हिस्से से बिल्कुल अलग और दूर पड़ता था, कोई मेरी आवाज वहां मे नहीं सुन सकता था। जब तक मैं कुछ मिनटों के लिए कमरा छोड़कर न जाऊं उन्हें सहायता के लिए बुलाने का कोई साधन मेरे पास नहीं था और यह मैं कर नहीं सकता था। इसलिए जो आत्मा अब मंडरा रही थी उसे वापिस लाने के लिए मैंने अकेले ही प्रयत्न शुरू कर दिया। किन्तु थोड़ी ही देर में इसका निश्चय हो गया कि फिर उसकी वही दशा हो गई है; इस बार तो गालों एवं पलकों का रंग एकदम उड़ गया और चेहरे पर संगमर्मर से भी अधिक सफेदी छा गई; ओंठ मृत्यु की भीषण अभिव्यक्ति से बिलकुल सिकुड़ गए और शरीर की सतह पर तेजी से वीभत्स लिजलिजाहट और शीतलता फैल गई। देह कड़ी पड़ने लगी। जिस गद्दे से चौंककर मैं उठा था, कांपते हुए फिर उसी पर गिर पड़ा और पुनः लीजिया के अनुरक्त जागृतिमय स्वप्नों में डूब गया।

इस तरह घण्टा भर बीता होगा कि मुझे दूसरी बार शय्या से निकलकर आती हुई एक अस्पष्ट ध्वनि सुनाई पड़ी। अत्यन्त भयभीत होकर मैं उसे सुनने लगा। आवाज फिर आई—एक दीर्घ निश्वास की आवाज। मैं शव के पास झपटा, मैंने देखा, निश्चित रूप से देखा कि ओंठ हिल रहे हैं। एक मिनट के बाद वे कुछ खुल गए और मोती से दांतों की चमकती रेखा दिखाई पड़ी। मेरे कलेजे में अभी तक केवल विस्मय करवट ले रहा था किन्तु अब वह आतंक से पूरित हो उठा। मुझे अनुभव होने लगा कि मेरी दृष्टि धुंधली पड़ती जा रही है, मेरा विवेक लड़खड़ा रहा है, और तब मैं एक झटके के साथ अपने को उस कार्य के लिए तैयार कर सका जो कर्तव्य ने एक बार पुनः मेरे आगे डाल दिया था। इस समय उसके ललाट, कपोल और कण्ठ पर एक आंशिक दीप्ति थी—सम्पूर्ण शरीरयष्टि में किंचित् गर्मी फैलती जा रही थी। हृदय तक में हलकी धड़कन होने लगी थी। वह जीवित थी। मैं दूने उत्साह से उसे होश में लाने की चेष्टा करने लगा।

कभी कनपटियों और हाथों को रगड़ता, कभी पानी से तर करता, मतलब जो कुछ उपाय अपने अनुभव से या चिकित्सा-सम्बन्धी पुस्तकें पढ़कर मैं कर सकता था, सब करता रहा। किन्तु सब कुछ व्यर्थ हो गया। अकस्मात् रंग उड़ गया, नाड़ी बन्द हो गई, ओंठों से पुनः मरे हुए की-सी अभिव्यक्ति प्रकट हुई और उसके क्षण-भर बाद ही सम्पूर्ण शरीर ने अपने ऊपर बर्फीली शीतलता, नीली आभा, अति कड़ापन, डूबी हुई रूपरेखा, तथा वे सब घृण्य विशेषताएं ओढ़ लीं, जो कई दिनों से कब्र में पड़े हुए आदमी के शरीर में पाई जाती है।

और पुनः मैं लीजिया के स्वप्नों में खो जाता हूं, और पुनः (कैसे आश्चर्य की बात है कि मैं लिखते हुए भी कांप रहा हूं) आबनूसी शय्या की ओर से मेरे कानों में धीमी सिसकी की आवाज आती है। किन्तु उस रात की अकथ भीषणताओं के सूक्ष्म ब्यौरों को मैं क्यों लिखूं? या मैं इस बात का वर्णन ही क्यों करूं कि भूरी उषा का उदय होने तक, बार-बार पुनर्जीवीकरण का यह भयानक नाटक चलता रहा और हर बार पहले से कहीं कठोर और अनुद्धार्य मृत्यु की ओर ले जाने वाला रोगाक्रमण होता रहा? अब हमें जल्दी ही परिणाम पर आ जाना चाहिए।

भयावनी रात का अधिकांश बीत चुका था कि रावेना की लाश एक बार फिर हिलने लगी—इस बार का कम्पन अब तक के सब कम्पनों से अधिक जोरदार था, यद्यपि वह अपनी निपट निराशापूर्णता में पहले की अपेक्षा ज्यादा भयावने अन्त से उद्भूत ज्ञात होता था। मैंने बहुत पहले से अपना प्रयत्न, यहां तक कि हिलना-डुलना भी छोड़ दिया था और गद्दीदार मचिया पर निश्चल बैठा हुआ था। मेरी हालत उग्र मनोवेगों के बवन्डर में पड़े हुए असहाय शिकार की भांति थी। इन मनोवेगों में निरतिशय आतंक का मनोवेग शायद सबसे कम भयंकर और विनाशक था। मैं फिर दोहराता हूं कि लाश हिली, इस बार पहिले से कहीं जोरों के साथ हिली। चेहरे पर जीवन का रंग अस्वाभाविक ऊर्जा के साथ दौड़ गया, अंगों की अकड़न दूर हो गई, और इसके सिवा कि पलकें अब भी भारीपन के साथ

एक दूसरे से सटी हुई थीं और कब्र का कफ़न और परिधान अब भी शरीर के शवरूप का परिचय दे रहा था, यह स्वप्न देखना मेरे लिए सम्भव था कि रावेना ने मौत की बेड़ियों को पूरी तरह से तोड़ दिया है। यद्यपि उस समय भी यह धारणा पूरी तरह से ग्रहण नहीं की गई किन्तु उसमें अविश्वास कैसे कर सकता था जब मैंने ख़ुद देखा कि वह शय्या से उठ बैठी है, और लड़खड़ाते, दुर्बल पगों से, आंखें बन्द किए, स्वप्नाविष्ट प्राणी की भांति, अपने शरीर से, स्थूल रूप से, कक्ष के मध्य-भाग की ओर बढ़ रही है ?

मैं कांपा नहीं—मैं हिला नहीं, क्योंकि वहां के वातावरण, प्राणी के रंग-ढंग से सम्बद्ध अकथ्य कल्पनाओं की भीड़ मेरे मस्तिष्क में तेज़ी के साथ झपटी आ रही थी और मुझे पत्थर कर दिया था। मैं हिला नहीं—किन्तु उस प्रेत-छाया की ओर टकटकी लगाए रहा। मेरे विचारों में एक उन्मत्त विशृंखलता थी—एक मानसिक संक्षोभ जो शान्त नहीं किया जा सकता था। क्या वह सचमुच *जीवित* रावेना थी जो मेरे सामने खड़ी थी ? मुझे इसमें सन्देह क्यों हो रहा था ? मुंह के इर्दगिर्द भारी पट्टियां बंधी थीं—किन्तु मुंह तो त्रिमेन की सांस लेती महिला का ही था। और कपोल उनपर वही गुलाब थे जो जीवन की दोपहरी में, प्रौढ़ यौवन में, दिखाई पड़े थे—निश्चय ही वे त्रिमेन की जीवित महिला के ही कपोल थे। और गड्ढे के साथ वह चिबुक, स्वस्थ अवस्था-जैसा ही वह चिबुक, क्या वह उसका नहीं था ? *किन्तु क्या वह बीमारी के बाद ज्यादा लम्बी हो गई है ?* इस विचार के आते ही कैसे अनिर्वाच्य उन्माद ने मुझे ग्रस लिया ? एक छलांग में मैं उसके पैरों के पास जा पहुंचा। मेरे स्पर्श से वह सिकुड़ गई और उसने अपने सिर से वे भयानक पट्टियां खोलकर गिरा दीं और अब उस कमरे के गतिशील वातावरण में खुले केश के बड़े गुच्छे लहरा उठे। *वे निशीथ के कृष्ण पंखों से भी अधिक काले थे।* और अब मेरे सामने खड़ी आकृति ने आंखें खोल दीं। मैं ज़ोर से चीख पड़ा—"कम से कम यहां तो मैं भूल नहीं कर सकता—हर्गिज़ भूल नहीं कर सकता कि ये लीजिया की विकसित, काली और उद्दीप्त आंखें हैं।"

प्लेग महाराज

[एक रूपक-गर्भित आख्यान]

एडवर्ड तृतीय के शौर्ययुक्त राज्यकाल की बात है। अगस्त महीने की एक उमसभरी रात को लगभग बारह बजे होंगे। स्वच्छन्द एवं (फ्री ऐण्ड ईज़ी) नाम का एक व्यापारी जहाज, जो स्लुइस और टेम्स के बीच चला करता था, उस समय नदी में लंगर डाले हुए था। उस जहाज के दो मांझियों ने उस रात अपने को किञ्चित् विस्मयपूर्वक लन्दन के सेन्ट एण्डरूज क्षेत्र के एक मदिरालय के मदिराकक्ष में उपस्थित पाया। उस मदिरालय पर एक आनंदी नाविका का चित्र बना हुआ था।

कहने की ज़रूरत नहीं कि कक्ष यद्यपि कुनिर्मित धुएं से काला, नीचा और अन्य बातों में भी सामान्यतः वैसा ही था जैसी उस काल में ऐसी जगहें हुआ करती थीं, किन्तु उसके अन्दर जहां-तहां बैठे विरूप एवं कलाकार लोगों की दृष्टि में वह जिस मतलब से बनाया गया था, उसके लिए काफी अच्छा था।

इन लोगों के बीच हमारे दो सामुद्रिक नाविक यदि सबसे महत्वपूर्ण नहीं तो सबसे दिलचस्प ज़रूर थे।

इनमें जो उम्र में बड़ा लगता था, और जिसे उसका साथी बहुत ही उपयुक्त 'टांगें' नाम से पुकारता था, दूसरे से बहुत ज्यादा लम्बा था। नाप में वह छः फुट नौ इंच रहा होगा और इतनी ज्यादा ऊंचाई के कारण वह कंधों को झुकाकर चलता था। किन्तु जो कुछ उसकी ऊंचाई या लम्बाई में फालतू था, दूसरे मामलों में उसकी कमी से बराबर हो गया था। वह बहुत ही ज्यादा, भयानक रूप से दुबला था, और जैसाकि उसके संगी-साथी

कहते थे, स्वाभाविक शान्त अवस्था में मस्तूल-शीर्षक (मास्ट हेड) पर खड़ा होने से ध्वजदण्ड होने का भ्रम पैदा करता था। इसी प्रकार शराब पीकर कड़ा पड़ जाने पर लोगों को मस्तूल की बल्ली (जिब बूम) का भ्रम होता था। किन्तु ये और इसी प्रकार के दूसरे हास-परिहास उस नाविक की दृढ़ पेशियों पर कोई असर नहीं डाल पाते थे। उसके गालों की हड्डियां ऊंची थीं; नाक लम्बी और बाज-जैसी थी; चिबुक अन्दर धंसा हुआ था; नीचे का जबड़ा झुका हुआ था; श्वेत नयन बाहर निकले पड़ते थे। आम बातों के बारे में यद्यपि एक उत्कट उदासीनता उसके चेहरे से टपकती थी, फिर भी नकल या वर्णन के विषय में वह बहुत गम्भीर था।

छोटा नाविक, बाहर से देखने पर, पहले के बिल्कुल विपरीत मालूम पड़ता था। उसकी लम्बाई या ऊंचाई चार फुट से ज्यादा नहीं होगी। दो ठिगनी, धनुषाकार टांगें उसके मोटे दुर्वह शरीर को संभाले हुए थीं। उसकी अस्वाभाविक रूप से छोटी भुजाएं, अन्तिम छोर पर असामान्य मुष्टिकाओं सहित, दोनों तरफ यों झूल रही थीं मानों सागर-कूर्म के पंख हों। किसी विशेष रंग से रहित, छोटी-छोटी आंखें उसके सिर के अन्दर धंसी हुई चमक रही थीं। उसकी नाक उसके गोल, नीलारुण मुख को चतुर्दिक से ढक रखने वाले मांस-पिण्ड के भीतर छिप गई थी; उसके ऊपर का ओंठ नीचे के और भी मोटे ओंठ पर तृप्त आत्मसन्तोष-पूर्वक लटका हुआ था। बीच-बीच में वह अधर को चाटकर इस आत्मसन्तोष को और बढ़ा लेता था। वह अपने लम्बे साथी को कुछ विस्मय और कुछ विनोद की दृष्टि से देख रहा था।

इसके पहले रात के आरम्भिक घण्टों में दोनों योग्य साथी आस-पास के और भी कितने ही मदिरालयों का चक्कर लगा चुके थे। गांठ में चाहे जितना ज्यादा पैसा हो, वह अनन्त नहीं हुआ करता, इसलिए हमारे दोनों मित्र खाली जेब (बिना पैसे-कौड़ी) इस मदिरालय में आए थे।

ठीक जिस समय से, यह इतिहास शुरू होता है, उस समय 'टांगें' (लेग्स) और उसका साथी ह्यू टारपालिन दोनों फर्श के बीच, बड़े बलूती टेबुल पर दोनों कुहनियां रखे और हाथ गालों पर लगाए बैठे हुए थे। वे

'गुंजरित सामग्री' से भरे बड़े भारी पानपात्र के पीछे से देख रहे थे कि दरवाज़े के ऊपर 'खड़िया नहीं' ('नो चाक') अशुभ शब्द लिखे हैं। उनके लिए असन्तोष एवं विस्मय की बात यह थी कि वे शब्द उसी धातु से काट दिए गए थे जिसकी उपस्थिति से इन्कार करने के लिए वे लिखे गए थे। यह बात नहीं की लिखित शब्दों का तात्पर्य खोज निकालने की देन (देन जो उस समय के सामान्य वर्ग में लिपिबद्ध करने की देन से कम गुह्य मानी जाती थी) समुद्र के इन शिष्यों में से किसी के भी चार्ज में सौंपी गई थी; किन्तु सच्चाई यह है कि अक्षरों की बनावट में एक प्रकार की वक्रता थी—सब में एक अकथनीय गड़बड़ी थी—जो दोनों नाविकों की राय में लम्बे बुरे मौसिम का संकेत कर रही थी; इसलिए उन दोनों ने तुरन्त ही जहाज़ में लौट जाने का निश्चय कर लिया।

इसलिए वहां जो कुछ मदिरा शेष थी उसे पी गए और अपने जांघिए तथा आस्तीनें चढ़ा वे सड़क की ओर भाग खड़े हुए। यद्यपि टारपालिन दो बार अग्निस्थान को दरवाज़ा समझने के कारण गिर पड़ा, फिर भी वे खुशी-खुशी भागने में सफल हो गए। साढ़े बारह बजे थे और हमारे दोनों नायकों को वह समय शरारत के लिए उपयुक्त लगा। दोनों एक अंधेरी गली से निकल भागे और उनका पीछा करते हुए 'जाली टार' (आनन्दी नाविका') मदिरालय की मालकिन और मालिक भी दौड़ पड़े।

इस घटनामूलक आख्यान के युग में और उसके अनेक वर्ष पहले तथा पश्चात्, बीच-बीच की अवधि में, सम्पूर्ण इंग्लैण्ड, विशेषतः राजनगर प्लेग की भयजनक चीख से गूंज उठा था। नगर, बहुत बड़े परिमाण में, जनशून्य हो गया था, और टेम्स के आसपास, उन भयावह प्रदेशों में, जहां काली, संकरी तथा गन्दी गलियों के बीच इस रोग के राक्षस की जन्मभूमि थी, चारों ओर, भय, आतंक तथा अन्धविश्वास फैल गए थे।

राज्यादेश से ऐसे ज़िलों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था और उन निर्जन प्रदेशों में किसी के अनधिकार-प्रवेश की सज़ा फांसी घोषित कर दी गई थी। फिर भी न तो राजा का आदेश, न सड़कों के प्रवेश स्थानों पर

लगाई गई बड़ी-बड़ी रोक, और न उस वीभत्स मृत्यु की सम्भावना ही, जो किसी भी विपत्ति के भय से न रुकनेवाले दुष्टों को भी कम्पित कर देती थी, जनशून्य एवं सज्जाहीन आवासों को निशाकालीन लुण्ठनक्रिया से रक्षित रख सकी। लोहा, पीतल, सीसा, मतलब जो कुछ भी लाभजनक दिखाई पड़ा उस पर ही चोरों ने हाथ साफ कर दिया।

जब वर्ष में एक बार शरदकाल में रोक उठा ली जाती तो इन सब बातों के अलावा आम तौर से देखा जाता कि ताले, सांकलें तथा गुप्त तहखाने उन मूल्यवान मदिराभण्डारों के लिए दुर्बल सुरक्षा सिद्ध हुए हैं जिन्हें हटाने के कष्ट और खतरे के कारण निकटवर्ती स्थानों के दुकानदार इस भांति छोड़ जाते थे। लोगों की समझ में महामारी की डाइनें, प्लेग के प्रेत और ज्वर के भूत यह सब शरारत करते थे और उनके बारे में खून तक को सुखा देनेवाली ऐसी कहानियां थोड़ी-थोड़ी देर पर कही जाती थीं कि प्रतिबन्धित भवनों का समूह का समूह, अन्त में ऐसे भय और आतंक से घिर गया जैसे उसे कफन से ढक दिया हो और अक्सर चोर खुद अपने ही कृत्यों से उत्पन्न भय के कारण डर जाता तथा उस सम्पूर्ण प्रतिबन्धित प्रदेश को निराशा, मौन, महामारी तथा मृत्यु के भरोसे छोड़ कर भाग खड़ा होता।

जिनका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है, और जो इस बात का संकेत करती थीं कि आगे का प्रदेश महामारी के प्रतिबन्ध के अन्दर है उन्हीं भयानक बाड़ों में से एक के सामने आ जाने के कारण गलियों से भागते हुए 'टांग' और उसके योग्य साथी 'हा ू टारपालिन' ने अपनी प्रगति को एकाएक अवरुद्ध होते देखा। लौटना तो अब सम्भव था नहीं, और ज्यादा सोच-विचार का भी वक्त नहीं था क्योंकि पीछा करनेवाले नजदीक आ गए थे। अच्छे और होशयार समुद्री नाविकों के लिए टेढ़े-मेढ़े तख्तों से बनाई गई रोकों पर चढ़ जाना क्या मुश्किल था, फिर इस समय तो वे एक ओर शराब और दूसरी ओर कसरत के दोहरे नशे में थे, झट शोर करते हुए बाड़ों से कूदकर दूसरी ओर के जटिल गोप्य स्थानों में पहुंच गए।

यदि वे मानवीय भावनाओं की सीमा के बाहर तक नशे में धुत न

होते तो उनके लड़खड़ाते कदमों को यहां की भीषणताएं देख, लकवा मार गया होता। हवा सीलन से भरी, ठण्डी और धुंध-युक्त थी; फर्श में लगे पत्थर बाहर उखड़ आए और जहां-तहां बुरी तरह फैले थे। पैरों और टखनों के चारों ओर लम्बी-लम्बी घासें भयानक रूप ले उग आई थीं। गिरे मकानों के मलबे सड़कों पर फैले हुए थे। चारों ओर असह्य और विषाक्त दुर्गन्ध फैल रही थी और जो डरावनी एवं अस्पष्ट आभा वाष्प-युक्त कीटाणु से भरी जगहों में अर्द्धरात्रि को भी रह-रहकर फूट उठती है, उसके सहारे देखा जा सकता था कि रास्तों एवं गलियों या वातायनरहित मकानों में जहां-तहां उन निशाकालीन चोरों के कंकाल पड़े हुए हैं जिन्हें चोरी करते समय प्लेग ने अपनी, गिरफ्त में ले लिया था।

किन्तु इन सब कठिनाइयों या मनोद्वेगों के वश की बात न थी कि वे उन आदमियों का रास्ता रोक सकते जो स्वभाव से ही वीर थे और गुंजनकारी मदिरा में छके हुए होने के कारण इस समय मौत के जबड़े में घुस जाने की क्षमता रखते थे। विराट 'टाम' बराबर आगे, और आगे बढ़ता और अपने पदचाप से निर्जन गम्भीरता को अमेरिकन इण्डियन की भयानक समर-हुंकारों की-सी ध्वनियों से ध्वनित और प्रतिध्वनित करता गया। नाटा टारपालिन भी अपने अधिक सक्रिय साथी के जांघिए से बंधा आगे और आगे लुढ़कता गया। वह अपने प्रबल फेफड़ों का सारा जोर लगाकर विविध प्रकार के कण्ठ-संगीत पैदा करने से अपने साथी को भी मात दे रहा था।

जब वे महामारी के गढ़ में प्रविष्टि हो चुके थे। प्रत्येक पग या उछाल के साथ उनका मार्ग अधिकाधिक विरक्तिकर और भयावना होता जा रहा था; गलियां अधिकाधिक संकरी और जटिल होती जा रही थीं। ऊपर को ध्वस्त छतों से बड़े-बड़े पत्थर और बल्लियां बीच-बीच में उनके आगे धम से गिर पड़ती थीं और अपने सुस्त एवं भारी गिरावट से आस-पास की इमारतों के बहुत ऊंची होने का प्रमाण उपस्थित करती थीं। दुर्गन्धित एवं सड़ती हुई मानवीय लाशों की ढेरों को हटाकर रास्ता बनाने में असल श्रम करना पड़ता था।

जब वे इस प्रकार रास्ता बनाते चल रहे थे, एक विराट एवं भयावनी इमारत के प्रवेश-द्वार से टकराकर, उत्तेजित 'टांग' के कण्ठ से असाधारण तीखी चीख निकल गई। अन्दर से एक के बाद एक अनेक प्रबल अट्टहासों एवं दानवी चीखों के रूप में उसका उत्तर मिला। ऐसी ध्वनियों से भी, जो इस प्रकार, ऐसे समय और ऐसे स्थान में सुनाई पड़ी थीं कि हमारे नायकों की अपेक्षा हृदय में कम ज्वाला रखनेवालों का खून पानी कर देतीं, वे नहीं रुके और नशे में धुत नाविकों ने दरवाजे के किवाड़ों को तोड़ डाला; गालियों की वर्षा करते हुए अन्दर घुस गए और वहां उन्होंने जो कुछ देखा उसका वीर 'टांग' तथा योग्य टारपालिन की उद्दीप्त शक्तियों पर इसके सिवा और कुछ प्रभाव नहीं पड़ा कि वे आश्चर्य एवं विस्मय की अदम्य उत्तेजना में डूब गए।

जिस कोठरी के अन्दर उन्होंने अपने को पाया, वह किसी मृत्यु संस्कार-सम्पादक (अंडरटेकर) की दुकान निकली। उसके प्रवेश-द्वार के पास ही, फर्श के एक कोने में एक चोर दरवाजा था, जो खुला हुआ था। उससे दूर तक फैला हुआ भूमिगत मदिरागार दिखाई पड़ रहा था। बीच-बीच में बोतलों के खुलने की जो आवाज आती थी उससे मालूम पड़ता था कि वह अपनी योग्य सामग्री से भरा-पूरा है। कमरे के बीच में एक टेबुल था, इस टेबुल के बीचोबीच एक वृहदाकार टब—कठौता—रखा था जिसमें कोई पेय (पंच) भरा हुआ था। विविध प्रकार की मदिराओं और उत्तेजपेयाओं (कार्डियल्स) की बोतलें तथा विभिन्न आकार की सुराइयां, कूंडे और पानपात्र उसपर चारों ओर बिखरे पड़े थे। टेबुल के इर्द-गिर्द टिक्थियों पर छः प्राणी बैठे हुए थे, जिनमें से एक-एक के चित्रण का यत्न मैं करूंगा।

प्रवेश-द्वार के बिल्कुल सामने मुंह किए अपने साथियों से कुछ ऊंचाई पर एक प्राणी बैठा था जो उस मण्डली का अध्यक्ष जान पड़ता था। कद में वह बहुत दुबला और लम्बा था और अपने से भी ज्यादा कृश इस मूर्ति को देखकर 'टांग' (लेग्स) घबड़ा गया। उसका चेहरा पीततम केसर सेभी ज्यादा पीला था; किन्तु एक बात छोड़ उसकी शक्ल-सूरत में कोई ऐसी बात न

थी जो विशेष वर्णन-योग्य प्रतीत होती। वह एक बात यह थी कि उसका माथा असाधारण एवं भयानक रूप से इतना ऊंचा था कि लगता था मानो उसके प्राकृतिक सिर के ऊपर मांस का कोई टोप या मुकुट पहिना दिया गया हो। उसके मुख की सिलवटों एवं गड्ढों से उसकी भयावनी सहिष्णुता प्रकट होती थी तथा उसकी आंखें, उसकी क्या टेबुल के इर्दगिर्द बैठे सभी की आंखें नशे के धुंध में चिकनी हो रही थीं। यह महाशय सिर से पैर तक सारा शरीर कसीदा किए हुए काले रेशमी मखमल के लबादे से ढके हुए थे और उनके सिर पर मुर्दागाड़ी की लम्बी-लम्बी कलगियां खुनी हुई थीं! वह छैले और जानकार की भांति इधर-उधर सिर हिलाते थे। उनके दाहिने हाथ में एक लम्बी जंघ की हड्डी थी जिससे वह मण्डली के किसी न किसी सदस्य को ठुनकी देते रहते थे।

उनके ठीक सामने, अपनी पीठ दरवाजे की ओर किए एक महिला बैठी थी। वह पहले की अपेक्षा कुछ कम असाधारण ढंग की नहीं थी। वह लम्बी तो उपर्लिखित महाशय के समान ही थी, किन्तु उसके लिए अप्राकृतिक शीर्णता की शिकायत करने का कोई मौका नहीं था। देखने से ही मालूम होता था कि वह जलोदर या जलशोथ की अन्तिम अवस्था में है, रूप-रेखा में उसकी आकृति यवमदिरा के उस भीमाकार पीपे के आकारहीन अनुपात से मिलती-जुलती थी जो उसके पास ही, कमरे के एक कोने में औंधा खड़ा था। उसका चेहरा बिल्कुल गोल, लाल और भरा-भरा था, और इसी विशेषता या विशेषता के अभाव के कारण उसके चेहरे के सिर्फ एक पहलू का पृथक् वर्णन करने की आवश्यकता है, जैसा कि मैं अध्यक्ष के बारे में भी कर चुका हूं। चतुर टारपालिन ने तुरन्त ही भांप लिया था कि यही बात मण्डली के हर एक सदस्य पर लागू होती है, क्योंकि हर एक रूपाकृति के किसी विशिष्ट अंग की असाधारणता का स्वामी था। जहां तक उक्त महिला की बात है, यह विचित्र अंग उसका मुख था। दाहिने कान से शुरू होकर, अपने भयानक विवर के साथ वह बायें कान तक फैला हुआ था। दोनों कानों में जो झूमके उसने पहिन रखे थे वे झूमकर बरा-

बर मुखरन्ध्र में चले जाते थे। वह अपने जबड़ों को बन्द रखने का हर तरह से प्रयत्न करती थी तथा नई कलफ और इस्त्री किए हुए चोंगे में, जिसमें महीन मलमल की लहरिया चुन्नटें पड़ी हुई थीं और जो उसकी ठुड्डी तक आ रहा था, गौरवशालिनी लग रही थी।

उसकी दाहिनी ओर एक छोटी जवान औरत बैठी थी, जिसके प्रति वह कृपाभाव रखती प्रतीत होती थी। यह नाज़ुक छोटी औरत, अपनी क्षीण अंगुलियों के कम्पन, अपने ओंठों की नीली आभा, और अपने सीसक रंग के बीच छोटे लाल चकत्ते के द्वारा वेगवान यक्ष्मा का संकेत दे रही थी। फिर भी उसकी सम्पूर्ण सूरतशक्ल से गर्व का भाव टपकता था। उसने ललित और सरल ढंग से भारतीय मलमल के एक बड़े और सुन्दर शवावरण का वस्त्र पहिन रखा था। उसके घुंघराले बाल उसके गले पर फैले हुए थे, मृदु मुस्कान उसके मुख पर खेल रही थी, किन्तु उसकी बहुत लम्बी, पतली, वक्र, लचीली और मुंहासों से भरी नाक उसके नीचे के ओंठ या अधर के भी नीचे तक लटक आई थी और यद्यपि वह अपनी जिह्वा के सहारे बड़ी नजाकत के साथ उसे कभी इधर कभी उधर डुलाती रहती थी, फिर भी उसके कारण उसका चेहरा श्रीहीन हो गया था।

उसकी विपरीत दिशा में, जलोदरग्रस्त महिला की बाईं ओर एक स्थूल, घरघराते कण्ठवाला, गठिया का रोगी वृद्ध पुरुष बैठा था, जिसके गाल उसके कन्धों पर लटक रहे थे, जैसे (ओपोर्तो नाम की) शराब के दो बड़े थैले या कुप्पे हों। उसने अपने दोनों हाथ जोड़ रखे थे और पट्टी बंधा एक पांव तिरछा मोड़कर टेबुल से लगा रखा था। उसके ढंग से लगता था कि वह अपने को सम्मान-भाजन समझता है। उसे अपनी शारीरिक छवि के इंच-इंच पर गर्व था किन्तु विशेष आनन्द उसे अपने भड़कीले जैकेट की ओर ध्यान दिलाने में आ रहा था। इसमें कोई शक नहीं कि उसके बनवाने में काफी रकम लगी होगी। इंग्लैण्ड तथा दूसरे देशों में भी मृत श्रीमंतों के भवनों के आकर्षक भागों में जो कुलचिह्न-अंकित ढालें लटकाई जाती हैं उनके कसीदा किए हुए रेशमी खोलों में से किसी एक से यह जैकेट बनी

होगी। वह उसे बिल्कुल फिट भी थी।

उसके बाद और अध्यक्ष की दाहिनी तरफ लम्बे मोजे और सूती जांघिया पहिने एक महाशय बैठे थे। उनका शरीर एक प्रकार का फिट या चक्कर आ जाने के कारण, जिसे टारपालिन ने भय की संज्ञा दी, हास्यास्पद ढंग से हिल रहा था। उनके जबड़ों की ताजा हजामत हुई थी और वे मलमल की एक पट्टी से भलीभांति बंधे हुए थे। इसी प्रकार उनकी भुजाएं भी कलाई के पास बंधी हुई थीं जिसके कारण वह टेबुल पर रखी मदिरा का अधिक स्वाद ले सकने में असमर्थ थे। लेग्स या टांग की राय थी कि एक प्रकार से यह सावधानी उसके लिए ठीक ही थी क्योंकि उनके चेहरे से उनके गहरे मद्यव्यसनी होने के लक्षण प्रकट थे। उनके कान विलक्षण थे, उन्हें अपनी जगह पर सीमित रखना असम्भव था और वे कमरे के वातावरण में ऊंचे उठे हुए दिखाई देते थे तथा तहखाने के मदिरालय में खोली जाती बोतलों की आवाज के बढ़ने-घटने के साथ उन्हें या तो ठुनकिया या फिर दबा दिया जाता था।

उनके सामने मुंह किए छठें या अन्तिम चीमड़-से दिखाई देते विलक्षण पुरुष बैठे थे। इन्हें लकवा मार चुका था इसलिए इस दुःखद स्थिति में बैठने में उन्हें अवश्य कष्ट का अनुभव हो रहा होगा। वह बैठे भी अजीब ढंग से, महोगनी लकड़ी के एक नए एवं सुन्दर शवाधार पर थे। शवाधार का ऊर्ध्वभाग उनकी खोपड़ी को छूता हुआ—उस पर छत्र की भांति फैला हुआ था। इससे उनका समस्त मुखड़ा अवर्णनीय रूप से दिलचस्प हो उठा था। कपड़े की बगली में जो विवर कटे थे उनमें सुघड़ता की अपेक्षा सुविधा का ही अधिक खयाल किया गया था, किन्तु जो भी हो उनकी पोशाक उन्हें अपने साथियों की भांति तनकर बैठने देने में बाधा दे रही थी और वे ४५ अंश का कोण बनाते अपने शवाधार पर पीठ टिकाए उठंगे हुए थे और उनके नयनों से निकली पड़ रही बड़ी-बड़ी पुतलियां, खुद अपने बृहद् आकार के विषय में विस्मय से भरी छत को देख रही थीं।

मण्डली के हर एक सदस्य के सामने खोपड़ी का एक-एक टुकड़ा पड़ा

हुआ था जिसे पैमाने या मदिरा पीने के प्याले के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा था। उनके सामने ऊपर की ओर एक वृहदाकार मानव-कंकाल लटक रहा था। उसके एक पांव में रस्सी बांधकर छत की एक कड़ी में लटका दिया गया था, दूसरी टांग इस प्रकार के किसी बंधन से मुक्त होने के कारण शरीर के साथ समकोण बना रही थी। जब हवा का कोई झोंका उस कक्ष में आ जाता तो सारा निर्बन्ध शरीर अनोखे ढंग पर झूलने लगता था। इस वीभत्स पदार्थ के खप्पर में जले दहकते कोयले रखे हुए थे जिनसे सारे दृश्य पर मूर्छाकारी पर स्पष्ट प्रकाश पड़ रहा था। मृत्युसंस्कार-सम्पादक की दुकान की शवाधार इत्यादि चीजें कमरे में चारों ओर ढेर कर दी गई थीं, यहां तक कि खिड़कियों के पास भी इस प्रकार रखी थीं कि इस ज्वाला की कोई भटकती किरण सड़क की ओर नहीं जा पाती थी।

यह इशारा पहले ही किया जा चुका है कि इस असाधारण मण्डली को, और उनसे भी ज्यादा कमरे की असाधारण सामग्री को देखकर हमारे नाविकों ने अपने व्यवहार में उस भद्रता का परिचय नहीं दिया, जिसकी आशा उनसे की जा सकती थी। लेग्स या टांग तो उसी दीवार पर पीठ के बल झुक गया जिसके पास खड़ा था; उसने नीचे का जबड़ा सामान्य स्थिति से और नीचे झुका दिया और आंखें पूरी लम्बाई तक फैला दीं। उधर ह्यू टारपालिन इतना झुक गया कि उसकी नाक टेबुल की सतह के बराबर आ गई। फिर वह अपनी हथेलियां दोनों घुटनों पर फैलाकर असामायिक और अविनीत अट्टहास कर उठा।

यद्यपि उनका आचरण अत्यधिक उद्दण्डतापूर्ण था किन्तु लम्बे अध्यक्ष ने उसका कुछ बुरा न मानकर रुचिर ढंग से मुस्कराते हुए स्वागत में सिर हिलाया और फिर उठकर हर एक को अपने हाथ से पकड़कर उन आसनों पर बैठा दिया जो इस बीच मण्डली के अन्य सदस्यों ने लाकर रख दिया था। 'टांग' ने जरा भी प्रतिरोध नहीं किया और जैसा उससे कहा गया था उसी तरह बैठ गया। वीर टारपालिन ने शवपेटिका का आसन उस जगह से खिसकाकर शववस्त्रों से लिपटी क्षयरोगिणी के नजदीक कर लिया और

प्रफुल्लित होकर उसके पास बैठ गया तथा खोपड़ी में लाल मदिरा उंडेलकर पी गया और इस तरह दोनों के अच्छे परिचय की शुरूआत हुई। किन्तु इस व्यवहार से शवाधार में बैठे चीमड़ महाशय को बहुत बुरा लगा और यदि अध्यक्ष ने अपना राजदण्ड टेबुल पर पटककर अपने निम्नलिखित भाषण की ओर सबका ध्यान न आकर्षित कर लिया होता तो इसका बहुत गम्भीर परिणाम हो सकता था—

"इस सुखद अवसर पर हमारा कर्त्तव्य हो जाता है कि···"

टांग ने बहुत गम्भीर दिखते हुए बाधा देकर कहा—"बस ! बस ! जरा ठहरिए। मैं कहता हूं, ठहरिए ! पहिले हमें यह बताइए कि आप सब हैं कौन, और यहां किस काम से एकत्र हुए हैं ? हमारे ईमानदार जहाजी दोस्त मृत्यु संस्कारकर्ता विल विम्बिल ने जिस सुखद नील विनाशिनी (मदिरा) को शिशिर ऋतु के लिए यहां सुरक्षित रखा था, उसे यहां चोर-बदमाशों की भांति घुसकर क्यों गटके चले जा रहे हैं ?"

निम्नकुलोपम इस अक्षम्य आचरण पर पहले की सारी की सारी मण्डली पांव पर थोड़ी उठ खड़ी हुई और एक के बाद एक उसी प्रकार के भीषण चीत्कार करने लगी जिससे कि आरम्भ में नाविकों का ध्यान आकर्षित हुआ था। अध्यक्ष ने सबसे पहले आत्म-नियंत्रण किया और अन्त में टांग की ओर बड़ी मर्यादा के साथ घूमकर अपनी वक्तृता आगे बढ़ाई—

"भले वे अनाहूत हों, ऐसे महान अतिथियों की किसी भी उचित उत्कण्ठा को हम खुशी-खुशी सन्तुष्ट करेंगे। तब यह जान लीजिए कि मैं ही इन प्रदेशों का बादशाह हूं और महाराज प्लेग प्रथम की उपाधि धारण करके इस अखण्ड साम्राज्य पर राज्य करता हूं।

"यह कक्ष, जिसे निस्सन्देह तुम नास्तिकतापूर्वक मृत्युसंस्कारकर्ता विल विम्बिल की दुकान समझ रहे हो,—उस आदमी की, जिसे हम जानते नहीं और जिसकी नीच संज्ञा इस रात से पहले कभी हमारे राजकीय कानों में नहीं पड़ी—यह कक्ष, मैं कहता हूं, यह कक्ष हमारे महल का मंच-कक्ष है, जिसमें हमारे राज्य के मामलों तथा अन्य पवित्र एवं उच्च विषयों पर

विचार किया जाता है।

"यह भद्र महिला, जो मेरे सामने बैठी है, महारानी प्लेग (क्वीन पेस्ट) है; वह हमारी भव्य महिषी है। और जिन श्रेष्ठ महानुभावों को तुम यहां देख रहे हो, वे सब हमारे कुटम्ब के हैं और शाही रक्त के चिह्नों से भूषित हैं; उनकी उपाधियां हैं:—परम सौम्य प्रधान सामंत प्लेग दण्डनायक, परम सौम्य सामन्त प्लेग नायक, परम सौम्य सामन्त विस्फोटक, तथा परम सुन्दरी रानी प्लेग-सुषमा।

"जहां तक तुम्हारे इस सवाल का सम्बन्ध है कि हम किस बात पर विचार करने यहां एकत्र हुए हैं, हम यह जवाब देने के लिए क्षम्य हैं कि इसका सम्बन्ध केवल हमारे अपने निजी एवं राजकीय स्वार्थ से है और हम लोगों के अतिरिक्त किसी दूसरे के लिए उसका कोई महत्व नहीं है। किन्तु अतिथि और अजनबी की दृष्टि से तुम्हारे जो अधिकार हो सकते हैं उनका विचार करके हम इतना और कहेंगे कि हम आज की रात, गम्भीर अनुसन्धान और शुद्ध जांच के पश्चात् यहां इसलिए एकत्र हुए हैं कि इस अच्छे नगर में मदिरा, आसव इत्यादि जिह्वा के जो अमाप्य कोष प्राप्त हैं उनकी अवर्णनीय प्रेरणा का परीक्षण, विश्लेषण एवं पूर्णतया निर्णय करें। ऐसा करने में हमें अपने स्वार्थ के साधन की उतनी चिन्ता नहीं है जितनी उस अपार्थिव सम्राट के सच्चे कल्याण की चिन्ता है जिसका राज्य हम सबके ऊपर है, जिसके उपनिवेश असीम हैं, और जिसका नाम 'यमराज' है।"

अपने पास की महिला को शराब का एक खप्पर देने के बाद दूसरे को खुद पीते हुए टारपालिन बोल उठा—'जिसका नाम है डेवी जोंस।'

"अरे नास्तिक शठ!"—अध्यक्ष ह्यू की तरफ ध्यान देते हुए बोला—"नास्तिक और घृणित अभागे! हमने कहा था कि (अतिथि के) उन अधिकारों को तेरे जैसे गंदे व्यक्ति के सम्बन्ध में भी भंग करने का हमारा इरादा नहीं है, इसीलिए तुम्हारे धृष्ट एवं असामयिक प्रश्नों का उत्तर देते रहे। किन्तु हमारी मंत्रणा में तुम्हारे दूषित अनधिकार-प्रवेश के कारण हम तुम्हें और तुम्हारे संगी को अलग-अलग एक-एक गैलन ब्लैक स्ट्रैप'

(काली विषैली मदिरा) पीने का दण्ड देते हैं। हमारे राज्य की समृद्धि के लिए तुम दोनों को उसे घुटनों के बल झुककर एक ही घूंट में पीना पड़ेगा। उसके बाद तुम्हें इस बात की स्वतन्त्रता रहेगी कि या तो अपना रास्ता पकड़ो या फिर यहां रहो और हमारे टेबुल की सुविधाओं का लाभ उठाओ। अपनी पसन्द के अनुसार जो चाहो चुन सकते हो।"

'टांग' (लेग्स) महाराज प्लेग की मर्यादा से प्रभावित और उसके प्रति किंचित् सम्मान के भाव से प्रेरित था। वह उठा और टेबुल के सहारे खड़े होकर बोला—"यह तो हमारे लिए असम्भव होगा। श्रीमन् को ज्ञात हो कि श्रीमन् ने जिस मदिरा का अभी उल्लेख किया है उसका चतुर्थांश भी अपने पेट में डाल सकना मेरे लिए असम्भव है। दोपहर के पहले स्थैर्यभार या बैलेस्ट के रूप में हमने जो कुछ भरा है या आज शाम को विविध बन्दरगाहों को जो मदिराएं और आसव भेजे गए हैं उनका जिक्र छोड़ भी दूं तो 'आनन्दी नाविक' ('जाली टार') मदिरालय में पैसे देकर ली गई मदिरा से मैं इस समय आकण्ठ छका हुआ हूं, (नहीं तो अवश्य आपकी आज्ञा का पालन करता) इसलिए श्रीमन् महाराज, मेरी इस इच्छा को ही आदेश-पालन का कृत्य समझने का अनुग्रह करें क्योंकि किसी भी विधि या साधन से मैं एक बूंद भी न पीने में समर्थ हूं, न पी सकूंगा—फिर उस भयानक गंदे पानी की तो बात ही क्या, जो 'ब्लैक स्ट्रैप' नाम से पुकारी जाती है।"

टारपालिन को अपने साथी की इतनी लम्बी वक्तृता और उसकी अस्वीकृति के ढंग पर आश्चर्य हो रहा था, वह बीच में ही बोल उठा—"बस, बस, रुक जाओ। अरे गोबरगणेश! चुप हो रहो। टांग, अपनी चाटूक्तियां बन्द करो। मेरा पेटा अभी हलका ही है, यद्यपि मैं मानता हूं कि तुम ऊपर से करारे हुए अंडे लग रहे हो। जहां तक तुम्हारे हिस्से की लदान की बात है, इसका तूफान अब खड़ा कर रहे हो, मैं उसके लिए भी अपने भारकक्ष में जगह बना सकता हूं, किन्तु···"

अध्यक्ष ने हस्तक्षेप करते हुए कहा—"यह कार्रवाई जुर्माने या सजा की शर्तों के अनुसार नहीं हो रही है। जो सजा दी गई है वह बदली या

वापिस नहीं ली जा सकती। जो शर्तें हमने लगाई हैं उन्हें अक्षरशः पूरा करना होगा, और क्षण-भर की भी देरी किए बिना पूरा करना होगा। वैसा न होने पर हम आदेश देते हैं कि तुम दोनों को एक साथ कण्ठ और पांव बांधकर, विद्रोहियों के रूप में, बियर के महापीपे में डुबा दिया जाए।"

"यह है दण्ड ! यह है दण्ड ! न्यायपूर्ण और उचित दण्ड ! एक गौरव-पूर्ण आदेश ! अत्यन्त योग्य, सरल एवं पवित्र दण्डादेश।" राजकीय मण्डली एक साथ ही चिल्ला उठी। महाराज ने अपने माथे को असंख्य सिलवटों के साथ ऊपर उठाया; गठियावाला छोटा आदमी धौंकनी की भांति फूल उठा; कफन-पहिनी महिला अपनी नाक इधर-उधर हिलाने लगी; सूती जांघियेवाले सज्जन अपने कान ऐंठने लगे—कफनीवाली महिला मरती मछली की तरह हांफने लगी—और शवाधार वाला आदमी और चीमड़ पड़ गया तथा अपनी आंखें फिराने लगा।

"उफ ! उफ ! उफ ! इन सब उत्तेजनाओं पर ध्यान देकर टार-पालिन बोल उठा—"उफ ! उफ ! ओह ! ओह ! ओह ! ओह ! महाराज प्लेग ने जब अपनी बात छेड़ दी, मतलब न्यूनाधिक दो-तीन गैलन काली मदिरा का विषय छेड़ा, तब मैं यह कहने जा रहा था कि मेरे जैसे चुस्त समुद्री-यान के लिए उतना भार और उठा लेना हंसी-खेल की चीज है, किन्तु जब बात दानव के स्वास्थ्य के नाम पर पान करने की कही जाए और दुष्ट राजा के सामने घुटने टेकने को कहा जाय—उस प्राणी के सामने जिसे मैं उतनी ही अच्छी तरह जानता हूं कि पापी और अपराधी है, जितना अपने को जानता हूं, और जो इस सारी दुनिया में अभिनेता टिम हर्लीगर्ली के सिवा और कोई नहीं है, तब बात मेरे कयास के बाहर की हो जाती है।"

उसे शान्तिपूर्वक अपनी बात खत्म करने का मौका नहीं दिया गया। टिम हर्लीगर्ली के नाम पर सारी मण्डली आसनों से उछल पड़ी।

"राजद्रोह।" श्रीमान् सम्राट प्लेग ने चिल्लाकर कहा।

"राजद्रोह।" गठिया रोगवाले नन्हे आदमी ने कहा।

"राजद्रोह।" सुन्दरी रानी प्लेग-सुषमा चिल्लाई।

"राजद्रोह।" बंधे हुए जबड़ेवाले महाशय ने कहा।

"राजद्रोह।" शवाधार में बैठे सज्जन ने कहा।

"राजद्रोह! राजद्रोह!" विचित्र मुंहवाली महारानी चीख उठी और अभागे टारपालिन को, जिसने अपने लिए मदिरा का खप्पर उंडेलना शुरू ही किया था, उसके बिरजिस का पिछला भाग पकड़कर ऊपर हवा में उठा लिया और मदिरा के भीमाकार कड़ाह में डाल दिया। टारपालिन उसमें कुछ क्षणों तक ऊपर-नीचे होता रहा, जैसा कि ताड़ी के बड़े कटोरे में सेब उभ-चुभ हो रहा हो, और अन्त में हाथ-पांव मारने से फेनिल हो उठी मदिरा के फेन की भंवर के बीच लुप्त हो गया।

उसके साथी लम्बे नाविक से चुपचाप यह दृश्य न देखा गया। उसने प्लेग महाराज को उठाकर बाहर फेंक दिया और साहसी टांग किटकिटाते हुए दरवाज़ा बंद करके कमरे के मध्यभाग की ओर लपका। यहां टेबुल के ऊपर लटकते हुए कंकाल को झटके से तोड़कर इतनी ताकत और तेजी से पटका कि, कमरे से प्रकाश की अन्तिम किरण के लुप्त होने के साथ ही, गठियावाले महाशय का भेजा फटकर बाहर आ गया। फिर क्षण-भर में ही अपनी पूरी ताकत से उस यवानी मदिरा के मारक कड़ाह को उलट दिया जिसमें टारपालिन डाला गया था। भयानक मद्य का एक तूफान चारों ओर फट पड़ा। वह तूफान इतना भीषण, इतना प्रबल था कि सारा कमरा, एक दीवार से दूसरी दीवार तक, भर गया; अनेक सामग्रियों से भरा टेबुल उलट गया; टिकठियां दूर जा गिरीं। मदिरा टब आतिशदान से जा टकराया, और महिलाएं बेहोश हो गईं। सुराहियां, जग, प्याले आपस में टकराने लगे और पानपात्र, बोतलें तथा अन्य बर्तन खड़खड़ा उठे। मरण-सम्बन्धी पुंजीभूत फर्नीचर बिखर कर लुढ़कने लगे। खोपड़ियों के झुण्ड के झुण्ड गिरते हुए बहने लगे। मण्डली का भयावना आदमी वहीं डूब गया। चिमड़ा आदमी बह चला और विजयी टांग, शववस्त्र के चोगेवाली मोटी महिला को कमर से पकड़े गली में निकल गया, ह्यू टारपालिन ने दो-चार बार छींकने तथा हांफने के बाद, सुन्दरी प्लेग-सुषमा को लिए हुए, उसका अनुसरण किया।

श्रीमती ज़िनोबिया

[पश्चिम की तत्कालीन साहित्य एवं अनुसंधान-प्रवृत्ति पर एक व्यंग-रचना]

मैं मान लेती हूं कि हर एक ने मेरा नाम सुना होगा। मेरा नाम श्रीमती (मिग्नोरा) साइक (मानस वा अन्तःकरण) ज़िनोबिया है। मैं जानती हूं कि यह तथ्य है। मेरे शत्रुओं के सिवा दूसरा कोई मुझे सूकी स्नाब्स[1] नहीं कहता। मुझे विश्वास दिलाया गया है कि सूकी मेरे नाम के प्रथम शब्द साइक का, जो एक भला-सा यूनानी शब्द है और जिसका अर्थ आत्मा होता है (और मैं भी तो ऊपर से नीचे तक आत्मा ही आत्मा हूं) भद्दा अपभ्रंश है। कहते हैं, कभी-कभी सादूक का अर्थ तितली भी होता है। इस दूसरे अर्थ में भी वह मेरे लिए ठीक जंचता है क्योंकि जब मैं आकाशनील रंग के अरबी गाउन तथा हरित मोतियों एवं नारंगी रंग वाले लघु घोंघों की सप्त झालरों से भूषित, अरुण साटिन की पोशाक में होती हूं तो कुछ वैसी ही लगती हूं। जहां तक स्नाब्स की बात है कोई भी आदमी जो मुझपर नजर डालेगा, तुरन्त यह समझ जाएगा कि मेरा नाम स्नाब्स नहीं हो सकता। कुमारी टबीथा टर्निप ने शुद्ध ईर्ष्यावश यह रिपोर्ट फैलाई है। हां, टबीथा टर्निप ने। देखो तो उस शैतान को। परन्तु हम एक टर्निप[2] से और आशा ही क्या कर सकते हैं ? जान पड़ता है उसे वह पुरानी कहावत याद नहीं है कि क्या टर्निप से खून प्राप्त करने की आशा की जा सकती है ?

---

१. स्नाब्स का अर्थ वर्गदंभी या सम्पन्नम्मन्य है अर्थात् अपने बड़प्पन की झूठी अनुभूति वाला।

२. टर्निप—शिखमूल, शलजम।

(स्मरण के लिए : पहिली भेंट में ही उसे यह बताना है।) (पुनः स्मरण : उसकी नाक खींचती है।) हां, मैं क्या कह रही थी ? हां, मुझे विश्वास दिलाया गया है कि स्नाब्स जिनोबिया का अपभ्रंश-भर है, और जिनोबिया एक रानी थी (मैं भी तो रानी ही हूं। डा० मनीपेनी[1] सदा ही मुझे क्वीन आफ हार्ट्स[2] कहते हैं) और जिनोबिया तथा साइक दोनों अच्छे ग्रीक (यूनानी) शब्द हैं, और मेरे पिता भी यूनानी थे, इसलिए मुझे मूल अपत्यवाचक नाम, जो जिनोबिया है न कि स्नाब्स, के प्रयोग का अधिकार है। टबीथा टर्निप के अलावा दूसरा कोई मुझे सूकी स्नाब्स कहकर नहीं पुकारता। मैं तो बस श्रीमती साइक जिनोबिया हूं।

जैसा कि मैं पहिले कह चुकी हूं, हर एक ने मेरा नाम सुना है। मैं वही सिग्नोरा साइक जिनोबिया हूं जो फिलाडेलफिया, रेगुलर-एक्सचेंज, टी-टोटल, यंग, बेली-लेटर्स, यूनीवर्सल, एक्सपेरीमेण्टल, बिब्लियोग्राफिकल एसोसियेशन टु सिविलाइज ह्यूमैनिटी[3] संस्था की पत्राचार-सचिव है। डा० मनीपेनी ने हमारी जो उपाधि चुनी वह उनके कथनानुसार इसलिए चुनी गई कि वह रम (ईख की मदिरा) के खाली पीपे की तरह बड़ी लगती है। (कभी-कभी वह आदमी भद्दा हो जाता है, पर उसमें गहराई है।) हम सब अपने नामों के बाद परिषद् के नाम के प्रथमाक्षर जोड़कर दस्तखत करते हैं। जैसे रायल सोसायटी आफ आर्ट्स (कला की राज-परिषद्) के सदस्य अपने नाम के आगे आर० यस० ए० लिखते हैं, वैसे ही हम सब अपने नाम के आगे पी० आर० ई० टी० टी० वाई० बी० एल० यू० ई० बी० ए०, टी० सी० एच०—अर्थात् फिलाडेलफिया रेगुलर-एक्सचेंज, टी-टोटल, यंग, बेली-लेटर्स, यूनिवर्सल, एक्सपेरीमेण्टल, बिब्लियो-

---

१. मनीपेनी—कौड़ीमल। नाम में भी व्यंग है।

२. क्वीन आफ हर्टस—हृदयों की रानी। ब्रिज नामक ताश के खेल में पान की रानी।

३. फिलाडेल्फिया, नियमित विनिमयालय, चाय-निग्रह, तरुण, ललित साहित्य, सार्वदेशिक प्रायोगिक, मानवता को सभ्य बनानेवाली ग्रन्थविज्ञानीय परिषद्।

ग्राफिकल एसोसियेशन टु सिविलाइज ह्यूमैनिटी के प्रत्येक शब्द का प्रथमाक्षर। डा० मनीपेनी का कथन है कि हमारे आद्याक्षर हमारे सत्य चरित को व्यक्त कर देते हैं—परन्तु किसी तरह मेरी समझ में नहीं आता कि जब वह ऐसा कहते हैं तब उनका मतलब क्या रहता है।

लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए डा० मनीपेनी की सहायता एवं परिषद के अथक प्रयत्नों के बावजूद तब तक उसमें कोई विशेष सफलता नहीं मिली थी जब तक मैं उसमें शामिल नहीं हुई। सच्ची बात तो यह है कि वाद-विवाद में सदस्यगण बड़ा छिछोरापन दिखलाते थे। प्रत्येक शनिवार को जो शोध प्रबन्ध पढ़े जाते थे उनमें गहराई की अपेक्षा भड़ैती ज्यादा होती थी। उनमें कशाहत उद्‌गार होते थे। उनमें आद्यकारणों, आद्यसिद्धान्तों का कोई निरूपण नहीं होता था। उनमें किसी प्रकार की कोई शोध नहीं होती थी। जो बात सबसे महत्वपूर्ण है अर्थात् वस्तुओं की क्षमता' उसपर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। संक्षेप में, इस प्रकार की कोई ललित रचना नहीं होती थी। सब कुछ निम्नस्तर का होता था—बड़े ही निम्नस्तर का। कोई गम्भीरता नहीं, कोई अध्ययन नहीं, कोई तत्वज्ञान नहीं-—मतलब कोई ऐसी चीज नहीं, जिसे विज्ञजन आध्यात्मिकता कहते हैं, और अविज्ञजन 'काण्ट' (Cant) या शब्दाडम्बर मात्र कहकर जिसकी निन्दा करते हैं। [डा० मनीपेनी कहते हैं कि मुझे 'काण्ट' (Cant) के 'सी' को कैपिटल अक्षर 'के' से लिखना चाहिए—किन्तु मैं इसे उनसे ज्यादा समझती हूं।][1]

जब मैं परिषद् में सम्मिलित हुई तो मैंने चिंतन एवं लेखन की अधिक अच्छी शैली चलाने की चेष्टा की, और सारी दुनिया जानती है कि मैं इसमें कितनी अच्छी तरह सफल हुई हूं। अब पी० आर० ई० टी० टी० वाई० बी० एल० यू० ई० बी० ए० टी० सी० एच० में भी उतने ही अच्छे निबन्ध आते हैं जितने ब्लैकवुड में मिलते हैं। मैं—ब्लैकवुड का नाम इसलिए

१. कैपिटल 'के' अक्षर से काण्ट शब्द लिखने पर जो काण्ट बनता है वह यूरोप के गूढ़ तत्वज्ञानी काण्ट का नाम है।

लेती हूं कि मुझे विश्वास दिलाया गया है कि उचित ही प्रसिद्ध पत्रिका के पृष्ठों में प्रत्येक विषय की सर्वोत्तम रचनाएं मिलती हैं। अब हर विषय पर हम उसे नमूना या माडेल के रूप में ग्रहण करते हैं और तदनुसार हमारी ओर लोगों का ध्यान तेज़ी से आकर्षित हो रहा है। और फिर यदि कोई ठीक तरह से यत्न करे तो वास्तविक ब्लैकउड शैली में किसी रचना का लिखना कुछ ज्यादा कठिन तो नहीं है। अवश्य ही मैं राजनीतिक लेखों की बात नहीं कर रही हूं। जब से डा० मनीपेनी ने समझा दिया है, तब से हर आदमी जानता है कि वे किस प्रकार तैयार किए जाते हैं। श्री ब्लैकउड के पास दर्जियों वाली एक जोड़ी कैंची है। तीन अपरेंटिस (उम्मीदवार) उनके पास आदेश के लिए प्रस्तुत रहते हैं। एक उन्हें 'टाइम्स' थमाता है, दूसरा 'एक्ज़ामिनर' देता है और तीसरा 'गलीज़न्यू कम्पेण्डियम आफस्लैंग-ह्वैंग'[1] पकड़ा देता है। श्री ब्लैकउड काटते हैं और छितराते जाते हैं। सब काम जल्द हो जाता है—और कुछ नहीं बस इक्ज़ामिनर, स्लैंग-ह्वैंग एवं टाइम्स—फिर टाइम्स, स्लैंग-ह्वैंग और इक्ज़ामिनर,—और उसके बाद फिर टाइम्स, इक्ज़ामिनर और स्लैंग-ह्वैंग।

किन्तु पत्रिका की मुख्य विशेषता उसके लेखों की विविधता है। इनमें से भी सर्वोत्तम लेख उस शीर्षक के अन्दर आते हैं जिसे डा० मनीपेनी 'गड़-बड़झाला' (फिर उसका जो भी मतलब हो) कहते हैं और जिसे दूसरे सब लोग 'सघनताएं' कहते हैं। यह लेखन की वह प्रजाति है जिसकी प्रशंसा करने का ढंग मैं बहुत दिनों से जानती हूं, यद्यपि उनकी रचना ठीक किस तरीके पर की जाती है, यह मैं परिषद् की ओर से प्रतिनिधिरूप में डा० ब्लैकउड से मिलने पर कुछ समय पहले ही जान पाई हूं। यह तरीका बहुत सरल है, परन्तु उतना सरल नहीं जितना कि राजनीति है। जब मैं श्री ब्लैकउड से मिली और उन्हें परिषद् की इच्छाओं से अवगत किया तो उन्होंने मेरे साथ अत्यन्त शिष्टता का व्यवहार किया; अपने अध्ययन-कक्ष में ले गए, और सारी प्रक्रिया भलीभांति समझाई।

१. शाब्दिक अर्थ [illegible] अपमानक-स्वरों का नवीन कोष।

मेरे भव्य रूप से अभिभूत होकर उन्होंने कहा—"मेरी *प्रिय* महोदया, मेरी प्रिय महोदया ! कृपया बैठिए। मामला कुछ यों है। पहली बात तो यह कि आपके 'सघनताएं' के लेखक को बहुत ही काली रोशनाई, एक बहुत ही बड़ी कलम, जिसमें एक बिलकुल भोथर निब हो, इस्तेमाल करनी चाहिए।" फिर कुछ ठहरकर अत्यन्त आकर्षक स्फूर्ति एवं आचरण-गाम्भीर्य के साथ कहा—"मिस साइक ज़िनोबिया ! मेरी बात गांठ बांध लो, कि *क़लम कभी सुधारी नहीं जानी चाहिए।* इसी में सघनता का रहस्य, उसकी आत्मा छिपी हुई है। मैं अपने ऊपर यह कहने का उत्तरदायित्व लेता हूं, कि किसी भी व्यक्ति ने, चाहे वह कितनी महती प्रतिभावाला हो, कभी कोई सुन्दर लेख, हां, मुझे समझो, एक सुन्दर लेख अच्छी कलम से नहीं लिखा होगा। श्रीमती जी, इसे मानिए कि जब कोई पाण्डुलिपि पढ़ ली जाती है तो वह हर्गिज़ पढ़ने-योग्य नहीं होती। हमारे सम्प्रदाय का मत का यह प्रमुख सिद्धान्त है और यदि आप इसे स्वीकार नहीं करतीं तो बस हमारी मुलाकात खत्म हो गई।"

इतना कहकर वह रुक गए, किन्तु चूंकि मैं अपनी मुलाकात को इस प्रकार समाप्त करना नहीं चाहती थी इसलिए उनकी बात, जो बहुत ही स्पष्ट थी और जिसकी सच्चाई से मैं पहिले से ही पर्याप्त रूप में परिचित थी, मैंने मान ली। लगा, इससे वह खुश हो गए और अपनी हिदायतें फिर देने लगे।

"मिस साइक ज़िनोबिया, यदि मैं किसी रचना का या कई रचनाओं के समूह का नमूने या अध्ययन के लिए, नाम लूं तो शायद उससे मेरे अन्दर की ईर्ष्या प्रकट होती समझी जाएगी, फिर भी मैं कुछ उदाहरणों की ओर आपका ध्यान अर्कापित करूंगा। 'दि डेड एलिव' (मृत जीवित) नामक रचना बहुत शानदार थी। उसमें एक ऐसे व्यक्ति के संवेगों को व्यक्त किया गया है, जो शरीर की सम्पूर्ण श्वास समाप्त होने के पहले ही दफना दिया गया है। रचना-कौशल, सुरुचि, आतंक, भावना, दार्शनिकता एवं पाण्डित्य से पूर्ण है। उसे पढ़कर आप कसम खा सकती हैं कि लेखक सवा-

धार में ही पैदा और प्रतिपालित हुआ होगा। इसके बाद एक दूसरी रचना हमें मिली 'कनफेशंस आफ ऐन ओपियमईटर' (एक अफीमची के आत्म-कथ्य) सुन्दर, बहुत सुन्दर! भव्य कल्पना, गहरी दार्शनिकता, तीव्र विवेचन, आग एवं तूफान से पूर्ण, और निश्चित रूप से अज्ञेय की गहरी पुट, निरर्थकता का एक अच्छा नमूना, जो लोगों के गले के नीचे अच्छी तरह उतर गया। उन्होंने तो यही समझा कि वह लेख कालेरिज ने लिखा है, किन्तु बात यह नहीं थी। उसे मेरे प्रिय लंगूर जूनीपर ने, हालैण्ड के एक बड़े ग्लास का, जिसमें चीनी-रहित गर्म पानी था, स्वाद लेते हुए लिखा था। (यदि मि० ब्लैकउड के सिवा कोई और इसे कहता तो मैंने शायद ही उसपर विश्वास किया होता, किन्तु उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया कि बात ऐसी ही है।) इसके बाद लीजिए 'दि इन्वालण्टरी एक्सपेरीमेण्टालिस्ट (अनिच्छुक प्रयोगकर्ता) को, जो एक ऐसे आदमी के बारे में है जो किसी भट्ठी में जल-पक कर जीता और स्वस्थ बाहर निकल आया। फिर लीजिए, 'दि डायरी आफ ए लेट फिज़ीशियन' (भूतपूर्व चिकित्सक की डायरी) नामक रचना, जिसकी विशेषता उसके शब्दाडम्बर एवं महत्वहीन यूनानी भाषा में थी। इसी तरह का एक लेख था 'दि मैन इन दि बेल' (घण्टे के अन्दर आदमी) जिसकी मैं आपसे क्या तारीफ करूं। उसमें एक ऐसे तरुण का इतिहास है जो गिर्जाघर के घण्टे के आहनक (क्लेपर) के नीचे जाकर सो जाता है और किसी की शवयात्रा के लिए जब घण्टा बजने लगता है तब जग उठता है। घण्टे की ध्वनि उसे पागल कर देती है और वह अपने मनोभावों को व्यक्त करने लगता है। मनोभाव बड़ी चीज है। यदि आप कभी डूब जाएं या फांसी के तख्ते पर लटकें तो अपने मनोभाव अवश्य लिखें। वे दस गिनी प्रति पृष्ठ के हिसाब से पुरस्करणीय होंगे। मिस ज़िनोबिया, यदि आप ज़ोरदार रचनाएं करना चाहती हैं तो मनोवेगों पर बारीकी से ध्यान दीजिए।"

मैंने कहा—"मैं अवश्य ध्यान दूंगी मि० ब्लैकउड।"

उन्होंने कहा—"खूब! मैं देख रहा हूं कि आप वैसी ही शिष्या हैं

जैसा कि मैं चाहता हूं। सनसनीखेज शैली के यथार्थ ब्लैकउड टाइप लेख के लिए जो ब्यौरे ज़रूरी हैं उनमें भी मैं तुम्हें निपुण कर देना चाहता हूं। मेरा मतलब उन रचनाओं से है जिन्हें मैं हर अर्थ में सर्वोत्तम मानता हूं।

"पहली ज़रूरत इस बात की है कि तुम अपने को ऐसी संकटपूर्ण स्थिति में डालो जिसमें इसके पहिले कोई न गया हो। उदाहरण के लिए, भट्टी वाली कल्पना बहुत अच्छी थी। किन्तु यदि तुम्हारे यहां भट्टी, या बड़ा घण्टा न हो, तुम किसी गुब्बारे से सरलतापूर्वक न कूद सको, किसी भूकम्प में न समा सको या किसी चिमनी में न फंस सको तो ऐसी किसी दुस्साहसिक बात की कल्पना ही कर लो। किन्तु मैं तो यही चाहूंगा कि तुम वास्तविक घटना में से गुज़रो। अपने ही मामले के प्रायोगिक ज्ञान से ज्यादा कल्पना को तीव्र करनेवाली दूसरी चीज़ नहीं है। तुम जानती हो कि सत्य आश्चर्यजनक होता है—कल्पना से भी ज्यादा आश्चर्यजनक, फिर उससे मतलब भी ज्यादा हल होता है।"

मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि मेरे पास एक जोड़ी तस्मे हैं। मैं जाकर उनसे फांसी का अनुभव प्राप्त करूंगी।"

उन्होंने कहा—"क्या खूब। ज़रूर ऐसा करो, यद्यपि फांसी पर लटकने की बात बहुत दकियानूसी हो गई है। पर शायद तुम इसमें ही कुछ ज्यादा अच्छा कर सको। मारिसन की गोलियों की एक खुराक खाओ और अपने मनोभाव हमें दो। मेरी हिदायतें किसी भी दुस्साहस पर समान रूप से लागू होती हैं। तुम घर जाते समय सिर में चोट खा सकती हो, या किसी बस से दब सकती हो या अपने को किसी पागल कुत्ते से कटवा सकती हो या फिर किसी पनाले (गटर) में डूब सकती हो। किसी तरह आरम्भ तो करो।"

"हां, जब तुमने विषयवस्तु का निर्णय कर लिया, तो फिर अपनी कहानी किस ध्वनि या ढंग पर बयान करोगी, इस पर विचार करो। कहने के कई प्रकार हैं—प्रबोधन, प्रेरणात्मक शैली, उद्वेगजनक शैली, तथा प्राकृतिक शैली जो पिछले कुछ दिनों से खूब प्रचलित हो रही है। यह

छोटे, संक्षिप्त, वाक्यों से बनती है। छोटे से छोटा वाक्य, आभासिक वाक्य। सबके आगे पूर्णविराम। पैरा कभी नहीं।

"एक और भी है—उत्तुंग, प्रसारी, और विस्मयात्मक। हमारे कुछ सर्वोत्तम उपन्यासकार इस शैली का प्रयोग करते हैं। शब्द सब भंवर में लट्टू की भांति घूमते होने चाहिए; उसके साथ ऐसा शोर होना चाहिए कि उपयुक्त जंचे, अर्थ की जगह यह शोर ही होना चाहिए। जहां लेखक इतनी जल्दी में है कि उसके पास सोचने का समय नहीं, वहां सब सम्भव शैलियों में यही शैली सर्वोत्तम है।

"रहस्यात्मिका शैली भी उत्तम है किन्तु उसमें पर्याप्त दाक्षिण्य की आवश्यका होती है। इसका सौन्दर्य वक्रोक्ति-ज्ञान में है। संकेत सबकी ओर करो, परन्तु बल किसी पर न दो। यदि तुम रोटी और मक्खन कहना चाहती हो तो इसे साफ-साफ या सीधे-सीधे न कहो। तुम रोटी और मक्खन के निकटवर्त्ती कोई भी बात और हर बात कहो। तुम कोटू के केक की ओर इशारा कर सकती हो, अथवा जई के दलिए पर व्यंग कर सकती हो, किन्तु यदि तुम्हारा वास्तविक तात्पर्य रोटी और मक्खन से है, तो मेरी प्यारी मिस साइक, सावधान रहो और हर्गिज मुंह से रोटी और मक्खन शब्द न निकालो।"

मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि जबतक जीवित रहूंगी, कभी उसका उच्चारण न करूंगी। वह आगे कहते गए :—

"समान महत्व की और भी ध्वनियां-शैलियां हैं, किन्तु इस समय मैं केवल दो और ध्वनियों का जिक्र करूंगा, एक है तात्विक, दूसरी है बहु-जातीय या पंच-मेल। पहली में विशेष दक्षता इस बात में मानी जाती है कि किसी भी वस्तु की प्रकृति में कोई भी जहां तक देख सकता है उससे बहुत आगे, बहुत दूर तक, देखना। यदि ठीक तरह से संयोजित हो तो यह दूर-दृष्टि बड़ी कुशल हो उठती है। कालेरिज की टेबुल-वार्ता पढ़ने से तुम इस मार्ग में दूर तक जा सकती हो। यदि तुम कुछ भारी-भरकम शब्दों से परिचित हो तो उन्हें प्रयुक्त करने का, तुम्हारे लिए, यही अवसर है। अका-

दमी और लाइसियम (साहित्य-संस्था विशेष) की बातें करो, यूनानी (आयोनिक) और इतालवी विचारसारणियों पर बोलो, या काण्ट[1] शेलिंग[1] और फिख्ते[1] पर कुछ कहो, लाक[1] की निन्दा करो तथा लैटिन के ए प्रियोरी (पूर्वसिद्ध) और 'ए पोस्तेरियोरी' (अनुमानात्मक) शब्दों का प्रयोग करना न भूलो। जहां तक बहुजातीय या पंचमेल शैली की बात है, इसमें संसार की सभी शैलियों का समानानुपात में उचित मिश्रण करना पड़ता है, इसलिए वह गहरी, महती, असंगत, चटपटी, धृष्ट और सुन्दर सभी बातों के योग से निर्मित होती है।

"अब हम मान लेते हैं कि तुमने अपनी घटनाओं तथा शैली का निर्णय कर लिया है। परन्तु सम्पूर्ण कार्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंश, बल्कि आत्मा, तो अभी रह ही गया—मेरा मतलब है बीच के विवरण भरने से। यह कल्पना तो नहीं की जा सकती कि कोई महिला या सत्पुरुष पुस्तक-कीट का जीवन बिताता रहा होगा। फिर भी, सब बातों के ऊपर इसकी आवश्यकता है कि तुम्हारे लेख से पाण्डित्य का आभास प्राप्त होता हो या कम से कम इतना प्रमाण तो उससे मिलता ही हो कि तुमने बहुत अधिक पढ़ा है। अब मैं तुम्हें बताऊंगा कि इस बात को कैसे पूरा करोगी। इधर देखो। (तीन-चार सामान्य-सी दिखनेवाली पुस्तकें हाथ से खींचकर उन्हें कहीं से भी खोलते हुए)। दुनिया की किसी भी पुस्तक के किसी भी पृष्ठ पर नज़र डालोगी तो तुम्हें या तो पाण्डित्य के या फिर 'बेल-इस-पिरित-इज्म' (फरांसीसी शब्द है, अर्थ होता है, वैदग्ध्यवाद या ठिठोलियापन) से भरे छोटे टुकड़े मिल जायंगे। ब्लैकउड रचनाओं के लिए ये स्वादवर्द्धक मसाले का काम देते हैं। मैं उनमें से कुछ को पढ़ दूंगा, तुम चाहो तो उन्हें लिख ले सकती हो। मैं दो भाग करूंगा, प्रथम *उपमाओं के निर्माण के लिए चटपटे तथ्य*, और दूसरा, *अवसरानुकूल चटपटी अभिव्यक्तियों का प्रवेश करना*। अब लिखो—" और वह जो बोलते गए, मैं लिखती गई।

---

१. युरोपीय विचारकों के नाम हैं।

"उपमाओं के लिए चटपटे तथ्य। मूलतः तीन ही[1] वाग्देवियां थीं—मेलेती, नेमी, एवं आवदी—उपासना, स्मृति, एवं संगीत। यदि ठीक तरह से उपयोग करो तो इस ज़रा से तथ्य से बहुत कुछ कर पाओगी। तुम जानती हो, आमतौर से यह बात लोगों को मालूम नहीं है, अनुसन्धान-जैसी मालूम पड़ती है। सावधान रहो और एक दम आशु-उद्‌गार की भांति उसे दो।

"फिर लो। अलफियस नदी समुद्र के नीचे से होती हुई बाहर निकल आई, और उसके जल की विशुद्धता वैसी ही बनी रही। ठीक है कि घिसी-पिटी-सी बात है किन्तु यदि इसको सजा दिया जाए और इसमें नमक-मिर्च लगा दी जाय तो वह बिल्कुल नवीना हो जाएगी।

"इससे भी अच्छी बात लो। ईरानी श्वेतदूर्वा में कुछ लोगों को बड़ी ही मृदु तथा तीव्र गंध मिलती है, जबकि दूसरों के लिए वह बिल्कुल ही निर्गन्ध होती है। कैसी अच्छी बात, बड़ी सूक्ष्म। इसे ज़रा इधर-उधर कर दो, यह चमत्कार पैदा कर देगी। हम वनस्पति-जगत् से कुछ और चीज लें, विशेषतः लैटिन (लातीनी) भाषा की सहायता से। लिखो।

"जावा के एपीडेण्ड्रम फ्लोज़ ऐरिस' पौधे में बहुत सुन्दर फूल लगता है। यदि उसे जड़ से उखाड़ लिया जाए तो बहुत दिनों तक रहेगा। वहां के निवासी इसे किसी रस्सी के सहारे छत से टांग देते हैं और वर्षों तक इसकी सुगन्धि का उपभोग करते हैं। क्या बात है। उपमाओं के विषय में इतना काफी है अब चटपटी अभिव्यक्तियों को लो।

"चटपटी अभिव्यक्तियां। 'पूज्य चीनी उपन्यास 'जू-कियाओ-ली।' वाह ! चतुराई के साथ इन चन्द शब्दों का संयोजन करने मात्र से लोगों पर प्रभाव पड़ेगा कि तुम्हें चीनियों की भाषा और साहित्य का अच्छा परिचय है। इसकी सहायता से बिना अरबी या संस्कृत के भी तुम्हारा

१ पाश्चात्य पुराणों में (कविता, संगीत इत्यादि की प्रेरक) वाग्देवियां वस्तुतः नव मानी गई हैं :—१. कैलियोपी, २. क्लियो, ३. इराती, ४. यूतर्पी, ५. मेलपोमीन ६. पोलीहाइमनिया, ७. तर्पीशकोरा, ८. थालिया, ९. यूरेनिया।

काम चल जाएगा परन्तु फ्रेंच, स्पेनिश, इटालियन, जर्मन लैटिन और ग्रीक के सन्दर्भों के बिना चीज़ मज़ेदार नहीं बनेगी। मैं इनमें से हर एक का नमूना तुम्हें लिखाता हूं। इनमें से किसी से भी काम बनाया जा सकता है। तुम्हारे लेख में क्या फिट होगा, इसके लिए तुम्हें अपनी बुद्धि लड़ानी होगी। अब लिखो।

"ओसी तेंद्र कुः ज़ाईर" (Aussi Tendre que Zaire) मतलब ज़ाईर की भांति कोमल। यह हुआ फ्रेंच। यह 'ला तांद्र ज़ाईर' नाम के फरांसीसी दुःखान्त में बार-बार आता है इसलिए यदि तुम ठीक तरह से इसका उपयोग करोगी तो उससे केवल इतना ही प्रकट नहीं होगा कि तुम्हें उस भाषा का ज्ञान है बल्कि तुम्हारे सामान्य अध्ययन और विचक्षणता का भी परिचय प्राप्त होगा। जैसे तुम कह सकती हो कि 'जो चूज़े का मांस (चिकेन) तुम खा रही हो (चिकेन की हड्डी से दम निकल जाने पर एक लेख लिख डालो) वह 'ओसी तेंद्र कुः ज़ाईर' (ज़ाईर की भांति कोमल) नहीं है। अब लिखो।

Van muerte tan escondida
Que no te sienta venir
Porque el plazer del morir
No me torne a dar la vida

यह स्पेनी है—माइगुएल दे सेरवान्तीज की कविता। अर्थ है—"ओ मृत्यु! जल्द आ! किन्तु इतना ज़रूर कर लेना कि तुम्हें आते हुए मैं न देखूं, नहीं तो तुम्हारे दर्शन से मुझे जो आनन्द होगा वह दुर्भाग्यवश पुनः मुझे जीवन में ला देगा।" जब तुम चिकन की हड्डी से अन्तिम वेदना की स्थिति भोग रही हो तो वहां इसका अच्छा उपयोग कर सकती हो। लिखो!

'I'l pover 'huomo che non s'en era accorto,
Andava Combattendo, e era morto,

यह इतालवी है—एरिओस्तो की पंक्तियां। इसका तात्पर्य यह है कि

'एक महावीर युद्ध के जोश में, यह भूल जाता है कि वह मर चुका है, और मृत होते हुए भी शूरतापूर्वक लड़ता जा रहा है।' खुद तुम्हारे मामले में यह अच्छी तरह लागू होता है, क्योंकि मिस साइक, मुझे विश्वास है कि चिकन की हड्डी से घुटकर मर जाने के बाद भी घण्टे डेढ़ घण्टे तुम हाथ-पांव चला सकती हो। अच्छा, कृपया लिखो !

'Und sterb'ich doch, so sterb'ich denn
Durch sie—durch sie !'

यह है शिलर की जर्मन कविता। 'और यदि मैं मर रहा हूं, तो कम से कम मर रहा हूं तुम्हारे लिए।' यहां स्पष्ट है कि तुम अपने संकट के कारण का उल्लेख कर रही हो, यानी चिकेन का। और अच्छी मोलक्का जाति के मोटे-तगड़े मेवा-मसाला भरे हुए मुर्ग-मुसल्लम का संतरे की जेली के साथ स्वाद लेने के लिए कौन न मरने को तैयार हो जाएगा। इच्छा हो तो आगे लिखो।

''एक छोटी-सी सुन्दर लैटिन उक्ति है—इग्नोरेशियो इलेंची।' जब कहते हैं कि उसने इग्नोरेशियो इलेंची का उदाहरण प्रस्तुत किया है तो इसका मतलब यह होता है कि उसने तुम्हारे वक्तव्य के शब्दों को तो समझ लिया है किन्तु वास्तविक अर्थ या विचार को नहीं समझ पाया है। मतलब, वह आदमी मूर्ख था। कोई ऐसा आदमी जिसे तुमने चिकेन-हड्डी से दम घुटते समय कुछ कहा था किन्तु वह ठीक-ठीक न समझ पाया कि तुम क्या कह रही हो। बस, उसके मुंह पर 'इग्नोरेशियो इलेंची' दे मारो, और तुमने उसे खत्म कर दिया। यदि वह इतने पर भी कुछ जवाब देने की कोशिश करता है तो तुम ल्यूकन को उद्धृत करते हुए कह सकती हो कि उसकी बातें केवल 'एनीमोनाई वरबोरम' (निःसार, मिथ्याडम्बरयुक्त) हैं। एनीमोन (एक) फूल है जिसमें चमक-दमक खूब होती है किन्तु सुगन्ध नहीं होती। और यदि वह फिर भी बकता जाता है तो उस पर 'इनसोमनिया जोविस' ('बृहस्पति की लंतरानी') वाक्यांश का प्रहार कर दो—वाक्यांश जिसका

१. वास्तविक अर्थ होता है अर्थान्तर करना, कुछ का कुछ समझ लेना।

प्रयोग सिलियस इतालिकस ने आडम्बरयुक्त तथा फुलाए हुए विचारों के लिए किया है। यह सच्चा वार होगा और उसका कलेजा बैठ जाएगा। फिर वह धूल में लोटने और मर जाने के सिवा और कुछ नहीं कर सकता। हां, क्या तुम आगे और लिखने की कृपा करोगी ?

"यूनानी (ग्रीक) के लिए हमें दिमोस्थेनीज से भी कोई सुन्दर उक्ति लेनी चाहिए। उदाहरणार्थ 'एनेर ओ फियोगोन काई पालिन मेकसिताई' को ले लो जिसका अनुवाद यों किया जा सकता है :

आज भाग जो खड़ा हुआ, वह फिर लड़ने आएगा।
किन्तु मृत्यु को प्राप्त हुआ जो वह ना लड़ पाएगा।

"ब्लैकउड ढंग के लेख में कोई चीज उतनी सुन्दर नहीं जितनी तुम्हारी यूनानी लगती है। एक-एक अक्षर अपने साथ गाम्भीर्य एवं गूढ़ता का वातावरण ले आता है। मतलब यह है कि यथार्थ सनसनीखेज पत्र के लिए ग्रीक (यूनानी) भाषा से बढ़कर और कुछ नहीं है।"

यही वे हिदायतें थीं जो मि० ब्लैकउड ने उपस्थित विषय पर मुझे दीं। मैंने अनुभव किया कि वे काफी हैं। अन्त में, मैं एक यथार्थ ब्लैकउड टाइप का लेख लिखने के योग्य तो हुई। मैंने तुरन्त उसे लिखने का निश्चय किया। जाते-जाते मि० ब्लैकउड ने प्रस्ताव किया कि जब मैं लेख तैयार कर लूंगी तो वह उसे खरीद लेंगे किन्तु चूंकि वह पचास गिनी प्रति पृष्ठ ही दे रहे थे इसलिए मैंने सोचा कि उसे ऐसे नगण्य पारिश्रमिक पर न लुटाकर अपनी परिषद् को दे देना ही ज्यादा अच्छा होगा। ऐसी टुच्ची भावना की परवा न करते हुए मि० ब्लैकउड ने और सभी बातों में मेरा सम्मान किया और मेरे साथ अत्यधिक सौजन्य दिखाया। उनके विदा-कालीन शब्दों ने मेरे हृदय पर बड़ा गहरा प्रभाव डाला और मुझे आशा है कि मैं सदा उन्हें कृतज्ञतापूर्वक याद रखूंगी।

अश्रुपूरित नयनों से उन्होंने कहा—"मेरी प्यारी, कुमारी जिनोबिया ! क्या मैं तुम्हारे प्रशंसनीय उद्योग की सफलता के लिए और कुछ कर सकता हूं ? मुझे सोचने दो। यह बिलकुल सम्भव है कि सुविधा होने पर भी तुम

अपने को डूबा न पाओ, या चिकेन-हड्डी से अपना दम न घोंट सको, या फांसी पर न लटक सको। अब मुझे खयाल आया कि उधर प्रांगण में कई अच्छे बुल-डाग (शिकारी कुत्ते) हैं—मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि बहुत अच्छे हैं—खूंखार और वैसे अन्य गुणों से युक्त। तुम्हारे पैसों के लायक। वे तुम्हारे घोंघों की झालर आदि सहित तुम्हें चट कर जाएंगे—पांच मिनट से भी कम में (चाहे यह मेरी घड़ी देखती रहो।) और फिर सोचो तो कैसी सनसनी फैल जाएगी। वह ! मैं कहता हूं—टाम ! पीटर ! डिक ! अरे उनको—किन्तु चूंकि मैं सचमुच जल्दी में थी और अब एक क्षण भी रुकने के लिए मेरे पास समय नहीं था, मैं अनिच्छापूर्वक अपनी विदाई में शीघ्रता करने को विवश हुई और तुरन्त विदा हो गई—मानती हूं कि इसमें मैंने उससे ज्यादा शीघ्रता की जितना शुद्ध शिष्टाचार की दृष्टि से ज़रूरी था।

मि० ब्लैकउड से विदा होने पर मेरा मुख्य अभिप्राय यही था कि उनकी सलाह के अनुसार तुरन्त किसी संकट में मैं अपने को डाल लूं और इसी विचार से दिन का अधिकांश मैं एडिनबर्ग के आसपास घूमती रही, दुस्साहसिक प्रयासों की खोज में, ऐसे प्रयासों की जो मेरी भावना की गहराई के अनुरूप और मेरे द्वारा लिखे जानेवाले लेख की प्रकृति के अनुकूल हों। इस परिभ्रमण में मेरे नीग्रो-सेवक पाम्पी तथा अंक-कुक्कुर डियाना ने मेरा साथ दिया। इन्हें मैं फिलाडेलफिया से अपने साथ लाई थी। किन्तु मुझे तीसरे पहर के पहले अपने महान् प्रयत्न में सफलता नहीं प्राप्त हुई। उसके बाद एक ऐसी महत्त्वपूर्ण घटना हुई जिसका परिणाम पंचमेल शैली में लिखा ब्लैकउड स्कूल का निम्नलिखित लेख है।

काल को हंसिया

वह एक निस्तब्ध और शान्त दोपहरी थी, जब मैं एडिना की सुन्दर नगरी में चहलकदमी करने को निकल पड़ी। सड़कों पर भयानक अस्तव्यस्तता और कोलाहल था। पुरुष बात कर रहे थे। औरतें चीख रही थीं। बच्चों का दम घुट रहा था। शूकर के छौने सिसकारी दे रहे थे। छकड़े घड़घड़ा रहे थे। बैल हुंकारते थे। गाएं रंभा रही थीं। घोड़े हिनहिनाते थे। बिल्लियां म्याऊं कर रही थीं। कुत्ते नाच रहे थे। *नाच रहे थे!* क्या वह सम्भव था! *नाच रहे थे!* हाय! मैंने सोचा, मेरे नाचने के दिन बीत गए। सदा से ऐसा ही होता है। कैसी दुःखद स्मृतियां ऐसे प्रतिभावान और कल्पनाशील मानस में सदा पैदा होती रहेंगी—विशेषतः ऐसी प्रतिभा में जो अनन्त, शाश्वत, और अविराम, और जिसे कोई कह सकता है, *जारी रहनेवाली*, हां, जारी रहनेवाली और सनातन, तीक्ष्ण, संतापकारी, विघ्नकारी शक्ति के वश में हो और यदि मुझे कहने दिया जाए तो कहूंगा, कि जगत् की अत्यन्त स्पृहणीय, सचमुच सपृहणीय, बल्कि अत्यन्त सुन्दर तथा अत्यन्त-स्वादिष्ट एवं सुकुमार शक्ति के भव्य एवं देवोपम, एवं स्वर्गोपम एवं गौरवकारी तथा उच्च एवं अत्यन्त विघटनकारी प्रभाव से आक्रान्त हो। किन्तु मैं अपनी भावनाओं में बही जा रही हूं। तो मैं दोहराती हूं कि ऐसे मन में, जरा-सी बात देखकर कितने स्मृतिपुंज उठ खड़े होते हैं। कुत्ते नाचते थे। *मैं, मैं नहीं नाच सकती!* वे किलोल करते थे। मैं रो पड़ी। वे उछलते थे। मैं जोर से सिसक उठी। कैसी हृदयद्रावक थीं ये परिस्थितियां।—परिस्थितियां, जो पाठक के मन में उस सुन्दर लेखांश की स्मृति जागरित कर देती हैं जिसे प्रसंशनीय एवं सम्मानित चीनी उपन्यास 'जो-गो-स्लो'

के तृतीय भाग के आरम्भ में देखा जा सकता है।

नगर के बीच मेरे एकान्त भ्रमण में मेरे साथ थे दो तुच्छ किन्तु निष्ठावान संगी। मेरी बिल्ली! प्राणियों में मृदुतम! उसकी एक आंख पर बालों का गुच्छा था, कण्ठ में सुन्दर ढंग से एक नीली पट्टी बंधी थी। डायना (बिल्ली) ऊंचाई में पांच इंच से अधिक नहीं थी, किन्तु उसका सिर उसके शरीर की अपेक्षा कुछ बड़ा ही था, और उसकी दुम, शरीर के निकट से कटी होने के कारण व्यथापूर्ण निर्दोषता का परिचय देती थी। इसीलिए वह सबकी प्रिय हो गई थी।

और पाम्पी, मेरा नीग्रो सेवक—भले पाम्पी! मैं तुझे कैसे भूल सकूंगी! मैं पाम्पी के कन्धे का सहारा लेकर चल रही थी। ऊंचाई में वह तीन फुट था (मैं ठीक-ठीक लिखना चाहती हूं) और उम्र में सत्तर, या शायद अस्सी का रहा होगा। वह धनुष्पदी और स्थूलकाय था। उसके मुंह को छोटा नहीं कहा जा सकता; न उसके कान ही छोटे थे। उसके दांत तो मोती जैसे थे और उसकी बड़ी-बड़ी आंखें रसीली और शुभ्र थीं। प्रकृति ने उसे कण्ठ दिया ही नहीं था; उसके टखने तो उसके पांव के ऊर्ध्वभाग में स्थित थे। वह अत्यन्त सादी पोशाक में था। उसकी कुल पोशाक थी, ६ इंच ऊंचा जांघिया, और लगभग नया बादामी ओवरकोट जो पहिले लम्बे, शानदार और भव्य डा० मनीपेनी की सेवा में आ चुका था। अच्छा ओवरकोट था वह, अच्छी तरह कटा और बना हुआ। धूल में लिथड़ने से बचाने के लिए पाम्पी उसे दोनों हाथों से उठाए हुए चल रहा था।

हमारे दल में तीन प्राणी थे, जिनमें से दो का वर्णन किया जा चुका। एक तीसरा प्राणी था और वह तीसरा प्राणी मैं ही थी। मैं हूं सिनोरा साइक जिनोबिया। मैं सूकी स्नाब्स नहीं हूं। मेरा रूप-रंग शानदार है। जिस स्मरणीय अवसर की मैं बात कर रही हूं उस अवसर पर मैं अरुण साटिन की पोशाक तथा नीलाकाश के रंग का गाउन पहिने हुए थी और मेरी पोशाक में हरित मोतियों एवं नारंगी रंगवाले लघु घोंघों की सप्त झालरें लगी थीं। इस रूप में मैं दल का तृतीय प्राणी थी। वहां मेरी म्याऊं थी;

वहां मेरा पाम्पी था। वहां मैं स्वयं थी। हम *तीन* थे। इसी प्रकार कहा जाता है कि मूलतः तीन ही देवियां थीं—मेल्टी, निम्मी एवं हेत्ती—उपासना, स्मृति, एवं संगीत।

साहसी पाम्पी के कंधे का सहारा लिए हुए मैं एडिना की एक जनाकीर्ण एवं सुखद सड़क से जा रही थी। मुझसे कुछ दूरी पर डायना चली आ रही थी। एकाएक मेरी निगाह एक चर्च, एक गाथिक गिर्जाघर पर पड़ी। वह विशाल, सम्मानाई और एक ऊंची मीनार से, जो आकाश में सिर ऊंचा किए खड़ी थी, युक्त था। मुझपर न जाने कैसा पागलपन छा गया। क्या उन्माद था वह? मैं खुद अपने दुर्भाग्य की ओर क्यों दौड़ पड़ी? उस चकरा देनेवाले शिखर पर चढ़कर नगर के विस्तार का निरीक्षण करने की अदम्य कामना मेरे ऊपर सवार हो गई। गिर्जे का खुला द्वार मानों मुझे बुला रहा था। मेरी नियति की चल गई। मैंने गुम्बदाकार मार्ग में प्रवेश किया। उस समय मेरा रक्षक देवदूत कहां था? यदि ऐसे देवदूत होते हैं। *यदि*! कैसा विपद्‌जनक लघु शब्द। तेरे दो अक्षरों के अन्दर भेद एवं अर्थ, एवं संशय, एवं अनिश्चय की कैसी एक दुनिया छिपी है। मैं उस अशुभ गुम्बद-मार्ग में प्रविष्ट हुई, और अपनी नारंगी रंग की पोशाक को जरा भी क्षति पहुंचाए बिना मुख्य द्वार पारकर गलियारे में पहुंच गई। तभी तो कहा गया है कि अलफियस नदी बिना किसी क्षति और अशुद्धता के समुद्र के नीचे से जाकर फिर निकल आई।

मेरे मन में आया कि इन सीढ़ियों का कभी अन्त न होगा। *गोल*! हां, गोल-गोल उपर जाती सीढ़ियां। गोल और ऊपर जाती। फिर गोल और ऊपर जाती। मैं प्रारम्भिक प्रीति के सम्पूर्ण विश्वास के साथ बुद्धिमान पाम्पी के कंधे का सहारा लिए बढ़ती जाती थी किन्तु सीढ़ियों का खात्मा न होते देख अन्त में मेरे मन में यह कल्पना उठने लगी कि शायद किसी घटना के कारण या जान बूझकर इन चक्करदार सीढ़ियों का अन्तिम ऊपरी छोर हटा दिया गया है। मैं दम लेने के लिए रुक गई। इसी बीच नैतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण से एक महत्त्वपूर्ण घटना घट गई। मुझे

ऐसा लगा—नहीं, मुझे पूरा विश्वास हो गया था क्योंकि मैं कुछ देर तक सावधानी और उत्कण्ठा के साथ डायना की गतिविधि देख रही थी और मैं कहती हूं कि *मैं गलती पर नहीं हो सकती*—कि डायना को *किसी चूहे की* गंध लगी है। मैंने इस विषय पर पाम्पी का ध्यान आकर्षित किया और वह भी मुझसे सहमत था। तब तो सन्देह की गुंजाइश ही नहीं रह गई। निश्चय ही चूहे की गंध लगी है—डायना को। हे ईश्वर! क्या मैं कभी उस क्षण की गहरी उत्तेजना को भूल पाऊंगी! हाय! मनुष्य की शेखी—भरी बुद्धि क्या है? चूहा!…वह वहां था, कहने का मतलब यह कि वहीं कहीं था। डायना ने चूहे को सूंघ लिया था। मैं नहीं सूंघ *सकी*। तभी तो कहा गया है कि ईरानी श्वेतदूर्वा में कुछ लोगों को तो तीव्र सुगन्ध मिलती है, जब दूसरों के लिए वह पूर्णतः निर्गन्ध होती है।

सीढ़ियां पराजित हो गईं; अब ऊपर की तरफ हमारे एवं शिखर के बीच केवल तीन या चार सीढ़ियां और रह गई थीं। हम चढ़ते ही गये, और अब सिर्फ एक सीढ़ी रह गई। एक सीढ़ी! एक लघु, लघु सीढ़ी! मानव-जीवन के आरोहण-मार्ग में एक लघु सीढ़ी पर न जाने कितना मानवीय सुख-दुःख निर्भर करता है। तब मैंने अपने बारे में सोचा; फिर पाम्पी की बात सोची; और फिर उस रहस्यपूर्ण तथा अनिर्वचनीय नियति के बारे में सोचने लगी जिसने हमें घेर रखा था। मैंने पाम्पी के बारे में सोचा। हाय, मैंने प्रेम के बारे में सोचा। मैंने उन अनेक गलत *पगों* के बारे में सोचा और जो धरे जा चुके हैं और आगे धरे जाएंगे। मैंने निश्चय किया कि अब और सावधान, और गम्भीर रहूंगी। मैंने पाम्पी का कंधा छोड़ दिया, और उसकी सहायता के बिना ही रही-सही वह एक सीढ़ी भी पार कर गई। अब मैंने घण्टाघर में प्रवेश पा लिया था। मेरी म्याऊं ने भी मेरा अनुसरण किया। अब सिर्फ पाम्पी पीछे रह गया था। मैं सीढ़ी के ऊपर खड़ी उसे ऊपर चढ़ जाने को उत्साहित कर रही थी। उसने अपना हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया, और दुर्भाग्यवश ऐसा करते हुए ओवरकोट पर से उसका नियन्त्रण जाता रहा। क्या देवगण अपनी दण्ड-शृंखला कभी समाप्त

नहीं करते ?' ओवरकोट गिर गया और पाम्पी का एक पांव ओवरकोट की झूलती हुई झालरों में फंस गया। वह लड़खड़ाया और गिर पड़ा—यह परिणाम अवश्यंभावी था। वह आगे की ओर गिरा और गिरते हुए मेरी छाती में उसका ऐसा धक्का लगा कि मैं भी उसके साथ ही घण्टाघर की कठोर, गन्दी तथा घृणाजनक फर्श पर सिर के बल गिरी। किन्तु मेरी प्रतिहिंसा भी निश्चित, आकस्मिक और पूर्ण थी। मैंने गुस्से में दोनों हाथों से उसे पकड़कर उसके काले घुंघराले केशपुंज को उखाड़ लिया और धक्का देकर उसे दूर फेंक दिया। बाल जाकर घण्टे की रस्सियों के बीच गिरे। पाम्पी उठ खड़ा हुआ, एक शब्द भी नहीं बोला, किन्तु अपनी बड़ी-बड़ी आंखों से करुणापूर्वक मुझे देखता रहा। उसने एक आह की ! हे ईश्वर—वह दृश्य ! वह मेरे कलेजे में उतर गया। और वे बाल ! यदि मैं उन्हें पा जाती तो अपने दुःख के प्रमाणस्वरूप आंसुओं से भिगो देती। किन्तु अब तो वे मेरी पहुंच से दूर थे। उनको रस्सियों के ढेर में चमकते हुए मैं देख रही थी; मुझे प्रतीत हुआ वे अब भी जीवित हैं। मुझे लगा, जैसे वे अपने सिरों पर असन्तोष के साथ खड़े हो गए हैं। इस प्रकार जो बात जावा के एपीडेण्ड्रम फ्लोज ऐरिस पौधे के बारे में कही गयी थी वह यहां सत्य सिद्ध हो गयी—यह बात कि उसमें सुन्दर फूल लगता है तथा उसे जड़ से उखाड़ कर लोग छत से टांग देते हैं और वर्षों तक उसकी सुगन्ध का उपभोग करते रहते हैं।

खैर, हमारा झगड़ा खत्म हो गया और हम कमरे में ऐसे सूराख की खोज करने लगे जिससे एडिना नगरी का सर्वेक्षण किया जा सके। उसमें एक भी खिड़की न थी। उस उदासी-भरे कमरे में प्रकाश आने का एक मात्र साधन था, एक चौकोर छिद्र। इसका व्यास एक फुट का रहा होगा। और यह फर्श से लगभग सात फुट ऊपर था किन्तु सच्ची प्रतिभा की ऊर्जा क्या नहीं कर सकती ? मैंने उस छिद्र तक ऊपर चढ़ जाने का निश्चय कर लिया। छेद के पास जमीन पर बहुत-सा अंगड़-खंगड़—पहिये, दांतेदार टेकुए आदि—रखा था और मशीनरी का एक लोह-दण्ड उस छेद के अंदर

चला गया था। छेद के नीचे पहियों एवं दीवार के बीच इतना ही स्थान था कि मैं मुश्किल से खड़ी हो सकती थी—किन्तु मैं निराशा से उन्मत्त हो रही थी, इसलिए जिस तरह भी हो वहां तक पहुंचने का निश्चय कर लिया। मैंने पाम्पी को अपने पास बुलाया।

"पाम्पी, तुम वह छेद देख रहे हो न। मैं उसी के अन्दर से झांकना चाहती हूं। तुम उसके नीचे यहां खड़े हो जाओ। हां, इसी तरह। अब अपना एक हाथ फैलाओ, और मुझे उसपर चढ़ने दो—हां, इस तरह। अब दूसरा हाथ, पाम्पी, और उसके सहारे मैं तुम्हारे कन्धे पर खड़ी हो जाऊंगी।"

जो कुछ मैंने कहा, वह सब करता गया। उसके कंधे पर चढ़कर मैंने देखा कि मैं आसानी से अपना सिर और कण्ठ उस छेद से बाहर निकाल सकती हूं। सम्भावना बड़ी सुन्दर लगी। इससे अच्छा और क्या हो सकता था। मैंने क्षण-भर रुककर डायना को ठीक तरह बैठने को कहा और पाम्पी को भी विश्वास दिलाया कि मैं उसका ख्याल रखूंगी और उसके कन्धे पर जितना भी कम भार दे सकूंगी, दूंगी। मैंने उससे कहा कि उसकी भावनाओं के प्रति मृदु व्यवहार करूंगी—"ओसीतेंद्र कुः जाईर"—जाईर की भांति कोमल। अपने निष्ठवान मित्र के प्रति ऐसा न्याय करने के बाद मैंने अत्यन्त उत्साहपूर्वक उस दृश्य का उपभोग करना शुरू किया जो मेरी आंखों के आगे अनुग्रहपूर्वक फैला हुआ था।

किन्तु इसके बारे में मैं ज्यादा विस्तार न करूंगी। मैं एडिनबर्ग नगर का वर्णन न करूंगी। हर आदमी एडिनबर्ग हो आया है—पुरातन एडिना को देख चुका है। मैं अपने ही दुःखद दुस्साहस के महत्त्वपूर्ण ब्यौरों तक सीमित रहूंगी। नगर के विस्तार, स्थिति और सामान्य दर्शन के सम्बन्ध में अपनी उत्कण्ठा तृप्त कर लेने के बाद अब भी मेरे पास इतना अवकाश था कि जिस चर्च में उस समय थी उसका और उसके मीनार के सूक्ष्म स्थापत्य कला का सर्वेक्षण करती। मैंने देखा कि जिस छेद में मैंने अपना सिर डाल रखा है वह वस्तुतः विशाल घड़ी के 'डायलप्लेट' (मुंह) का

छेद है, जो सड़क से चाबी देने वाले छेद की भांति दिखता होगा। निस्सन्देह इसका वास्तविक उद्देश्य तो यह रहा होगा कि आवश्यकता पड़ने पर सेवक अन्दर ही से हाथ डालकर सुइयों को ठीक स्थिति में कर सके। मैंने आश्चर्य-पूर्वक देखा कि घड़ी की वे सुइयां भी बड़े विशाल आकार की हैं; सबसे बड़ी तो लम्बाई में दस फुट से कम न होगी; सबसे ज्यादा चौड़ाई भी ८-९ इंच होगी। वे ठोस फौलाद की बनी प्रतीत हुई, उनकी नोक भी बड़ी तीखी थी। इन तथा दूसरे कुछ ब्यौरों को देखने के बाद मैंने फिर नीचे के शान-दार दृश्य की ओर आंखें घुमा दीं और विचार-मग्न हो गई।

कुछ देर बाद पाम्पी की आवाज से मेरा ध्यान भंग हो गया। उसने कहा कि अब उससे बोझ सहन नहीं हो रहा है और मुझसे अनुरोध किया कि कृपापूर्वक मैं नीचे आ जाऊं। यह बेजा बात थी और मैंने लम्बी वक्तृता देकर उसे यह बात समझा दी। किन्तु उसने मेरी बात न समझकर, कुछ गलतफहमी से जवाब दिया। इससे मैं नाराज हो गई और उससे साफ शब्दों में कह दिया कि "वह मूर्ख है और 'इग्नोरमस ई-क्लॅच-आई' यानी 'अज्ञान भेंगा' है। उसके विचार मूर्ख की लंतरानी मात्र हैं, और उसके शब्द निःसार हैं।" इतने से वह सन्तुष्ट प्रतीत हुआ और मैं पुनः ध्यान में डूब गई।

इस तकरार के आधे घण्टे बाद की बात होगी; मैं नीचे के स्वर्गीय दृश्यों में खो गई थी कि कोई बहुत ठण्डी चीज मेरे कण्ठ को पीछे से दबाती-सी मालूम हुई। कहने की जरूरत नहीं कि मैं अकथनीय रूप से घबड़ा गई। मैं जानती थी कि पाम्पी मेरे पैरों के नीचे है और डायना मेरे आदेशों के अनुसार, कमरे के सुदूर कोने में अपने पिछले पैरों के सहारे बैठी है। तब यह क्या चीज हो सकती है? उफ! बहुत जल्द मैंने पता लगा लिया। अपना सिर धीरे-धीरे एक ओर घुमाकर मैंने अत्यन्त भयपूर्वक देखा कि घड़ी की विशाल, चमकती हुई, वक्रखंग-सी मिनट की सुई, अपनी प्रति घण्टे की चक्रगति में मेरे गले पर आ गई है। मैं समझ गई कि एक क्षण भी नष्ट करने को मेरे पास नहीं है। मैंने तुरन्त अपना सिर हटाने की कोशिश की, किन्तु इस समय तक बहुत ज्यादा देर हो चुकी थी। अब उस भयानक फंदे

से, जिसमें वह पूरी तरह फंस चुका था, अपना सिर निकाल लेने का कोई उपाय न था। अकल्पनीय भयानकता के साथ वह फंदा क्षण-क्षण संकरा-छोटा होता जा रहा था। उस समय मेरी जान कैसी सांसत में थी, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। मैंने अपने हाथों से पूरा ज़ोर लगाकर उस भारी लौहदण्ड को ऊपर उठाने की कोशिश की परन्तु मुझे अनुभव हुआ कि उसे ऊपर उठाना खुद गिर्जाघर को ही ऊपर उठाने के समान (असंभव) है। सुई नीचे, नीचे और नीचे, निकट, और निकट आती जा रही थी। मैंने चीखकर पाम्पी को सहायता के लिए पुकारा, किन्तु उसने कहा कि 'अज्ञान भेंगा' कहकर उसकी भावनाओं को चोट पहुंचाई गई है। मैंने डायना को पुकारा किन्तु वह भों-भों करके रह गई, मानों कह रही हो कि मैंने ही तो उसे कोने से न हटने का आदेश दे रखा है। इस तरह मुझे अपने दोनों साथियों से सहायता पाने की कोई आशा न रही।

इस बीच वह भारी एवं भयावनी '*काल की हंसिया*' (अब मुझे उस प्राचीन पद का शाब्दिक अर्थ मालूम हो गया था) रुकी नहीं थी, न उसकी चाल रुकने की कोई सम्भावना ही थी। वह नीचे, और नीचे चली आ रही थी। अब तक वह अपनी तेज नोक मेरे मांस में पूरी एक इंच घुसा चुकी थी। मेरे दिमाग की हालत ठीक न थी। कभी मैं अपने फिलाडेल्फिया में भव्य डा० मनीपेनी के साथ होने की कल्पना करती, कभी सोचती कि मि० ब्लैकउड के पीछे के कक्ष में बैठी उनकी बहुमूल्य हिदायतें प्राप्त कर रही हूं। इसके बाद एक बार फिर अच्छे और प्रारम्भिक दिनों की मधुर स्मृतियां मेरे मन में उभरने लगीं, और मैं उस सुखी ज़माने की बात सोचने लगी जब दुनिया इस प्रकार मरुभूमि नहीं थी और पाम्पी ऐसा निर्दयी नहीं था।

मशीनरी (घड़ी) की टिक-टिक से मैं मुदित हुई। हां, मैं कहती हूं, मैं मुदित हुई, क्योंकि अब मेरे मनोद्वेग पूर्ण आनन्द की सीमा को छू रहे थे और संकटपूर्ण परिस्थितियां मुझे आह्लादित कर रही थीं। घड़ी की शाश्वत टिक-टैक, टिक-टैक, टिक-टैक में मेरे कान अत्यन्त मधुर संगीत

का स्वाद ले रहे थे, बल्कि कभी-कभी उनमें डा० मार्फाइन (र्मफिया-अफीम का सत) के कृतज्ञतापूर्ण, उपदेशात्मक भाषणों का आनन्द भी आ जाता था। फिर घड़ी के डायल-प्लेट (चक्रतल) पर बड़ी-बड़ी संख्याएं भी मौजूद थीं। इस समय वे कैसी विचक्षण, कैसी बुद्धिमत्तापूर्ण मालूम पड़ रही थीं। अरे, वे तो नृत्य कर रही हैं, मेरी समझ से वी (पांच का निशान) का नृत्य सबसे ज्यादा सन्तोषजनक था। निश्चय ही वह कोई कुलीन महिला होगी। मैंने देखा कि वह थक गई है इसलिए उसे कुर्सी देने की चेष्टा की। किन्तु अब फिर मैं अपनी शोचनीय परिस्थिति के प्रति सजग हो उठी। निश्चित रूप से शोचनीय ! सुई अब तक मेरे गले में दो इंच नीचे तक घुस गई थी। मुझे गहरी वेदना हो रही थी। मैंने मृत्यु के लिए प्रार्थना की, और उस क्षण की वेदना के बीच भी स्पेनी कवि माइगुएल दे सेरवान्तीज के सुन्दर छन्द याद आ गए—

Van muerte tan escondida
Que no te sienta vemir
Porque el plazer del morir
No me torne a dar la Vida

("ओ मृत्यु ! जल्द आ। किन्तु इतना जरूरकर लेना कि तुम्हें आते हुए मैं न देखूं, नहीं तो तुम्हारे दर्शन से मुझे जो आनन्द होगा वह दुर्भाग्य-वश पुनः मुझे जीवन में ला देगा।")

किन्तु अब एक नया आतंक सामने आ गया, ऐसा जो साहसी से साहसी की स्नायुओं को भी उत्तेजित कर देने के लिए पर्याप्त था। मशीन के निष्ठुर दबाव के कारण, मेरी आंखें कोटर के बाहर निकली आ रही थीं। मैं सोच ही रही थी कि उनके बिना मेरा काम कैसे चलेगा कि एक सचमुच, मेरे सिर से निकलकर शिखर के ढालुई बाजू से होती हुई वर्षा के लिए बनी नाली में जा गिरी। आंख का नुकसान मुझे उतना नहीं खला जितना स्वतन्त्रता एवं घृणा की वह धृष्ट चितवन खली जिसके साथ मेरे सिर से निकलने के बाद वह मुझे देख रही थी। वहां वह नाली में ठीक मेरी

नाक के नीचे पड़ी इस तरह से चमकती और मिचमिचाती थी, जो मैंने पहले कभी देखी न थी। नाली में पड़ी मेरी आंख का यह आचरण, अपनी स्पष्ट धृष्टता एवं लज्जाजनक कृतघ्नता के कारण न केवल खीझ पैदा करनेवाला था वरं एक सिर की दो आंखों में, अलग होते हुए भी, एक-दूसरे के लिए जो सहानुभूति एवं समवेदना होती है, उसके कारण भी बड़ा ही असुविधाजनक था। मुझे भी विवश होकर उसी तरह आंख नचाना एवं मिचमिचाना पड़ता था। किन्तु बाद में उस दूसरी आंख के भी निकल कर गिर पड़ने के कारण, मेरा वह संकट दूर हो गया। गिर कर इस दूसरी आंख ने भी वही रास्ता अपनाया जो पहली ने अपनाया था। (सम्भवतः दोनों ने पहले से ही षड्यंत्र कर रखा था)। फिर दोनों साथ-साथ नाली से उठकर चल दीं। मुझे उनसे मुक्ति पाकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

अब तक सुई मेरे गले में साढ़े तीन इंच गहरी घुस चुकी थी, और अब थोड़ी ही चमड़ी कटने को बची थी। मेरी मनोदशा पूर्ण प्रसन्नता की थी, क्योंकि मैं अनुभव कर रही थी कि चंद ही मिनटों में मैं इस अप्रिय परिस्थिति से छूट जाऊंगी। और इस आशा में मुझे धोखा नहीं हुआ। तीसरे पहर ठीक पांच बजकर पच्चीस मिनट हुए थे कि मिनट की वह विशाल सुई मेरे गले का बचा-खुचा भाग काट देने को अपनी भयानक चक्रगति में काफी दूर तक बढ़ आई। जिस सिर ने मुझे इतनी आफत में डाला था, उसे अपने शरीर से सदा के लिए अलग होते देख मैं दुःखी नहीं थी। वह कटकर पहले शिखर की ओर गिरा, फिर लुढ़कता हुआ गटर—नाली—में पहुंचा, फिर कूदकर सड़क के बीच पहुंच गया।

मैं बिल्कुल स्वीकार करती हूं कि इस समय मेरी भावनाएं विलक्षण प्रकार की, बल्कि बड़ी रहस्यमयी, अत्यन्त भ्रामक और अचिन्त्य हो रही थीं। एक ही समय मेरी चेतना यहां और वहां, दो प्रतिकूल स्थितियों में, थी। अपने सिर के साथ कभी मैं कल्पना करती कि मैं, सिर, ही असली सिग्नोरी साइक जिनोबिया हूं, दूसरे क्षण मुझे पूरा विश्वास हो जाता कि मैं, यानी (सिर-रहित) शरीर ही वास्तविक व्यक्ति हूं। इस विषय पर

अपनी धारणाओं को स्पष्ट करने के लिए मैंने अपनी जेब से सुंघनी की डिबिया निकाली किन्तु जब उसकी कृतज्ञ सामग्री की एक चुटकी साधारण तरीके पर (नाक में) लगाने के लिए हाथ उठाया तो तुरन्त मुझे अपने विचित्र अभाव का पता चल गया (कि नाक तो है ही नहीं)। मैंने नीचे पड़े सिर पर वह डिबिया दे मारी। उसने बड़े सन्तोष के साथ उससे एक चुटकी सुंघनी निकाली और प्राप्ति स्वीकार के रूप में मेरी ओर मुस्कराकर देखा। इसके बाद उसने मुझे एक स्पीच झाड़ दी—जिसे कानरहित होने के कारण मैं अस्पष्ट रूप में ही सुन सकी। फिर भी जो कुछ सुन पड़ा, उससे मैं इतना समझ सकी कि इस परिस्थिति में भी जीने की मेरी कामना पर उसे आश्चर्य हो रहा है। अपनी वक्तृता के अन्तिम वाक्यों में उसने एरिओस्तो के उस नायक से मेरी तुलना की, जो युद्ध के जोश में यह भूल गया कि वह मर चुका है और मृत होने पर भी लड़ता ही रहा। उसने ठीक उन्हीं पंक्तियों का प्रयोग किया—

> 'I' l pover huomo che non s'en era accorto,
> Andava Combattende, e era morto

(महावीर युद्ध के जोश में भूल जाता है कि वह मर चुका है और मृत होने पर भी शूरतापूर्वक लड़ता जाता है।)

अब ऊपर से नीचे उतरने में बाधा देने वाली कोई चीज तो रह नहीं गई थी, इसलिए मैं नीचे उतर आई। पाम्पी ने मेरी शक्ल-सूरत में कौन-सी विचित्रता पाई, यह मैं अभी तक नहीं जान पाई हूं। बेचारा दोनों कानों तक फैला मुंह बाये खड़ा रहा; उसने अपनी दोनों आंखें भी इतने जोर से बन्द कर लीं मानों पलकों से बादाम फोड़ने की कोशिश कर रहा हो। अन्त में अपना ओवरकोट फेंककर वह सीढ़ी की ओर कूद गया—और मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा। मैं उस बदमाश पर दिमोस्थेनीज़ के उन उत्तेजक शब्दों की वर्षा करती रह गई—

आज भाग तुम खड़े हुए जीवन के मंथर पथ पर।

इसके बाद मैं अपनी प्यारी पुंछकटी, एकाक्षी, झबरी डायना की ओर

मुड़ी। हाय ! कैसा भयावना दृश्य मेरे सामने था ? क्या वह चूहा था जो उसकी खोपड़ी को अपने बिल में खींच रहा था ? क्या ये उस लघु फरिश्ते की हड्डियां थीं जिसे किसी राक्षस ने निर्दयतापूर्वक खा डाला था ? हे भगवान ! मैं क्या देख रही हूं ?—क्या वह मेरी प्यारी कुतिया की आत्मा, छाया या प्रेत है, जिसे मैं कोने में शालीनतापूर्वक शोकमग्न मुख लटकाये बैठी देख रही हूं ? सुनो ! क्योंकि वह बोल रही है, और हे ईश्वर, वह भी शिलर की जर्मन कविता में—

Und sterb'ich doch, so sterb'ich denn
Durch sie—durch sie !

('यदि मैं मर रही हूं तो कम से कम मर रही हूं तुम्हारे लिए—तुम्हारे लिए !')

आह ! क्या उसके शब्द बिलकुल सत्य नहीं हैं ?

मंजुल प्राणी ! उसने भी अपने को मेरे लिए उत्सर्ग कर दिया। अब कुक्कुर-रहित, नीग्रो-रहित, सिर-रहित दुखिया सिग्नोरा साइक जिनोबिया के लिए क्या बचा है ?—हाय, कुछ भी तो नहीं। बस, समाप्त करती हूं।

पागल एन्तिओकस

एन्तिओकस एपीफेनिस को आमतौर से पैगम्बर एज़ेकाइल के गण के रूप में याद किया जाता है, यद्यपि यह सम्मान साइरस के पुत्र कैम्बीसस के अधिक उपयुक्त जान पड़ता है। सच पूछिए तो सीरियाई बादशाह के चरित्र को किसी बाह्य अलंकरण की आवश्यकता ही नहीं है। ईसा के जन्म के एक सौ इकहत्तर वर्ष पहिले सिंहासन पर उसका आरोहण, बल्कि बादशाहत का बलात् अपहरण, एफीसस स्थित डायना के मन्दिर को लूटने का उसका यत्न, यहूदियों के प्रति उसकी निर्दय शत्रुता, उसका परम पवित्र तीर्थ का भ्रष्टीकरण, और ग्यारह वर्ष के तूफानी शासन के बाद तबा में उसका दुःखदायी मरण वे महत्त्वपूर्ण घटनाएं हैं जिनपर समसामयिक इतिहासकारों ने आमतौर से ध्यान दिया है,और उसकी उन अपवित्र कायरतापूर्ण, निर्दय, बेहूदा और सनकों से भरी उपलब्धियों को छोड़ दिया है जो उसके वैयक्तिक जीवन एवं ख्याति का प्रमुख रूप से निर्माण करती हैं।

* *

सहृदय पाठक, आइए, हम कल्पना करें कि यह विश्व का तीन हज़ार आठ सौ तीसवां वर्ष है। कुछ देर के लिए यह भी कल्पना कर लें कि हम मनुष्य के सबसे विलक्षण आवास एन्तिओक नगर में उपस्थित हैं। वैसे तो बात यह है कि सीरिया तथा अन्य देशों में हमारे उस नगर के अलावा, जिसकी ओर विशेषरूप से हम संकेत कर रहे हैं, इस नाम के सोलह और नगर थे। किन्तु इस समय हम उस एन्तिओक नगरी की बात कर रहे हैं जो एन्तिओकिया एपिदाफने के नाम से विख्यात थी। उसका यह नाम उसके दाफने नामक छोटे से गांव के पास होने के कारण पड़ गया। इस दाफने में इसी

नाम की देवी का एक मन्दिर था। इस नगर का निर्माण सिकन्दर महान के बाद उस देश के प्रथम बादशाह सिल्यूकस निकानोर ने अपने पिता एन्तिओकस कीस्मृति में कराया था और तब से यह सीरियाई राजवंश का निवास-स्थान बन गया। जब रोम-साम्राज्य के अच्छे दिन थे तो यह पूर्वी प्रदेशों के शासनाधिकारी का सामान्य आवास-मात्र था; रोम के अनेक सम्राटों ने (जिनमें विशेषरूप से वीरस एवं वेलेंस का उल्लेख किया जा सकता है) अपना अधिकांश समय यहां बिताया था। किन्तु अब हम कल्पना करते हैं कि हम लोग स्वयं इस नगरी में आ पहुंचे हैं। आइए, हम किले की दीवार पर चढ़ चलें और नगर तथा समीपवर्ती स्थानों पर नज़र डालें।

वह चौड़े घाट और तेज़ धारावाली कौन-सी नदी है जो पार्वत्य अंचलों के बीच असंख्य प्रपातों के रूप में और अन्त में इमारतों के इस विजन में अपना रास्ता बनाती हुई बह रही है ?

वह ओरन्तीज़ है; भूमध्यसागर के अतिरिक्त एक मात्र जलाशय। वह दक्षिण की ओर, लगभग बारह मील की दूरी पर, एक चौड़े दर्पण की भांति फैली हुई है। भूमध्यसागर को तो हर एक ने देखा है, किन्तु, मुझे कहने दीजिए, ऐसे लोग बहुत ही कम हैं जिन्होंने एन्तिओक की झांकी ली हो। बहुत ही कम से मेरा अभिप्राय उन थोड़े लोगों से है, जिनको, मेरी और आपकी तरह, आधुनिक शिक्षा का भी लाभ मिला है। इसलिए आइए, सागर से आंखें हटाकर जो गृह-पुंज हमारे नीचे दूर तक फैले हुए हैं, उनपर ध्यान दें। आपको याद होगा कि यह विश्व का तीन हज़ार आठ सौ तीसवां साल है। यदि यह बाद का वर्ष, उदाहरणार्थ अभाग्यवश हमारे प्रभु ईसा का १८३९ वां, वर्ष होता तो हमें यह असाधारण दृश्य देखने को न मिला होता। उन्नीसवीं सदी में एन्तिओक ह्रास की दुःखद स्थिति में है—मतलब होगा। उस समय तक वह तीन विभिन्न युगों में, तीन अनुवर्ती भूकम्पों द्वारा पूर्णतः विनष्ट हो चुका होगा। बल्कि सच्ची बात तो यह है, कि उस समय तक उसके पूर्व अस्तित्व का जो कुछ अंश बचा होगा, वह भी ऐसे निर्जन भग्नावशेषों के रूप में पड़ा होगा कि खलीफा ने वहां से हटकर दमिश्क को अपना

निवासस्थान बना लिया होगा। अच्छा ही है। मैं देख रहा हूं कि आप मेरी सलाह से लाभ उठा रहे हैं, और अपना अधिकांश समय उस स्थान के निरीक्ष में लगा रहे हैं तथा शेक्सपीयर के शब्दों में—

और नयनों की पीपासा
देखकर उन स्मारकों, विख्यात चीज़ों को मिटाने
कर रही श्रृंगार जो है इस नगर का।

पर मुझे क्षमा किजिए, मैं भूल ही गया कि अभी आगामी सत्रह सौ पचास वर्षों तक शेक्सपीयर नहीं पैदा होगा। किन्तु क्या एपीदाफने का दर्शन उसे *विलक्षण* कहने का औचित्य नहीं सिद्ध करता ?

यह भलीभांति दुर्गबद्ध है—और इस रूप में वह प्रकृति के प्रति भी उतना ही ऋणी है, जितना कला के प्रति है।

बिल्कुल ठीक।

शानदार महलों की पर्याप्त संख्या यहां है।

हां, है।

और विशाल तथा भव्य असंख्य मन्दिर हैं जिनकी पुरातत्व के श्रेष्ठ उदाहरणों से तुलना की जा सकती है।

मुझे यह सब स्वीकार करना ही चाहिए। फिर भी यहां असंख्य मिट्टी के झोंपड़े और निन्दनीय छप्पर दिखाई दे रहे हैं। हर नाले में मल का ढेर है और यदि मूर्तिपूजकों की उग्र अगुरू-गन्ध यहां फैल न रही होती तो हमें निश्चय ही असहनीय दुर्गन्ध का सामना करना पड़ता। क्या आपने कभी असहनीय रूप से संकरी ऐसी सड़कें देखी हैं, या आश्चर्यजनक रूप से ऊंचे ऐसे मकान देखे हैं ? उनकी परछाइयां धरती पर कैसा धुंध पैदा कर रही हैं ? यह अच्छा ही है कि उन अन्तहीन छज्जों से लटकते हुए प्रदीप दिन भर जलते रहते हैं, नहीं तो भग्नावस्था के मिस्र का अन्धकार यहां फैला होता।

निश्चय ही यह विचित्र स्थान है। उधर वह जो विलक्षण-सी इमारत दीख रही है, उसका क्या मतलब है ? देखो ! यह और सब इमारतों के

ऊपर तक सिर उठाए खड़ी है; वह शाही महल के पूरब की ओर।

वह सूर्य का नवीन मन्दिर है—सूर्य का जिसे सीरिया में 'इलहगवाल:' नाम से पूजा जाता है। आगे चलकर एक बहुत बदनाम रोमी सम्राट इस पूजा को रोम में चलाएगा और उसके कारण हेलियोगवालस वंशनाम धारण करेगा। मैं समझता हूं, आप मन्दिर के देवमूर्ति की दर्शन करना चाहेंगे। इसके लिए आपको आकाश की ओर देखने की आवश्यकता नहीं है; उसका सूर्यत्व वहां नहीं है—कम से कम सीरियाइयों-द्वारा पूजित सूर्यत्व। वह देवता अगली इमारत के अन्दर है। उसमें एक बड़ा प्रस्तर-स्तम्भ है जो शिखर पर शुंडाकार हो गया है और उस (शिखर) पर अग्नि का निवास है। इसी की पूजा होती है।

सुनो!—देखो! वे हास्यास्पद प्राणी कौन हो सकते हैं—वे अधनंगे हैं—उनके चेहरे रंगे हुए हैं—और वे शोर कर रहे हैं तथा भीड़ की ओर अंग-संचालन द्वारा संकेत कर रहे हैं?

उनमें से कुछ नकली दवाफरोश हैं; दूसरे कुछ तत्वज्ञानियों की जाति के हैं। किन्तु अधिकांश,—विशेषत: वे जो लोगों पर सोंटे बरसा रहे हैं—महल के प्रमुख दरबारी हैं और बादशाह के लिए प्रशंसनीय कौतुक का प्रदर्शन कर रहे हैं।

किन्तु हम यहां क्या देख रहे हैं? हे ईश्वर। शहर खूंखार पशुओं से भर गया है। कैसा भयानक दृश्य है! कैसी खतरनाक विलक्षणता है!

हां, भयानक, आप चाहें तो कह सकते हैं किन्तु खतरनाक जरा भी नहीं। यदि आप ध्यान से देखने का कष्ट उठावें तो प्रत्येक पशु, बड़ी शान्ति के साथ, अपने मालिक का पदानुसरण कर रहा है। थोड़े से ऐसे हैं जिनके गले में रस्सी बंधी हुई है और उसी से वे खींचकर लाए जा रहे हैं, किन्तु ये न्यूनाधिक बोदी प्रजातियों के पशु हैं। शेर, बाघ, चीता बिल्कुल निर्बन्ध हैं। बिना कठिनाई के वे अपने वर्तमान पेशे के लिए प्रशिक्षित कर लिए गए हैं, और अपने मालिकों के लिए घरेलू खितमतगार की भांति काम करते हैं। यह सच है कि ऐसे भी अवसर आ जाते हैं जब रुद्ध प्रकृति अपनी शक्ति

का प्रदर्शन कर उठती है, किन्तु किसी पहरेदार का खा लिया जाना या किसी उत्सर्गित सांड़ का गला मरोड़ दिया जाना ऐसी महत्त्वरहित बातें हैं जिनपर एपीदाफने में ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता।

किन्तु यह असाधारण कोलाहल कैसा है ? निश्चय ही, एन्तिओक के लिए भी इसे प्रबल शोर कहा जा सकता है। यह किसी असामान्य आकर्षण का कोलाहल है।

निश्चय ही ऐसा है। बादशाह ने कुछ अजूबा दृश्य दिखाने का आदेश किया है— हिप्पोड्रोम में कोई असिक्रीड़ा-प्रदर्शन हो—या शायद सीथियाई कैदियों का कत्लेआम हो—या अपने नवीन महल में आग लगा देने की बात हो—या किसी सुन्दर मन्दिर को तोड़कर गिरा देना हो,—या फिर कुछ यहूदियों को जीते जला देने का दृश्य हो; कुछ ऐसी ही बात होगी। कोलाहल बढ़ता जा रहा है। लोगों का अट्टहास आकाश छू रहा है। वायु-प्रधान वाद्यों के कारण वातावरण बेसुरा और लाखों लोगों की कण्ठध्वनि से भयानक हो रहा है। आइए, तमाशे के लिए उतरकर नीचे चलें, और देखें कि क्या हो रहा है। इधर से आइए, जरा सावधानी के साथ। अब हम मुख्य मार्ग पर हैं जिसे तिमार्कस मार्ग कहा जाता है। जन-समुद्र इधर ही उमड़ा आ रहा है और हमें उनकी बाढ़ से बचना मुश्किल होगा। वे हेराक्लिट्स की गली से चले आ रहे हैं, जो राजमहल से सीधे आती है। इसलिए बहुत सम्भवतः बादशाह भी इस भेड़ियाधसान में होगा। हां, देखो पूर्व की अलंकृत शैली में प्रतिहारियों द्वारा उसके आगमन की घोषणा मुझे सुनाई पड़ रही है। जब वह अशीमा के मन्दिर के निकट से गुजरेगा तो हमें उसके शरीर की झांकी मिल जाएगी। आइए, हम मन्दिर के गलियारे में चलकर खड़े हो जाएं। वह इधर से जरूर गुजरेगा। तब तक हम इस प्रतिमा के दर्शन कर लें। क्या है यह ? ओह, यह सशरीर देवता अशीमा है। परन्तु आप देख रहे हैं कि वह न तो भेड़ है, न बकरी है, न कोई वन-मानुष है—न आर्केडियनों के ग्रामदेवता से ही इसकी शक्ल ज्यादा मिलती है। फिर भी ये सब शक्लें उसे दी गई हैं—या क्षमा कीजिए, सीरियाइयों

के असीमा को भविष्य के विद्वानों-पुरातत्वज्ञों द्वारा प्रदान की जाएंगी। जरा चश्मा लगा लीजिए, और मुझे बताइए कि यह क्या है। क्या है यह ?

या खुदा, यह तो पुच्छहीन वानर है !

सच कहते हैं—बबून (बड़ा अफ्रीकी बन्दर) है, किन्तु इस कारण उसका देवत्व कम नहीं हो जाता। इसके नाम की व्युत्पत्ति यूनानी सीमिया से हुई है—कितने बड़े मूर्ख होते हैं पुरातत्वविद्। किन्तु देखिए !—देखिए ! वहां चिथड़ों में लिपटा छोटा बालक क्यों भागा जा रहा है ? कहां जा रहा है वह ? क्या चिल्ला रहा है वह ? क्या कह रहा है ? ओह, वह कह रहा है कि विजयमुद्रा में बादशाह आ रहा है; वह शाही पोशाक में है; और अभी-अभी उसने अपने हाथ से हजार शृंखलाबद्ध यहूदी कैदियों को मौत के घाट उतार दिया है और इसी के लिए वह चिरकुटधारी उसको आसमान में उठाए दे रहा है। सुनो ! इसी प्रकार का एक सैन्यदल चला आ रहा है। उन्होंने बादशाह की वीरता में एक लातीनी गान की रचना की है और उसे गाते हुए चले आ रहे हैं—

Mille, mille, mille,
Mille, mille, mille,
Decollavimus, Unus homo !
Mille, mille, mille, O, mille, decollavimus !
Mille, mille, mille !
Vivat qui mille mille Occidit !
Tantum Vini habet nemo
Ouantum sanguinis effudit ![1]

जिसका अनुवाद यों किया जा सकता है—

हजार, हजार, हजार,

१. फ्लेवियस वोपिस्कस कहता है कि यहां जो गान दिया गया है, वह पहली बार सरमेटिक युद्ध में, अरेलियन की सफलता पर उस समय जनसमूह-द्वारा गाया गया था जब उसने अपने हाथों से शत्रु के ९५० सैनिक मौत के घाट उतार दिए थे।

हज़ार, हज़ार, हज़ार,
हमारे एक सूरमा ने मार दिए हैं।
हज़ार, हज़ार, हज़ार, एक हज़ार।
हज़ार, बार गाओ, फिर गाओ।
ओहो ! आओ हम मिल गाएं।
राजा हमारे चिरजीवन पाएं।
राजा, जिसने हज़ार शत्रु मारे।
आओ, हम शोर मचाएं।
उसने हमें रक्त दिया है इतना
सब सीरिया न जुटा सकता जितना
द्राक्षारस मदिर सुहाना।
हज़ार, हज़ार, हज़ार।
मारे हैं हमारे सूरमा ने।
हज़ार, हज़ार, हज़ार॥

आप सुन रहे हैं तुरहियों का नाद ?

हां--बादशाह आ रहे हैं। देखिए !—लोग प्रशंसा से मतवाले हो रहे हैं और अपनी आंखें श्रद्धा से ऊपर उठा रहे हैं। वह आता है—वहां आ रहा है—वहां रहा वह !

कौन ?—कहां ?—बादशाह ? मुझे तो दिखाई नहीं देता—मैं तो नहीं कह सकता कि उसे देख रहा हूं।

तब आप निश्चय ही अन्धे होंगे।

हो सकता है। फिर भी मैं सनकियों और पागलों की तूफानी भीड़ के सिवा और कुछ नहीं देख पा रहा हूं—ये सब लोग एक बृहदाकार जिराफ के आगे दण्डवत् कर रहे हैं लोट रहे हैं और फिर उस जानवर के खुरों का चुम्बन लेने का प्रयत्न कर रहे हैं। देखिए ! जानवर ने हेय समूह के एक आदमी को लात की ठोकर लगा दी है। फिर एक और को—एक और

कर रहा है; उसकी प्रशंसा किए बिना मैं नहीं रह सकता।

हेय समूह !—क्यों ये तो एपीदाफने के श्रेष्ठ एवं स्वतन्त्र नागरिक हैं। और आपने राजा को पशु कहा ? सावधान होकर बोलो, कहीं कोई सुन न ले। क्या आप देख नहीं रहे हैं कि पशु की सूरत-शक्ल मनुष्य-जैसी है ? अरे मेरे प्यारे मित्र, वह जिराफ एन्तिओकस एपीफेनिस,—सीरिया नरेश एन्तिओकस पूर्व के सबसे शक्तिमान निरंकुश शासक के सिवा और कोई नहीं है। यह सच है कि कभी-कभी उसे एन्तिओकस एपीमेनिस—पागल एन्तिओकस के नाम से पुकारा जाता है परन्तु यह तो केवल इसलिए है कि सब लोग उसकी योग्यता को समझने में अक्षम हैं। यह भी सच है कि इस समय वह जानवर की खाल ओढ़े हुए है किन्तु ऐसा सम्राट के रूप में उसकी मर्यादा की रक्षा के लिए ही किया गया है। फिर सम्राट बहुत लम्बे हैं, इसलिए यह परिच्छेद उनके लिए बहुत बड़ा या अशोभन नहीं है। हां, हम इतना मान ले सकते हैं कि कोई विशेष स्थिति न होती तो वह इसे धारण न करते। आप मानेंगे कि हजार यहूदियों का कत्लेआम ऐसी ही एक स्थिति है। अपने चारों पगों पर किस उच्च गरिमा के साथ सम्राट आन्दोलित हो रहे हैं। आप देखते हैं कि उनकी पूंछ उनकी दो प्रमुख रखेलों—इलाहन तथा आर्गेलाइस ने ऊपर उठा रखी है, और यदि उनकी आंखें बाहर की ओर न निकल रही होतीं (जो उनके सिर से बाहर चली जाएंगी) या उनके मुख का ऐसा अनोखा रंग न होता तो उनकी शक्ल बहुत अधिक आकर्षक होती। पर उन्होंने इतनी अधिक मात्रा में शराब पी रखी है कि आंखों एवं चेहरे का यह हाल हो रहा है। आइए, क्रीडांगन में चलें, जहां वह जा रहे हैं, और जो विजय-गान वह आरम्भ कर रहे हैं उसे सुनें—

कौन राजा है एपीफेनिस सिवा ?
बोल दो, उसको अगर तुम जानते हो।
कौन राजा है एपीफेनिस सिवा ?
धन्य हूं मैं धन्य, कुछ पहिचानते हो ?
है नहीं कोई एपीफेनिस सिवा,

है नहीं राजा कोई उसके सिवा।
इसलिए तुम मन्दिरों को ध्वस्त कर दो,
और सूरज को बुझा दो, पस्त कर दो।
कौन है राजा एपीफेनिस सिवा ?
बोल दो, उसको अगर तुम जानते हो,
कौन राजा है भले मेरे सिवा ?
धन्य हूं, मैं धन्य, तुम पहिचानते हो ?

यह अच्छा, श्रमपूर्वक गाया गान। जनता कविराज, प्राच्यकीर्ति, विश्वानन्द तथा जिराफ-शिरोमणि आदि उपाधियों द्वारा उनका अभिनन्दन कर रही है। उसने उनको भावार्द्र कर दिया है। आप सुन रहे हैं ? वह फिर उसे गा रहे हैं। क्रीडांगन में पहुंचने पर आगामी ओलम्पिक में विजय-सम्भावना के कारण उन्हें माला पहिनाई जाएगी।

किन्तु हे भगवान् !—हमारे पीछे की भीड़ को क्या हो गया है ?

क्या कहा आपने, हमारे पीछे ? ओह, आह ! मैं देख रहा हूं। मेरे मित्र, अच्छा किया आपने जो मुझे समय पर बता दिया। हमें जल्दी से जल्दी किसी सुरक्षित स्थान में पहुंच जाना चाहिए। बस, यहां ! आइए, हम इस जलसेतु के तोरण में छिप जाएं। अब मैं आपको इस भगदड़ का कारण बताता हूं। वही हुआ जिसका मुझे भय था। शहर में जो जंगली जानवर पालतू बना लिए गये थे वे मनुष्य के सिर वाले जिराफ का अनोखा रूप देखकर भड़क उठे। परिणाम हुआ विद्रोह, और जैसा कि ऐसे अवसरों पर होता है उनकी भीड़ को हटाने में सम्पूर्ण मानवीय प्रयत्न विफल होंगे। कई सीरियाई अब तक निगले जा चुके हैं—किन्तु चतुष्पाद देशभक्तों का सामान्य चीत्कार है जिराफ को खाने के लिए। इसलिए कविराज अपने पिछले पैरों पर खड़े हो गए और अब अपनी जान बचाने को भाग खड़े हुए हैं। उनके दरबारी उनको संकट में छोड़कर चले गए; उनकी रखैलों ने उनकी पूंछ को गिर जाने दिया। विश्वानन्द, इस समय तुम दुःखद स्थिति में हो। प्राच्यकीर्ति, इस समय चबा लिए जाने का खतरा तुम्हारे सामने

है। इसलिए इस समय ऐसी करुणाजनक दृष्टि से अपनी पूंछ की ओर न देखो—निश्चय ही वह कीचड़ में घसीट ली जाएगी। इससे बचने का कोई उपाय नहीं है। इसलिए अपने पीछे, और अनिवार्य अप्रतिष्ठा की ओर न देखो, बल्कि हिम्मत करो—अपने चरणों को गतिमान करो और क्रीड़ांगन में भाग जाओ। याद करो कि तुम एन्तिओकस एपीफेनिस हो—एन्तिओकस महान हो,—कविराज, प्राच्यकीर्त्ति, विश्वानन्द तथा जिराफ—शिरोमणि हो। हे भगवान् ! गति की क्या शक्ति तुम प्रदर्शित कर रहे हो ! हां, दौड़ो, राजा ! शाबास एपीफेनिस ! क्या खूब, जिराफ ! महिमामय एन्तिओकस ! वह दौड़ता है; वह चलता है; वह उड़ता है। गुलेल से निकली गोली के समान वह क्रीड़ांगन की ओर जा रहा है। वह उछलता है।—वह चीखता है।—वह वहां पहुंच गया। अच्छा हुआ, प्राच्यकीर्ति ! यदि तुम्हें सर्कस या क्रीड़ांगन के द्वार तक पहुंचने में आधे सेकेण्ड की देर हो जाती तो एपीदाफने में रीछ का एक भी शावक ऐसा न बचता जिसने तुम्हारी लाश के लोथड़े का स्वाद न लिया होता। अब हम भाग चलें; यहां से चल दें। क्योंकि सम्राट के पलायन का जो समारोह आरम्भ होने वाला है उसमें जो भयानक शोर मचेगा उसे सहन करने में हमारे आधुनिक नाजुक कान असमर्थ होंगे। सुनिए। वह शुरू भी हो गया। देखिए ! सारा नगर उलट-पलट हो रहा है।

निश्चय ही, यह पूर्व का सबसे जनाकीर्ण नगर है। लोगों का कैसा हुजूम है ! सब श्रेणियों एवं युगों का कैसा मिश्रण है ! सम्प्रदायों एवं राष्ट्रों का कैसा बहुत्व है ! पोशाकों की कैसी विविधता है ! भाषाओं का कैसा हंगामा है ! खूंखार पशुओं की क्या चीख है ! वाद्ययंत्रों की क्या झंकार है। तत्वज्ञानियों का कैसा जमघट है !

आइए, हम दूर भागें।

पर, एक क्षण रुक जाइए। सर्कस के क्रीड़ांगन से कैसा कोलाहल उठ रहा है ? इसका क्या मतलब है, कृपा कर बताइए।

वह ? वह कुछ नहीं है। एपीदाफने के श्रेष्ठ एवं स्वतन्त्र नागरिक

घोषणा कर रहे हैं कि वे अपने सम्राट की निष्ठा, शौर्य, विवेक तथा देवत्व से पूर्ण सन्तुष्ट हैं, इसके अलावा उसकी अतिमानुषी गति के आंखों-देखे गवाह होने के कारण इसे अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि काव्य-मुकुट के साथ ही इस चरण-धावन प्रतियोगिता में विजय पाने की जयमाला भी उसके सिर पर पहिना दें। अगली ओलम्पिक प्रतियोगिता में तो उसे विजय मिलेगी ही; वे पेशगी उसका अभिनन्दन कर रहे हैं।

दैत्य-कथा

(मनोवैज्ञानिक आत्मकथाओं की शैली पर)

दैत्य ने अपना हाथ मेरे सिर पर रखते हुए कहा—"*मेरी* बात सुनो। इस अभिशप्त पृथ्वी पर एक ऐसा स्थान है जिसे तुमने अभी तक नहीं देखा होगा। और यदि किसी संयोग से तुमने देखा भी है तो किसी ऐसे प्रबल स्वप्न के बीच ही देखा होगा जो निद्रित मानव के मस्तिष्क में एक तूफान, एक आंधी की भांति आते हैं—उस निद्रित मानव के मस्तिष्क में जो निषिद्ध सूर्यरश्मियों के बीच सोया पड़ा हो। मैं यहां उन सूर्यरश्मियों की ओर इशारा कर रहा हूं जो निर्जन प्रान्त के उदासी-भरे मन्दिरों के शान्त स्तम्भों से फिसलती आती हैं। मैं जिस निर्जन प्रदेश की बात कह रहा हूं वह लीबिया का एक उजाड़ प्रदेश है और ज़ायर नदी के तीर पर फैला हुआ है। वहां कोई शान्ति नहीं है; कोई मौन नहीं है।

"नदी का पानी केसरिया और बीमार रंग लिए हुए है; उसकी धारा समुद्र की ओर नहीं बहती बल्कि सूर्य की लाल-लाल आंखों के नीचे, तुमुल मरोड़भरी गति में सदा-सदा के लिए स्पन्दित होती रहती है। नदी के दोनों क्षरणशील किनारों पर भीमाकृति जल-नालियों का पीताभ जंगल फैला हुआ है। उस निर्जन में वे एक दूसरी की ओर देखती निश्वास लिया करती हैं और अपनी लम्बी भयावनी गर्दन आकाश की ओर उठाए हुए जब-तब अपना शाश्वत सिर हिलाती रहती हैं। उनके बीच से एक अस्पष्ट ध्वनि आती रहती है जो धरती के गर्भ में बहनेवाली जलधारा की गति-जैसी होती है। और बस, वे एक दूसरे की ओर देखती निश्वास लेती रहती हैं।

"किन्तु उनके इस राज्य की भी एक सीमा है— तिमिराच्छन्न, भयानक, ऊंचे जंगल की सीमा। वहां हेब्राइड्स की तरंगों की भांति, लघु द्रुम निरन्तर हिलते रहते हैं किन्तु (आश्चर्य यह है कि) समस्त आकाश में कहीं कोई वायु नहीं है। लम्बे-लम्बे पुरातन वृक्ष तीव्र एवं प्रबल रव करते हुए निरन्तर इधर-उधर आन्दोलित होते रहते हैं। जंगल के ऊपर, सरसराहट की तेज़ आवाज़ के साथ, भूरे बादल सदा पश्चिम दिगन्त की ओर तब तक भागते चले जाते हैं जब तक कि वे अन्तरिक्ष की अग्निमयी दीवार पर झड़ के रूप में नहीं बदल जाते। किन्तु (आश्चर्य यही है कि) आकाश में कहीं कोई वायु नहीं। और ज़ायर नदी के तटों पर न कहीं शान्ति है, न मौन है।

"उस समय रात थी और पानी बरस रहा था। जब तक बरसता था वह पानी रहता था, किन्तु बरस चुकने पर, नीचे गिरकर, वह खून बन जाता था। मैं उन लम्बी नलिनियों के बीच, दलदल में, खड़ा था और वर्षा मेरे सिर पर गिर रही थी। और वे नलिनियां, अपनी विजनता की गम्भीरता में एक दूसरे की ओर देखती निश्वास फेंकती थीं।

"एकाएक क्षीण भयावने धुंध के बीच चांद उग आया। वह लाल रंग का था। मेरी निगाह नदी-तट पर खड़ी भीमाकार भूरी चट्टान पर पड़ी जो चांद की रोशनी से प्रकाशित हो उठी थी। चट्टान भूरी थी, भयानक थी, ऊंची थी। इसके सामने की ओर पत्थर पर कुछ अक्षर खुदे थे; मैं जलनलिनियों के दलदल में से होता हुआ उस ओर बढ़ा और इस इच्छा से तट के पास पहुंचा कि मैं पत्थर पर खुदे उन अक्षरों को पढ़ूं। किन्तु मैं उन अक्षरों को पढ़ नहीं सका। मैं फिर दलदल की ओर लौटने लगा। इसी समय चांद और अधिक लालिमा के साथ चमक उठा; मैं घूम पड़ा, और फिर चट्टान की ओर, अक्षरों की ओर नज़र डाली। लिखा था—'*अकेलापन*।'

"मैंने ऊपर की ओर देखा। चट्टान के शिखर पर एक आदमी खड़ा था। मैंने अपने को जल-नलिनियों के बीच छिपा लिया कि वह आदमी क्या करता है, यह देख सकूं। आदमी लम्बा, और आकार-प्रकार में शान-

दार था और कंधे से चरणों तक पुरातन रोम का लबादा पहिने हुए था। उसकी आकृति तो अस्पष्ट थी किन्तु उसकी सूरत-शक्ल देवता की-सी लगती थी, क्योंकि रात के आवरण, धुंध, चांद और ओस ने उसके मुखड़े को खुला रख छोड़ा था। उसकी भवें विचार में ऊपर उठी हुई थीं; उसकी आंखें चिन्ता से डरावनी हो रही थीं और उसके गालों पर जो चन्द झुरियां पड़ी थीं उनमें मैंने देखा कि शोक, और थकान और मानव के प्रति असन्तोष तथा एकान्त की कामना की कहानियां भरी हुई हैं।

"वह आदमी चट्टान पर बैठ गया, और अपने हाथ पर सिर झुका लिया, और निर्जनता की ओर देखने लगा। उसने नीचे लघु अशान्त झाड़ियों की ओर देखा, ऊपर लम्बे पुरातन वृक्षों को देखा, और ऊपर सर-सराते आकाश को देखा, और लाल-लाल चांद को देखा। मैं नलिनियों में छिपा उस आदमी की कारंवाइयां देखता रहा। और वह आदमी एकान्त में कांप उठा—किन्तु रात ढलती रही और वह चट्टान पर बैठा रहा।

"फिर आदमी ने अपना ध्यान आकाश से हटा लिया और नजर उदासी भरी जायर नदी पर, भयावने पीत जल-प्रवाह पर और नलिनियों के विवर्ण प्रान्त पर लगा दी। वह नलिनियों के विश्वास को, और उनके बीच से आती क्षीण ध्वनि को सुनने लगा। मैं अपने प्रच्छन्न स्थान में बैठा रहा और उस आदमी की कारगुजारियां देखता रहा। आदमी एकान्त में कांप उठा—किन्तु रात ढलती रही और वह चट्टान पर बैठा रहा।

"फिर मैं दलदल की खोहों में उतर पड़ा, और नलिनियों के जंगल में दूर तक चला गया, और दलदल की धसानों में रहनेवाले दरियाई घोड़ों को आवाज दी। दरियाई घोड़ों ने मेरी आवाज सुनी और वेहेमथों (एक बड़ा जानवर) को साथ लिए, चट्टान के नीचे तक आए और चांद के नीचे जोर-जोर से और भयानकता के साथ गर्जते रहे। और मैं आकर अपने गुप्त स्थान पर बैठ गया और उस आदमी की करतूतें देखता रहा। और वह आदमी एकान्त में कांप उठा—किन्तु रात ढलती गई और वह चट्टान पर बैठा रहा।

"तब मैंने कोलाहल का शाप देकर प्रकृति-तत्वों को अभिशप्त कर दिया। आकाश में भयावना तूफान घिर आया, जबकि इसके पूर्व वहां वायु का नाम-निशान भी न था। और तूफान के आघात से आकाश क्रुद्ध हो उठा, और (उस) आदमी के सिर पर बारिश पड़ने लगी; नदी में बाढ़ आगई; नदी घूर्णित होकर फेनिल हो उठी; नलिनियां अपनी क्यारियों में चीखने लगीं; आंधी में वृक्ष टूटकर गिरने लगे; बादल गर्जा और बिजली गिरी; चट्टान नींव से हिल उठी। मैं अपने गुप्त स्थान में बैठा उस आदमी की कारंवाइयां देखता रहा। आदमी एकान्त में कांप उठा, किन्तु रात ढलती गई और वह चट्टान पर बैठा रहा।

"तब मैं और क्रुद्ध हो उठा और *मौन* के शाप से, नदी, नलिनी-दल वायु, जंगल, आकाश, बिजली और नलिनियों के निश्वास को अभिशप्त कर दिया। वे अभिशप्त होकर निस्पन्द हो गये। आकाश के उच्च मार्ग पर उठते हुए चांद का चलना बन्द हो गया; गर्ज शान्त हो गई; बिजली का चमकना बन्द हो गया; बादल निश्चेष्ट लटके रहे; जल अपने स्तर पर आकर शान्त हो गया; पेड़ों का हिलना बन्द हो गया और जल-नलिनियों के निश्वास समाप्त हो गए। अब उनके बीच से कोई ध्वनि नहीं आती; यहां तक कि उस विस्तृत, असीम मरुस्थल में कहीं किसी ध्वनि की छाया या नाम भी नहीं रह गया। मैंने चट्टान के लेख की ओर निगाह डाली; वे बदल गए थे और अक्षर मौन बन गए हैं।

"और मेरी निगाहें उस आदमी के चेहरे-मोहरे पर पड़ीं; उसकी मुखाकृति भय से विवर्ण हो गई थी। उसने जल्दी से हाथ से अपना सिर ऊपर उठाया, चट्टान पर खड़ा हो गया और सुनने लगा। किन्तु उस विस्तृत सीमारहित मरु में कहीं कोई आवाज नहीं थी और चट्टान के अक्षर मौन बन गए। वह आदमी कांप उठा, अपना मुंह उधर से फिरा लिया और दूर, बहुत दूर भाग गया, और मैंने फिर उसे नहीं देखा।"

मागी[1] के ग्रन्थों में––मागी के लोहबन्ध शोकावह ग्रन्थों में अनेक

१. मागी—प्राचीन फारसियों के पुजारी या जादूगर, जिनका उल्लेख बाइबिल में भी है।

सुन्दर कहानियां हैं। मैं कहता हूं कि उनमें आकाश और पृथ्वी और शक्तिमान सागर के भव्य इतिहास हैं—और सागर, पृथ्वी तथा उच्च आकाश पर शासन करनेवाले जिन्नों की कथाएं हैं। साइबिल्स की सूक्तियों में भी बड़ा ज्ञान भरा पड़ा है, और डोडोना के इर्दगिर्द के धुंधले पत्तों के कम्पन में पवित्र-पवित्र बातें सुनाई पड़ती हैं, किन्तु अल्लाह को हाजिर जानकर मैं कहता हूं कि मकबरे की छाया तले मेरे पास बैठकर दैत्य ने जो गाथा सुनाई थी, उसे मैं इन सबसे अद्भुत मानता हूं। और जैसे ही दैत्य ने यह किस्सा खत्म किया, वह मकबरे की गुफा में चला गया और ज़ोर से हंस पड़ा। मैं उसके साथ हंसी में शरीक न हो सका और चूंकि मैं हंस नहीं सका, उसने मुझे शाप दिया। और जो बनबिलाव मकबरे में सदा रहता है, वह उससे बाहर निकल आया और दैत्य के चरणों में पड़ गया और इस प्रकार पड़ा हुआ उसके मुंह पर आंखें गड़ाए देखने लगा।

चन्द्रलोक की यात्रा[1]

राटर्डम से जो अन्तिम समाचार प्राप्त हुए हैं उनके अनुसार वह नगर गहरी दार्शनिक उत्तेजना की स्थिति में है। इसमें सन्देह नहीं कि जो घटना वहां घटित हुई है वह ऐसी आशातीत है, इतनी अनोखी है, पूर्वप्रचलित धारणाओं से इतनी भिन्न है कि बहुत जल्द सारे यूरोप में तहलका मच जाएगा, सम्पूर्ण भौतिकी विचलित हो उठेगी; सम्पूर्ण गतिविज्ञान एवं ज्योतिष दंग रह जाएगा

बात यह है कि······साल के······दिन (तिथि के बारे में मैं निश्चित नहीं हूं) आदमियों की बहुत बड़ी भीड़, जिसके उद्देश्य का वर्णन समाचार में नहीं प्रकट किया गया है, सुव्यवस्थित राटर्डम[2] नगर के बड़े मैदान में इकट्ठी हुई थी। दिन गरम था, यद्यपि उस मौसिम में आम तौर पर ऐसा होता नहीं, और हवा बिल्कुल बन्द थी किन्तु इसके कारण लोगों में कोई कुढ़न नहीं थी क्योंकि बीच-बीच में, ज़रा-ज़रा-सी देर के लिए, हलकी-सी सुखद फुहार पड़ जाया करती थी। ये फुहारें वृहत्‌श्वेत मेघपुंज से, जो नीलाकाश पर फैले हुए थे, गिरती थीं। लगभग दोपहर के समय भीड़

---

१. यह कथा 'हंस फाल' शीर्षक से पो ने लिखी थी। ऐसी ही एक कहानी श्री लाक ने चन्द्रकथा (मून स्टोरी) के नाम से उसी समय के लगभग छपवाई थी। किसने किससे कहानी चुरा ली है, इसे लेकर समाचारपत्रों में एक वावेला मच गया था। सच पूछा जाए तो दोनों कथाओं की प्रकृति भिन्न है। एक व्यंग-कथा के रूप में है, दूसरी सहज कहानी है। पो ने अपनी सफाई देते हुए कहा था कि उसकी रचना 'सदर्न लिटरेरी मेसेंजर' पत्र में लाक की रचना प्रकाशित होने के तीन सप्ताह पूर्व ही छप चुकी थी।

२. हालैण्ड का एक नगर।

में उत्तेजना फैल गई; दस हजार जिह्वाएं चहक उठीं, और क्षणभर में दस हजार मुख आकाश की ओर उठ गए; साथ ही दस हजार तम्बाकू-नलिकाएं (पाइप) दस हजार मुखों के कोनों से नीचे आ गई और राटर्डम का समस्त वातावरण एक लम्बे, ऊंचे एवं भयानक शोर से, जिसकी उपमा केवल नियाग्रा प्रपात शोर से की जा सकती है, प्रतिध्वनित हो उठा।

इस कोलाहल के कारण का शीघ्र ही पता चल गया। बात यह थी कि पूर्वोक्त मेघ-पुंज के पीछे से मुक्त नीलाकाश-खण्ड पर एक विलक्षण, बहुजातीय, परन्तु ठोस चीज उदित होती दिखाई पड़ी। उसकी आकृति ऐसी विचित्र थी, विविधि भाग ऐसे सनक-भरे ढंग पर जुड़े हुए थे कि नीचे खड़े दबंग नागरिकों की समझ में कुछ न आया। वे मुंह बाये उसे देखते रह गए। यह क्या चीज हो सकती है ? यह किस शकुन का संकेत करती है ? कोई नहीं जानता, कोई कल्पना नहीं कर सकता, नगराधिपति माइनहीर सुपर्बस वॉन अण्डरडक तक की समझ में नहीं आता कि किस प्रकार इस रहस्य का उद्घाटन किया जा सकता है। चूंकि कोई और समझदारी की बात सम्भव न थी, सबने अपने पाइप पुनः अपने-अपने मुंह के बाएं कोने में दबा लिए। वे दाहिनी आंख उस अनोखी वस्तु पर लगाए हुए कश लेते, फिर रुक जाते, फिर कश लेते, चहलकदमी करते, आकाश की ओर देखते, रुक जाते और फिर कश लगा लेते। यही क्रम चल रहा था।

इस बीच वह पदार्थ, जो इतनी उत्कण्ठा और धूम्रपान का कारण था, नगर की दिशा में नीचे और नीचे उतरता आ रहा था। थोड़ी ही देर में वह इतने नीचे आ गया कि उसे ठीक तरह से देखा-पहिचाना जा सकता था। लगता था—लगता क्या था, था ही—वह एक गुब्बारा है, लेकिन जिस ढंग का गुब्बारा वह था, वैसा राटर्डम में पहले कभी देखा नहीं गया। जरा मैं पूछूं तो कि केवल गन्दे अखबारों के द्वारा बने हुए गुब्बारे की बात किसी ने सुनी भी है ? हालैण्ड में तो लोगों की नाक के नीचे या ऊपर ही सही, किसी ने ऐसी सामग्री का ऐसे काम के लिए उपयोग होते सुना नहीं है। यह तो राटर्डम के अधिवासियों के ज्ञान का भयंकर अपमान था। जहां तक

उस पदार्थ की आकृति का सवाल है, वह और भी घृणाजनक थी; लगता था मानो मसखरे का कोई टोप उलटकर रख दिया गया हो। जब वह पदार्थ कुछ और निकट आगया तब भी देखने पर यह उपमा उसपर कुछ कम नहीं फबती थी, क्योंकि उसके शीर्षभाग से एक झब्बा लटक रहा था और शंकु के आधार-भाग में लघुवाद्यों का, जो भेड़ों के गले में पहिनाई जाने वाली घण्टियों से लगते थे, एक गोलक बंधा हुआ था। इन वाद्यों से निरन्तर झंकार हो रही थी। इससे भी भद्दा यह लगता था कि इस अद्भुत मशीन के छोर की नीली काष्ट-पट्टिकाओं से कार के समान एक बृहदाकार छज्जेदार हैट लटक रहा था जिसका कण्ठभाग (ब्रिम) अत्यधिक चौड़ा था और जिसके अर्द्धगोलाकार शीर्ष में काला फीता और रजत् बक्सुआ लगा हुआ था। परन्तु यहां यह बात उल्लेखनीय है कि राटडंम के अनेक नागरिक कसम खाने लगे कि यह हैट उनका पहले कई बार का देखा हुआ लगता है, बल्कि सारे जनसमूह को वह परिचित-सा लग रहा था। श्रीमती ग्रेटिलफाल तो उसे देखते ही प्रसन्नता से चिल्ला उठीं और कहा कि यह तो हमारे ही पति के हैट के समान लग रहा है। यह एक ऐसी परिस्थिति थी जिसपर और ज्यादा विचार करने की आवश्यता थी, क्योंकि फाल सचमुच ही, अपने तीन साथियों-सहित, लगभग पांच साल पहले राटडंम से अकस्मात् और अकारण, गायब हो गया था और इस घटना के दिन तक, लाख प्रयत्न करने पर भी, उसका कुछ पता नहीं लगा था। कुछ ही दिन पहले राटडंम के पूर्व की ओर एक निर्जन स्थान पर कूड़े-कर्कट के बीच कुछ हड्डियां मिली थीं जो देखने में आदमी की हड्डियों के समान लगती थीं। कुछ लोग तो यहां तक कल्पना करने लगे थे कि उस जगह कोई न कोई घृणित हत्या हुई अवश्य है और बहुत सम्भवतः जिनकी हत्या हुई है वे हंस फाल और उसके साथी ही रहे होंगे।

जब तक वह गुब्बारा, और निस्संदेह वह गुब्बारा ही था, धरती से सौ फुट की ऊंचाई तक आ गया था और नीचे के लोग उसमें बैठे व्यक्ति को काफी साफ रूप में देख सकते थे। वह कोई विलक्षण लघु व्यक्ति मालूम

होता था। वह दो फुट से ज्यादा ऊंचा न रहा होगा, किन्तु यदि एक गोलाकार रिम, जो गुब्बारे की रस्सियों मे बंधी हुई थी, उसके सीने तक के भाग को दबाकर स्थिर न रखे होती तो बहुत कम होने पर भी यह ऊंचाई उसका सन्तुलन नष्ट कर देने और उसे लघुकार (गाड़ी) के छोर पर गिरा देने को पर्याप्त थी। उस आदमी का शरीर अनुपात से ज्यादा चौड़ा था, जिससे सारी आकृति बहुत भद्दे ढंग की और गोल-मटोल हो गई थी। उसके पांव तो दिखाई ही न पड़ते थे, यद्यपि कार के तल-भाग या ज्यादा ठीक यह कहना होगा कि हैट के शीर्षभाग, के एक छिद्र से कभी-कभी सींग-जैसी कोई संदेहजनक चीज़ निकलती दिखाई पड़ जाती थी। उसके हाथ बहुत ज्यादा लम्बे थे। उसके केश बहुत भूरे थे और सिर के पिछले भाग में जूड़े की भांति एकत्र कर दिए गए थे। उसकी नाक अत्यधिक लम्बी, टेढ़ी और फूली हुई थी। आंखें बड़ी-बड़ी और चमकदार थीं; आयु के अनुसार झुर्रियां पड़ जाने पर भी उसका चिबुक और उसके कपोल चौड़े, स्थूल तथा दोहरे थे, किन्तु सिर के किसी भाग में कहीं किसी प्रकार के कान के कोई चिह्न न थे। वह अनोखा लघु मानव नीले आकाशी रंग का ढीला-ढाला ओवरकोट तथा उससे मैच करता एक चुस्त बिरजिस (ब्रिचेज) या पायजामा पहिने था। पायजामें में घुटने के पास रजत् बकसुए बंधे थे। अन्तर्वस्त्र किसी पीत चमकीले कपड़े का बना था, सिर के एक छोर पर सफेद रेशमी टोपी थी। खून की भांति लाल रंग का एक रेशमी रुमाल उसके कण्ठ में लपेटा हुआ था जिसका सिरा खूबसूरती के साथ उसके सीने पर लटक रहा था और जिसमें बहुत बड़ी एक गांठ पड़ी हुई थी।

जैसा मैं पहले कह चुका हूं, पृथिवी से लगभग एक सौ फुट ऊपर तक उतर जाने के बाद हमें लगा कि वह लघु आदमी एकाएक भयग्रस्त हो गया है और धरती पर उतरने को किसी तरह तैयार नहीं है। उसने बड़ी कठिनाई से कनवास का एक बैग उठाया और उससे बहुत-सी रेत नीचे फेंक दी क्षण-भर में वह स्थिर हो गया। इसके बाद उसने जल्दीबाज़ी और उत्तेजना के साथ अपने ओवरकोट की बगली जेब से एक बड़ी चर्ममण्डित पाकेटबुक

निकाली। उसे अजीब तरीके से अपने हाथ में लेकर आश्चर्य-भरी आंखों से देखता रहा। उसे उसके भार पर आश्चर्य हो रहा था। आखिरकार उसने उसे खोला और उसमें से एक बहुत बड़ा पत्र बाहर निकाला, जिसपर लाल चमड़े की मुहर लगी हुई थी और जो लाल फीते से बंधा हुआ था। उसने उसे इस तरह फेंका कि वह ठीक नगराधिकारी सुपर्वस वॉन अण्डरडक के चरणों पर आकर गिरा। इधर श्रीमन् सुपर्वस उस पत्र को उठाने के लिए झुके, उधर वह आदमी उसी प्रकार असंतुष्ट और अपने ज्यादा ठहरने का कोई काम न देख वहां से विदा हो जाने की तैयारी करने लगा। पुनः ऊपर उठने के लिए भार कम करना जरूरी था, इसलिए उसने एक पर एक आधे दर्जन रेत से भरे बैग उन्हें खोलकर रेत गिराने की जगह सीधे ही लुढ़काने शुरू कर दिए। दुर्भाग्यवश ये बैग झुके हुए नगराधिकारी की पीठ पर आकर गिरते रहे और उस बेचारे को राटर्डम के हर एक अधिवासी के सामने ही बार-बार पृथिवी पर दण्डवत् करते देखा गया। अण्डरडक ने इस अपमान को शान्ति के साथ सहन नहीं किया और उस आदमी की धृष्टता के उत्तर में हर बार दण्डवत् करते हुए वह पाइप से फूत्कार छोड़ता रहा—पाइप जिसे वह इस दुर्दशा के बीच भी अपना सारा जोर लगाकर पकड़े रहा, और जिसे वह मृत्यु के दिन तक पकड़े रहने का इच्छुक था।

इसी बीच गुब्बारा, लवा पक्षी की भांति, आकाश में उठा, और नगर के बहुत ऊपर उड़ता हुआ अन्त में उन बादलों के पीछे जा छिपा जिनके बीच से निकलकर आया था, और इस प्रकार राटर्डम के निवासियों के आश्चर्यमग्न नयनों से सदा के लिए दूर हो गया। अब सबका ध्यान उस पत्र की ओर गया जिसको उठाने में श्रीमन् नगराधिकारी माइनहीन सुपर्वस वान अण्डरडक के शरीर एवं मर्यादा दोनों को इतनी क्षति पहुंची थी। सब कुछ होते हुए भी उक्त पदाधिकारी महोदय ने उस लिफाफे पर नजर डालकर यह देख लिया था कि वह उपयुक्त हाथों में आया है क्योंकि वह राटर्डम ज्योतिष-महाविद्यालय के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के रूप में उनके और प्रोफेसर रब-ए-डब के नाम भेजा गया था। इसलिए वह इन

उपाधिधारियों-द्वारा वहीं खोल लिया गया। लिफाफे में निम्नलिखित असाधारण एवं बहुत गम्भीर पत्र निकला :—

श्रीमन् माननीय वान अण्डरडक एवं एव-ए-ड्य
अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष राजकीय ज्योतिष-महाविद्यालय
राटर्डम की सेवा में,

श्रीमानों को कदाचित् याद होगा कि हंस फाल नाम का धौंकनी (भाथी) की मरम्मत का पेशा करनेवाला, एक मिस्त्री, लगभग पांच साल पहले, तीन और आदमियों के साथ, ऐसी परिस्थिति में गायब हो गया था, जिसे सभी लोगों ने आकस्मिक और अकारण समझा होगा। यदि आप लोग विश्वास करें तो मैं कहूंगा कि इस पत्र का लेखक खुद वही हंस फाल है। मेरे अधिकांश नगरबन्धु जानते हैं कि ४० साल की लम्बी अवधि से मैं सायरक्रात वीथी के छोर पर वर्गाकार ईंटवाली इमारत में रह रहा था और गायब होने के समय भी वहीं था। न जाने कब से मेरे पूर्वज भी वहीं रहने आये थे। हम लोग धौंकनी की मरम्मत करने का सम्मानित एवं लाभजनक पेशा करते थे। सच तो यह है कि जबतक सब लोगों के दिमाग संकटों से और राजनीति से अस्थिर नहीं हुए थे, अर्थात् कुछ समय पहले तक मेरे पेशे से अच्छे किसी पेशे की राटर्डम के निवासी न तो कल्पना करते थे और न उसके योग्य थे। साख अच्छी थी, काम की कमी नहीं थी, और सबके पास पैसा था, शुभाकांक्षा थी। किन्तु जैसा कि मैं कह रहा था, बहुत जल्द हमें स्वतंत्रता एवं लम्बे भाषणों, उग्रवाद तथा इसी प्रकार की बातों के भयानक प्रभाव का अनुभव होने लगा। जो लोग दुनिया में सबसे अच्छे ग्राहक थे, उनके पास अब हमारा ख्याल करने के लिए समय ही नहीं रहा। वे कहते थे कि अब उन्हें क्रान्तियों के बारे में पढ़ने, बुद्धि की यात्रा तथा युग की भावना को प्रगतिशील रखने में ही अधिक से अधिक समय लगाना है। अगर आग फैलानी हो तो वह अखबार के जरिये आसानी के साथ फैलाई जा सकती है। मैं बिना किसी संशय के कह सकता हूं कि सरकार ज्यों-ज्यों दुर्बल होती गई, त्यों-त्यों, उसी अनुपात में, चमड़े और लोहे का टिकाऊ-

पन बढ़ता गया, क्योंकि शीघ्र ही वह समय आ गया जब राटर्डम में किसी भी धौंकनी में टांके लगाने या उसे हथौड़े से पीटकर ठीक करने की जरूरत ही नहीं रह गई। इस स्थिति को सहन करना असम्भव था; शीघ्र ही मेरी दशा चूहे-सी क्षीन-हीन हो गई। मेरे बाल-बच्चे भी थे, औरत भी थी इसलिए मेरा भार असहनीय हो गया। मैं दिन-रात यही सोचा करता था कि अपना जीवन समाप्त कर देने का सबसे शीघ्रता का और सबसे सुविधाजनक उपाय क्या हो सकता है किन्तु ऋणदाताओं के मारे विचार करने का अवकाश ही नहीं मिलता था। वे सुबह से रात तक मेरे घर पर घेरा डाले रहते थे इसलिए उस पिंजरबद्ध बाघ के समान जो अपने कठघरे की छड़ों पर गुस्सा निकालता है, मैं गर्जने और फूत्कार छोड़ने लगा। इन ऋणदाताओं में तीन आदमी खास तौर पर ऐसे थे जिनके मारे मेरा नाक में दम था; वे सदा मेरे घर पर पहरा देते थे और कानून के सहारे मुझे कठोर दण्ड की धमकी देते रहते थे। मैंने मन ही मन कसम खाई कि यदि कभी इन्हें अपने चंगुल में पाया गया तो इनसे बहुत बुरा बदला लूंगा। बदले के सुखलाभ की कल्पना के कारण ही मैंने बन्दूक से अपना सिर उड़ाकर तुरन्त आत्महत्या कर लेने की योजना को स्थगित कर दिया। मैंने अपने क्रोध को तब तक छिपाकर और उन्हें वादों तथा मीठी-मीठी बातों में भुलाकर रखना ठीक समझा, जबतक सौभाग्य-वश मुझे बदला लेने का अवसर न प्राप्त हो जाए।

एक दिन की बात है कि अपने ऋणदाताओं की आंख बचाकर, और दिनों से कहीं ज्यादा निराशा में डूबा, मैं बाहर निकल गया और बड़ी देर तक निरुद्देश्य अज्ञात गलियों में घूमता रहा। यों ही घूमता-फिरता मैं एक पुस्तक-विक्रेता की दुकान से जा टकराया। वहां ग्राहकों के उपयोग के लिए एक कुर्सी रखी हुई थी। मैं बड़ी रुखाई के साथ उस पर बैठ गया और मेरे हाथ में जो पहली किताब लगी उसे खोलकर देखने लगा। संयोग से वह अनुमानात्मक ज्योतिष पर लिखी लघु पुस्तिका निकली। उसे या तो बर्लिन के प्रोफेसर इनके ने, या समान नाम के किसी फ्रांसीसी ने, लिखा

था। इस प्रकार के विषयों की मुझे थोड़ी जानकारी थी, इसलिए मैं पुस्तक पढ़ने में अधिकाधिक तल्लीन होता गया—और जब मैंने यह देखने के लिए सिर उठाया कि मेरे इर्द-गिर्द क्या हो रहा है तो मैं उसे आदि से अन्त तक दो बार पढ़ चुका था। अब तक अंधेरा होने लगा था, इसलिए मैं घर की ओर चल पड़ा। किन्तु उस किताब की अमिट छाप मेरे मन पर पड़ चुकी थी और धुंधली गलियों से गुज़रते हुए, उसके लेखक के आश्चर्यजनक एवं अस्पष्ट तर्कों को मैं अपनी स्मृति में उलटता-पलटता रहा। कुछ विशिष्ट वाक्यों ने मेरी कल्पना को असामान्य रूप में प्रभावित कर दिया था। मैं उनपर जितना ही विचार करता, मेरे अन्दर जगी हुई उत्कण्ठा उतनी ही बढ़ती जाती थी। मैंने सामान्य शिक्षा भी बहुत कम पाई थी, फिर प्रकृति-विज्ञान-सम्बन्धी विषयों में तो विशेषरूप से अज्ञान था किन्तु जो कुछ मैंने पढ़ा था उसे समझने की अपनी अयोग्यता से निराश हो जाने या उसके कारण जो अनेक अस्पष्ट सवाल मन में उठ खड़े हुए थे उन पर अविश्वास करके बैठ जाने की जगह, उलटे मेरी कल्पना और प्रखर हो उठी। मैंने यह शंका करने की धृष्टता की कि अनुशासन-विहीन मस्तिष्कों में उठनेवाली अनगढ़ धारणाएं देखने में भले ठीक लगती हों किन्तु उनमें प्रायः प्रेरणा या अन्तर्दृष्टि का सहज गुण या बल नहीं होता। मैं एक पग और आगे जाकर शंका करने लगा कि विशुद्ध अनुमानात्मक प्रकृति के मामलों में गूढ़ता कहीं खुद ही तो असत्य एवं भ्रांति का स्रोत नहीं है। दूसरे शब्दों में मैं यह विश्वास करने लग गया, और अब भी विश्वास करता हूं, कि स्वयं अपने अन्दर सत्य दिखाऊ या छिछला पदार्थ है, और अधिकांश मामलों में गहराई वस्तुतः खाइयों में, गारों में, जिनमें हम उसकी खोज करते हैं, उससे कहीं अधिक होती है जितनी उन वास्तविक स्थितियों में होती है जिनमें उसे प्राप्त किया जाता है। स्वयं प्रकृति मेरे इन विचारों का समर्थन करती प्रतीत होती थी। आकाशस्थ नक्षत्रों का दर्शन करते हुए मेरे मन में ज़ोरों से यह विचार उठा कि जब मैं अपनी आंखें एक तारे पर सीधे केन्द्रित कर देता हूं तो उतनी अच्छी तरह उसे ठीक-

ठीक देखने में असमर्थ रह जाता हूं जितनी मैं तब देख पाता हूं जब मैं उसपर नहीं, उसके आसपास निगाह डालता हूं। उस समय मुझे मालूम नहीं था कि इस विरोधाभास का कारण यह है कि चाक्षुप क्षेत्र का केन्द्र-स्थल प्रकाश की दुर्बल छापों को चक्षुपटल के बाह्य अंशों की अपेक्षा कम सफलता से ग्रहण करता है। यह तथा इस तरह की दूसरी जानकारियां तो मुझे अपने आगे के घटनापूर्ण पंचवर्षीय जीवन में प्राप्त हुईं। इस अवधि में मैंने अपने पूर्व जीवन की क्षुद्र स्थितियों के साथ लगी धारणाओं को दूर कर दिया और बहुत ही भिन्न प्रकार के पेशों में लग जाने के कारण धौंकनी की मरम्मत करनेवाले को भूल गया हूं। किन्तु जिस समय की बात मैं कह रहा हूं उस समय नक्षत्र-दर्शन से निकाले उक्त निष्कर्ष ने जैसे मेरे पहले के विचारों की पुष्टि कर दी हो, मैंने उस रास्ते पर जाने का मन में निश्चय कर लिया जिसका अनुसरण बाद में करता रहा हूं।

जब मैं घर पहुंचा बहुत देर हो चुकी थी, इसलिए मैं तुरन्त सोने चला गया। किन्तु मन में इतने विचार भरे थे कि नींद की गुंजाइश ही न थी और मैं सारी रात ध्यान में खोया रहा। दूसरे दिन सुबह बहुत जल्दी उठ गया और ऋणदाताओं से पिण्ड छुड़ाने के ख्याल से फिर पुस्तकविक्रेता की दुकान की ओर चल पड़ा। मेरे पास थोड़ी-बहुत जो नकदी बची थी उससे मैंने यांत्रिकी एवं व्यावहारिक ज्योतिप की कुछ किताबें खरीद लीं। उन्हें लेकर मैं चुपचाप घर लौट आया और फुर्सत का एक-एक क्षण मैंने उन्हें पढ़ने में लगाया। शीघ्र ही मैंने इस प्रकार के अध्ययन में इतनी कुशलता प्राप्त कर ली जो मेरी योजना की पूर्ति के लिए पर्याप्त थी। इस अवधि के अन्दर मैं अपने उन तीन ऋणदाताओं को हर तरह से अपने अनुकूल बनाने की कोशिश भी करता रहा, जिन्होंने मुझे इतनी तकलीफ दी थी। अन्त में अपने इस प्रयत्न में मुझे सफलता हुई। मैंने घर का फर्नीचर बेचकर उनके ऋण का कुछ हिस्सा चुका दिया और इस बात पर उन्हें राजी कर लिया कि जिस लघुयोजना की बात मैं सोच रहा हूं उसके पूरा हो जाने पर शेष ऋण भी मैं चुका दूंगा। मैंने उस योजना में सहायक होने का अनुरोध भी

उनसे किया। वे मूर्ख थे, इसलिए अपने काम में उनका उपयोग कर लेने में मुझे ज्यादा कठिनाई नहीं हुई।

उनसे निबटकर मैंने आगे की बातों पर ध्यान दिया। पहले मैंने अपनी पत्नी को मिलाया और उसकी मदद से जो भी जायदाद मेरे पास बच गई थी, उसे अत्यन्त सावधानतापूर्वक और गोपनीय रीति से, थोड़ा-थोड़ा करके, विविध बहानेबाजियों के साथ, गिरवी रखना शुरू कर दिया। उस समय मैंने इस विचार को भी मन से हटा दिया था कि भविष्य में इनका भुगतान किस प्रकार किया जाएगा। इस तरह मैंने काफी नकदी इकट्ठी कर ली। अब मैंने बीच-बीच में १२-१२ गज के टुकड़ों में बढ़िया मलमल, वार्निश, मोटा बंटा सूत खरीदना शुरू किया; फिर आर्डर देकर एक गहरा खपच्चियों का टोकरा बनवाया। मतलब एक बहुत बड़े गुब्बारे के लिए जो भी सामान जरूरी थे, उन्हें खरीद लिया। अब मैंने अपनी पत्नी को गुब्बारा बनाने का आदेश किया और उसे हर तरह की जानकारी और सहायता देता रहा। मोटे बंटे सूत से मैंने एक बड़ा जाल तैयार किया, उसे एक चक्र में बांधा; उसमें रस्सियां लगा दीं। फिर कोणमापक पादयंत्र, कम्पास, दूरबीन, बैरोमीटर तथा ज्योतिष-सम्बन्धी दो यंत्र, जिन्हें सामान्यतः लोग नहीं जानते, खरीदे। अब मैंने अपने प्रयोगों के लिए राटर्डम नगर के बाहर पूर्व की ओर एक निर्जन स्थान खोज निकाला और वहां लोहे की पट्टियों से कसे हुए कुछ पीपे पहुंचा दिए। इनमें से हर एक में लगभग पचास गैलन द्रव आ सकता था। एक और भी पीपा ले गया जो इनसे बड़े आकार का था। टिन की बनी १० फुट लम्बी तीन इंच घेरे की छः नलिकाएं भी लीं। इनके अलावा एक विशेष प्रकार का धात्विक या अर्ध-धात्विक पदार्थ भी, जिसका नाम मैं नहीं बताऊंगा, वहां पहुंचा दिया। एक सामान्य एसिड (अम्ल) की बारह संकरे गलेवाली बोतलें भी ले गया। यह सारा सामान धीरे-धीरे करके रात के अंधियारे में वहां पहुंचाया जाता रहा। अन्तिम पदार्थों के सहारे जो गैस बनानी थी वह मेरे पहले और किसी ने न बनाई थी। इसका रहस्य प्रकाशित करने में मुझे

कोई कठिनाई नहीं है किन्तु उस पर अधिकार वस्तुतः नांत्र (फ्रांस) के एक नागरिक का है जिसने कुछ शर्तों पर उसकी जानकारी मुझे दी थी। उसी ने, मेरे इरादों की जानकारी के बिना ही, एक जन्तु की झिल्ली से मुझे ऐसे गुब्बारे बनाने की विधि बताई जिससे किसी गैस का निकल जाना लगभग असम्भव था। किन्तु मैंने देखा कि उसका बनाना बड़ा व्ययसाध्य है। मुझे यह विश्वास नहीं था कि मलमल के ऊपर कच्चे रबर के घोल का पलस्तर लगाकर भी वैसी ही चीज बनाई जा सकती है। मैं इस स्थिति का वर्णन इसलिए कर रहा हूं कि इसकी सम्भावना है कि आगे वह व्यक्ति नये प्रकार की गैस से ऐसे गुब्बारे को उड़ाने का प्रयत्न करे और मैं उसे एक अनोखे आविष्कार का श्रेय लेने के अवसर से वंचित नहीं करना चाहता।

गुब्बारे में गैस भरने के समय जिन छोटे कनस्तरों से काम लेने की बात थी उनके लिए मैंने दो फुट गहरा गड्ढा अपने हाथ से खोदा। गड्ढे का घेरा लगभग पच्चीस फुट रहा होगा। इस घेरे के बीच में मैंने बड़े पीपे को रखने के लिए तीन फुट गहरा गड्ढा खोदा। पांच छोटे गड्ढों में मैंने एक-एक करके पचास गैलनवाले कनस्तर रख दिए और बड़े गड्ढे में डेढ़ सौ पौण्ड बारूद से भरकर बड़ा पीपा रख दिया। इन सबको ढकी हुई सुरंगों या नलिकाओं से जोड़ दिया। फिर एक छोटे पीपे या कनस्तर में चार फुट लम्बी धीमी-दियासलाई (स्लोमैच जो बारूद में धीरे-धीरे आग लगाने के काम आती है) का सिरा डाल दिया और गड्ढे को ढक कर उस पर एक पीपा इस तरह रख दिया कि दियासलाई का दूसरा सिरा जरा-जरा उसके बाहर निकला रहे, और बाहर से दिखाई भी न पड़े। अब मैंने शेष गड्ढों को भी भर दिया और पीपों को ठीक ढंग से अपने-अपने स्थान पर रख दिया।

इन सब चीजों के अलावा वायुमण्डलीय वायु (एटमोस्फेरिक एयर) को सघन करनेवाला जो सुधरा यंत्र मोशिये ग्रिम ने बनाया था उसे भी लेजाकर वहीं छिपा दिया। मैं जिस कार्य में उसका उपयोग करना चाहता

था उसकी दृष्टि से मुझे उसमें काफी परिवर्तन करने पड़े। किन्तु घोर अध्यवसाय और लगन से मैंने अपनी सब तैयारी पूरी कर लेने में सफलता प्राप्त की। शीघ्र ही मेरा गुब्बारा भी तैयार हो गया। उसमें चालीस हजार घनफुट गैस भरने की गुंजाइश थी। तब वह मेरे सम्पूर्ण यंत्रों के साथ मुझे ऊपर ले जाएगा और साथ ही एक सौ पचहत्तर पौन्ड भार-सामग्री (बैलेस्ट) भी ले जा सकेगा। मैंने उसपर तीन-चार बार वार्निश कर दी थी और इस तरह सूती मलमल भी काफी मजबूत, टिकाऊ और काम के लायक बन गई थी।

जब सब तैयारी हो गई तब मैंने अपनी पत्नी को कसम दिलाकर प्रतिज्ञा कराई कि पुस्तक-विक्रेता के यहां पहली बार जाने से लेकर अब तक की हमारी सब कार्रवाई वह गुप्त रखेगी। अपनी ओर से मैंने वादा किया कि जितनी जल्दी लौटना सम्भव होगा मैं लौट आऊंगा। मेरे पास जो कुछ भी धन शेष था, वह सब मैंने उसे दे दिया और उससे विदा ली। उसकी ओर से मुझे कुछ भय भी न था। वह काफी चतुर थी और दुनिया में मेरी सहायता बिना भी अपना काम चला लेने में समर्थ थी। सच पूछिए तो वह मुझे सदा ही निठल्ला, घर पर बोझ, और ख्याली पुलाव पकानेवाला समझती रही। इसलिए मुझसे मुक्ति पाकर खुश ही हुई। घोर अंधेरी रात थी जब मैंने उससे विदा ली और अपने उन्हीं तीन ऋणदाताओं की सहायता से, टेढ़े-मेढ़े रास्ते से, गुब्बारे को भी उस स्थान पर पहुंचाया जहां और सब चीजें छिपाकर रखी गई थीं।

पहली एप्रिल थी। जैसाकि मैं पहले कह चुका हूं, बड़ी काली अंधेरी रात थी। आकाश में एक भी तारा नहीं दिखाई पड़ता था। बीच-बीच में हलकी फुहार पड़ जाती थी जिससे हम लोगों का कष्ट बढ़ जाता था किन्तु मुझे सबसे ज्यादा चिन्ता तो गुब्बारे की थी क्योंकि वार्निश के कारण सुरक्षित होने पर भी नमी के कारण उसका बोझ बढ़ता जा रहा था, बारूद के भी खराब हो जाने का डर था। इसलिए मैंने तीनों ऋणदाताओं को तुरन्त काम में लगा दिया। वे काम करते जाते थे और पूछते भी जाते थे

कि इन सब यन्त्रों से मैं क्या करना चाहता हूं। इतनी मेहनत करने पर वे असन्तोष भी प्रगट करते जा रहे थे और कहते जाते थे कि इस तरह तरा-बोर होकर खटने में उन्हें तो कोई फायदा दिखाई नहीं देता। मैं व्याकुल हो रहा था और सारी शक्ति से काम कर रहा था क्योंकि मेरे अनुमान में अब उन सब को शुबहा होने लगा था कि मैंने शैतान के साथ कुछ सांठ-गांठ कर रखी है। मुझे बड़ा भय लग रहा था कि कहीं वे सब मुझे अकेला छोड़कर चले न जाएं। मैंने यह कहकर उन्हें शांत किया कि यह काम पूरा होते ही मैं उनके पैसे चुका दूंगा। मेरी बातों से वे इतना समझने लगे थे कि जो कुछ मैं कर रहा हूं उससे मुझे गहरा माल हाथ लगनेवाला है। मैं उनका कर्ज़ चुका दूं तथा कुछ और भी उन्हें दे दूं, इसके सिवा मेरा क्या होता है, मैं मरता हूं या जीता हूं, इसकी उन्हें कोई चिन्ता न थी।

लगभग साढ़े चार घण्टे के परिश्रम के बाद गुब्बारा काफी फूल गया। मैंने कार को उससे बांध दिया और सारे औज़ार कार में रख दिए। गैस या वायु को सघन करनेवाला यन्त्र, पर्याप्त जल तथा अपेक्षाकृत कम वज़न रखने पर भी ज्यादा पोषण देनेवाली खाद्य-सामग्री रखना भी नहीं भूला। कार में मैंने एक जोड़ी कबूतर तथा एक बिल्ली भी रख ली। अब दिन होने वाला था इसलिए मैंने सोच लिया कि मेरे बिदा हो जाने का समय आ गया है। मैंने जान-बूझकर जलता हुआ सिगार ज़मीन पर गिरा दिया, और उसे उठाने के बहाने बिना उन सबके देखे, चुपके से, धीमी-दियासलाई को उस छोर से छुला दिया जो पीपे से ज़रा-ज़रा बाहर निकला हुआ था। बस, झट मैं कार में कूदकर बैठ गया और उस रस्सी को काट दिया जो उसे ज़मीन से बांधे हुए थी। मैं यह देखकर खुश हुआ कि तुरन्त मैं ऊपर उठने लगा हूं और मेरे साथ १७५ पौण्ड का वह सब बैलस्ट भी उठता जा रहा है। लगता था कि उससे ज्यादा बोझ होता तो भी आसानी से उठ जाता।

परन्तु मैं मुश्किल से पचास गज़ ऊपर गया हूंगा कि भयंकर विस्फोट

हुआ और तूफानी एवं भयावनी गति से धुआं, गंधक, पैर, हाथ, कंकर-पत्थर, जलती लकड़ियों एवं उत्तप्त धातुओं को लिए आग का ऐसा तूफान शोर करता मेरे पीछे दौड़ पड़ा कि मेरा कलेजा बैठ गया और असीम भय से कांपता हुआ मैं कार के पेंदे में गिर पड़ा। मैं अब समझ रहा था कि मैंने विस्फोट स्थान पर जरूरत से ज्यादा मात्रा में सामग्री का संकलन कर दिया है और अभी इससे भी भयानक धक्के का अनुभव होना बाकी है। क्षणभर भी न बीता होगा कि मुझे अनुभव होने लगा, मानों शरीर का रक्त कनपटियों की ओर दौड़ा चला जा रहा है। इसके बाद एक भयानक कांड रात के अंधकार में फट पड़ा। ऐसा लगता था मानो उसने आकाश को ही फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया हो। बाद में जब मुझे कुछ सोचने का मौका मिला तो विस्फोट के इस भयानक आघात का ठीक कारण समझ में आ गया। बात यह थी कि मेरी स्थिति विस्फोट स्थान के ठीक ऊपर थी और उसकी सर्वोच्च शक्ति के बिलकुल सीध में थी। किन्तु उस समय तो मुझे किसी तरह अपनी जान बचाने की चिन्ता थी। पहले तो गुब्बारा पिचक गया, फिर बड़ी तेजी से फूल उठा और भयानक वेग से (ऊपर जाने की जगह) एक वर्तुल में घूमने लगा और अन्त में, नशे में धुत शराबी की भांति, चक्कर खाते और लड़खड़ाते हुए, बड़े जोर से मुझे कार की रिम पर फेंक दिया। उस भयावनी ऊंचाई पर, नीचे की ओर सिर किए मैं तीन फुट लम्बी एक पतली रस्सी में लटक गया, जो संयोग से टोकरे के पेंदे की छेद से बाहर निकलकर झूल रही थी और जिसमें गिरते हुए मेरा बायां पैर सौभाग्य-वश उलझ गया था। जिस स्थिति में था उसके भय एवं खतरे की कल्पना करना असम्भव,—बिलकुल असम्भव है। मैं सांस लेने में ऐंठ-ऐंठ गया और मेरे शरीर की प्रत्येक शिरा एवं पेशी इस तरह कांपने लगी जैसे जूड़ी बुखार में कांपती है। ऐसा लग रहा था मानों आंखें अपने गड्ढे से बाहर निकली जा रही हैं। फिर मुझे जोरों की उबकाई आई और मैं बेहोश हो गया।

यह बताना असम्भव है कि मैं उस स्थिति में कितनी देर तक रहा।

फिर भी काफी देर तक रहा हूंगा क्योंकि जब मुझे कुछ-कुछ होश आया तो सूर्योदय हो रहा था। गुब्बारा आकाश में बहुत ऊंचाई पर पहुंच गया था और विस्तृत सागर पर उड़ रहा था। दूर क्षितिज में जहां तक दृष्टि जाती, कहीं कोई जमीन का टुकड़ा नहीं नजर आता था। किन्तु होश आने पर मुझे उस व्यथा का अनुभव नहीं हुआ जिसकी कल्पना ऐसी स्थिति में की जाएगी। जिस शान्ति के साथ मैं अपनी स्थिति का सर्वेक्षण कर रहा था उसमें पागलपन का बहुत अंश था। मैंने अपने हाथ आंखों तक ले जाकर देखा और मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि न जाने किस घटना के कारण शिराएं फूल गई थीं और उंगलियों के नाखून काले पड़ गए थे। उसके बाद मैंने बड़ी सावधानी के साथ अपने सिर की परीक्षा की, बार-बार उसे झटका देता रहा, सूक्ष्म दृष्टि से देखता रहा और अन्त में इस नतीजे पर पहुंचा कि मुझे जो सन्देह था वह ठीक नहीं है और मेरा सिर गुब्बारे से ज्यादा बड़ा नहीं हो गया है। फिर मैंने अपने बिरजिस (ब्रीचेज़) की जेब में हाथ डालकर देखा कि वहां से कुछ टिकियां एवं दंत-खोदनी की डिब्बियां गायब हैं। मैं उनके गायब होने के कारण के बारे में सोचता रहा, पर कुछ ठीक पता न लगने पर मुझे बड़ी परेशानी मालूम हुई। अब मुझे लगा कि मेरे बाएं घुटने की जोड़ों में दर्द हो रहा है, तब अपनी परिस्थिति की एक हलकी चेतना मेरे मानस-पट पर उदय हुई। परन्तु यह कथन कुछ विचित्र-सा लगेगा कि मैं न तो चकित था, न भयभीत था। बल्कि मैं जिस चतुराई के साथ अपने को इस गोरखधन्धे से मुक्त करने जा रहा था उसपर मुझे हर्षयुक्त सन्तोष था और एक क्षण के लिए भी मेरे मन में अपनी सुरक्षितता के प्रति शंका नहीं आई। चंद मिनटों तक मैं गहरे ध्यान में डूबा रहा। मुझे अच्छी तरह याद है कि कभी मैं अपने ओंठ बन्द कर लेता, तर्जनी को नाक के पास ले जाता और इस प्रकार मुंह बनाता जैसे आरामकुर्सियों पर आराम के साथ लेटे हुए लोग किसी महत्व के या घनिष्ट विषय पर विचार किया करते हैं। जब मेरी बुद्धि कुछ स्थिर हुई तो मैंने बड़ी सावधानी और विचार के साथ अपने हाथ पीछे पीठ की ओर मोड़े और उस

बड़े लोहे के बक्सुए को खोल दिया जो मेरे पाजामे की कमरपेटी में लगा हुआ था। इस बक्सुए में तीन दांते थे, जो जंग लग जाने के कारण, अपने अक्ष पर बड़ी कठिनाई के बाद घुमाए जा सके। किन्तु मैं बड़ी कठिनाई के बाद उन्हें बक्सुए के समकोण बना सका और यह देखकर मुझे प्रसन्नता हुई कि वे उस स्थिति में ही दृढ़ हैं। इस प्रकार मिली हुई चीज मैंने दांतों में दबा ली, और अपने गुलूबंद की गांठ खोलने में लग गया। उसे खोलने में सफल होने तक मुझे कई बार सुस्ताना पड़ा। किन्तु अन्त में मुझे सफलता मिल ही गई। अब गुलूबंद के एक सिरे पर मैंने बक्सुए को लगाया और दूसरा सिरा और अधिक सुरक्षा के ख्याल से, अपनी कमर के चारों ओर कसकर बांध दिया। अब जोरों से पेशिक बल लगाकर मैंने अपना शरीर ऊपर की ओर उछाला और पहले ही प्रयत्न में बक्सुए को कार तक फेंकने में सफल हो गया। जैसा कि मैंने सोचा था वह टोकरे के गोल रिम (मेडरे) में जाकर फंस गया।

इस समय मेरा शरीर कार की दिशा में पैंतालीस अंश का कोण बना रहा था किन्तु इससे यह नहीं समझना चाहिए कि लम्बमापक से मैं केवल पैंतालीस अंश नीचे था। इसके विपरीत, मैं अब भी क्षितिज-स्तर के लगभग बराबर था, क्योंकि जिस नई परिस्थिति में मैं था उसने कार के पेंदे को मेरे पास से आगे की ओर धकेल दिया था, और यही सबसे बड़ा और सांघातिक संकट था। फिर भी याद रखने की बात है कि जब मैं कार से गिरा था तब यदि मेरा चेहरा गुब्बारे से बाहर की ओर न होकर कहीं उसकी ओर होता या जिस रस्सी के सहारे मैं लटका हुआ था वही कार के पेंदे के छेद में से नीचे आने की जगह ऊपरी कोर पर लटकती होती, तो इन दोनों कल्पित दशाओं में मैं उतना भी न कर पाता जो मैं कर पाया हूं और हंस फाल की दुस्साहसिक यात्रा का वर्णन सदा के लिए नष्ट हो गया होता। इसलिए मुझे तो भगवान के प्रति कृतज्ञता ही प्रकट करनी चाहिए थी, यद्यपि मैं अब भी इतना मूर्ख था कि मैंने ऐसा कुछ नहीं किया और आगे कुछ भी प्रयत्न किए बिना, सनकभरी प्रसन्नता की अनोखी शान्त

मनःस्थिति में लगभग चौथाई घण्टे तक वैसे ही पड़ा रहा। फिर यह मनोभाव तेजी के साथ मिटने लगा और उसकी जगह भय, निराशा और निपट विवशता एवं विनाश का जड़ बना देनेवाला भाव आ गया। अभी तक जो खून मेरे सिर एवं कण्ठ की धमनियों में एवं शिराओं में एकत्र हो गया था और जिसने मुझे उन्माद एवं मूर्छना की स्थिति में रख छोड़ा था, वह अपने-अपने स्थान की ओर प्रत्यावर्तित होने लगा और इस प्रकार उसने खतरे का मेरा भय और बढ़ा दिया तथा उस खतरे का सामना करने के जिस साहस एवं आत्म-नियंत्रण की आवश्यकता थी, वह भी मुझसे छीन लिया। किन्तु मेरे लिए भाग्य की बात यही थी कि यह स्थिति बहुत देर तक न रही। ठीक समय पर विवशताजन्य दुस्साहस की भावना मेरी रक्षा के लिए आ गई और चीखते एवं छटपटाते हुए मैंने अपने को ऊपर उछाला और अभिलषित रिम से जोंक की भांति चिपट गया। फिर धीरे-धीरे सारे शरीर को उसके ऊपर उठाया और कांपता हुआ, सिर के बल, कार के अन्दर जा गिरा।

काफी देर के बाद मुझे इतनी चेतना आई कि गुब्बारे की मामूली बातों की ओर ध्यान दूं। अब मैंने बड़ी सावधानी से उसकी परीक्षा की और यह देखकर मुझे बड़ी सान्त्वना मिली कि उसे कोई आघात नहीं पहुंचा है। मेरे सब औजार सुरक्षित थे और बड़े सौभाग्य की बात थी कि खाद्य-सामग्री तथा बैलेस्ट सब अपनी जगह पर मौजूद थे। मैंने उन्हें इस तरह बांध दिया था कि उनके गिरने या नष्ट होने की कोई सम्भावना न थी। मैंने अपनी घड़ी की तरफ देखा; छः बजे थे। हम तेजी से ऊपर उठते जा रहे थे और बैरोमीटर देखने से मालूम हुआ कि हम इस समय धरती से पौने चार मील की ऊंचाई पर हैं। हमारे ठीक नीचे महासागर पर एक छोटा काला आयताकार-सा पदार्थ दिखाई पड़ रहा था और देखने में बच्चों के खेल वाले उस पुतले से मिलता-जुलता था जिसे डोमियो कहा जाता है। मैंने दूरबीन लगाकर देखा तो मालूम हुआ कि वह एक ब्रिटिश रणपोत है जिसपर तोपें लगी हुई हैं। इसके अलावा कहीं कुछ दिखाई नहीं

पड़ता था—बस महासागर, आकाश और सूर्य, जो अब काफी उग आया था, मात्र दिखाई पड़ रहे थे।

अब समय आ गया है कि मैं आपको अपनी इस खतरनाक यात्रा का उद्देश्य भी बता दूं। आप लोगों को याद होगा कि राटर्डम में जो संकट-ग्रस्त अवस्था पैदा हो गई थी उसमें मैंने विवश होकर आत्महत्या का निश्चय कर लिया था। उसका कारण यह नहीं था कि मुझे जीवन के प्रति विरक्ति थी, वरं यह था कि जिन कष्टों और कठिनाइयों का मैं शिकार था, वे मेरी सहन-शक्ति के बाहर थीं। उस मनःस्थिति में, जब मेरे अन्दर एक ओर जीने की इच्छा थी और दूसरी ओर मैं जीवन से ऊब भी उठा था, पुस्तक-विक्रेता के यहां मिली पुस्तक ने मेरी कल्पना को पंख दे दिए। तब मैंने एक निश्चय कर लिया। मैंने निश्चय किया कि यह दुनिया छोड़ दूंगा, फिर भी जीवित रहूंगा। मैंने यह भी तय किया कि चाहे जो कुछ हो जाए मैं चन्द्रलोक तक जाने का रास्ता निकालूंगा। जितना पागल मैं हूं उससे ज्यादा पागल न समझ लिया जाऊं, इसलिए मैं उन बातों का वर्णन करूंगा जिनके कारण मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि इस प्रकार का कार्य बहुत कठिन और खतरों से भरा होते हुए भी साहसी मनुष्य के लिए सम्भावनाओं के परे नहीं है।

मेरे लिए सबसे पहले यह जान लेना जरूरी था कि पृथिवी से चन्द्रमा की वास्तविक दूरी क्या है। दोनों ग्रहों के केन्द्रों के बीच का औसत अन्तर पृथिवी की विषुवत् रेखा का ५९.९६४३ गुना अर्थात् लगभग २३७००० मील है। मैं औसत अन्तर की बात कह रहा हूं। किन्तु चूंकि चन्द्रमा का ग्रहपथ (आर्बिट) घटने-बढ़ने वाला दीर्घवृत्त (इलिप्स) है और यह अन्तर स्वयं दीर्घवृत्त के प्रमुख अर्धव्यास के ०.०५४८४ गुने से कम नहीं होता इसलिए जब पृथिवी का केन्द्र उसके फोक्स में हो, सीध में हो और मैं उस समय चन्द्र के भूसमीपक (पेरीगी) बिन्दु पर उतरने का कोई उपाय कर सकूं तो उपर्युक्त दूरी कम हो जाएगी। अभी इसकी सम्भावना के विषय में कुछ न कहकर मैं यह बताना चाहता हूं कि इस निकटतम बिन्दु पर

दूरी में से पृथिवी के अर्धव्याम के ४००० और चन्द्रमा के अर्धव्यास के १०८० मील अर्थात् कुल ५०८० मील कम हो जाएंगे। तब २३१६२० मील ही पार करने को बच जाएंगे। मेरे विचार से यह कोई असाधारण दूरी नहीं थी। जमीन को ३० मील प्रति घण्टे की चाल से तो बार-बार पार किया गया है। इसलिए हम तो इनसे कहीं ज्यादा तेज गति की कल्पना कर सकते हैं। किन्तु इस गति के हिसाब से भी मुझे चन्द्र-तल पर पहुंचने में ३२२ दिनों से अधिक का समय नहीं लगेगा। ऐसे बहुत से लक्षण थे जिनसे मुझे विश्वास हो गया था कि हमारी औसत चाल तीस मील प्रति घण्टे से कहीं ज्यादा होगी और उनकी गहरी छाप मेरे मन पर अंकित हो गई। आगे मैं उनका विस्तारपूर्वक वर्णन करूंगा।

विचार करने की दूसरी बात इससे ज्यादा महत्वपूर्ण थी। बैरोमीटर के संकेतों से हमें यह जानकारी प्राप्त हुई है कि पृथ्वी-तल से ऊपर जाने में १००० फुट की ऊंचाई पर हम वायुमण्डलीय वायु-पुंज का तीसवां भाग नीचे छोड़ देते हैं और १८००० फुट की ऊंचाई पर पृथ्वीमण्डल को आवृत करनेवाली वायुसमूह का कम-से-कम आधा भाग नीचे छूट जाता है। हिसाब लगाकर यह भी देखा गया है कि पृथिवी के व्यास के सौवें भाग—अर्थात् ८० मील—की ऊंचाई के ऊपर हवा की सूक्ष्मता इतनी बढ़ जाती है कि कोई प्राणी जी नहीं सकता और वायुपरीक्षण के जो भी सूक्ष्म से सूक्ष्म यंत्र हमें उपलब्ध हैं उनसे ठीक-ठीक इस बात का पता लगा लेना कठिन ही जान पड़ता है कि वहां वायु का अस्तित्व है या नहीं। किन्तु मुझे यह भी मालूम था कि यह हिसाब-किताब वायु-तत्वों के हमारे प्रायोगिक ज्ञान तथा पृथ्वी के आस-पास प्राप्त वायु का प्रसरण एवं संकुचन करने-वाली यांत्रिक विधियों पर निर्भर है। इसके साथ ही हम यह भी मान बैठे हैं कि पृथिवी-तल से किसी निश्चित अप्राप्य अन्तर पर जाकर प्राणि-जीवन अपने में परिवर्त्तन करने की शक्ति ही खो देता है। ये सब तर्क और तथ्य एक-दूसरे के अनुरूप ही हैं। तब तक आदमी अधिक से अधिक २५००० फुट की ऊंचाई तक पहुंच सका था। वातावरण के अस्सी मील के विस्तार

की दृष्टि से भी यह दूरी बहुत कम है। इसलिए मैं इस विचार से विरत नहीं हो सका कि इस विषय में सन्देह की काफी गुंजाइश है और कल्पना के लिए बहुत सम्भावनाएं हैं।

किन्तु ऊपर की उड़ान में ज्यों-ज्यों हम ऊंचे उठते हैं, ऐसा नहीं होता कि वायु का घनत्व ऊंचाई के अनुपात में ही कम हो (ऊपर के उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है)। एक निश्चित ऊंचाई से और ऊपर की ऊंचाई तक जाने में कमी का यह अनुपात घटता जाता है। इसलिए चाहे हम जितने ऊपर जाएं, ऐसी कोई सीमा-रेखा नहीं हो सकती जिसके पार वायुमण्डल का अस्तित्व ही न हो। मैंने मन में तर्क किया कि उसका अस्तित्व (ऊंचे से ऊंचे स्थान पर भी) होना ही चाहिए—भले वह अत्यन्त सूक्ष्म हो।

दूसरी ओर मैं यह भी जानता था कि ऐसे तर्कों का अभाव नहीं है जिनके द्वारा वायुमण्डल के अस्तित्व की एक निश्चित और यथार्थ सीमा-रेखा प्रमाणित की गई है और बताया गया है कि उस सीमा-रेखा के आगे किसी प्रकार की वायु का अस्तित्व नहीं है। किन्तु जो लोग इस प्रकार का विचार रखते हैं वे परिस्थिति की एकाध बात का विस्मरण कर देते हैं। मुझे लगता था कि यद्यपि उनके विचारों का निश्चित रूप से खण्डन करना तो सम्भव नहीं है परन्तु इस विषय में गम्भीर अनुसन्धान की आवश्यकता अवश्य है। अपने सूर्यसमीपक वा अनुसूर्य विन्दु (पेरीहोलियोन) पर एक-धूमकेतु के क्रमिक आगमन के बीच के अन्तर की तुलना करने और तुलना में ग्रहों की आकर्षणजन्य बाधाओं के लिए छूट देने पर मालूम पड़ता है कि ये अवधियां धीरे-धीरे घटती जा रही हैं। इसका अर्थ यह है कि धूमकेतु के दीर्घवृत्त का मुख्य अक्ष (ऐक्सिस) धीमी गति से परन्तु निरन्तर छोटा होता जा रहा है। अपने परिक्रमा-पथ के क्षेत्रों में व्याप्त अत्यन्त दुर्लभ वायविक माध्यम से धूमकेतु को जो प्रतिरोध प्राप्त होता है उसे देखते हुए तो ऐसा ही होना भी चाहिए। इससे स्पष्ट है कि उसकी गति को घटाने में ऐसा माध्यम उसके अपकेन्द्री बल (सॅट्रीफ्यूगल फोर्स) को

दुर्बल कर देता है और अभिकेन्द्री बल (सेंट्रीपेटल फोर्स) में वृद्धि कर देता है। इसी को दूसरे शब्दों में यों भी कह सकते हैं कि सूर्य का आकर्षण निरन्तर अधिकाधिक शक्तिमान होता जाएगा और प्रत्येक चक्कर में धूमकेतु निकट खिंचता जाएगा। जो अन्तर होते हैं उन्हें और किसी तरह से नहीं समझाया जा सकता। किन्तु इसके साथ एक बात और है। उसी धूमकेतु की नीहारमयता का वास्तविक व्यास सूर्योन्मुख होने पर तीव्रगति से संकुचित होता हुआ और सूर्योच्च बिन्दु (एफेलियन) की ओर जाने पर उसी तेजी के साथ बढ़ता हुआ दिखाई पड़ता है। तब क्या मोशिये वाल्ज सहित मेरा यह कल्पना कर लेना उचित नहीं था कि आयतन (वोल्यूम) के इस बाह्य घनीकरण का उद्गम उसी वायवीय माध्यम का संपीड़न या दबाव (काम्प्रेशन) है जिसका उल्लेख मैं पहले कर चुका हूं, और जो सूर्य से अपनी निकटता के अनुपात में ही सघन होता है? अब मसूराकार उस प्रपंच पर भी ध्यान देने की आवश्यकता थी जिसे राशिचक्रीय प्रकाश (जोडिकल लाइट) कहा जाता है। यह प्रकाश, जो उष्णकटिबन्धीय देशों में बहुत स्पष्ट दिखाई पड़ता है और जिसे किसी उल्का का प्रकाश होने का भ्रम नहीं हो सकता, क्षितिज से ऊपर की ओर तिरछे फैला रहता है और सामान्यतः सूर्य की विषुवत् रेखा का अनुसरण करता है। इन बातों का विचार करने पर मुझे ऐसा लगा कि किसी न किसी प्रकार का सूक्ष्म वायुमण्डल सूर्य से बाहर की ओर कम से कम शुक्र के परिक्रमा-पथ तक, तो फैला ही है। मुझे तो विश्वास था कि वह उसके परे भी सीमातीत दूरी तक होगा। मैं यह कल्पना नहीं कर पाता था कि यह (वायु-मण्डल का) माध्यम धूमकेतु के दीर्घवृत्त या सूर्य के आस-पास तक सीमित है। इसके विपरीत मेरे लिए यह कल्पना कर लेना सरल था कि वह समस्त सौर मण्डल में व्याप्त है।

इस दृष्टिकोण को ग्रहण कर लेने के बाद, मुझे कोई और हिचकिचाहट नहीं रह गई। मैंने मान लिया कि मुझे अपनी यात्रा में तत्वतः वही वायुमण्डल प्राप्त होगा जो पृथिवी-तल पर प्राप्त है और मोशिये ग्रिम के

विचित्र यन्त्र की सहायता से मैं श्वास लेने के उपयुक्त सघनता किसी भी प्रकार की वायु को प्रदान कर सकूंगा। इससे चन्द्रलोक की यात्रा की एक प्रमुख कठिनाई दूर हो जाएगी। उस यंत्र को अपने विशेष तात्पर्य के लिए उपयोगी बनाने में मैंने कुछ धन लगाया था और घोर परिश्रम किया था और यदि किसी तरह मैं विवेक-सम्मत अवधि में अपनी यात्रा पूरी कर सकूं तो उसका सफल उपयोग कर लेने का मुझे विश्वास था। इससे उसी यात्रा की गति के सवाल पर मैं फिर पहुंच गया।

यह सत्य है कि पृथिवी से अपनी उड़ान की प्रथम अवस्था में गुब्बारे काफी वेग से ऊपर उठते हैं। यह ऊपर उठने की शक्ति गुब्बारे में भरी गैस के विशेष हल्केपन के कारण होती है। अन्दर की गैस बाहरी वातावरण की हवा के मुकाबले बहुत हल्की होती है। इसलिए जब वह ऊपर जाता है और ऊपर के वायुमण्डल की सघनता घटती जाती है तो उसके मूलवेग में वृद्धि की कल्पना करना उचित नहीं जान पड़ता। दूसरी ओर उड़ान के लिखित विवरणों में मुझे कोई ऐसी बात नहीं मिली जिससे ऊपर जाने पर गति के कम हो जाने का प्रमाण मिलता हो, यद्यपि होना ऐसा चाहिए, क्योंकि यदि और कोई बात न भी हो तो सामान्य गुब्बारों की बनावट के कारण अन्दर की कुछ न कुछ गैस तो निकलती ही जाती है। इसलिए गैस की इस निकासी के कारण कोई गति बढ़ानेवाली शक्ति हो भी तो उसका सन्तुलन हो जाता है। अब मैं यह सोचने लगा कि मान लो जिस वायवीय माध्यम की मैंने कल्पना की है वह मुझे यात्रा पथ में मिलता गया और वह तत्वतः उस वायु के समान ही रहा जिसे हम वायुमण्डलीय वायु (ऐटमास्फैरिक एयर) कहते हैं, तो फिर वह चाहे जैसी विरलता या सूक्ष्मता की स्थिति में हो उससे मेरी ऊपर जाने की शक्ति में कोई विशेष रुकावट नहीं आएगी क्योंकि गुब्बारे की गैस उस अवस्था में भी केवल ओषजन (आक्सिजन) एवं नेत्रजन (नाइट्रोजन) के किसी मिश्रण की अपेक्षा हलकी ही रहेगी। फिर ज्यों-ज्यों हम ऊपर जाएँगे, (पृथ्वी की) गुरुत्वाकर्षण शक्ति कम होती जाएगी, इससे गुब्बारे का वेग

तीव्र गति से बढ़ता ही जाएगा, और मैं अन्त में उन सुदूर क्षेत्रों में पहुंच जाऊंगा जहां पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का स्थान चंद्रमा की आकर्षण शक्ति ले लेगी। इन सब बातों पर विचार करके मैंने चालीस दिन से अधिक खाद्य सामग्री रखना ठीक नहीं समझा।

किन्तु अभी एक और कठिनाई ऐसी रह गई थी जिसके कारण मेरे मन में कुछ परेशानी थी। यह देखा गया था कि बहुत ज्यादा ऊंचाई पर गुब्बारे की उड़ान में श्वास-क्रिया में तो तकलीफ होती ही है किन्तु शरीर एवं सिर में भी बड़ी बेकली का अनुभव होता है। प्राय: नाक से खून भी गिरने लगता है और दूसरे भी चिन्ताजनक लक्षण दिखाई पड़ते हैं। ज्यों-ज्यों हम अधिकाधिक ऊंचे होते जाते हैं, यह कठिनाई बढ़ती जाती है। यह एक चौंकानेवाली बात थी। तब क्या यह सम्भव नहीं है कि ये लक्षण अनिश्चित सीमा तक बढ़ते जाएं, यहां तक की मृत्यु में उनका अन्त हो? विचार के बाद, अन्त में मैं इस निश्चय पर पहुंचा कि ऐसा नहीं हो सकता। जिन लक्षणों का ऊपर वर्णन किया गया है वे तो इसलिए पैदा होते हैं कि शरीर-तल पर जिस वायुमण्डलीय दबाव के हम अभ्यस्त होते हैं वह क्रमश: दूर होता जाता है जिसके फलस्वरूप बाह्य रक्तवाहिनियां फूल उठती हैं। वे इसलिए नहीं पैदा होते कि हमारी जीवन-प्रणाली का कोई निश्चित विघटन हो जाता है। जैसे श्वासक्रिया में जो कठिनाई होती है उसका कारण यह है कि वायवीय घनत्व हृदय-प्रकोष्ठ के रक्त को नवीन बनाने में रासायनिक रूप से अपर्याप्त होता है। जब तक नवीन रक्त लानेवाली यह स्थिति पैदा न हो तब तक मैं नहीं समझता कि रिक्त या वातशून्य स्थान में भी जीवन क्यों सम्भव नहीं है, क्योंकि सीने का प्रसरण और संकुचन, जिसे सामान्यत: सांस लेना कहा जाता है, एक शुद्ध पैशिक क्रिया है, और यह श्वसन-क्रिया का कारण है, परिणाम नहीं। एक शब्द में यों कह सकते हैं कि मैंने सोचा कि ज्यों-ज्यों शरीर वायवीय दबाव के अभाव का अभयस्त होता जाएगा त्यों-त्यों वेदना की ये अनुभूतियां कम होती जाएंगी। अपने शरीर की लौहोपम दृढ़ता के कारण भी

मुझे विश्वास था कि मैं उन कठिनाइयों को सहन कर लूंगा।

इस प्रकार मैंने श्रीमानों के सामने सब नहीं तो कुछ ऐसी बातें रख दी हैं जिनके कारण मैंने चन्द्रलोक की यात्रा करने की योजना बनाई थी। अब मैं यह बताऊंगा कि मैंने अपने देखने में सनक-से लगनेवाले विचारों के अनुसार जो प्रयत्न किया और जो मानव जाति की गाथाओं में अतुलनीय हैं उसका परिणाम क्या हुआ।

जब मैं पौने चार मील की उस ऊंचाई पर पहुंच गया, जिसका जिक्र पहले कर चुका हूं, तो मैंने कार में रखे हुए कुछ पंख बाहर फेंक दिए और उससे मुझे मालूम हुआ कि मैं अब भी काफी तेजी से ऊपर जा रहा हूं, इसलिए बैलेस्ट (अतिरिक्त भार) को फेंकने या कम करने की कोई आवश्यकता न थी। इस जानकारी से मुझे खुशी हुई क्योंकि मैं अपने साथ अधिक से अधिक बोझ ले जाना चाहता था जिसका कारण आगे बताया जाएगा। मुझे अभी तक किसी प्रकार की शारीरिक असुविधा का अनुभव नहीं हो रहा था; मैं बड़ी स्वतन्त्रता के साथ सांस ले रहा था और मेरे सिर में भी किसी प्रकार की पीड़ा नहीं थी। बिल्ली बड़े शान्त-भाव से मेरे कोट पर, जिसे मैंने निकालकर रख दिया था, लेटी हुई थी और स्थिरता के साथ कबूतरों को देख रही थी। इन कबूतरों के पैर मैंने इसलिए बांध रखे थे कि वे उड़ न जाएं। वे चावल के दाने, जिन्हें मैंने कार के पेंदे पर फैला दिया था, चुगने में व्यस्त थे।

छः बजकर बीस मिनट हुए थे जब बैरोमीटर से मालुम हुआ कि मैं २६,४०० फुट अर्थात् ठीक-ठीक पांच मील की ऊंचाई पर हूं। मेरे सामने असीम सम्भावनाओं के द्वार खुल गए थे। मुझे सम्पूर्ण पृथिवी-तल का सौलहसौंवां भाग दिखाई पड़ रहा था। सागर दर्पण की भांति स्थिर लगता था, यद्यपि दूरबीन लगा कर देखने पर मालूम हुआ कि वह अत्यन्त विक्षुब्ध अवस्था में है। पूर्व की ओर चले जाने के कारण अब वह जहाज भी दृष्टि से ओझल हो गया था। अब बीच-बीच में मेरे सिर, विशेषतः कनपटियों में, उग्र पीड़ा का अनुभव होने लगा, किन्तु अब भी काफी स्वतंत्रतापूर्वक मैं सांस

ले रहा था, बिल्ली और कबूतरों को कोई असुविधा होती नहीं जान पड़ती थी।

जब सात बजने में बीस मिनट बाकी थे, गुब्बारे ने सघन घनमाला के बीच प्रवेश किया। इससे मुझे बड़े संकट का सामना करना पड़ा क्योंकि मेरा सघनकारी यंत्र क्षतिग्रस्त हो गया और मैं बुरी तरह भीग गया। यह एक अनोखी टक्कर थी, क्योंकि मुझे यह सम्भावना नहीं थी कि इतनी अधिक ऊंचाई पर इस प्रकार के बादल स्थिर रह सकते है। मैंने अधिभार (बैलेस्ट) के पांच पौण्ड वाले दो थैले फेंक दिए। अब भी मेरे पास एक सौ पैंसठ पौण्ड भार था। ऐसा करते ही मेरी कठिनाई दूर हो गई, क्योंकि मैंने तुरन्त देखा कि मेरी उठान की गति में काफी वृद्धि हो गई है। बादलों को छोड़ने के कुछ ही देर बाद एक छोर से दूसरे छोर तक बिजली तड़क उठी और उस विस्तृत नभ में जलते और दहकते हुए अंगारपुंज की भांति तीव्र-प्रकाशधारा फैल गई। याद रखना चाहिए कि यह घटना दिन के अच्छे-खासे प्रकाश के बीच हुई। यदि ऐसा ही दृश्य रात के अन्धकार में दिखाई पड़ा होता तो उसके गाम्भीर्य की कल्पना भी न की जा सकती। शायद उनमें नरक को अपनी योग्य प्रति-मूर्ति के दर्शन हो जाते। दिन की इस घटना के समय भी, जब मैं नीचे की मुंहफाड़ी रिक्तता में झांक रहा था और उस भयानक अगम्य अग्नि की भयावनी कन्दराओं एवं खाइयों में मेरी कल्पना छुपती फिरती थी, मेरे रोंगटे खड़े हो गए। मैं बाल-बाल बच गया था। यदि गुब्बारा और थोड़ी देर तक बादलों में रहा होता, यानी भीग जाने पर यदि मुझे कुछ भार फेंक देने की बात न सूझी होती या मैंने उसमें विलम्ब किया होता तो हमारा विनाश अनिवार्य था। यद्यपि ऐसे संकटों पर लोग बहुत ही कम विचार करते हैं किन्तु यही शायद सबसे बड़े संकट हैं जिनका सामना गुब्बारों को करना पड़ता है। जो भी हो, अब तक मैं इतनी ज्यादा ऊंचाई पर पहुंच गया था कि इस विषय में चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं थी।

अब मैं बड़ी तेजी के साथ ऊपर उठ रहा था, और सात बजे तक बैरोमीटर ने बताया कि हम साढ़े नौ मील की ऊंचाई पर पहुंच गए हैं।

अब सांस लेने में मुझे बड़ी तकलीफ होने लगी। सिर में भी बहुत दर्द था। गालों पर मुझे कुछ आर्द्रता का अनुभव हुआ ; बाद में पता चला कि वह खून है और कर्णपटह से तेजी के साथ स्रवित हो रहा है। आंखों में भी बड़ी बेचैनी का अनुभव हो रहा था। उनपर अपने हाथ फेरकर मैंने जाना कि वे नेत्र-गह्वर से काफी बाहर निकल आई हैं। कार के सब पदार्थ, यहां तक कि गुब्बारा भी, मेरी दृष्टि में विकृत नजर आ रहे थे। मैंने इन लक्षणों की कल्पना भी न की थी, इसलिए मुझे कुछ घबराहट होने लगी। इस समय, मैंने मूर्खता-वश और बिना कुछ विचार किए बेलेस्ट या अधिभार से पांच-पांच पौण्डवाले तीन थैले कार से बाहर फेंक दिए। इससे उड़ान की गति इतनी बढ़ गई कि गुब्बारा शीघ्र ही वायुमण्डल के बड़े ही विरल स्तर पर जा पहुंचा। परिणाम मेरे अभियान के लिए लगभग सांघातिक हुआ। एकाएक मुझमें ऐंठन होने लगी जो पांच मिनट से ज्यादा समय तक रही और जब वह कुछ-कुछ कम हुई तब भी मैं लम्बे अंतरालों के बाद सांस ले पाता था, और वैसा करते हुए भी मेरा दम फूलता था। मेरे नाक और कानों से बराबर काफी खून निकल रहा था। आंखों से भी जरा-जरा-सा खून झिरता था। कबूतर भी बड़ी तकलीफ में मालूम पड़ते थे और निकल भागने के लिए छटपटा रहे थे। बिल्ली बड़े करुण स्वर में म्याऊं-म्याऊं करती थी; उसकी जीभ मुंह के बाहर निकली पड़ती थी और वह कार में इधर से उधर लड़खड़ाती फिर रही थी जैसे उसपर किसी विष का प्रभाव हो। अब इतने विलम्ब से मैंने समझा कि अधिभार को फेंकने में मैंने बड़े उतावलेपन का अपराध कर डाला है। इससे मेरी घबराहट और बढ़ गई। अब मैंने समझ लिया कि मौत के सिवा और कुछ होना-जाना नहीं है और मेरी मृत्यु बस चन्द मिनटों में हो जाएगी। जो शारीरिक पीड़ा मुझे हो रही थी उसने मुझे अपने जीवन की रक्षा के लिए कोई प्रयत्न करने के अयोग्य बना दिया था। अब मुझमें चिन्तन की शक्ति लगभग समाप्त हो चुकी थी और मेरी शिरोवेदना की तड़क बढ़ती ही जाती थी। मुझे लग रहा था कि थोड़ी ही देर में मेरे होश-हवाश जवाब

दे जाएंगे। यहां तक कि नीचे उतरने के विचार से मैंने एक कपाट-रज्जु (किवाड़ में लगी रस्सी) को पकड़ लिया। किन्तु इसी समय मैंने अपने तीन ऋणदाताओं के साथ जो करतूत की थी उसकी याद आ गई। राटर्डम लौटने पर मेरी जो गत होगी, उसका ख्याल कर मैं उस समय रुक गया। मैं कार के अधोभाग में लेटा हुआ अपनी शक्तियों को एकत्र करने की चेष्ठा करने लगा। मैंने निश्चय किया कि अपना कुछ खून निकाल देना चाहिए। नश्तर के लिए कोई कुन्तिका पास में न होने के कारण मैंने अपने कलमतराश के फल-धार से अपनी दाहिनी भुजा की एक शिरा काट दी। खून निकलना शुरू होते ही मुझे राहत मालूम होने लगी, और आधा कटोरा खून निकलने तक तो अधिकांश निकृष्ट लक्षण बिलकुल दूर हो गए। फिर भी मुझे तुरन्त अपने पैरों पर उठ खड़ा होना ठीक नहीं लगा। अपनी भुजा पर पट्टी बांधकर मैं लगभग पंद्रह मिनट तक चुपचाप पड़ा रहा। इसके बाद मैं उठा तो देखा कि मैंने अपनी उड़ान के पिछले सवा घण्टे में जो वेदना-व्यथा भोगी थी, उससे मैं मुक्त हो गया हूं। किन्तु सांस लेने की कठिनाई बहुत थोड़ी मात्रा में ही कम हुई। इसलिए मैं समझ गया कि शीघ्र ही मुझे अपने संघनक (कण्डेंसर) के उपयोग की आवश्यकता पड़ेगी। इस बीच जो बिल्ली पर मेरी नजर गई तो मैंने देखा कि वह फिर सुरक्षित रूप से मेरे कोट पर लेटी है। मैंने असीम आश्चर्य के साथ यह भी देखा कि मेरी बीमारी के अवसर का लाभ उठाकर उसने तीन छोटे-छोटे बच्चों को जन्म दिया है। यात्रियों की यह वृद्धि मेरे लिए बिल्कुल अप्रत्याशित थी, किन्तु इससे मुझे खुशी ही हुई। इससे एक ऐसी कल्पना के सत्य की जांच का अवसर मुझे मिलेगा जिसके कारण इस उड़ान की चेष्टा के लिए मैं सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ था। मैंने कल्पना की थी कि पृथ्वी-तल पर जो वायवीय दबाव पाया जाता है उसे सहने में अभ्यस्त हो जाने के कारण ही तल के ऊपर ज्यादा दूरी पर प्राणी को वेदना का अनुभव करना पड़ता है। यदि बिल्ली के बच्चों को भी अपनी मां के जितनी ही तकलीफ होती है तब तो मेरा सिद्धान्त गलत हो जाएगा किन्तु यदि ऐसा नहीं होता तो मैं

उसे अपने विचार का प्रबल समर्थन मानूंगा।

आठ बजे तक मैं पृथ्वी-तल से सचमुच ही सत्रह मील की ऊंचाई पर पहुंच चुका था। इससे स्पष्ट हो गया कि मेरी उड़ान की गति न केवल बढ़ती पर है बल्कि यह भी कि यदि मैं अधिभार का कुछ अंश फेंक न देता तो भी कुछ-न-कुछ अंश में वृद्धि बनी रहती। थोड़े-थोड़े अन्तर पर मेरे सिर और कान का दर्द, शिद्दत के साथ, लौट आता था, और नाक से भी बीच-बीच में खून बहने लगता था, किन्तु सब मिलाकर मुझे उससे कहीं कम कष्ट था, जितने की आशा की जाती थी। किन्तु क्षण-क्षण सांस लेना अधिकाधिक कठिन होता जा रहा था और हर बार अन्दर सांस खींचने पर छाती में कष्टप्रद ऐंठन होने लगती थी। अब मैंने संघनक यन्त्र का बण्डल खोल डाला और तुरन्त उसे उपयोग करने के लिए तैयार कर लिया। उस समय पृथ्वी का दृश्य बड़ा सुन्दर लग रहा था। पश्चिम, उत्तर और दक्षिण की ओर जहां तक मेरी दृष्टि जाती थी बाहर देखने में प्रशान्त सागर का सीमातीत विस्तार फैला हुआ था, जो क्षण-क्षण अधिकाधिक नीलवर्ण तथा किंचित् उन्नतोदर होता जा रहा था। पूर्व में बहुत दूर, यद्यपि पूर्णतः दृश्य, ग्रेट ब्रिटेन के द्वीपसमूह फैले हुए थे। उस ओर फ्रांस एवं स्पेन का समस्त तट-भाग तथा अफ्रीका महाद्वीप के उत्तरी भाग का एक अंश भी दिखाई पड़ रहा था। व्यक्तिगत भवनों का कोई चिह्न तक नहीं था, और मानव की अत्यन्त गौरवशालिनी नगरियां पृथ्वी-तल से बिल्कुल अदृश्य हो गई थीं। जिब्राल्टर की पहाड़ी से, जो एक धुंधले बिन्दु के समान मालूम पड़ती थी, कृष्ण भूमध्यसागर पूर्व की ओर जहां तक मेरी दृष्टि जा सकती थी वहां तक फैला हुआ था और अन्त में उसका समस्त जल जाकर मानों क्षितिज के गर्भ में गिर पड़ता था। सागर के बीच में, जगह-जगह चमकते हुए द्वीप ऐसे लगते थे जैसे आकाश में तारे छिटके हुए हों। मैंने तो उकडूं होकर प्रबल महाप्रपात की प्रतिध्वनि सुनने को अपने कान भी लगा दिए। ऊपर आकाश बिलकुल काला हो रहा था और उसमें तारे चमकते हुए दिखाई पड़ते थे।

इस समय तक कबूतरों को ज्यादा तकलीफ होने लगी थी। मैंने निश्चय कर लिया कि उन्हें मुक्त कर देना चाहिए। पहले मैंने एक को खोला, वह छींटदार धूसर रंग का बड़ा सुन्दर कपोत था। उसे टोकरे के रिम पर रख दिया। वह बहुत परेशान दीख पड़ा, अपने चारों ओर उत्कण्ठित भाव से देखता रहा, अपने डैने भी फड़फड़ाए, किन्तु कार से जाने को तैयार नहीं हुआ। अन्त में मैंने उसे हाथ से पकड़कर गुब्बारे से ५-६ गज की दूरी पर फेंक दिया। मेरी आशा के अनुरूप उसने नीचे जाने का कोई प्रयत्न नहीं किया, बल्कि लौट आने के लिए प्रबल चेष्टा करने लगा। वह अत्यन्त करुण-ध्वनि से चीख भी रहा था। फिर उसका सिर उसकी छाती पर लटक गया और वह मरा हुआ कार में गिर पड़ा। दूसरा इतना अभागा नहीं निकला। प्रत्यावर्त्तन के लिए वह अपने साथी का अनुकरण न करने पाये, इसलिए मैंने उसे अपनी सारी शक्ति के साथ नीचे की ओर फेंका, और मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि वह अपने पखों का स्वाभाविक रूप से उपयोग करता हुआ बड़ी तीव्र गति से नीचे की ओर जा रहा है। थोड़ी ही देर में वह आंखों से ओझल हो गया और मुझे कोई सन्देह नहीं है कि वह सुरक्षित घर पहुंच गया होगा। बिल्ली अब तक अपनी बीमारी से बहुत-कुछ मुक्त हो चुकी थी। उसने उस मृत कबूतर पर डटकर हाथ साफ किया और बड़े सन्तोषपूर्वक सो गई। उसके बच्चे बड़े चंचल थे और अभी तक उनमें किसी प्रकार की विकलता नहीं दिखाई पड़ती थी।

सवा आठ बजे तक मेरी यह हालत हो गई कि मैं असह्य वेदना का अनुभव किए बिना सांस भी नहीं ले पाता था। तुरन्त ही मैंने संघनक यंत्र (कनडेंसर) को कार में फिट किया। आप लोगों को याद होगा कि इस यंत्र को लगाने में मेरा पहला उद्देश्य तो यह था कि उस सूक्ष्म या विरल वायुमण्डल से मैं बिलकुल सुरक्षित और अलग रहूं जिसमें मैं इस समय यात्रा कर रहा था और मेरे तथा कार के चतुर्दिक एक ऐसा आवरण पैदा हो जाए जिसमें बाहर की हवा अन्दर न आ सके और जब मैं चाहूं तभी अपने श्वास लेने योग्य बाहरी वायु को सघन करके अन्दर ले सकूं। इस उद्देश्य

को ध्यान में रखकर मैंने एक बहुत ही सुदृढ़, एयरटाइट—वायुरुद्ध—परन्तु प्रसरणशील बैग तैयार किया था। यह बैग वृहदाकार था और इसी में सम्पूर्ण कार रखी हुई थी। मतलब यह कि हमारे चारों ओर वह बैग फैला हुआ था।

इस थैले में मोटे पर साफ शीशे के तीन फलक लगे हुए थे, जिनके द्वारा प्रत्येक क्षैतिज दिशा में मैं बिना कठिनाई के देख सकता था। अधोभाग में भी इसी तरह की एक चौथी खिड़की थी, जो कार के पेंदे के छिद्र के सामने बनी हुई थी। इससे मैं लम्बवत् नीचे भी दृष्टि डाल सकता था। हां, ऊपर की ओर मैं कोई ऐसी व्यवस्था नहीं कर पाया था क्योंकि वहां उस खोल की तहें बांधी गई थीं। इसलिए मैं शीर्षविन्दु की ओर कुछ देख नहीं सकता था परन्तु यदि मैंने वहां कोई खिड़की बनाई भी होती तो उस गुब्बारे के कारण, जिससे हम लटके हुए थे, ऊपर की ओर कुछ यों भी न दिखाई पड़ता।

इनमें से एक पार्श्व—वातायन के लगभग एक फुट नीचे आठ इंच व्यास का एक गोल छिद्र था; इसमें पीतल की एक रिम लगाकर अन्दर की ओर पेंच से कस दी गई थी। इस रिम वायुसंघनक (कण्डेंसर) का लम्बा ट्यूब पेंच पर लगा हुआ था; यंत्र का मुख्य भाग थैले या खोल के अन्दर ही था। इस ट्यूब के सहारे बाहर की विरल वायु संघनक यंत्र के रिक्त अंश (वैकुअम) में आती थी और वहां सघन होकर, हमारे श्वास लेने के योग्य बनकर अन्दर प्रवेश करती थी। और हमारे कक्ष में वर्तमान वायु में मिल जाती थी। किन्तु ऐसे बन्द स्थान में हवा का फेफड़ों से बार-बार सम्पर्क होने के कारण थोड़ी देर में दूषित हो जाना स्वाभाविक था। इसलिए कार के अधोभाग से उसे बाहर निकाल देने की व्यवस्था भी थी। अन्दर की हवा एकदम न निकल जाए, और निर्वातता की स्थिति न पैदा हो जाए, इस भय से दूषित हवा को बाहर निकालने की क्रिया बहुत धीरे-धीरे करनी पड़ती थी। हम वाल्व को कुछ ही क्षणों के लिए खोलते थे, और फिर उसे बन्द कर देते थे। उधर संघनक से उसी परिमाण वायु अन्दर लेते रहते थे।

जब मैं यह सब व्यवस्था कर चुका और कक्ष को उपर्युक्त रीति से वायु-पूर्ण कर चुका तो नौ बजने में केवल दस मिनट रह गए थे। उपर्युक्त व्यवस्था करते समय सांस लेने में मुझे महान कष्ट का सामना करना पड़ा और मुझे बड़ा पश्चात्ताप हो रहा था कि ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय को अंतिम क्षण तक मैं टालता क्यों रहा। किन्तु अन्त में सब व्यवस्था होगई और शीघ्र ही मैं अपने अविष्कार का लाभ उठाने लगा। एक बार फिर मैंने स्वतन्त्रता और सरलतापूर्वक सांस ली, और क्यों न लेता ? मुझे यह देखकर भी हर्ष-युक्त आश्चर्य हुआ कि अभी तक जिन भयंकर वेदनाओं से मैं पीड़ित था, वे बहुत-कुछ दूर हो गई हैं। अब सिर्फ सिर में हलका-हलका दर्द भर रह गया था; इसी प्रकार कलाइयों, टखनों एवं गले में जरा-जरा सी सूजन भर रह गई। पिछले दो घन्टों से जो कष्ट मैं सहन करता रहा था वह केवल त्रुटिपूर्ण श्वासक्रिया का प्रभाव था।

जब नौ बजने में बीस मिनट बाकी थे—"मतलब संघनक लगाने और कक्ष का मुंह बन्द करने के कुछ देर पहले बैरोमीटर का पारा अपनी छोर पर पहुंच गया था। उसे देखने से पता चला कि मैं १,३२,००० फुट अर्थात् पच्चीस मील की ऊंचाई पर उड़ रहा हूं। उस समय मुझे कुल पृथिवी मंडल का तीन सौ बीसवां भाग दिखाई पड़ रहा था। नौ बजे पूर्व दिशा में स्थित सारी भूमि मेरी दृष्टि से ओझल हो गई। उसी समय मुझे यह भी पता चला कि गुब्बारा उत्तर-पश्चिम की ओर तेजी से जा रहा है। यद्यपि मेरी दृष्टि के सामने बार-बार इधर-उधर तैरते फिरने वाले बादलों के कारण बाधाएं आ जाती थीं, फिर भी महासागर की उन्नतोदर स्थिति बिल्कुल स्पष्ट थी। मुझे अब पर्यवेक्षण से यह भी ज्ञात हुआ कि हलके-से-हलका वाष्पपिण्ड भी समुद्र-तल से दस मील के ऊपर नहीं उठ सकता।

साढ़े नौ बजे मैंने वाल्व से मुट्ठी-भर पंख बाहर फेंकने का प्रयोग किया। मेरी आशा के अनुरूप वे तिरे नहीं, बल्कि बंदूक की गोली की भांति सीधे नीचे चले गए। वे एक साथ तीव्र गति से नीचे जा रहे थे और कुछ ही सेकण्डों में वे दृष्टि से ओझल हो गए। पहले तो मैं समझ ही न सका कि

इस असाधारण दृश्य से क्या निष्कर्ष निकालूं —यह विश्वास करना तो मेरे लिए कठिन था कि मेरी उड़ान की गति अकस्मात् बहुत अधिक बढ़ गई है। किन्तु शीघ्र ही मुझे पता चल गया कि अब वायुमण्डल बहुत ही विरल और सूक्ष्म हो गया है और वह पंखों का बोझ संभालने में भी अक्षम है और वे सचमुच ही तीव्र गति से नीचे चले जा रहे हैं। मुझे उनके अवरोहण तथा अपने आरोहण के संयुक्त वेग पर महान् आश्चर्य हो रहा था।

दस बजे तक मुझे मालूम होने लगा कि तुरन्त ध्यान देने योग्य कोई काम मेरे पास नहीं है। सब कुछ सरलता-पूर्वक अपने-आप हो रहा था। मेरा विश्वास था कि गुब्बारा प्रतिक्षण बढ़ती हुई गति से ऊपर जा रहा है, यद्यपि इस वृद्धि का पता लगाने का कोई साधन मेरे पास नहीं था (बैरोमीटर का पारद-संकेतांक बहुत पहले अपनी सीमा पर पहुंच चुका था)। मुझे किसी प्रकार की वेदना या विकलता नहीं थी और राटर्डम से विदा होने के बाद से इस समय मेरी तबीयत जितनी खुश थी उतनी पहले कभी न थी। अब मैंने यह देखने के लिए अपने विविध यन्त्रों-औज़ारों का परीक्षण आरम्भ किया कि वे किस स्थिति में हैं। फिर अपने कक्ष की वायु ताज़ा करने के प्रयत्न में लग गया। चाहे इतनी जल्दी-जल्दी हवा बदलना नितान्त आवश्यक न भी हो पर मैंने अपने स्वास्थ्य के विचार से हर चालीस मिनट बाद उसे बदलकर ताज़ा हवा कक्ष में भरने का निश्चय कर लिया। बीच-बीच में मैं ख्याली पुलाव भी पकाता जाता था। चन्द्रमा के निर्जन एवं स्वप्निल प्रदेशों में मेरी कल्पना कुलेल कर रही थी। अपने को मुक्त अनुभव करने के बाद वह एक छायामय एवं चंचल जगत् के नित्य-परिवर्तनशील आश्चर्यों के बीच थिरकती फिर रही थी। कहीं उसे गौरवशाली, कलादृत वन दिखाई पड़ते; कहीं विषम कगार नज़र आते; कहीं घोर रव के साथ अपार गर्त में गिरते प्रपात दृष्टि-पथ पर छा जाते थे। फिर अकस्मात् मैं उस प्रशान्त मध्याह्न-एकान्त में पहुंच गया जहां आकाश की किसी वायु का प्रवेश नहीं था, और जहां अहिपुष्पों की विस्तृत हरियालियां और नाज़ुक कमलिनियां थकानभरी दूरियों पर फैली हुई थीं—सब शाश्वत रूप से

शान्त एवं निस्पन्द। फिर मैं यात्रा करके एक ऐसे देश में पहुंच गया जहां एक धुंधली और स्पष्ट झील फैली थी—झील जिसकी सीमा मेघों से बांधी गई थी। इस उदास झील पर स्वप्नों के मरुस्थल के समान लम्बे प्राच्य पादपों का एक विशाल वन खड़ा था। मैं यह भी अनुभव कर रहा था कि झील पर पड़नेवाली वृक्षों की छायाएं जिस सतह पर पड़ती हैं उसपर नहीं रहतीं, बल्कि धीरे-धीरे पर बराबर नीचे प्रवेश करती जाती हैं एवं तरंगों में निमग्न हो जाती हैं और तब तरुओं के तनों से दूसरी छायाएं निरंतर उतरकर उनका स्थान ग्रहण करती रहती हैं। मैंने विचारमग्न होकर कहा— 'यही कारण है' कि ज्यों-ज्यों समय बीतता है झील का पानी काला, अधिकाधिक काला, होता जाता है, और ज्यों-ज्यों घण्टे पर घण्टे बीतते जाते हैं उसकी उदासी बढ़ती जाती है।' किन्तु केवल इस तरह की कल्पनाएं ही मेरे दिमाग में नहीं उठ रही थीं। बीच-बीच में अत्यंत भयावने संत्रास की सम्भावना की कल्पना मात्र से मेरी आत्मा की अन्तरतम गहराइयां कांप उठती थीं। परन्तु इस प्रकार के विचारों की पीड़ा अधिक देर तक ठहर नहीं पाती थी, क्योंकि यात्रा के वास्तविक एवं भयावह खतरे मेरा अविभक्त ध्यान अपनी ओर खींच लेते थे।

५ बजे शाम को, जब मैं कमरे के वायुमण्डल को फिर से ताजा करने में लगा हुआ था, मैंने वाल्व से बिल्लियों और बच्चों पर नजर डाली। मुझे प्रतीत हुआ कि बिल्ली फिर बड़ी तकलीफ में है। मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के समझ लिया कि सांस लेने की कठिनाई के कारण ही उसकी यह अवस्था है; किन्तु बच्चों के प्रयोग का परिणाम आश्चर्यजनक था। मैं समझता था उन्हें भी कुछ-न-कुछ पीड़ा होगी, भले ही मां से कम हो। उतने से ही मेरे इस सिद्धान्त की पुष्टि हो जाती कि वायवीय दबाव का सहन अभ्यासगत है। मैं उन्हें स्वास्थ्य की इतनी अच्छी अवस्था में, पूर्ण नियमितता और सरलता के साथ सांस लेते और किसी प्रकार की बेचैनी न अनुभव करते हुए देखने के लिए तैयार नहीं था। इस दृश्य से मेरे ही सिद्धान्त की पुष्टि हुई। मालूम हुआ कि चतुर्दिक की सूक्ष्मवायु उस प्राणी

के जीवन के लिए रासायनिक रूप से इतनी अपर्याप्त नहीं है जो उसी के बीच पैदा हुआ है। ऐसे जीव को शायद श्वासक्रिया में होने वाली कठिनाई का पता न लगेगा, बल्कि उल्टे सघन वायुमण्डल में प्रवेश करने पर उसे वे वेदनाएं-व्यथाएं अनुभव होंगी जो मुझे विरल वातावरण में कुछ समय पूर्व अनुभव हो रही थीं। तब से मुझे इस बात से बड़ा दुःख होता रहा है कि इसी समय एक ऐसी भद्दी घटना हो गई जिससे मेरा बिल्ली-परिवार नष्ट हो गया और मैं उस लाभ से भी वञ्चित हो गया जो उनको लेकर आगे जारी रहनेवाले प्रयोग से मुझे होता। बात यह थी कि जिस टोकरी में वे सब थे वह एक बटन में फंसी हुई लटक रही थी। मैंने जब वाल्व में से पानी का प्याला उनके लिए टोकरी की ओर बढ़ाया तो मेरी कमीज की आस्तीन टोकरी के फंदे में उलझ गई जिससे खिंचकर टोकरी बटन से अलग हो गई। इसमें सेकेण्ड का दसवां भाग भी न लगा होगा परन्तु इतनी देर में टोकरी अपनी सम्पूर्ण सामग्री के साथ आंख से ओझल हो गई। मेरी शुभाकांक्षाओं ने पृथ्वी तक इन प्राणियों का अनुसरण किया किन्तु मुझे इस बात की कोई आशा नहीं रही कि बिल्ली या उसके बच्चों में से कोई अपने दुर्भाग्य की कहानी कहने के लिए बच रहेगा।

छः बजे मैंने देखा कि पूर्व दिशा में पृथ्वी के दृश्य भाग पर एक घनी छाया घिरती जा रही है। वह छाया तेजी से आगे बढ़ती जा रही थी, यहां तक कि सात बजने में पांच मिनट पहले सम्पूर्ण दृश्य पृथ्वी-मण्डल रात के अंधकार में डूब गया। किन्तु इसके बहुत देर बाद तक अस्तंगत सूर्य की किरणें गुब्बारे को आलोकित करती रहीं। यद्यपि मुझे पहले से ही इसका अनुमान था किन्तु इस बात से मुझे अपार खुशी हुई। यह स्पष्ट हो गया कि उदीयमान सूर्य का मैं उससे कई घण्टे पहले दर्शन करूंगा जब राटर्डम-निवासी पूर्व दिशा में स्थित होते हुए भी उसको देख पाएंगे। दिन-दिन मैं जितना ही ऊपर उठता जाऊंगा उतने ही अधिकाधिक समय तक मुझे सूर्य-प्रकाश का लाभ मिलता जाएगा। अब मैंने अपनी यात्रा का विवरण लिखने का निश्चय कर लिया। यह भी निश्चय किया कि

एक से लगातार चौबीस घण्टे तक मैं एक दिन गिनूंगा, भले ही बीच में अन्धकार आए।

दस बजे रात मुझे नींद आने लगी, तब मैंने शेष रात के लिए लेटने का निश्चय किया, किन्तु फिर एक कठिनाई आ खड़ी हुई। बात साधारण थी किन्तु उस क्षण तक उसकी ओर मैंने ध्यान ही न दिया था। प्रश्न यह था कि यदि मैं सो जाता हूं तो बीच-बीच में कक्ष में ताजी हवा का भरना कैसे सम्भव होगा? एक ही हवा में एक घण्टे से ज्यादा समय तक सांस लेना असम्भव था, यदि उसे सवा घण्टे भी किया गया तो परिणाम विनाशकारी हो सकते थे। इस पहेली पर विचार करते हुए काफी घबराहट होने लगी, और मैं जिन खतरों और कष्टों के बीच से गुज़र चुका था उनको देखते हुए यह स्वभाविक ही था कि मैं उसपर गम्भीरता से विचार करता। घबराहट यहां तक हुई कि ऊपर न जाकर नीचे उतरने की आवश्यकता महसूस होने लगी। किन्तु यह हिचकिचाहट क्षणिक थी। मैंने सोचा कि मनुष्य तो प्रथाओं और आदतों का गुलाम है। जीवन के दैनिक क्रम में उसे बहुत-सी बातें अनिवार्यतः महत्त्वपूर्ण मालूम पड़ती हैं, किन्तु वस्तुतः वे इसीलिए वैसी लगती हैं कि उसको उनकी आदत पड़ गई है। यह तो निश्चय ही था कि बिना सोये मेरा काम चल नहीं सकता किन्तु निद्राकाल में यदि घण्टे-घण्टे भर बाद मैं जग जाने का प्रबन्ध कर लूं तो मुझे कोई असुविधा नहीं होनी चाहिए। कक्षा में ताजी हवा भरने में मुश्किल से पांच मिनट लगते थे। सारी कठिनाई इस बात को लेकर थी कि ठीक समय पर नींद खुलने या उठजाने का कोई उपाय होना चाहिए। इस समस्या को हल करने में मुझे काफी परेशानी उठानी पड़ी। मैंने एक ऐसे छात्र की कहानी सुनी थी जो पढ़ाई के समय सो जाने से बचने के लिए अपने हाथ में तांबे का एक गोला रखता था। अपनी कुर्सी के नीचे उसने तांबे का एक बड़ा पात्र रख लिया था। जब वह ऊंघने लगता, गोला हाथ से उस पात्र में गिरता और उसकी आवाज से वह खड़बड़ाकर उठ जाता था। परन्तु मेरी स्थिति दूसरी थी और वैसी कोई तरकीब करना मेरे लिए

सम्भव न था। अन्त में बड़े सोच-विचार के बाद मैंने एक उपाय खोज निकाला। भले वह देखने में साधारण लगे किन्तु उस समय तो मुझे यही प्रतीत हुआ कि मैंने खुर्दबीन, वाष्प-इंजिन या मुद्रण यंत्र-जैसा ही एक महत्त्वपूर्ण आविष्कार कर लिया है।

इस समय गुब्बारा जिस ऊंचाई पर उड़ रहा था उसमें उसकी ऊर्ध्वगति अविराम और सीधी थी और कार उसमें इतनी अच्छी तरह बंधी हुई थी कि जरा भी इधर-उधर नहीं हो रही थी। यह स्थिति मेरी योजना के लिए अनुकूल थी। मेरे साथ जो पानी था वह पांच-पांच गैलन के पीपों में भरा कार के अन्तर्भाग में क्रमबद्ध, सुरक्षित एवं बंधा हुआ रखा था। मैंने इनमें से एक को निकाल लिया, फिर दो रस्सियां लेकर टोकरी के मेड़रे के दोनों ओर बांध दिया (जैसा झूले में बांधते हैं) उसके बीच में खूब जमाकर पानीवाला पीपा रखा। उसके कुछ नीचे काठ के तख्ते का पटरा रखा, जिसके बीच में और पहले पीपे के ठीक नीचे मिट्टी की एक मटकी रख दी। अब पहले पीपे की पेंदी में हिसाब से ऐसा छेद किया कि उससे टपकते हुए जल से वह मटकी ठीक साठ मिनट में भर जाय। मैंने अपना बिछौना कार की फर्श पर इस तरह बिछाया कि लेटने पर मेरा सिर उस मटकी के बिलकुल नीचे रहे। सोचा यह कि जब घण्टे-भर में मटकी भर जाएगी और मैं न जागूंगा तो पानी मेरे मुंह पर गिरने लगेगा जिससे मैं तुरन्त उठ जाऊंगा चाहे मेरी नींद कितनी ही गहरी हो।

इन सब बातों की व्यवस्था पूर्ण करने में ग्यारह बज गए। इसके बाद अपने आविष्कार की कुशलता में विश्वास लिए मैं तुरन्त बिस्तरे पर पड़ गया। इस मामले में मुझे निराशा भी नहीं हुई। प्रत्येक साठ मिनट पर मेरा कालमापक (क्रोनोमीटर) मुझे जगा देता और मैं कक्ष में ताजी हवा भरने के बाद पुनः बिस्तर पर जा लेटता। नींद में इस प्रकार की नियमित बाधाओं के कारण मुझे उससे कम ही कष्ट हुआ, जितना मैंने ख्याल किया था और जब मैं दिन में उठा तो उस समय सात बजे थे और सूर्य मेरी क्षितिज-रेखा पर कई अंश ऊपर चढ़ गया था।

एप्रिल ३ :

मैंने गुब्बारे को बहुत अधिक ऊंचाई पर पाया। पृथ्वी की उन्नतोदरता बहुत बढ़ी हुई थी। मेरे नीचे महासागर में काले धब्बे दिखाई दे रहे थे। निश्चय ही ये सब टापू थे। उत्तर दिशा में बहुत दूर क्षितिज पर मुझे एक पतली, श्वेत और अत्यधिक प्रकाशमान रेखा दिखाई पड़ी और मुझे मान लेने में कोई कठिनाई नहीं हुई कि यह ध्रुव सागर की हिमानियों का दक्षिणी किनारा है। मेरी उत्सुकता बहुत बढ़ गई क्योंकि मुझे इसके आगे सुदूर उत्तर से गुजरने की आशा थी— बल्कि कभी-कभी यह कल्पना भी होती थी कि मैं ठीक ध्रवप्रदेश के ऊपर से ही गुजरूंगा। मुझे दुःख हुआ कि अधिक ऊंचाई के कारण मैं उसका उतना अच्छा सर्वेक्षण न कर पाऊंगा जितना मैं करना चाहता था। फिर भी बहुत-सी बातों का पता चलेगा। आज कोई और असाधारण बात नहीं हुई। मेरे सब यन्त्र ठीक काम करते रहे और गुब्बारा अपनी गति से उड़ता रहा। हां, सर्दी बहुत थी और मैंने ओवरकोट से अपने को अच्छी तरह ढक लिया। जब पृथ्वी पर अन्धकार छा गया तब मैंने बिस्तरे की शरण ली, यद्यपि हमारे चारों ओर अब भी कई घण्टों तक दिन का प्रकाश फैला रहा। जलघड़ी उसी प्रकार अपने कर्त्तव्य का पालन करती रही और अगले प्रभात तक मैं सावधिक बाधाओं के साथ भी भलीभांति सोया।

एप्रिल ४ :

अच्छे स्वास्थ्य एवं स्फूर्ति के साथ उठा किन्तु सागर के रूप में जो विलक्षण परिवर्तन हो गया था उसे देखकर विस्मय हुआ। अभी तक उसका जो गहरा नील रंग था, वह बदलकर भूरापन लिए सफेद हो गया था और उसमें ऐसी चमक थी कि आंखें चौंधिया जाती थीं। द्वीप भी अब दिखाई नहीं पड़ते थे। यह कहना मुश्किल था कि वे दक्षिणपूर्व की ओर क्षितिज के नीचे चले गए हैं या ऊंचाई की वृद्धि ने उन्हें मेरी आंखों से

ओझल कर दिया है। मुझे पिछली बात पर ज्यादा भरोसा था। उत्तर दिशा में हिम-गोलक अधिकाधिक स्पष्ट होता जा रहा था। अब सर्दी उतनी ज्यादा न थी। कोई खास बात नहीं हुई, और मैं अपने साथ जो किताबें लाया था, उन्हें सारा दिन पढ़ता रहा।

एप्रिल ५ :

यह विचित्र दृश्य देखा कि जब पृथ्वी-तल का सम्पूर्ण दृश्य भाग तमसाच्छन्न था तब हमारे सामने सूर्योदय हो रहा था। हां, कुछ समय बाद सब जगह प्रकाश फैल गया और उत्तर की ओर मुझे फिर हिम-रेखा के दर्शन हुए। अब वह बहुत स्पष्ट हो गई थी और महासागर के जल की अपेक्षा उसका रंग कहीं ज्यादा गहरा था। स्पष्ट था कि मैं बड़ी तीव्र गति से उधर ही जा रहा हूं। ऐसा आभास हुआ कि पूर्व और पश्चिम दोनों दिशाओं में मुझे किसी भक्षेत्र की झलक दिखाई पड़ रही है परन्तु निश्चित रूप से मैं कुछ नहीं कह सकता। मौसिम समशीतोष्ण है। दिन में कोई खास बात नहीं हुई। जल्दी सोने चला गया।

एप्रिल ६ :

हिम-गोलक को थोड़ी दूरी पर देखकर आश्चर्य हुआ। हिम-प्रदेश उत्तर की ओर क्षितिज पर दूर तक फैला हुआ था। इससे स्पष्ट हो गया कि यदि गुब्बारा अपने वर्तमान यात्रा-पथ में ही उड़ता है तो शीघ्र ही वह जमे हुए महासागर के ऊपर पहुंच जाएगा। अब मुझे जरा भी सन्देह नहीं रह गया कि मैं ध्रुव को देख सकूंगा। सारे दिन में हिम के निकटतर होता गया। रात होते-होते मेरे क्षितिज की सीमा अकस्मात् बढ़ गई। निस्सन्देह इसका कारण यही था कि अब पृथ्वी नारंगी-समान चपटे सिरोंवाले अण्डे के आकार की हो गई थी और मैं आर्कटिक प्रदेश के चपटे भागों के ऊपर उड़ रहा था। जब मेरे चतुर्दिक अन्धकार छा गया तो मैं बड़ी दुश्चिन्ता के साथ सोने चला गया। दुश्चिन्ता यह थी कि जिसे देखने की इतनी उत्सु-

कता है कहीं वह रात के अंधेरे में ही गुजर न जाए और मैं फिर उसे देखने का मौका न पा सकूं।

एप्रिल ७ :

जल्दी उठा, और स्वयं उत्तरी ध्रुव को अपने सामने देखकर हर्ष-विभोर हो गया। यहां वह फैला हुआ था, हमारे पैरों के ठीक नीचे किन्तु दुःख की बात यह थी कि मैं इतनी ऊंचाई पर पहुंच गया था कि कुछ भी ठीक-ठीक नहीं दिखाई पड़ता था। मैंने बैरोमीटर के पिछले गतिमान के अनुसार हिसाब लगाकर देखा तो मालूम हुआ कि एप्रिल ७ को चार बजे प्रातः मैं समुद्रतल से कम से कम ७२५४ मील की ऊंचाई पर हूं। वैसे यह ऊंचाई बहुत ज्यादा मालूम पड़ती है परन्तु सम्भवतः वह वास्तविक ऊंचाई से कम ही जोड़ी गई है। जो हो, निस्सन्देह, मैं पृथ्वी के प्रमुख सम्पूर्ण व्यास को देख रहा था—सम्पूर्ण उत्तरी गोलार्द्ध मेरे नीचे अक्षरपट की भांति फैला हुआ था। स्वयं विपुवत् रेखा की महापरिधि मेरे क्षितिज की सीमा-रेखा बन गई थी। परन्तु श्रीमान-द्वय आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि आर्कटिक प्रदेश की अब तक अनाविष्कृत सीमाएं बिल्कुल मेरे नीचे होते हुए भी इतनी धूमिल हैं, दृष्टि-विन्दु से इतनी दूरी पर हैं कि उनकी बहुत ठीक परीक्षा सम्भव नहीं है। फिर भी जो कुछ दिखाई पड़ रहा था वह विलक्षण था। पहले जिस हिम-गोलक का उल्लेख किया जा चुका है, और जिसे मानवीय अनुसन्धान की सीमा कहना चाहिए, वहां से उत्तर की ओर जहां तक दृष्टि जाती थी, हिम की एक अखण्ड चादर फैली हुई थी। चंद डिग्रियों तक तो उसकी सतह चपटी थी, किन्तु बाद में झुककर फिर उन्नतोदर होती गोलकेन्द्र में ध्रुव से जा मिली थी; उसका धूसर रंग यद्यपि हर जगह एक-सा गहरा नहीं था, किन्तु दृश्य गोलार्द्ध के किसी भी स्थान से अधिक गहरा था, और कहीं-कहीं तो परिपूर्ण एवं अगम्य कालिमायुक्त था। इसके आगे कुछ विशेष दिखाई नहीं पड़ता था। १२ बजे तक गोल केन्द्र अपनी परिधि में काफी छोटा हो गया और ७ बजे शाम तक

दृष्टि से बिल्कुल ओझल हो गया क्योंकि इस समय गुब्बारा हिम के पश्चिम अंचल से गुज़र रहा था, वह तेज़ी से विषुवत् रेखा की ओर बहा चला जा रहा था।

एप्रिल ८ :

देखा कि पृथ्वी के बाह्य व्यास में ह्रास होता जा रहा है। उसके सामान्य आकार एवं रंग में भी बड़ा परिवर्तन नज़र आ रहा था। सारा दृश्य-क्षेत्र हलके पीत रंग की विविध मात्राओं में रंग गया था और कुछ भागों में तो रंग की चमक इतनी तेज़ थी कि देखने में आंखों को तकलीफ होती थी। पृथ्वी की सतह के कुछ ऊपर घने बादल छाये हुए थे जिसके धुंधलके के कारण देखने में बड़ी बाधा पड़ती थी और बीच-बीच में ही पृथ्वी की झलक मिल पाती थी। यों तो प्रत्यक्ष दर्शन में इस प्रकार का अवरोध न्यूनाधिक मात्रा में पिछले अड़तालीस घण्टों से मुझे कष्ट देता रहा है किन्तु वर्तमान ऊंचाई से ऐसा लगता था, मानो वाष्प के तिरते पिण्ड एकत्र हो गए हैं। इसलिए ज्यों-ज्यों मैं ऊपर उठता जाता था, यह असुविधा बढ़ती जाती थी। फिर भी इतना तो मैं आसानी से देख सकता था, कि गुब्बारा इस समय उत्तरी अमेरिका महाद्वीप की महती झीलों के क्षेत्र के ऊपर उड़ रहा है तथा दक्षिण की ओर जा रहा है और शीघ्र ही मैं उष्ण कटिबन्ध क्षेत्रों में पहुंच जाऊंगा। इससे मुझे हार्दिक सन्तोष हो रहा था और इसे मैंने अपनी अन्तिम सफलता के शुभ शकुन के रूप में ग्रहण किया। अभी तक मैं जिस दिशा में जा रहा था, उससे मेरे मन में बड़ी बेचैनी थी क्योंकि यह स्पष्ट था कि यदि उस दिशा में मैं और ज्यादा देर तक उड़ता रहा तो चन्द्रमा पर मेरे पहुंचने की कोई सम्भावना ही न रह जाएगी क्योंकि उसका परिक्रमा-पथ रविमार्ग की ओर केवल ५° ८′ ४८″ के लघु-कोण में झुका हुआ है।

एप्रिल ६ :

आज पृथ्वी का व्यास बहुत कम हो गया और सतह का रंग हर घण्टे प्रगाढ़ पीत होता गया। गुब्बारा दक्षिण दिशा में अपने पथ पर सीधे बढ़ता रहा और नौ बजे रात को मैं बिज़की खाड़ी की उत्तरीय छोर पहुंच गया।

एप्रिल १० :

आज सुबह पांच बजे एक ऊंची, पड़पड़ाहट की भयानक आवाज से एकाएक मेरी नींद टूट गई। मैं समझ न पाया कि क्या बात है। आवाज बहुत थोड़ी देर रही किन्तु जबतक भी रही वैसी आवाज मैंने जीवन में कभी नहीं सुनी थी। यह कहना तो बाहुल्य मात्र है कि मैं अत्यधिक विकल हो उठा क्योंकि पहिले मेरे ध्यान में यही आया कि गुब्बारा फट गया है। मैंने बड़ी सावधानी के साथ अपने सम्पूर्ण यंत्रों की परीक्षा की; मुझे कोई भी चीज अव्यवस्थित या विश्रृंखल नहीं दिखाई पड़ी। दिन के अधिकांश भाग में इसी असाधारण घटना पर विचार करता रहा, किन्तु उसके कारण का कुछ पता नहीं लगा। बड़ी विकल एवं उद्‌विग्न मनःस्थिति में तथा असन्तोष के साथ मैं सोने चला गया।

एप्रिल ११ :

पृथ्वी के व्यास में आश्चर्यजनक ह्रास दिखाई पड़ा; इसके साथ पहिली ही बार चन्द्रमा में बड़ी वृद्धि दिखाई पड़ी। उसे पूर्णाकार ग्रहण करने में कुछ ही दिनों की देर थी। अब जीवन-धारणार्थ कक्ष की वायवीय वायु को सघन करने में देर तक और कठोर श्रम करना पड़ता है।

एप्रिल १२ :

गुब्बारे की दिशा में अनोखा परिवर्तन हो गया। यद्यपि इसकी आशा पहले से ही थी किन्तु इससे मुझे निर्मल आनन्द हुआ। अपने पहले यात्रा-

पथ में दक्षिण अक्षांश के बीसवें समानान्तर तक पहुंच जाने के बाद वह अकस्मात पूर्व की ओर न्यूनकोण बनाता घूम गया, और इस प्रकार सारे दिन, यदि पूर्णतः नहीं तो अधिकाधिक, चान्द्र दीर्घवृत्त के यथार्थ स्तर पर चलता रहा। इस दिशा-परिवर्तन के कारण कार काफी हिलने लगी थी—और यह डगमगाहट थोड़ी-बहुत कई घण्टों तक बनी रही।

एप्रिल १३ :

१० तारीख को जो विस्फोटक भयावनी आवाज़ हुई थी, वह आज फिर सुनाई पड़ी। बड़ी देर तक उस विषय पर सोचता रहा किन्तु किसी सन्तोषजनक निष्कर्ष पर पहुंच नहीं सका। पृथ्वी के प्रतीयमान व्यास में अत्यधिक कमी हो गई। अब यह व्यास गुब्बारे से बहुत-कुछ पच्चीस अंश के कोण पर था। मेरे शीर्षबिन्दु पर होने के कारण चन्द्रमा दिखाई नहीं पड़ा। अब भी मैं दीर्घवृत्त के क्षेत्र में चला जा रहा था किन्तु पूर्वकी ओर बहुत कम बढ़ पाया।

एप्रिल १४ :

पृथ्वी के व्यास में तीव्र गति से ह्रास : आज मैं इस विचार से बहुत प्रभावित हुआ कि गुब्बारा वस्तुतः नीचोच्च रेखा (एप्साइड्स) पर भूसमीपक बिन्दु (पेरीगी) की ओर चला जा रहा है। दूसरे शब्दों में इस बात को यों भी कह सकते हैं वह ऐसे मार्ग का अनुसरण कर रहा है जो उसे चन्द्रमा के उस भाग में ले जाएगा जो पृथ्वी के निकटतम है। स्वयं चन्द्रमा हमारे सिर पर था, इसलिए मेरी आंखों से ओझल था। कक्ष के वायुमण्डल को घनीभूत करने में देर तक घोर श्रम करना पड़ा।

एप्रिल १५ :

अब महाद्वीपों एवं सागरों की रूपरेखाएं तक स्पष्ट नहीं दिखाई पड़ती थीं। लगभग बारह बजे मुझे तीसरी बार वह अपार्थिव एवं भयानक

आवाज़ सुनाई पड़ी जो मुझे पहले भी विस्मित कर चुकी थी। इस बार वह कुछ क्षणों तक जारी रही और भीषण रूप से प्रबल होती गई। अन्त में जब मैं उसके कारण भयभीत और हक्काबक्का न जाने किस विनाश की प्रतीक्षा में खड़ा था, कार अत्यधिक प्रबलता से कांपने लगी और किसी ऐसे पदार्थ का, जिसे मैं पहिचान नहीं सका, भीमाकार प्रज्वलित पिण्ड, हज़ारों बिजलियों की कड़क के साथ, गरजता और गड़गड़ाता गुब्बारे के पास से गुज़रा। जब मेरा भय एवं विस्मय कुछ अंशों में, शान्त हुआ तो मुझे यह कल्पना करने में कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई कि जिस दुनिया की ओर मैं इतनी तेज़ी से चला जा रहा हूं यह उसी से उद्‌भूत कोई शक्तिमान ज्वालामुखीय खण्ड था—और बहुत सम्भवतः पदार्थों के उस विलक्षण वर्ग में से कोई था जो कभी-कभी धरती पर पाए जाते हैं और जिनको किसी अधिक उपयुक्त संज्ञा के अभाव में 'उल्काजात प्रस्तर' के नाम से पुकारा जाता है।

एप्रिल १६ :

जब मैं दोनों पार्श्व वातायनों से बारी-बारी ऊपर की ओर देख रहा था तो अत्यन्त प्रसन्नता के साथ मैंने देखा कि गुब्बारे की वृहत परिधि के हर तरफ चन्द्रबिम्ब का एक लघु अंश फैला हुआ है। मेरी उत्तेजना सीमा पर पहुंच गई क्योंकि अब मुझे ज़रा भी संदेह नहीं रह गया कि शीघ्र ही मैं अपनी संकटापन्न यात्रा की मंज़िल तक पहुंचने वाला हूं। वायु-संघनक के साथ किया जानेवाला श्रम अब उत्पीड़न की सीमा पर पहुंच गया था, और अब मुझे श्रम से कोई अवकाश कठिनाई से ही मिलता था। नींद का तो अब कोई सवाल ही नहीं था। मैं बड़ा अस्वस्थ हो गया और मेरा शरीर थकान से कांपने लगा। मानव-प्रकृति के लिए ज्यादा देर ऐसी गहरी व्यथा सहन करना असम्भव था। अन्धकार का जो लघु मध्यान्तर आया उसमें फिर उल्का-पिण्ड मेरे पास से गुज़र गया। बार-बार इस प्रकार की घटना होने के कारण मेरी भीति और चिन्ता बहुत बढ़ गई।

एप्रिल १७ :

यह प्रभात मेरी यात्रा में एक युग सिद्ध हुआ। यह बात याद होगी कि तेरह तारीख को पृथ्वी पच्चीस अंश का कोणिक विस्तार बना रही थी। चौदह को इसमें बहुत ह्रास हो गया। पन्द्रह को उसमें और भी कमी हो गई। सोलह की रात को सोने जाते समय देखा कि वह केवल सवासात अंश तक ही रह गया है इसलिए जब मैं आज सुबह थोड़ी देर की बाधित निद्रा के बाद उठा तो मेरे लिए यह देखकर चकित होना स्वभाविक ही था कि मेरे नीचे पृथ्वी की सतह अकस्मात् एवं आश्चर्यजनक रूप से आयतन में इतनी बढ़ गई है कि अपने प्रतीयमान कोणिक व्यास में उनतालीस अंश बना रही है। मुझे लगा, जैसे बिजली मार गई हो। उस समय मेरे मन पर जो भय और विस्मय छा गया और उनसे जिस प्रकार मैं अभिभूत एवं वशीभूत हो गया उसे शब्दों में या किसी भी पार्थिव साधन से प्रकट नहीं किया जा सकता। मेरे घुटने बैठे जा रहे थे, मेरे दांत बज रहे थे, मेरे रोंगटे खड़े हो गए थे। मेरे मन में पहला तूफानी विचार यही आया कि तब निश्चय ही गुब्बारा फट चुका है, निश्चय ही उसका विस्फोट हो चुका है। मैं गिर रहा हूं, गिर रहा हूं, प्रचण्ड तूफानी और अतुलनीय वेग से गिर रहा हूं। अत्यन्त शीघ्रता के साथ जो असीम दूरी मैंने पार कर ली है उसके हिसाब से तो पृथ्वी-तल से टकराने और विनष्ट हो जाने में मुझे दस मिनट से ज्यादा नहीं लगेंगे। किन्तु अन्त में विवेक ने मेरी रक्षा की। मैं रुक गया, मैंने विचार किया, और तब मुझे अपनी उक्त कल्पना में सन्देह होने लगा। ऐसा होना असम्भव है। मैं हर्गिज इस तेजी से नीचे नहीं आ सकता। यद्यपि मैं अपने नीचे की सतह के पास पहुंच रहा हूं परन्तु पहले जिस वेगवती गति की मैंने कल्पना की थी, वैसी गति नहीं हो सकती। इस विचार से मेरे मन की उद्‌विग्नता कुछ शान्त हुई और तब मैं उचित दृष्टिकोण से घटना पर विचार करने लगा। ऐसा लगा कि विस्मय के कारण मेरा होश ठिकाने न रहा होगा तभी तो मैं अपने नीचे की सतह और अपनी धरती-

माता की सतह के बीच आकार-प्रकार में जो महान अन्तर था, उसे देख नहीं पाया ? अब तो धरती की सतह मेरे सिर के ऊपर थी और गुब्बारे के कारण बिल्कुल छिपी हुई थी, जबकि चांद—हां खुद चांद अपनी सम्पूर्ण विभूति के साथ मेरे नीचे, मेरे चरणों में पड़ा हुआ था।

घटनाओं की स्थिति के इस असामान्य परिवर्तन ने मेरे मन में जो मूर्छा और विस्मय उत्पन्न कर दिया वह भी दुस्साहस का ही ऐसा अंश था जिसकी व्याख्या सम्भव नहीं है। यह उलटपुलट अपने में न केवल प्राकृतिक एवं अनिवार्य थी बल्कि बहुत पहले से उसकी कल्पना की गई थी कि जब मैं अपनी यात्रा की आखरी मंजिल पर पहुंचूंगा तो उपग्रह का आकर्षण ग्रह के आकर्षण को दबा लेगा या और स्पष्ट शब्दों में इसे यों कहेंगे कि वहां पृथ्वी के प्रति गुब्बारे का गुरुत्वाकर्षण चन्द्रमा के प्रति उसके गुरुत्वाकर्षण से कम हो जाएगा। इस प्रकार जब मैं गहरी नींद से उठा तो यह आश्चर्यजनक दृश्य देखकर मेरे होश-हवास गुम हो गए—ऐसा दृश्य जिसके देखने की आशा तो मुझे थी परन्तु इतनी जल्द, इसी क्षण उसे देख पाऊंगा, यह आशा नहीं थी। यह आवर्त्तन हुआ तो सरल एव क्रमिक ढंग से ही होगा। फिर इसी बात का क्या ठिकाना है कि घटना के समय यदि मैं जगता होता तो किसी विपर्यय या अपवर्तन के आन्तरिक साक्ष्य से अर्थात् किसी शारीरिक असुविधा या मेरे यंत्र की किसी विशृंखलता से मुझे उसका पता चल ही जाता ?

यह कहने की तो कोई आवश्यकता नहीं कि अपनी स्थिति का ठीक ज्ञान होने, और जिस आतंक ने मेरी आत्मा की सम्पूर्ण शक्ति को चूस लिया था उससे मुक्त होने पर मेरा समस्त ध्यान चन्द्रमा के सामान्य भौतिक रूप-दर्शन में लग गया। वह मेरे नीचे, एक चित्र की भांति, फैला हुआ था, और यद्यपि अब भी मेरी समझ से वह कुछ कम दूरी पर न था, उसकी सतह पर की गहरी दरारें अत्यन्त मोहक एवं अकथनीय विशिष्टताओं के साथ मेरी दृष्टि में स्पष्ट थीं। पहिली ही नजर में मैंने देख लिया कि वहां महासागर या समुद्र, बल्कि किसी झील या नदी, या किसी प्रकार

के जलाशय, का एकान्त अभाव है। वहां की भूतात्विक अवस्था में यह अत्यन्त असाधारण बात थी। फिर भी यह कहने में विचित्र-सा लगता है कि मैंने वहां जलोढ़ प्रकृति के विशाल समतल क्षेत्रों को देखा, यद्यपि गोलार्द्ध का जो भाग दिखलाई पड़ रहा था, उसका अधिकांश असंख्य ज्वालामुखीय पर्वतों से भरा था। ये पर्वत शुण्डाकार और देखने में प्राकृतिक की अपेक्षा कृत्रिम फुलाव-जैसे अधिक लगते थे। इनमें जो सबसे ऊंचे थे, उनकी आनुलम्बिक ऊंचाई पौने चार मील से अधिक नहीं थी। किन्तु कैम्पी फलेगराई के ज्वालामुखीय जनपदों का एक मानचित्र आपको उनके सामान्य तल की उससे ज्यादा अच्छी जानकारी देगा, जितना मैं अपने अयोग्य वर्णन में दे सकता हूं। इनका अधिकांश भाग अब भी विस्फोट की अवस्था में था और अपने गलतनाम से पुकारे जानेवाले तथा मेरे गुब्बारे के पास आ-आ कर गिरनेवाले उल्का-प्रस्तरों की बार-बार होती दहाड़ से अपने क्रोध एवं शक्ति का परिचय दे रहा था।

एप्रिल १८ :

आज मैंने चन्द्रमा के वाह्याकार में बहुत ज्यादा वृद्धि देखी। इसके साथ ही मेरे अवतरण का वेग इतना बढ़ गया कि मुझे भय और चिन्ता होने लगी। यह स्मरण रखने की बात है कि जब मैं चन्द्रलोक की यात्रा के विषय में आरम्भिक कल्पनाएं करने में लगा था तब मैं हिसाब लगाकर इस निष्कर्ष पर पहुंचा था कि उसके सन्निकट के वायुमण्डल का घनत्व ग्रह के आयतन के अनुपात में ही होगा, यद्यपि इसके प्रतिकूल अनेक मत थे और सामान्य विश्वास तो यही था कि चान्द्रायण वायुमण्डल जैसी किसी चीज का अस्तित्व ही नहीं है। किन्तु एंके-धूमकेतु तथा राशिचक्रीय प्रकाश के विषय में जो कुछ मैं पहले लिख चुका हूं, उसके अतिरिक्त लिलियेन्थल के श्री श्रोयतेर के कतिपय विचारों से भी मेरे विश्वास को प्रबल समर्थन प्राप्त हुआ था। श्रोयतेर सूर्यास्त होने के बाद ही संध्याकाल में ढाई दिन के चन्द्र को कृष्णांश के दृश्य होने के पूर्व से तब तक देखा करते थे जब तक

वह दिखलाई पड़ने लगता था। अपने धूमिल विस्तार में दो शीर्ष शुण्डाकार-से लगते थे और हरएक का सुदूरतम छोर सूर्य-किरणों के क्षीण आलोक से आलोकित रहता था। यह अवस्था काला गोलार्द्ध दिखलाई देने के पहले होती थी। इसके बाद शीघ्र ही सम्पूर्ण कृष्णांश आलोकित हो उठता था। गोलार्द्ध के भी परे शीर्षों का यह विलम्बीकरण मेरी राय में, चन्द्र के वायुमण्डल पर पड़नेवाली सूर्य-किरणों की वक्रता के कारण उत्पन्न होता था। मैंने यह हिसाब भी निकाला था कि वायुमण्डल की ऊंचाई १३५६ पैरिसफुट होनी चाहिए क्योंकि इस ऊंचाई से कृष्ण गोलार्द्ध पर इतना वक्र प्रकाश फेंका जा सकता है कि संध्यालोक उस प्रकाश से अधिक दीप्त हो जो चन्द्र के ३२° पर स्थित होने पर पृथ्वी-द्वारा प्रतिच्छायित होता या फेंका जाता है। मैंने यह भी अनुमान लगाया कि सूर्य-किरण को वक्र करनेवाली अधिक से अधिक ऊंचाई ५३७६ फुट हो सकती है। मेरे इन विचारों को दार्शनिक विवरणों की बयासीवीं जिल्द से भी बड़ा बल और समर्थन मिला था। इस जिल्द में यह विवरण मिला था कि गुरु के उपग्रहों के तारा-प्रच्छादन (अकल्टेशन) पर, तीसरा, १" या २" अंशों में अस्पष्ट होने के बाद, विलुप्त हो गया और चौथा भी, छोर पर अदृश्य रह गया।[1]

---

१. हवेलियस लिखता है कि कई बार ऐसे पूर्णतः निर्मल आकाश में, जिसमें छठे एवं सातवें आकारमान (मैग्नीट्यूड) के तारे भी दिखाई पड़ते थे, मैंने पाया कि (चांद भी) उसी ऊंचाई पर, पृथ्वी से उतनी ही दूरी पर, उसी बढ़िया दूरबीन से देखने पर चन्द्र तथा उसके मैक्यूला (अंक) हर समय उतने ही प्रकाशमान नहीं लगते हैं। इस पर्यवेक्षण से स्पष्ट हो जाता है कि इस बात का कारण न तो हमारी वायु में है, न चन्द्रमा में है, न दर्शक की आंख में है बल्कि चन्द्रमा के निकटवर्ती और किसी वस्तु (वायुमण्डल) के अस्तित्व में है।

केसिनी ने कई बार यह पर्यवेक्षण किया कि शनि, गुरु एवं अन्य स्थिर तारे जब तारा-प्रच्छादन में चन्द्रमा के पास जाते हैं तो उनका गोलाकार अण्डाकार हो जाता है किन्तु अन्य तारा-प्रच्छादनों के समय उसे आकार में कोई परिवर्तन होता नहीं दिखाई

अपने द्वारा कल्पित सघनता की दशा में स्थित वायुमण्डल का प्रतिरोध या ज्यादा अच्छी तरह कहें तो साहाय्य पर ही मेरे अन्तिम अवतरण की धारणा निर्भर थी। इसलिए यदि मेरी धारणा गलत सिद्ध होती तो मेरे दुस्साहस का अन्तिम दृश्य यही होना था कि मैं उपग्रह की ऊबड़-खाबड़ सतह से टकराकर टुकड़े-टुकड़े हो जाता। और सचमुच इस समय मेरे भीत होने के लिए हर तरह का कारण उपस्थित था। चन्द्रमा से मेरी दूरी तुलनात्मक दृष्टि से, बहुत नगण्य रह गई थी, फिर भी वायु-संघनक के उपयोग में मुझे जो घोर श्रम करना पड़ रहा था, उसमें कोई कमी नहीं आई थी और मुझे वायु की विरलता कम होने का कोई संकेत नहीं मिल रहा था।

एप्रिल १६ :

आज सुबह नौ बजे मैं यह देखकर हर्ष-विभोर हो उठा कि चन्द्रमा की सतह भयावने रूप से निकट आ जाने और मेरे भय में वृद्धि हो जाने की दशा में ही वायुसंघनक का पम्प वायुमण्डल में परिवर्तन की सूचना दे रहा है। दस बजे तक मुझे यह विश्वास होने लगा कि सघनता में पर्याप्त वृद्धि हो चुकी है। ग्यारह बजे तक यन्त्र में नाममात्र का श्रम करने की आवश्यकता रह गई और बारह बजे कुछ हिचकिचाते हुए उस रक्तस्राव-रोधक को मैंने खोलकर अलग रख दिया और वैसा करने पर भी जब किसी असुविधा का अनुभव नहीं हुआ तो मैंने कार के चतुर्दिक लगे उस खोल को हटा दिया। इसका जो परिणाम हो सकता था वही हुआ। ऐसे खतरनाक और जल्दबाज़ी-भरे प्रयोग के कारण शरीर में ऐंठन और भयंकर शिरोवेदना होने लगी। किन्तु श्वासक्रिया-सम्बन्धी ये तथा अन्य कठिनाइयां इतनी अधिक तो नहीं थीं कि मेरे जीवन के लिए खतरनाक साबित होतीं

पड़ा। इससे यह अनुमान किया जाता है कि कभी-कभी ऐसा समय आता है—सदा नहीं—जब चन्द्रमा के इर्द-गिर्द कोई सघन पदार्थ छा जाता है—ऐसा सघन पदार्थ जिसमें तारों की किरणें वक्र या तिरछी हो जाती हैं।

और मैंने उन्हें इस आशा से सहन करने का निश्चय कर लिया कि चन्द्रमा के पास के सघन वातावरण में पहुंचते ही उनसे मुझे मुक्ति मिल जाएगी। मेरा यह दृष्टिकोण भी जल्दबाज़ी से भरा था और यद्यपि मैंने इस आशा में धोखा नहीं खाया कि उपग्रह के भार के अनुपात में वायुमण्डल मिलेगा किन्तु मेरी यह कल्पना गलत थी कि यह सघनता, सतह पर भी, मेरे गुब्बारे के कार के महत् भार को सम्भालने के लिए पर्याप्त होगी। बात तो ऐसी होनी ही चाहिए थी, क्योंकि कल्पना यही है कि दोनों में से प्रत्येक ग्रह पर की वस्तुओं का वास्तविक गुरुत्व उनकी वायवीय सघनता के अनुपात में होता है। किन्तु मेरा खतरनाक अधःपात इस बात की पर्याप्त गवाही दे रहा था कि बात ऐसी थी नहीं। ऐसी क्यों नहीं थी, इसकी व्याख्या उन सम्भावित भूतात्विक उपद्रवों के सन्दर्भ में की जा सकती है जिनकी ओर पहले मैं इशारा कर चुका हूं। बात जो भी हो, इस समय तो तथ्य यही था कि मैं ग्रह के समीप था और अत्यन्त भयावनी गति से नीचे की ओर आ रहा था। मैंने ज़रा भी विलम्ब नहीं किया और झटपट पहले अधिभार (बैले-स्ट) के थैले फेंक दिए, फिर जल के पीपों को बाहर फेंका, फिर अपने संघनक यन्त्र और प्रसरणशील कक्ष को भी विदाई दी और अन्त में कार के अन्दर की एक-एक वस्तु के साथ भी वही व्यवहार किया। किन्तु इन सब बातों का कोई फल नहीं निकला। अब भी मैं भयंकर तेज़ी के साथ गिर रहा था और अब सतह से आधा मील से ज़्यादा दूरी पर नहीं था। अंतिम उपाय के रूप में मैंने पहले अपना कोट, हैट, जूते फेंकने के बाद, स्वयं कार को जिसका बोझ काफी था, गुब्बारे की रस्सियों से खोल कर गिरा दिया और तब गुब्बारे के जाल की रस्सियों को ही पकड़कर लटक गया। थोड़ा-सा जो समय मुझे मिला उसमें जहां तक दृष्टि गई मैंने यही देखा कि सारा देश लघु गृहों से भरा हुआ है। मैं इतना ही देख पाया था कि एक आन-बान वाले नगर के केन्द्रस्थान में सिर के बल गिरा। जहां मैं गिरा उसके चारों ओर छोटे और कुरूप लोगों की भीड़ जमा थी परन्तु उनमें से किसी ने न तो एक शब्द कहा, न मुझे किसी प्रकार की सहायता देने का कष्ट

उठाया। वे भद्दे ढंग से खीस निपोरे मूर्खों के झुण्ड की भांति खड़े रहे और कूल्हों पर हाथ धरे तथा केहुनियां बाहर निकाले मुझे तथा मेरे गुब्बारे को संशय की दृष्टि से देखते रहे। मैंने घृणापूर्वक उनकी ओर से अपनी नज़र ऊपर की ओर उठाई और उस पृथ्वी को देखने लगा जिसे पिछले दिनों छोड़ आया था और शायद सदा के लिए छोड़ आया था। मेरी पृथ्वी एक ऐसे विराट, धुंधले ताम्रफलक-सी दिखाई पड़ रही थी जिसका व्यास लगभग २ डिग्री का रहा होगा और जो मेरे ऊपर अन्तरिक्ष में स्थिर रूप से रखा हुआ था। उसके एक छोर पर अत्यन्त प्रदीप्त स्वर्ण की अर्द्धचन्द्राकार झालर लगी हुई दिखाई दे रही थी। भूमि या जल का कहीं कोई आभास नहीं था। समस्त गोलक विविध धब्बों या चिह्नों से भरा था और उष्ण कटिबन्धीय तथा भूमध्य-रेखान्तरीय क्षेत्रों की मेखलाओं से पूर्ण था।

आप महामान्यों को विदित हो कि अनेक महती चिन्ताओं, अश्रुतपूर्व खतरों तथा अतुलनीय पलायनों से गुजरते हुए मैं राटर्डम से विदा होने के उन्नीसवें दिन एक ऐसी यात्रा की मंज़िल पर पहुंच गया जिसे निस्सन्देह पृथ्वी के किसी प्राणी द्वारा अब तक सोची या की हुई किसी भी यात्रा से असाधारण और महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है। किन्तु अभी तो मुझे अपनी साहसिक कथा कहनी ही है। श्रीमन्-द्वय भली भांति कल्पना कर सकते हैं कि जो आदमी एक ऐसे ग्रह पर पांच साल रह चुका है जो न केवल अपनी विलक्षण प्रकृति के कारण वरं उपग्रह की हैसियत में मानवीय जगत् के साथ अपने घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण उससे भी अधिक दिलचस्पी से भरा है, उसे राजकीय ज्योतिष महाविद्यालय को विशेष रूप से बताने योग्य कितनी बातों की जानकारी होगी—जानकारी जो आनन्दपूर्वक समाप्त इस यात्रा के अद्भुत विवरणों से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। दरअसल, बात तो यही है। मेरे पास ऐसा बहुत कुछ है जिसे आप लोगों को सूचित करने में मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता होगी। ग्रह की जलवायु; ताप एवं शीत के अद्भुत परिवर्तन; एक पक्ष में अप्रशमित एवं ज्वलनशील धूप तथा अगले पक्ष में ध्रुवीय शीत; सूर्य के नीचे एक बिन्दु से उसके सुदूर बिन्दु तक

आर्द्रता का निरन्तर स्थानान्तरण; प्रवहमान जल का वैविध्यपूर्ण क्षेत्र; स्वयं यहां के निवासी, उनका आचरण, परम्पराएं एवं राजनीतिक संस्थाएं, उनकी विलक्षण शरीर-रचना, उनकी कुरूपता, परिष्कृत वातावरण के लिए अनावश्यक होने के कारण उनकी कर्ण-हीनता—फलतः वाणी के गुणों एवं प्रयोग के विषय में उनका अज्ञान; वाणी के स्थान पर अन्तः-संचारण की अनोखी प्रणाली; चन्द्रनिवासी विशिष्ट व्यक्ति का पृथ्वी-निवासी विशिष्ट व्यक्ति के साथ अचिन्त्य सम्बन्ध—ठीक उसी प्रकार जैसे ग्रह एवं उपग्रह-गोलक में से प्रत्येक के निवासियों के जीवन एवं भाग्य दूसरे निवासियों के जीवन एवं भाग्य से अन्तर्ग्रथित हैं, फिर इन सबके ऊपर वे काले एवं भयावने रहस्य जो चन्द्रमा के बाह्य अंचलों के अन्दर छिपे पड़े हैं—उन अंचलों के अन्दर जो अपने ही अक्ष पर घूमते हुए भी पृथ्वी की नाक्षत्रिक परिक्रमा करनेवाले उपग्रह के ऐसे भाग हैं जो मनुष्य की दूर-बीन की पकड़ में न कभी आए हैं, न आएंगे—यह सब तथा इसके अति-रिक्त और बहुत-सी बातें हैं, जिन्हें मैं बड़ी खुशी से बता सकता हूं। किन्तु, संक्षेप में कहूं तो, मुझे अपना पुरस्कार भी चाहिए। मैं अपने कुटुम्ब और अपने घर को लौटने के लिए तरस रहा हूं और भौतिक एवं आध्यात्मिक विज्ञानों की अनेक शाखाओं पर प्रकाश डालने की जो शक्ति मेरे अन्दर है उसके सम्बन्ध में और सूचनाएं देने के मूल्य के रूप में आपके सम्मानित माध्यम द्वारा मैं उस अपराध के लिए क्षमादान चाहता हूं जो राटर्डम से विदा होने के समय अपने तीन ऋणदाताओं की मृत्यु के रूप में मुझसे हो गया है। इस पत्र का यही उद्देश्य है। पत्रवाहक चन्द्रदेश का एक निवासी है जिसको मैंने पृथ्वी तक अपना सन्देश ले जाने के काम के लिए तैयार किया है। वह आप श्रीमानों की कृपा के लिए प्रतीक्षा करेगा और यदि किसी भी तरीके से क्षमादान प्राप्त हो सके तो उसे लेकर लौटेगा।

मैं हूं श्रीमानों का दीन सेवक

हंस फाल

× ×

इस अत्यन्त असामान्य दस्तावेज़ का पढ़ना समाप्त करके प्रोफेसर रब-ए-डब ने परम विस्मय की मुद्रा में अपना पाइप नीचे ज़मीन पर गिरा दिया, और माईनहीन सुपर्बस वॉन अण्डरडक ने अपना चश्मा उतारकर पोंछा, और उसे अपनी जेब में रख लिया, फिर अपने को और अपनी मर्यादा को इस कदर भूल गए कि आश्चर्य एवं प्रशंसा की भावना में डूबे हुए तीन बार अपने चरणों पर घूम गए। मामले के विषय में कोई सन्देह नहीं था, क्षमादान तो प्राप्त किया जाना ही चाहिए। प्रोफेसर रब-ए-डब ने शपथ-पूर्वक प्रकट किया, और माननीय वान अण्डरडक ने अपने वैज्ञानिक बन्धु की भुजा पर हाथ रखते हुए कुछ ऐसा ही सोचा और कैसे वश उपाय किया जाए, इसपर विचार के लिए चुपचाप अपने घर की ओर रवाना हो गए। जब दोनों नगराधिकारी के मकान पर पहुंचे तो प्रोफेसर ने सुझाया कि चूंकि सन्देशवाहक निश्चय ही राटडंम के नागरिकों से भयंकर रूप में डरकर गायब हो गया है इसलिए क्षमादान का कोई विशेष उपयोग नहीं है क्योंकि सिवाय चन्द्र-निवासी के दूसरा कोई उसे लेकर इतनी भयानक दूरी की यात्रा नहीं कर सकता। इस विचार से नगराधिकारी भी सहमत हुए। इसलिए मामला यहीं खत्म हो गया। किन्तु अफवाहें और कल्पनाएं समाप्त नहीं हुई। जब पत्र छप गया तो उसे लेकर तरह-तरह की गप्पें और सलाहें सामने आने लगीं। कुछ ने, जो ज़रूरत से ज्यादा बुद्धिमान थे, यही कहकर अपने को हास्यास्पद बना लिया कि यह सारा मामला सिर्फ, एक धोखाधड़ी है। किन्तु ऐसे लोगों की बुद्धि में जो बात नहीं आती उन सबको वे धोखाधड़ी ही घोषित कर दिया करते हैं। मैं तो समझ नहीं पाता कि उनके पास क्या तथ्य हैं जिनपर वे ऐसी बात कह देते हैं। आइए देखें, वे क्या कहते हैं:

पहली बात—राटडंम में कुछ ऐसे मसखरे हैं जिन्हें कुछ नगराधिकारियों और ज्योतिर्विन्दों से विशेष चिढ़ है।

वे कुछ समझते नहीं।

दूसरी बात—एक भद्दा छोटा वामन, जिसके दोनों कान, उसके सिर

के पास से, किसी अपराध के लिए काट लिए गए थे, कई दिनों से पास के ब्रजेस नगर से गायब है।

तो फिर उससे क्या ?

तीसरी बात— उस छोटे गुब्बारे में चारों ओर जो समाचारपत्र चिपकाये गए थे वे सब हालैण्ड के थे, इसलिए चन्द्रमा में तो उनका निर्माण हो नहीं सकता। वे गन्दे पत्र थे—बिल्कुल गन्दे और उनका मुद्रक ग्लुक बाईबिल हाथ में लेकर कसम खाने को तैयार हैं कि वे राटर्डम में ही छापे गए हैं।

वह भ्रम में हैं—निश्चित रूप से भ्रम में हैं।

चौथी बात—वह पियक्कड़ बदमाश हंसफाल खुद और तीन बेरोजगार आदमी, जिन्हें वह अपना महाजन बताता है, अभी दो-तीन दिन पहले उपनगर के एक मद्यालय में देखे गए थे और सागर पार विदेश से यात्रा कर अपनी जेबें भरे हुए लौटे थे।

इसपर विश्वास न करो—इसके एक शब्द पर भी विश्वास न करो।

आखिरी बात—आम तौर से लोग यह राय प्रकट करते हैं, या उन्हें आम तौर से कहना चाहिए, कि राटर्डम नगर का ज्योतिष महाविद्यालय —तथा दुनिया के अन्य भागों के अन्य सब ज्योतिष विद्यालय भी—यदि सब विद्यालयों एवं ज्योतिषियों के बारे में वैसा न कहें तो भी—कम से कम उससे एक कण भी उत्तम, या महत्तर या बुद्धिमान नहीं हैं जितना उन्हें होना चाहिए।

यरूसलेम की एक कहानी

अबुल फतीम ने बुजी-बेन लेवी और फैरिसी सीमियन से सृष्टि-संवत् तीन हजार नौ सौ इकतालीस के ताम्मुज मास की दसवीं तारीख को कहा—"हमें बैंजमिन के द्वार की निकटवर्ती शहरपनाह पर जल्दी पहुंचना चाहिए। बैंजमिन डेविड का नगर है जो काफिरों की छावनी के ऊपर शिर उठाए देख रहा है। यह चौथे पहरे का आखरी घण्टा है और सूरज उगने ही वाला है। पाम्पी का वादा पूरा करने के लिए, मूर्तिपूजक बलि के लिए मेमने लिए प्रतीक्षा कर रहे होंगे।"

सीमियन, अबुल फतीम और बुजी-बेन लेवी तीनों यरूसलेम के पवित्र नगर में मन्दिरों का चढ़ावा इकट्ठा करनेवाले सबकलेक्टर या गिजबरीम थे।

फैरिसी ने उत्तर दिया—"हां, हां! आओ, जल्दी चलें : क्योंकि काफिर में इस प्रकार की उदारता अस्वाभाविक है; मन की अस्थिरता सदा से बाल[1] के पूजकों की एक विशेषता रही है।"

बुजी-बेन-लेवी ने कहा—"वे अस्थिरचित्त और धोकेबाज होते हैं यह तो बिल्कुल सत्य है—उतना ही जितना पैंतात्युश[2]। किन्तु यह बात अदोनाई के लोगों के लिए ही है। ऐसा कब हुआ है कि अमोनाई अपने मतलब में पीछे रहे हों? मेरी समझ से तो प्रभु की बेदी पर बलिदान के लिए हमें मेमनों की भेंट उनकी कोई उदारता नहीं है क्योंकि इसके बदले उन्हें प्रति मेमना तीस रजत शेकेल प्राप्त जो होता है।"

---

१. फिनीशिया के निवासियों द्वारा पूजित एक देवता।

२. पुरानी इंजील का कानून।

अबुल फतीम ने उत्तर दिया—"बेन-लेवी ! तुम भूल रहे हो कि जिस रोमन पाम्पी ने अधर्मपूर्वक सर्वोच्च प्रभु के नगर को घेर रखा है उसके पास इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि वेदी पर बलिदान के लिए इस प्रकार खरीदे गए मेमने सचमुच उसी काम में लाए जाते हैं या आत्मा के स्थान पर शरीर पोषण के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं ?"

फैरिसी दरवेशों के एक छोटे कट्टर सम्प्रदाय का सदस्य था। ये लोग अपने देवमन्दिर के चबूतरे की ओर दौड़ते और उससे टकराकर अपने पांव लोहू-लुहान कर लेते थे। इससे दूसरे कम कट्टर उपासक उनसे जलते थे। उसने चीखकर कहा—"मुझे अपनी उस दाढ़ी के पंचकोणों की कसम है, जिसे पुजारी होने के कारण मुंड़ाने का मुझे निषेध है। भाई, क्या यही दिन देखना हमारी किस्मत में लिखा था कि रोम का एक ईश्वर-निन्दक एवं मूर्तिपूजक छिछोरा पवित्र एवं बलिपूत पदार्थों द्वारा शरीर की भूख बुझाने का दोषारोपण हमपर करे ? क्या हम इसी दिन को देखने के लिए जीवित थे कि—"

अबुल फतीम ने बीच में ही बाधा देकर कहा—"हमें उस फिलिस्तीनी के उद्देश्यों पर शक नहीं करना चाहिए, क्योंकि आज पहली बार ही हमें उसके लोभ या उसकी उदारता से लाभ उठाने का मौका मिला है। आओ, यह सब छोड़ हम जल्दी उस परकोटे पर पहुंचें, नहीं तो कहीं उस वेदी पर भेंट चढ़ना रह न जाए जिसकी ज्वाला आकाश की वर्षा नहीं बुझा सकती और जिसके धूम्रस्तंभ को कोई तूफान हिला नहीं सकता।"

नगर के जिस भाग की ओर हमारे योग्य गिजबरीम अब भगे, और जिसका नाम अपने निर्माता बादशाह डेविड के नाम पर रखा गया था, वह यरूसलेम का सबसे दृढ़ दुर्गों से घिरा अंचल माना जाता था, क्योंकि वह ज़ियोन की एक ऊंची, ढलवां पहाड़ी पर स्थित था। वहां एक चौड़ी, गहरी, प्राचीरीकृत खाई थी जो ठोस चट्टानों को काटकर बनाई गई थी। वह अपने अन्ततंट पर बनी एक अत्यन्त सुदृढ़ दीवार से रक्षित थी। यह दीवार, बीच-बीच में, श्वेत मर्मर पत्थर के चतुर्भुजाकार बुर्जों से भूषित थी।

इनमें सबसे छोटा बुर्ज ऊंचाई में साठ और सबसे ऊंचा एक सौ बीस क्यूबिट[1] (या हाथ) था। परन्तु बैंजमिन दरवाजे के निकट दीवार खाई के छोर के ऊपर उठी हुई नहीं थी। बल्कि इसके विपरीत खाई के स्तर और परकोटे के पाये के बीच ढाई सौ क्यूबिट का एक खड़ा टीला था जो ढलुवें मोरिया पर्वत का एक भाग बन गया था। सीमियन और उसके साथी अदोनी-ब्रेजेक बुर्ज के शिखर पर, जो यरूसलेम के आस-पास के शिखरों में सबसे ऊंचा था और घेरा डालनेवाली सेना के साथ मंत्रणा करने का स्थान था, पहुंच गए और चियोप के पिरामिड तथा बेलम के मन्दिर से भी ऊंचे उस स्थान से नीचे शत्रु की छावनी की ओर देखने लगे।

व्यग्र भाव से कगार की ओर देखते हुए फैरिसी के मुंह से कराह-सी निकली—"बेशक सुन्नत-रहित ये काफिर सागर-तट के बालुकाकणों की भांति हैं, वे मरुभूमि की टिड्डियों की तरह हैं। बादशाह की घाटी एदोमिन की घाटी बन गई है।"

बेन-लेवी ने उसमें अपनी बात जोड़ी—"फिर भी तुम मुझे एक भी ऐसा फिलिस्तीनी नहीं बता सकते—अलिफ से तोय तक—मरुभूमि से दुर्ग-प्राचीर तक—जो जाद अक्षर से बड़ा दीखता हो।"

इसी समय एक रोमन सैनिक कर्कश, रूखे स्वर में चिल्ला उठा—ऐसे स्वर में जो प्लूटो के अंचल से आता प्रतीत होता था—"रजत् शेकेल सिक्कों के साथ, टोकरा नीचे उतारो—टोकरा नीचे भेजो अभिशप्त सिक्कों के साथ, जिसके कारण एक श्रेष्ठ रोमन को इस तरह चिल्लाना पड़ रहा है। क्या इसी तरह तुम लोग हमारे मालिक पाम्पियस के प्रति, जिसने अपनी दयालुता के वश तुम्हारे मूर्तिपूजा-सम्बन्धी आग्रहों को सुनने योग्य समझा, अपनी कृतज्ञता प्रकट कर रहे हो? फोबस देवता, जो एक सच्चे देव हैं, एक घण्टे से रथारूढ़ हैं—फिर क्या तुम्हें सूर्योदय तक शहर-पनाह पर पहुंच नहीं जाना चाहिए था? सूअरो! क्या तुम समझते हो

---

१. १८ से २२ इंच लम्बा हस्त-नाप।

कि हम, संसार के विजेता, हर श्वानशाला के पास खड़े होकर प्रतीक्षा करने और धरती के कुत्तों से बातचीत करने के लिए ही हैं—हमें और कोई काम नहीं है ? नीचे गिराओ। मैं कहता हूं, नीचे गिराओ, और देखो, सिक्के चमचमाते हुए तथा वज़न में ठीक हों।"

जब शतसेनानायक की बेसुरी आवाज़ कगार की चट्टानों से टकराकर मन्दिर में खो गई तब फैरिसी ने कहा—"अल एलोहीम ! अल एलोहीम (अरंहीम ?) ! यह फोबस देवता कौन है ? नास्तिक ने किसका आवाहन किया ? तुम, बुज़ी-बेन-लेवी ! तुम तो इन काफिरों के नियम-कानून के पण्डित हो, उनके बीच रहे हो—उनके जो तेराफीम से मनोरंजन करते हैं ? क्या नगंल के बारे में मूर्तिपूजक बोल रहा था ?—या अशीमा ?—या निमाज़ ?—या तार्ताक ?—या आद्रमलेख ?—या अनामलेख ?—या सकोथ ?—बनोथ ?—या देगोन ?—या बेलियल ?—या बाल-पेरिथ ?—या बाल-पीर ? या बाल-जेबूब, किसके लिए कह रहा था ?"

"बेशक, वह इनमें से कोई नहीं है। पर होशियार, तुम बड़ी तेज़ी से रस्सी छोड़ रहे हो, कहीं टोकरा उस बाहर की ओर निकली शिला में फंस न जाए, नहीं तो देवालय की पवित्र वस्तुओं की दुर्गत हो जाएगी।"

किसी बेढंगी मशीन की सहायता से बुरी तरह भरा टोकरा सावधानी के साथ नीचे ढीला गया। उस चक्करदार शिखर से दिखाई पड़ा कि रोमन उसके चारों ओर इकट्ठे हो गए हैं, किन्तु बहुत ऊंचा होने तथा कोहरा फैले रहने के कारण साफ-साफ दिखाई नहीं पड़ता था कि वे क्या कार्रवाई कर रहे हैं।

आधा घण्टा बीत गया।

इतना समय बीत जाने के बाद, गर्त की ओर देखते हुए, फैरिसी ने कहा—"हमें बहुत विलम्ब हो रहा है, बहुत विलम्ब हो रहा है, कैथोलीम हमें नौकरी से निकाल बाहर करेगा।"

अबुल फतीम ने भी समर्थन किया—"हमें इस देश की चर्बी का आहार फिर प्राप्त नहीं होगा—अब हमारी दाढ़ियां लोहबान की खुशबू से

सुगंधित नहीं होगी—और अब हमारी कमर मन्दिर के सुन्दर पट से आच्छादित नहीं होगी।"

"बदमाश !" बेन-लेवी गुर्राया—"बदमाश। क्या ये खरीद का दाम ऐंठकर धोखा देना चाहते हैं ?—या पवित्र मूसा ! कहीं वे सिक्कों को तौलकर देख तो नहीं रहे हैं ?"

इसी समय फैरिसी चिल्ला उठा—"उन्होंने सिगनल दिया है—आखिरकार सिगनल दिया है। खींचो, अबुल फतीम।—और तुम बुज़ी-बेन-लेवी, ऊपर खींचो। अरे, लगता है कि या तो फिलिस्तीनी अब भी टोकरे को पकड़े हुए हैं या भगवान् ने उनके हृदयों को मृदु करके उनसे बहुत बोझवाला मेमना रखवा दिया है।" और गिज़बरीम टोकरे को खींचने लगे, जो अब भी बढ़ते हुए कोहरे के बीच अधर में लटक रहा था।

° ° ▪

"अहा हा !" घण्टे-भर बाद रस्से के सिरे पर कोई पदार्थ अस्पष्ट रूप से दिखाई देते ही बेन-लेवी खुशी से नाच उठा—"अहा हा !"

"अहा हा ! निश्चय ही यह एंगदी के जंगलों का दुम्बा है, जेहोसापत की घाटी की तरह ही ऊबड़-खाबड़।"

अबुल फतीम बोल उठा—"यह पशुकुल का पहला बच्चा जान पड़ता है। उसके होठों की मिमियाहट और उसके अंगों के निर्दोष मोड़ से यह बात साफ जाहिर है। उसकी आंखें प्रधान पादरी (पेक्टोरल) के रत्नों से अधिक सुन्दर हैं—और उसका मांस हेबरून के शहद जैसा है।"

फैरिसी ने कहा—"बशान के चरागाहों में पलकर वह खूब तगड़ा हो गया जान पड़ता है। नास्तिकों ने तो हमारे साथ बहुत अच्छा सलूक किया। आओ, हम उनकी प्रशंसा का गीत गाएं। आओ, हम शाम (एक प्रकार का अब अप्रचलित हारमोनियम) और सालटेरी (सारंगी), ढोल और तुरही पर उन्हें शुक्रिया दें।"

किन्तु जब तक टोकरा बिल्कुल नजदीक नहीं आ गया और उससे एक गुर्राहट नहीं निकली, तब तक उन्होंने नहीं देखा कि उसमें एक बृहदाकार

सूअर बैठा है।

देखते ही तीनों ने आसमान की ओर देखकर कहा—"अल अमां!" और रस्सा उनके हाथ में छूट गया और मुक्त शूकर सिर के बल फिलिस्तीनों के बीच धम से गिरा। "अल अमां! खुदा हमारी खैर करे। इस मांस का तो नाम लेना भी निषिद्ध है।"

फैरिसी अपने कपड़े सम्भालता और शहर की ओर जाता हुआ बोला —"अब आगे कोई मुझे सीमियन न कहे, क्योंकि इसका मतलब होता है —वह जो सुनता है। अब मैं बोनरजीस कहलाऊंगा, जिसका मतलब होगा—"वज्रपुत्र।"

वॉन जुंग

मेरे मित्र, बैरन रित्जनर वॉन जुंग का जन्म एक श्रेष्ठ हंगेरियान वंश में हुआ था। जहां तक पुराने अभिलेखों से पता चलता है, इस वंश के प्रत्येक आदमी ने किसी न किसी क्षेत्र में विशेष योग्यता प्राप्त की थी—अधिकांश ने विकृतियों या हास्यजनकता में ही नाम कमाया था। इस वंश की एक सन्तान टाइक ने तो अपनी हास्यजनकता के उदाहरणीय नमूने पेश किए थे—यद्यपि यह कहना कठिन है कि वही इस विषय में सबके आगे था। रित्जनर से मेरा परिचय आलीशान जुंग-भवन में ही हुआ था, जहां सार्वजनिक रूप से प्रकट न किए जाने योग्य हास्यास्पद दुस्साहसिक कार्यों के बाद, मैं किसी तरह सन्···की ग्रीष्म ऋतु में जा पहुंचा था। यहां उनकी निगाहों में मैंने कुछ सम्मान का स्थान प्राप्त कर लिया, और वहीं काफी कठिन प्रयास के बाद उनकी मानसिक प्रक्रियाओं की भी एक झलक पाने में समर्थ हुआ था। जब बाद के दिनों में हम और अधिक घनिष्ठ हो गए थे यह अन्तर्दृष्टि या झलक ज्यादा स्पष्ट हो गई, और जब तीन वर्ष की जुदाई के बाद हम···में मिले तो मुझे वह सब मालूम हो चुका था जो बैरन रित्जनर वॉन जुंग के चरित्र के बारे में जानना जरूरी था।

मुझे वह उत्सुकता का गुंजन याद है जो पच्चीस जून की रात को उनके कालेज-प्रांगण में प्रवेश करने पर देखा गया था। उससे भी ज्यादा मुझे यह बात याद है कि जब प्रथम दर्शन में ही प्रत्येक दल उन्हें संसार का सबसे उल्लेखनीय व्यक्ति घोषित कर रहा था तो इस राय का कारण जानने की चेष्टा किसी आदमी ने नहीं की थी। वह अद्वितीय थे, यह तो अकाट्य मालूम होता ही था, किन्तु यह पूछना शिष्टाचार नहीं समझा

गया कि यह अद्वितीयता किस बात में निहित थी। खैर, इस समय यह बात जाने दीजिए; मैं सिर्फ इतना ही कहूंगा कि विश्वविद्यालय की सीमा में पदार्पण करने के प्रथम क्षण से ही उन्होंने अपने चतुर्दिक फैले सम्पूर्ण समाज के अभ्यास, आचरण, व्यक्ति, धन, नैतिक भावनाओं और शारीरिक प्रवृत्तियों पर ऐसा सर्वव्यापी एवं नितान्त निरंकुश प्रभाव डाला, जो सब कुछ होते हुए भी बिल्कुल अस्पष्ट तथा दुर्ज्ञेय था। इस प्रकार विश्वविद्यालय में उनके निवास का अल्पकाल उसकी गाथाओं में एक युग बन गया और उससे सम्बद्ध अथवा उसके अधीन सभी वर्गों के लोग बैरन रित्जनर वॉन जुंग के प्रभुत्व के असामान्य युग के रूप में उसकी चर्चा करने लगे।

मैंने देखा है—यहां यह ख्याल रखना चाहिए कि गोथम में ऐसे लोग अब भी जीवित हैं जिन्होंने मेरे साथ ही इन बातों को देखा है और जिन्हें मेरे द्वारा लिखी जानेवाली ये बातें अच्छी तरह याद होंगी—मैंने अग्राह्य तथा स्पष्टतः अपर्याप्त साधनों के द्वारा अत्यन्त अप्राकृत रूप से सम्बद्ध घटनाओं को घटित होते देखा है। मैंने देखा है—और मैंने क्या नहीं देखा है? मैंने नर्त्तकी विलानोवा को राष्ट्रीय विधि के चेयर से व्याख्यान देते देखा है, और मैंने द—, प—, त—एवं वॉन क—सबको उसके गंभीर पाण्डित्य पर झूमते हुए देखा है, मैंने रक्षक कौंसल तथा सम्पूर्ण संकाय को एक मौसमी मुर्गी की पंचों पर भौंचक होते देखा है। मैंने गायनाचार्य का स्वागत सिसकारियों से और नगण्य गवैये का स्वागत सन्तोषजनक उद्‌गारों से होते हुए देखा है। मैंने रोटण्डा के शिखर पर बैलों-सहित बैलगाड़ी देखी है। मैंने ज—के सम्पूर्ण शूकरछौनों को बालदार टोपियां (पेरीविग) पहिने और उसकी समस्त गायों को पादरियों की सभा में उपस्थित देखा है। मैंने सेण्ट प'''के धौरहरे पर पंद्रह सौ वाचाल बिल्लियों को देखा है। मैंने कालेज के उपासनागृह पर बम गिरते देखा है। मैंने कालेज की प्राचीरों पर बहुत बुरी तरह इश्तिहार चिपकाए जाते देखा है। मैंने सारी दुनिया को कानों से देखा है। और सबसे बड़ी बात तो यह कि इन घटनाओं को बिल्कुल

उचित, प्रशंसनीय तथा संसार की अनिवार्य वस्तुओं में गिने जाते देखा है। और यह सब उस प्रभुत्वशाली बैरन रित्ज़नर वॉन जुंग के सर्वव्यापी तथा ऐन्द्रजालिक, यद्यपि मौन, प्रभाव से ही सम्भव हो सका था।

जब ज— में बैरन का आगमन हुआ तो पता लगाकर वह मेरे कक्ष में मुझसे मिलने आए। तब उनकी कोई खास उम्र नहीं थी—मेरा मतलब यह है कि उनके द्वारा अपने बारे में दिए हुए तथ्यों से यह पता नहीं चलता था कि उनकी उम्र वस्तुतः क्या है। वह पंद्रह के भी हो सकते थे और पचास के भी, यद्यपि वे थे इक्कीस साल सात महीने के। ऊंचाई में वह लगभग पांच फुट आठ इंच थे। वह किसी तरह खूबसूरत नहीं थे—बल्कि इसके विपरीत ही थे। उनकी मुखाकृति कृश एवं कठोर थी। उनका माथा ऊंचा और भव्य था; उनकी नाक चिपटी थी; आंखें बड़ी, बोझीली, निष्प्रभ और अर्थहीन थीं। मुख में और भी ध्यान देने योग्य बातें थीं। होंठ कुछ-कुछ उभरे हुए और एक-दूसरे पर इस प्रकार आश्रित थे कि किसी, यहां तक कि मनुष्य के चेहरे-मोहरे के अत्यन्त जटिल समुच्चय में भी यह कल्पना करना असम्भव था कि वे उसकी भांति अनुपम रूप में अप्रशमित गम्भीरता, पवित्रता एवं शान्ति की भावना प्रकट कर सकते हैं। इस प्रकार मेरे पाठकों के सामने शारीरिक बैरन उपस्थित हैं। उनकी मानसिक विशेषताओं के बारे में मैंने अंशतः ही संकेत किया है, अब उसमें जो वृद्धि करनी होगी उसे अपने शब्दों में कहूंगा क्योंकि मैं देख रहा हूं कि अपने मित्र का वर्णन करने में मैं अजाने ही शासनकारी बैरन रित्ज़नर वॉन जुंग की अनेक विचित्र साहित्यिक शिष्टवादिताओं में से किसी न किसीका शिकार हो गया हूं।

मैं जो कुछ ऊपर कह चुका हूं उससे निस्संदेह यह कल्पना की जा सकती है कि बैरन ऐसे अनोखे मानवों में से एक थे, जो कभी-कभी पाए जाते हैं और जो रहस्यमयीकरण के विज्ञान को अपने जीवन का अध्ययन और कार्य बना लेते हैं। उनकी विचित्र मानसिक मोड़ ने सहजवृत्ति से ही उन्हें इस विज्ञान की ओर प्रेरित कर दिया और उनकी शारीरिक रचना

ने योजना को कार्यरूप में परिणत करने के लिए उन्हें असामान्य सुविधाएं प्रदान कीं। मुझे पक्का विश्वास है कि ऐसे विख्यात युग में, जिसे वैचित्र्य-पूर्वक बैरन रित्जनर वॉन जुंग के प्रभुत्वकाल के नाम से पुकारा गया है, ज——न का कोई छात्र उस रहस्य को ठीक-ठीक समझ नहीं पाया होगा जो उसके चरित्र पर छा गया था। मैं ठीक ही सोचता हूं कि मुझे छोड़ विश्वविद्यालय का कोई भी आदमी कभी सन्देह नहीं कर सकता था कि वह जबानी या व्यवहारत: कोई मजाक कर सकते हैं। उनकी अपेक्षा उद्यान-कपाट के बूढ़े बुलडाग (पहरेदार), हेरा क्लिप्स के शव या धर्मविज्ञान के एमेरिटस प्रोफेसर को अधिक आसानी से इसके लिए अपराधी ठहराया जा सकता है। और यह बात उस अवस्था में थी जब यह स्पष्ट था कि अत्यन्त उद्वेगकारी और अक्षम्य जितनी भी प्रवंचनाओं, सनकों एवं भड़ैंतियों की कल्पना की जा सकती है वे यदि प्रत्यक्ष रूप से नहीं तो उनके मध्यवर्ती एजेण्टों द्वारा कराई जाती थीं या स्वयं उनके शह से होती थीं। रहस्यमयी-करण की उनकी कला की खूबी उनकी उस विचक्षण योग्यता (योग्यता जो मानव-स्वभाव के सहज ज्ञान एवं अद्‌भुत आत्मनियंत्रण से उत्पन्न हुई थी) में निहित थी जिसके द्वारा सबपर यह छाप पड़ती थी कि जिस अनोखे मसखरेपन में लिप्त वह दिखाई पड़ते हैं वह उनके अंशत: न चाहते हुए, और अंशत: उसे दूर करने के प्रयत्नों तथा मातृसंस्था (अपने विश्वविद्यालय) की सुव्यवस्था एवं मर्यादा की रक्षा के लिए ही हो रहा है। अपने प्रशंसनीय प्रयत्नों की ऐसी हर एक असफलता पर जो गहरा, तीव्र एवं प्रचुर अनुताप उनके चेहरे की रेखा-रेखा से व्यक्त हो उठता था वह उनके अत्यन्त संशयालु साथियों के हृदय में भी उनकी सच्चाई के विषय में कोई सन्देह नहीं रहने देता था। जिस निपुणता के साथ वह विकृति की भावना को प्रणेता से प्रणीत पर, खुद अपने से अपने ही द्वारा उत्पन्न असंगतियों पर स्थानान्तरित कर देते थे वह भी देखने ही योग्य थी। इस कठिन काम को वह किस प्रकार सम्पन्न करते थे, इसका पता मुझे अपने मित्र की विचित्र-ताओं के दीर्घकालिक अध्ययन से और इस विषय पर उन्हींके द्वारा समय-

समय पर दिए गए प्रवचनों से, लगा था। परन्तु इस सम्बन्ध में अब मैं ज्यादा नहीं लिख सकता। किन्तु जो घटना मैं बताने जा रहा हूं, उसके पहले की कोई ऐसी घटना मैं नहीं जानता जिसमें स्वाभावतः रहस्यमय वह व्यक्ति अपनी ही चालों एवं योजनाओं के स्वाभाविक परिणामों से बच निकला हो और अपने ही चरित पर, अपने ही ऊपर उनको झेल लिया हो। ऐसा लगता था कि निरन्तर सनकों के वातावरण से घिरा हुआ मेरा मित्र केवल समाज की कठोरताओं के लिए जी रहा है, यहां तक कि उनका परिवार भी उनकी स्मृति को कठोर एवं महत् के अतिरिक्त और किसी बात के साथ सम्बद्ध करने को कभी तैयार नहीं हुआ।

यदि मैं बैरन की चालबाजियों के चक्रव्यूह में प्रवेश करना चाहूं या व्यावहारिक रहस्यमयीकरण के अनूठे व्यापार में, जिसने विश्वविद्यालय की उन्मत्त आत्माओं पर उनका ऐसा प्रभाव स्थापित कर दिया था, उनका अनुगमन करूं तो इसके लिए मुझे उससे कहीं ज्यादा स्थान चाहिए जितना इस लेख के लिए मैंने निश्चित किया है। इसलिए मैं आगे इन बातों को संक्षेप में ही लिखूंगा। मैं भली भांति जानता हूं कि रित्जनर की जैसी बुद्धि थी, और जिस बुद्धि में विलक्षणता के प्रति एक आनुवंशिक एवं विकसित रुचि हृदय की दैनन्दिन प्रेरणाओं-सम्बन्धी सहज विचक्षणता के साथ संयुक्त हो गई थी, उसके ऐन्द्रजालिक प्रभाव की सूक्ष्म खोज करने बैठूं तो मेरे आगे एक ऐसा अनतिक्रमित क्षेत्र फैल जाएगा जो नवीनता एवं स्फूर्ति, मनोवेग एवं घटनाओं से भरा होगा और जिसमें कल्पना एवं विश्लेषण दोनों के पोषण के लिए पर्याप्त सामग्री होगी। किन्तु मैं पहले ही कह चुका हूं कि इस अल्प स्थान में उसका वर्णन सम्भव नहीं है। फिर बैरन अभी बेल्जियम में जीवित हैं और यह कोई असम्भव बात नहीं है कि जो कुछ मैं लिख रहा हूं वह उनकी आंखों से गुजरे। इसलिए कम से कम यहां और इस समय मैं उनकी मानसिक प्रक्रिया की कोई ऐसी बात प्रकट न करूंगा जो भले अपनी सनक के कारण ही सही, वे गुप्त रखना चाहते हैं। फिर भी लिखते समय अनायास एकाध ऐसी घटना तो आ ही जाएगी जो उनके

कार्य की आन्तरिक भावना की झलक दे दे। उनकी तरकीबें अनन्त थीं, और इस सुनियोजित विविधता में ही उस असंशय का रहस्य छिपा था, जिसके साथ वे अपनी अनेकानेक कार्रवाइयां किया करते थे।

इस प्रभुत्व-काल में ऐसा मालूम होता था मानो सुखद आलस्य का दानव दुःस्वप्न की भांति विश्वविद्यालय पर छा गया है। खाने-पीने और मौज-बहार के अलावा और कुछ वहां होता ही न था। छात्र-निवास मधुशालाओं के रूप में बदल गए थे। इनमें से कोई मधुशाला इतनी प्रसिद्ध या लोकप्रिय नहीं थी जितनी आपके इस क्षुद्र सेवक की, या बैरन रित्ज़नर वॉन जुंग की थी। यहां यह समझ लेना चाहिए कि हम दोनों घनिष्ठ सखा थे। हम मदिरापान के कितने ही उत्सव करते रहते थे। ये उत्सव कोलाहल-पूर्ण होते थे और देर तक चलते थे। इनमें कभी घटनाओं की कमी न होती थी।

एक बार की बात है कि हमारी बैठक बहुत देर तक चलती रही, यहां तक कि सूर्योदय की लालिमा फैलने लगी। इस बैठक में असाधारण मात्रा में मदिरा का प्रयोग हुआ था। इस दल में बैरन तथा मेरे अलावा सात-आठ आदमी और थे। इनमें से अधिकांश धनवान, बड़े सम्बन्धों तथा उच्च वंश-गौरववाले युवक थे और सबके अन्दर अपने अत्युक्तिपूर्ण सम्मान का भाव था। वे द्वन्द्वयुद्ध के बारे में अत्याधुनिक जर्मन राय रखते थे। इन स्वच्छन्द भावनाओं को कतिपय हाल के पेरिसी प्रकाशनों तथा ज—न के तीन-चार दुस्साहसिक एवं सांघातिक उदाहरणों से नई स्फूर्ति प्राप्त हो चुकी थी। इसलिए रात के अधिकांश भाग में समय के इस सर्वप्रिय विषय पर ही बहस चलती रही। रात के प्रारम्भिक भाग में बैरन अपने सामान्य स्वभाव के विपरीत बहुत मौन और उखड़े-उखड़े-से लगते थे, किन्तु अन्त में उनकी उदासीनता दूर हो गई; उन्होंने बहस में प्रमुख भाग लिया और द्वन्द्व के नवीन नियमों के लाभों, और उससे भी अधिक उसकी खूबियों का ऐसे उत्साह, वाग्मिता एवं प्रभावशीलता के साथ विवेचन किया, फिर जो कुछ कहा वह ऐसी प्रीतिमयी शैली में कहा कि उनके समस्त श्रोता प्रशंसा

और उत्साह के उद्गारों से पूर्ण हो उठे, यहां तक कि मैं भी हक्का-बक्का रह गया——मैं, जो कि अच्छी तरह जानता था कि हृदय से वह उन्हीं बातों का मजाक उड़ानेवाले हैं और द्वन्द्व के उन नियमों के प्रति घोर घृणा से भरे हुए हैं।

जब बैरन का प्रवचन (जो कालेरिज की उत्साहपूर्ण, झंकृत, एकरस किन्तु गीतिमय उपदेशात्मक शैली से मिलता-जुलता था) बीच में थोड़ी देर के लिए रुका तब मैंने अपने चारों ओर नजर डाली और देखा कि दल के एक सदस्य के चेहरे पर मामूली से कहीं ज्यादा दिलचस्पी के लक्षण उदित हैं। यह आदमी जिसे मैं हरमैन के नाम से पुकारना चाहूंगा, हर बात में मौलिक था——इस अपवाद को छोड़कर कि वह सम्पूर्ण ईसाई-जगत् के बड़े से बड़े गधों में से एक था। किन्तु किसी कौशल से यूनिवर्सिटी के एक विशेष वर्ग में वह गम्भीर आध्यात्मिक चिन्तन और कुछ तार्किक बुद्धि के लिए प्रसिद्ध हो गया था। उसका शारीरिक ढांचा इतना विचित्र था कि मैं उसकी जो रूपरेखा यहां दे रहा हूं उसी से वे लोग उसे पहचान जाएंगे जिन्हें कभी उसके साथ रहने का मौका मिला होगा। मैंने जितने लम्बे लोगों को अबतक देखा है वह उन सबसे लम्बा था—अर्थात् साढ़े छः फुट का। परन्तु उसका अंग-विन्यास अनुपात में बेढंगा था। उसके पांव छोटे, झुके हुए और पतले थे, जबकि उनके ऊपर उठा हुआ धड़ हरक्यूलीज़ के योग्य था। उसके कंधे गोल, उसका गला मोटा किन्तु लम्बा और आगे की ओर झुका था जिसके कारण उसके आनतमुखी होने का भ्रम होता था। उसका सिर बृहदाकार था और काले-स्याह बालों के सघन पुंज से पूर्ण था। इन बालों के दो बड़े गुच्छे, पोमेड के सहारे जमाये हुए, नीचे कनपटियों बल्कि अंशतः कपोलास्थि तक लटकते थे, एक फैशन जो पिछले दिनों संयुक्त राज्य (अमरीका) के निवासियों के कृपा-प्रसाद का पात्र होने लगा है। परन्तु असल विचित्रता तो मुख में थी। ऊपर का भाग तो बड़े अच्छे अनुपात से बना था और महान् प्रतिभा का संकेत देता था। माथा बहुत बड़ा और चौड़ा था तथा सम्मुखास्थि (आस फ्रंटिस) के ऊपर

की चीजें (कान, आंख, नाक इत्यादि) इस प्रकार विकसित हुई थीं कि हर एक दर्शक का ध्यान तुरन्त अपनी ओर खींच लेती थीं। आंखें बड़ी और प्रकाशपूर्ण थीं तथा उनमें एक ऐसी दीप्ति थी जिसे भ्रमवश बुद्धि की दीप्ति समझा जा सकता है। भौंहें छोटी, सरल और चित्रोपम थीं—ऐसी जिनसे सामान्य योग्यता का बिल्कुल निश्चित संकेत मिलता है। सुग्गे की-सी नासिका अत्यन्त भव्य थी—ऐसी जिससे ज्यादा शानदार, सूक्ष्म और सुगठित नासिका कभी देखी नहीं गई। जैसा मैं कह चुका हूं, ये सब चीजें बहुत अच्छी थीं। विकृति तो मुखाकृति के अधोभाग में थी और ऊर्ध्वभाग के प्रभाव को नष्ट कर देती थी। ऊपर का ओंठ (जो लम्बाई में बहुत ज्यादा था) ऐसा लगता था मानो मधुमक्खी के डंक मारने से फूल गया और नाक के ठीक नीचे एक छोटी काली मूंछ के कारण और भद्दा लगता था। नीचे का ओंठ (अधर) अपने साथी की स्थूलता के प्रति विरक्त हो और उसके प्रति कम से कम सादृश्य प्रकट करने के विचार से उससे जितना सम्भव हो सकता था, दूर हट गया था। वह बहुत छोटा और पतला था इस तरह नीचे झुका हुआ था मानो अपने को दिखाने में शर्मा रहा हो। ठुड्ढी तो दो-एक इंच और पीछे हटकर ऐसी हो गई थी कि उसे ठुड्ढी के सिवा दुनिया की और कोई भी चीज कहा जा सकता था।

मुंह के ऊपरी भाग से निचले अंगों के इस आकस्मिक परिवर्तन बल्कि अवतरण या पतन का अनुपात मुंह तथा शरीर के धड़ इत्यादि अन्य भागों के बीच सुरक्षित था, जिसकी अनोखी बनावट का वर्णन मैं पहले कर चुका हूं। इस सम्पूर्ण शरीर-रचना का परिणाम यह था कि हरमैन की शारीरिक आकृति को लेकर नित्य परस्पर-विरोधी विचार प्रकट किए जाते थे। सीधे खड़े रूप में वह बड़ा विकराल दिखाई पड़ता था और जैसा कि वह सचमुच था, बेवकूफ लगता था। किन्तु जब वह टेबुल के पास अपनी केहुनियों के ऊपर मुंह के निम्नभाग को ढके हुए, गम्भीर चिन्तन की मुद्रा में (जो प्रायः उसमें दिखाई पड़ती थी) बैठता था तो उसकी मुखश्री दिखाई पड़ती थी, वह मैंने जीवन में अन्यत्र नहीं देखी। द्वन्द्वयोद्धा (डुए-

लिस्ट) की हैसियत से उसने बड़ा नाम कमाया था, इस विषय में ज——न (विश्वविद्यालय) में भी उसकी शोहरत थी। ठीक-ठीक कितने उसके हाथ शिकार हुए, यह तो मैं भूल रहा हूं, किन्तु उनकी तादाद काफी थी। निस्सन्देह वह बड़ा साहसी व्यक्ति था। किन्तु अभिमान उसे वस्तुतः द्वन्द्व-युद्ध के शिष्टाचरण के अपने सूक्ष्म ज्ञान और अपनी सम्मान-भावना की उत्कृष्टता पर था। ये बातें सांघातिक रूप से उसकी अभिरुचि——शौक——का विषय बन गई थीं। रित्जनर तो विलक्षण वस्तुओं की खोज में सदा रहते ही थे, इसलिए हरमैन की शारीरिक एवं मानसिक विचित्रताएं बहुत दिनों से उनके रहस्यीकरण की भूख मिटाती आ रही थीं। मुझे यह बात मालूम न थी, किन्तु उस विशेष अवसर पर मैंने स्पष्ट देख लिया कि मेरे दोस्त पर कोई सनक सवार है और विशेषतः हरमैन उसका लक्ष्य है।

जब रित्जनर ने पुनः अपना प्रवचन, अथवा स्वगत-कथन शुरू किया तो मैंने देखा कि हरमैन की उत्तेजना क्षण-क्षण बढ़ रही है। अन्त में उसने रित्जनर द्वारा उपस्थित किसी मुद्दे पर आपत्ति की और ब्यौरे के साथ उसके कारण भी बताए। बैरन ने विस्तार से उसका जवाब दिया और (अपनी वाणी की जानबूझकर बढ़ाई हुई भावार्द्रता कायम रखते हुए) मेरी समझ से कुरुचिपूर्ण ढंग पर ताने और उपहास के साथ उसे समाप्त किया। अब हरमैन की 'हाबी' उसके दांतों में कटकटा उठी। उसके उत्तर में जो लोमहर्षक लन्तरानियां थीं उससे मैं यही निष्कर्ष निकाल सका। उसके अन्तिम शब्द अब तक मुझे याद हैं:—"बैरन वॉन जुंग, मुझे कहने दीजिए कि आपकी राय यद्यपि अधिकांश ठीक है, अनेक बातों में स्वयं आपके लिए और जिस यूनिवर्सिटी के आप सदस्य हैं उसके लिए लज्जाजनक है। कुछ बातों में तो वह गम्भीर प्रतिवाद के भी योग्य नहीं है। महोदय, मैं इससे भी अधिक कुछ कहता परन्तु इसलिए नहीं कहता कि उससे आपका अपमान होगा (यहां वक्ता व्यंगपूर्वक मुस्कराया)। महोदय, मैं कहूंगा कि आपकी राय वह नहीं है जिसकी, जिसकी एक भद्र पुरुष से आशा की जाती है।"

ज्योंही हरमैन ने यह चिन्त्य वाक्य पूरा किया, सबकी आंखें बैरन पर जा लगीं। उनका चेहरा पहिले बिल्कुल पीला पड़ गया, फिर स्पष्टत: लाल हो गया। उन्होंने अपना रूमाल नीचे गिरा दिया और उसे उठाने के बहाने नीचे झुककर अपने को सामान्य स्थिति में लाने की कोशिश की। उस समय मैंने उनके चेहरे की एक झलक देखी, जबकि टेबुल के गिर्द बैठा दूसरा कोई भी उसे नहीं देख सका। वह एक निराली अभिव्यक्ति से दमक रहा था, जो उसकी सहज प्रकृति थी किन्तु जिसे मैंने उस अवसर के सिवा जब हम दोनों इकले होते थे, और कभी नहीं देखा था। इसके बाद एक क्षण में वह हरमैन के सामने सीधे तनकर खड़े हो गए। इतने कम समय में इस प्रकार किसी के चेहरे को इस सीमा तक बदलते मैंने कभी नहीं देखा था। क्षणभर के लिए तो मैंने यह भी सोचा कि मैंने उन्हें गलत देखा है और वे अपने में पूर्णत: शान्त हैं। ऐसा लगता था मानो आवेश से उनका दम घुटा जा रहा है; उनका चेहरा मुर्दे-सा सफेद पड़ गया था। अपने मनोभावों पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए कुछ देर तक वह मौन रहे। जब लगता था कि अपने इस उद्देश्य में वह सफल हो गए हैं तो अपने पास रखे एक डिकैण्टर (मदिरापात्र, सुराही) को उठा लिया और उसे अपनी मुट्ठी में दृढ़तापूर्वक दबाए हुए कहा, "माइनहीर हरमैन, अपने विचार मुझे सुनाने में तुमने जिस भाषा का प्रयोग करना उचित समझा है, वह इतनी बातों में आपत्तिजनक है कि उन्हें अलग-अलग बताने योग्य न तो मेरी मन:स्थिति है, न उसके लिए मेरे पास समय ही है किन्तु 'मेरी राय ऐसी नहीं जिसकी एक भद्रजन से आशा की जा सकती है,' यह बात इतनी अपमानजनक है जिसने मेरे पास आचरण का एक ही रास्ता छोड़ा है। फिर भी इस मण्डली की उपस्थिति में, और तुम्हारे लिए भी, मेरे अतिथि होने के कारण, कुछ शालीनता की अपेक्षा है। इसलिए यदि मैं व्यक्तिगत तिरस्कार के ऐसे मामलों में प्रचलित सामान्य व्यवहार से किंचित् हट जाऊं तो तुम मुझे क्षमा करोगे। मैं तुम्हारी कल्पना पर जो लघु कर-भार डालूंगा और उस दर्पण में तुम्हारी जो परछाई पड़ रही है उसे परछाई न मानकर खुद जीवित

माइनहीर हरमैन मान लेने की जो धृष्टता करूंगा उसके लिए भी क्षमा चाहता हूं। इतना हो जाने के बाद फिर कोई कठिनाई न रह जाएगी। इस मदिरापात्र को उस दर्पण के तुम्हारे प्रतिबिम्ब पर फेंककर कार्यतः नहीं तो भावना में ही सही, मैं तुम्हारे द्वारा किए अपमान के प्रति अपना असन्तोष प्रकट कर दूंगा, और इस तरह तुम्हारे प्रति किसी प्रकार की शारीरिक हिंसा की आवश्यकता भी न रह जाएगी।" इन शब्दों के साथ उन्होंने मदिरा से पूर्ण वह डिकैण्टर दर्पण में प्रतिबिम्बित हरमैन की छाया पर बड़ी कुशलता से, दे मारा। शीशा चूर-चूर हो गया। सारी मण्डली उठकर खड़ी हो गई, और मुझे तथा ग्लिजनर को छोड़ सब अपने-अपने हैट उठाकर विदा हो गए। जब हरमैन जा रहा था, बैरन ने मेरे कान में कहा कि मैं उसके पास जाऊं और उसे अपनी सेवाएं अर्पित करूं। यद्यपि उस समय मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसी विचित्र बात का अर्थ क्या है, फिर भी मैंने उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया।

द्वन्द्वयोद्धा ने अपनी स्वाभाविक कठोरता और अनोखेपन के साथ मेरी सहायता स्वीकार की और मेरे कन्धे का सहारा लिए हुए मुझे अपने कमरे में ले गया। जब उसने उक्त अपमान के उसके शब्दों में, विलक्षण शिष्ट ढंग की निरतिशय गम्भीरता पर बहस शुरू कर दी तो उसके सामने मैं बड़ी कठिनाई से अपनी हंसी रोक सका। अपनी शैली में थका देने वाला भाषण कर चुकने पर उसने अपनी आलमारी से द्वन्द्व-युद्ध (डुएल) अनेक पुरानी पुस्तकें निकालीं और उनसे पढ़-पढ़कर सुनाता और टिप्पणियां करके समझाता रहा। अन्त में उसने इस विषय पर हेदेलीन नामक किसी फरासीसी द्वारा बर्बर लातीनी भाषा में लिखी पुस्तक 'दुएली लेक्स स्क्रिप्ता' निकाली और उसका 'इनज्यूरियाई पेर एप्लिकेशनेम' पेर कंसत्रवशनेम एत पर से' अध्याय खोलकर उसकी बताई बातों को अपने अपमान की घटना के सन्दर्भ में लागू किया। जब वह उसे पढ़ चुका तो किताब बन्द कर दी और मुझसे पूछा कि मेरी समझ में अब क्या करना उचित है। मैंने उत्तर दिया कि मुझे आपके उच्चतर भाव-सौष्ठव में विश्वास है, इसलिए आप

जो निर्णय करेंगे वह ज्यादा अच्छा होगा और मैं उसी के अनुसार काम करूंगा। मेरे उत्तर से उसके अहं की तृप्ति हो गई और उसने बैरन के नाम एक पुर्जा लिखा, जो इस प्रकार था :

महोदय,

मेरे मित्र श्री प— आपको यह पत्र देंगे। मैं अपना कर्तव्य समझता हूं कि आज शाम को, आपके कक्ष में जो घटना घटित हुई है, उस पर आपकी सफाई मांगू। आशा है, आप अपनी सुविधानुसार शीघ्र से शीघ्र उसे प्रस्तुत करेंगे। यदि आप मेरे इस अनुरोध को अस्वीकार करेंगे तो श्री प—आपके द्वारा नियुक्त किसी मित्र के साथ हमारे मिलन की प्रारम्भिक व्यवस्था करेंगे।

पूर्ण आदर-भावना के साथ
आपका परम विनीत सेवक
जोहन हरमैन

बैरन रित्ज़नर वॉन जुंग की सेवा में
अगस्त १८, १८··········

मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करना ज्यादा अच्छा होगा। मैं यह लघुपत्र बैरन के पास ले गया। उनका मुख गम्भीर था। उन्होंने मुझे कुर्सी पर बैठने का संकेत किया और बोले कि मुझे मालूम है कि पत्र में क्या लिखा है, इसलिए उसे पढ़ने की जरूरत नहीं है। इसके बाद जब बिना देखे-पढ़े ही उन्होंने शब्दशः पत्र सुना दिया तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। इसके बाद उन्होंने मुझे उसका पहले से ही लिखा हुआ उत्तर थमा दिया। पत्र यह था :—

महोदय,

अपने उभयनिष्ठ मित्र श्री प—द्वारा मुझे आज शाम का लिखा आपका लघुपत्र मिला। मैंने उस पर भलीभांति विचार किया और स्पष्ट स्वीकार

करता हूं कि आपने सफाई की जो बात लिखी है, उसमें औचित्य है। यह स्वीकार कर लेने के बाद भी (हमारे मतभेद के विलक्षण शिष्ट ढंग तथा मेरे द्वारा किए गए व्यक्तिगत अपमान के कारण) मुझे क्षमाप्रार्थना के रूप में जो कुछ कहना चाहिए, उसे ठीक-ठीक इस तरह नहीं कह पा रहा हूं कि उसमें घटना की सूक्ष्म बातों और विविध भावनाओं का पूर्ण समावेश हो जाए। फिर भी मुझे द्वन्द्वाचार के नियमों के विषय में विवेचन की उस आत्यन्तिक सूक्ष्मता पर विश्वास है जिसके लिए आप इतने अरसे से और इतने सम्मानित रूप में प्रसिद्ध हैं। इसलिए मैं उस विषय पर अपनी भावनाएं प्रकट करने की जगह केवल मोशिये हेदेलीन द्वारा लिखित 'दुएली लेक्स स्क्रिप्ता' पुस्तक के 'इनज्यूरियाई पेर एप्लिकेशनेम पेर कंसत्रक्शनेम, एत पर से' नामक अध्याय के नवें पैरा की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहूंगा। मुझे आशा है, कि उस पुस्तक में विवेचित विषयों पर आपके ज्ञान की श्रेष्ठता ही आपको यह विश्वास दिला देने के लिए पर्याप्त होगी कि उक्त सन्दर्भ की ओर आपका ध्यान आकर्षित करने की यह परिस्थिति ही आपके अनुरोध की, आपके इज्जतदार आदमी होने के कारण, सन्तोषजनक सफाई है।

अत्यन्त सम्मान-भावना के साथ,
आपका अत्यन्त विनीत सेवक,
वॉन जुंग

हेर जोहन हरमैन की सेवा में
अगस्त १८, १८..........

हरमैन ने जब इस पत्र को पढ़ना शुरू किया तो उसकी त्यौरियां चढ़ी हुई थीं किन्तु जब वह 'इनज्यूरियाई पेर एप्लिकेशनेम पेर कंसत्रक्शनेम एत पर से' के सन्दर्भवाले अनर्गल अंश पर पहुंचा तो उसकी त्यौरियां अत्यन्त हास्यास्पद आत्मतुष्टि की मुसकान में बदल गईं। जब वह पत्र पढ़ चुका तो मुझसे अत्यन्त मधुर एवं नम्र वाणी में तब तक बैठ जाने के लिए अनु-

रोध किया जब तक कि वह पुस्तक के उन अंशों को देख न ले। फिर पुस्तक खोलकर बड़े ध्यान से पढ़ता रहा। पढ़ने के बाद किताब बन्द करके मुझसे अपनी इच्छा प्रकट की कि विश्वसनीय मित्र की हैसियत से आप बैरन वॉन जुंग पर प्रकट कर दें कि उनके वीरभावपूर्ण उदार व्यवहार के लिए मेरे मन में कितनी उच्च भावना है। आप उन्हें यह भी विश्वास दिला दें कि जो सफाई उन्होंने दी है वह पूर्णतः सम्मानजनक और अत्यन्त सन्तोषप्रद है। इन सब बातों से विस्मित होकर मैं बैरन के कमरे की ओर चल पड़ा। उन्होंने हरमैन के मैत्रीपूर्ण संदेश को सहजभाव से ग्रहण किया और कुछ देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद अन्दर के एक कमरे में गए और वहां से वही 'दुए ली लेक्स स्क्रिप्ता' नामी शाश्वत ग्रंथ उठा लाए। उन्होंने उसे मेरे हाथ में थमा दिया और उसके कुछ अंशों को पढ़ जाने का अनुरोध किया। मैंने पढ़ा किन्तु मुझे खाक-पत्थर कुछ भी समझ में न आया। तब उन्होंने किताब खुद ले ली और एक अध्याय ज़ोर-ज़ोर से पढ़कर सुना गए। मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उन्होंने जो कुछ पढ़ा उसमें दो लंगूरों के द्वन्द्वयुद्ध (डुएल) का बिलकुल वाहियात किस्सा है। अब उन्होंने उसका भेद बताते हुए समझाया कि पुस्तक दुबर्तास के निरर्थक पद्यों की शैली पर लिखी गई है। इसकी भाषा ऐसी चतुराई से भरी हुई है कि ऊपर से तो कानों को समझदारी, यहां तक कि गहरे विश्लेषण, से पूर्ण जान पड़ती है, जब कि वस्तुतः पृथक्कृत वाक्यों के अतिरिक्त उसमें कोई भी अर्थ निहित नहीं है। जब आधुनिक युग में प्रचलित ऐकिक द्वन्द्व पर असंगत पहेलियों की माला की माला मिलती जाती है तब उन सबकी कुंजी प्राप्त करने के लिए हमें बारी-बारी से दूसरे और तीसरे शब्द छोड़-कर पढ़ना चाहिए।

बाद में बैरन ने मुझे सूचित किया कि इस दुस्साहसिक घटना—एडवेंचर—के दो-तीन सप्ताह पहले जानबूझकर मैंने ऐसा उपाय किया था कि यह किताब हरमैन की नजर में पड़ जाय। मैं उनकी बातचीत के ढंग से ही समझ गया था कि उसने बड़े ध्यान के साथ पुस्तक का अध्ययन

किया है और उसे पूरा विश्वास हो गया है कि इस कृति में असाधारण गहराई है। बस, इसी संकेत पर मैं चल पड़ा। मैं तो जानता ही था कि डुएल (द्वन्द्वयुद्ध) के बारे में दुनिया में जो कुछ भी लिखा गया है उन सबको समझने की अपनी योग्यता से इन्कार करने की जगह हरमैन हज़ार बार मरना पसन्द करेगा। (इसलिए उसकी मूर्खता सिद्ध करने के उद्देश्य से मैंने यह सब षड्यंत्र रचा था।)

श्वासावरोध

कैसा भी बड़ा अभाग्य हो, अन्त में, वह तत्वज्ञान के अथक साहस के सामने उसी प्रकार पराजित हो जाता है जैसे अत्यन्त अडिग नगर भी शत्रु की निरन्तर सावधानी के सामने हथियार डाल देता है। जैसा कि पवित्र ग्रंथों से मालूम होता है, सलमनजार समारिया के सामने तीन साल तक टिका रहा, फिर भी उसका पतन हुआ। निनेवा में सार्दानापैलस-दिदोरस देखिए —सात साल तक अडिग रहा किन्तु उसका कोई परिणाम नहीं निकला। ट्राय द्वितीय पंचवार्षिकी के अन्त में समाप्त हो गया, और जैसा कि एक भद्रजन की भांति अपने मान पर एरिस्तेइयस घोषित करता है, अजोथ ने शताब्दी के पंचम भाग (बीस वर्ष) तक बन्द रखने के बाद अन्त में अपने द्वार संमित्तिकस के लिए खोल दिये।

विवाह के दूसरे ही दिन सुबह मैंने अपनी पत्नी से कहा—"अरी दुरात्मे ! तू कराला है। तू दुष्टा है। तू डाइन है। तू चुड़ैल है। तू उल्लू है। तू अधर्म का दुर्गन्धित नाबदान है। जो कुछ घृणित एवं कुत्सित है उन सब का तू ज्वालामुखी-सारतत्व है। तू-तू—" इसके बाद अपने पंजों के बल खड़े होकर मैंने उसका गला धर दबाया और अपना मुंह उसके कान के पास ले जाकर निन्दा का कोई ऐसा प्रबल एवं नया विशेषण कहने जा रहा था, जो मेरे मुंह से बाहर निकलते ही उसे उसकी क्षुद्रता, अपदार्थता का विश्वास दिला दे, कि अत्यन्त भय एवं आश्चर्य से मैंने अनुभव किया कि *मेरा दम उखड़ गया है* (श्वासावरोध हो गया है।)

सामान्य वार्तालाप में प्रायः—'मेरा दम घुट रहा है', 'मेरा दम उखड़ रहा है' ऐसे मुहाविरे कहे-सुने जाते हैं, परन्तु मुझे कभी इस बात की

कल्पना न हुई थी कि जिस भयंकर घटना की बात मैं कह रहा हूं, वह सचमुच घटित हो सकती है। भला ख्याल तो कीजिए—यदि आप कल्पना-प्रधान मानस के हैं—मैं कह रहा हूं कि जरा कल्पना तो कीजिए मेरे आश्चर्य की, मेरी घबराहट की, मेरी निराशा की।

किन्तु शुभ बात यह है कि मुझमें जो महती प्रतिभा है उसने कभी एक दम से, मेरा साथ नहीं छोड़ा। अपनी अशास्य वृतियों में भी मैं अपनी समीचीनता कायम रखता हूं।

यद्यपि शुरू में ठीक-ठीक मैं इसका पता नहीं लगा सका कि उक्त घटना ने किस सीमा तक मुझे प्रभावित किया है, फिर भी मैंने बिना किसी ननुनच के तुरन्त निश्चय कर लिया कि जब तक ठीक-ठीक मालूम नहीं हो जाता कि इस अश्रुतपूर्व संकट से मेरी क्या हानि हुई है तब तक मैं हर तरह इसे अपनी पत्नी से छिपाऊंगा। इसलिए क्षणभर में अपना क्रोध से विकृत एवं तमतमाया हुआ चेहरा मैंने प्यार-भरी शान्ति के चेहरे में बदल लिया; मैंने अपनी प्रिया के एक गाल पर थपकी दी और दूसरे पर एक चुम्बन जड़ दिया, और एक शब्द भी कहे बिना (हायरी किस्मत! मैं कह ही क्या सकता था?) अपने अद्‌भुत् आचरण पर उसे चकित छोड़ नाचता-मटकता कमरे से खिसक गया।

अब आप मुझे अपने निभृतकक्ष में सुरक्षित बैठा हुआ देख सकते हैं—अपनी क्रोधशीलता के दुष्परिणाम के एक भयानक उदाहरण के रूप में, मृत की विशेषताओं के साथ भी जीवित, और जीवित की रुझानों के साथ भी मृत; धरती की छाती पर एक विचित्रता की भांति; बिल्कुल शान्त परन्तु श्वास-रहित।

हां! श्वासरहित। बड़ी गम्भीरता के साथ मैं यह दावा कर रहा हूं कि मेरी सांस बिल्कुल लुप्त हो गई थी। अगर मेरे प्राण पर भी खतरा होता तो मैं उससे एक मामूली पंख को भी हिला नहीं सकता था—यहां तक कि (फूंक मारकर) किसी दर्पण की श्री को भी धूमिल नहीं कर सकता था। कैसी कठोर नियति! फिर भी शोक के प्रथम तूफानी दौरे से

किंचित् मुक्ति मिली। परीक्षा करके देखा कि मैंने अपनी पत्नी से बातचीत करने की असमर्थता के कारण वाणी की जिस शक्ति के सर्वथा लुप्त हो जाने की कल्पना कर ली थी, वह वस्तुतः आंशिक रूप से ही अवरुद्ध हुई हुई थी और यदि मैंने अपनी आवाज क्षीण कण्ठ्य ध्वनि के रूप में परिवर्तित कर ली होती तो उससे मैं अपनी भावनाएं तब भी कहता रह सकता था। मैं देख रहा हूं कि यह कण्ठ्य ध्वनि श्वास-धारा पर नहीं बल्कि गले की पेशियों की आकुंचन-क्रिया पर निर्भर करती है।

मैंने अपने को एक कुर्सी पर डाल लिया और कुछ समय तक विचार-मग्न पड़ा रहा। जो कुछ मैंने सोचा, उससे मुझे कोई सान्त्वना नहीं प्राप्त हुई। हजारों अस्पष्ट एवं अश्रुजनक कल्पनाओं ने मेरी आत्मा को दबोच लिया—यहां तक कि आत्महत्या की छाया भी मेरे दिमाग में घूम गई। किन्तु यह मानवीय प्रकृति के विपर्यय की एक विशेषता है कि वह प्रकट एवं सद्यःप्राप्त का सुदूरस्थित एवं रहस्यमय के लिए त्याग कर देती है। इस प्रकार मैं आत्म-हत्या की कल्पना पर, उसे निश्चित अत्याचार मानकर कांप उठा और उसे दूर कर दिया। उधर मेरी चितकबरी बिल्ली कालीन पर पड़ी बराबर घुरघुर करती रही और कुत्ता टेबुल के नीचे निरन्तर खरखर करता रहा— दोनों अपने फेफड़े की शक्ति का प्रदर्शन करते रहे, मानों मेरे फेफड़े की अक्षमता का उपहास कर रहे हों।

जब मैं इस प्रकार क्षीण आशाओं एवं भीतियों के अन्धड़ में पड़ा था, मैंने (कहीं बाहर जाने के लिए) सीढ़ी से नीचे उतरती पत्नी की पद-ध्वनि सुनी। अब मुझे उसकी अनुपस्थिति का विश्वास हो गया और मैं धड़कते हृदय के साथ, दुर्घटना के स्थान पर लौट आया।

मैंने दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया और जोरों के साथ तलाशी लेने में जुट गया। मैंने सोचा—यह सम्भव है कि मेरी खोज का खोया पदार्थ किसी उपेक्षित कोने में छिपा हुआ, या किसी डब्बे या ड्रायर में पड़ा हुआ मिल जाए। हो सकता है, वह वाष्परूप में हो; हो सकता है वह ठोस रूप धारण कर चुका हो। अधिकांश दार्शनिक दर्शनशास्त्र के अनेक मुद्दों

पर, बिल्कुल अदार्शनिक होते हैं। अपने ग्रन्थ 'मैंडेविली' में विलियम गाडविन कहता है—"केवल अदृश्य वस्तुएं ही सत्य हैं।" सभी स्वीकार करेंगे कि यह एक सार्थक बात है। ऐसी प्रतिज्ञाओं पर निरर्थकता की अनुचित मात्रा का आरोप करने के पूर्व न्यायी पाठक ज़रा रुक जाएं। यह याद रखना चाहिए कि अनेक्जागोरस की स्थापना थी कि 'बर्फ काली होती है।' तब से मैंने भी इसे सही पाया है।

बड़ी देर तक और सच्चाई के साथ, मैं खोज करता रहा किन्तु मेरे श्रम एवं धैर्य का घृणित पुरस्कार नकली दांत के एक सेट, दो जोड़ी नितम्ब, एक आंख तथा मि० श्वास-बहुल (विण्ड-एनफ) द्वारा मेरी पत्नी को भेजे हुए एक प्रेमपत्र (billets-doux) के रूप में मिला। यहां यह कह देना भी मैं उचित समझता हूं कि मि० वि० (श्वासबहुल) के प्रति मेरी स्त्री के पक्षपात की इस पुष्टि से मुझे कोई बेचैनी नहीं हुई। श्रीमती श्वासहीन मुझसे बिल्कुल असमान किसी भी चीज़ का आदर करेंगी, यह तो एक स्वाभाविक एवं आवश्यक बुराई है। लोग यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि मैं भारी-भरकम और देखने में स्थूलकाय, साथ ही कद में नाटा हूं। तब इसमें आश्चर्य की क्या बात है कि मेरे परिचित का लकड़ी-सा पतला-पन और उनकी ऊंचाई, जो लोकोक्ति में परिवर्तित हो चुकी है, श्रीमती श्वासहीन के नयनों में प्रशंसनीय हो उठे ? तर्क की दृष्टि से यह इस कथन के समान है कि 'सच्चा तत्वज्ञान दुर्भाग्य को चुनौती देने के लिए छोड़ देता है।' किन्तु मुझे तो आपबीती पर लौट आना चाहिए।

जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूं, मेरा सम्पूर्ण श्रम निष्फल सिद्ध हुआ। एक सन्दूक के बाद दूसरा सन्दूक, एक ड्रायर के बाद दूसरा ड्रायर, यहां तक कि कोना-कोना मैंने छान मारा, किन्तु मतलब हल न हुआ। एक बार तो मुझे लगा कि पुरस्कार मेरे हाथ आ गया है। बात यह हुई कि एक ड्रेसिंग केस में उलट-पुलट करते समय, एक शीशी मुझसे टूट गई (क्या बढ़िया खुशबू आई है !) यह थी हेविट-निर्मित 'स्वर्ग का दिव्य एवं अति-सुगन्धित रस' या 'अप्सराओं का तेल' की शीशी। प्रिय सुगन्ध के ख्याल से

मैं इसकी सिफारिश करने की आज़ादी ले रहा हूं।

बड़े उदास हृदय के साथ मैं अपने कमरे में लौटा—यह सोचने के लिए कि अपनी पत्नी के खोद-विनोद से बचने के लिए तब तक के लिए क्या उपाय करना चाहिए जब तक देश से बाहर चले जाने की व्यवस्था पूरी न हो जाए। विदेश चले जाने का निश्चय मैंने कर लिया था। अज्ञात होने के कारण, विदेश में, किंचित् सफलता के साथ, मैं अपनी दुःखदायी विपत्ति को छिपा सकूंगा—विपत्ति जो सर्वसाधारण को भीख मांगने की अपेक्षा भी अधिक विरक्त करनेवाली है और जो भाग्यवान तथा सुखी हैं उनके हाथ ठीक ही तिरस्कृत करानेवाली है। हिचकिचाहट की स्थिति बहुत देर नहीं रही। स्वभाव से ही जल्दबाज़ होने के कारण मैंने अपनी स्मृति की सम्पूर्ण दुःखान्तिकाएं दोहरा डालीं। मुझे सौभाग्य-वश याद आ गया कि उन नाटकों के अथवा उनके उन अंशों के, जो उनके नायकों को दिए जाते हैं, उच्चारण में आवाज़ के उन स्वर की तो आवश्यकता नहीं होती, जिससे मैं अपने को रहित पा रहा था, वहां तो गहरे कण्ठ-ध्वनि का ही आदि से अन्त तक विरक्तिजनक राज्य रहता है।

एक ऐसे दलदल की छोर पर जहां मैं प्रायः आता-जाता रहता था, जाकर मैंने कुछ देर तक अभ्यास किया, यद्यपि देमोस्थिनीज़ में इसका कोई सन्दर्भ प्राप्त न था; यह मेरी अपनी अनोखी सूझबूझ थी। इस तरह पूरी तैयारी करने के बाद मैंने अपनी पत्नी पर यह प्रभाव डालने का निर्णय किया कि मानो अकस्मात् मुझ पर रंगमंच पर अभिनय करने का भूत सवार हो गया है। अपनी इस योजना में मैं चमत्कारिक रूप से सफल हुआ। हर सवाल या सुझाव की जवाब मैं अपनी मेंढक-जैसे मुरदीले स्वर में देता और साथ में दुःखान्तिकाओं के एकाध पद भी सुनाता जाता। मैंने यह देख लिया था कि ये पद किसी भी विषय पर लागू किए जा सकते हैं। फिर उन पदों को सुनाते वक्त आंख मटकाने, दांत निपोरने, घुटनों पर झुकने, पद-संचार करने तथा उन सब अवर्णनीय कलाओं का प्रदर्शन करने में मैं पीछे नहीं रहा, जो एक लोकप्रिय अभिनेता के गुण हैं। लोगों ने और सब कुछ कहा

परन्तु किसी को यह शुबहा नहीं हुआ कि मैंने अपनी सांस ही खो दी है।

जब मैं सब कुछ ठीक-ठाक कर चुका तो मैं एक दिन बड़ी सुबह—के लिए जानेवाली डाकबग्घी में जा बैठा। अपने परिचितों को मैंने यह समझने का मौका दिया कि बड़े जरूरी काम से उस शहर में मेरा जाना अनिवार्य हो गया है।

कोच पूरी तरह भरा था किन्तु सुबह के धुंधलके में मुझे अपने साथियों का चेहरा-मोहरा साफ नज़र नहीं आता था। किसी ने विशेष प्रतिरोध नहीं किया और मैं विशाल आयामवाले दो सज्जनों के बीच में जाकर बैठ गया। तीसरे जो उनसे भी लम्बे कद का था, मुझसे तकलीफ के लिए क्षमा मांगकर, मेरे शरीर पर अपना भार डालता हुआ पूरी तरह पसर गया और क्षणभर में ही निद्रामग्न हो गया तथा मेरी खुशकिस्मती कि मेरे समस्त कण्ठध उद्‌गारों को अपनी नासिका-ध्वनि में डुबाता हुआ इतने ज़ोर से खर्राटे लेने लगा कि सांड़ की चिग्घाड़ भी उसके आगे लज्जित हो। खुशी की बात इतनी ही थी कि मेरी श्वासक्रिया की जैसी स्थिति थी उसमें दम घुटने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता था।

जब हम शहर के बाहरी भाग में पहुंच रहे थे और दिन अच्छी तरह उग आया था, तो मेरा उत्पीड़क उठ बैठा और अपनी कमीज़ का गला ठीक करते हुए, बड़े मैत्रीपूर्ण भाव से, मेरी शिष्टता के लिए मुझे धन्यवाद दिया। यह सब देखते हुए मैं अचल बना रहा (मेरा अंग-अंग अपनी जोड़ों से हट चुका था और मेरा सिर एक ओर झूल गया था)। इससे उसका संशय बढ़ गया। उसने और मुसाफिरों को भी जगा दिया और उन्हें निर्णीत स्वर में बताया कि जिसे हम लोग एक ज़िन्दा और ज़िम्मेदार हमसफर—सहयात्री—समझ रहे थे उसके रूप में रात को दरअसल एक मरा आदमी हम पर लाद दिया गया था—इतना कहकर उसने हमारी दाहिनी आंख पर यह देखने के लिए एक धौल जमा दिया कि उसका कथन ठीक से है या नहीं।

इसके बाद सभी ने (जो कुल ९ थे) बारी-बारी मेरा कान पकड़कर

खीचा। उनमें एक तरुण डाक्टर भी था। उसने जेबी दर्पण निकालकर मेरे मुंह से लगाया और जब दर्पण पर भाप के निशान नहीं दिखाई पड़े तथा मुंह श्वासरहित पाया तो उस आदमी की बात बिल्कुल ठीक मान ली गई। सबने तय किया कि आगे हम ऐसी बात बर्दाश्त नहीं करेंगे और इस समय ऐसी लाश के साथ नही जाएंगे।

उस समय कोच क्रो नाम की एक पान्थशाला के निकट से गुजर रहा था। उन लोगों ने मुझे बाहर धकेल दिया। मैं गाड़ी के पिछले पहिए के नीचे आ गया और मेरे दोनों हाथ टूट गए। कुशल यही हुई कि इससे ज्यादा कोई दुर्घटना नहीं होने पाई। यहां मुझे ड्राइवर के प्रति न्याय करने के लिए इतना कह देना चाहिए कि मेरा बहुत बड़ा ट्रंक उसने मेरे पीछे गिरा दिया जो दुर्भाग्यवश मेरे सिर पर आ पड़ा और मेरी खोपड़ी बड़े ही दिलचस्प और असाधारण ढंग पर भंग हो गई।

क्रो (पान्थशाला का मालिक) बड़ा आतिथ्य-कुशल व्यक्ति था। उसने देखा कि मेरे लिए वह थोड़ा-बहुत जो कष्ट उठावेगा उसकी क्षतिपूर्ति करने को मेरे ट्रंक में काफी माल है। इसलिए उसने तुरन्त अपने एक परिचित सर्जन को बुलवाया और पच्चीस डालर के बिल एवं रसोद के साथ मुझे उसके सुपुर्द कर दिया।

खरीददार मुझे अपने यहां ले गया और तुरन्त ही आपरेशन शुरू कर दिया। जब उसने मेरे कान काट लिए तब उसे मेरे अन्दर जीवन के लक्षण दिखाई पड़े। अब उसने घण्टी बजाई और पास ही रहनेवाले एक भैषजिक को इमर्जेंसी सलाह-मशिवरा करने के लिए बुलवा भेजा। इस बीच, इस ख्याल से कि मेरे जीवित रहने के सम्बन्ध में उसका सन्देह ठीक निकलेगा, उसने मेरा पेट चीर डाला और अपने निजी व्यवच्छेदन के लिए उसमें से कुछ अभ्यन्तरांग बाहर निकाल लिए।

भैषजिक का ख्याल था कि मैं वस्तुतः मर चुका हूं। मैंने अपनी सारी शक्ति के साथ हाथ-पांव फेंककर और भयावह रूप में आकुंचित होकर उसके विचार का खण्डन करने का प्रयत्न किया, क्योंकि सर्जन के आपरेशन

के कारण मुझ में बहुत कुछ शक्तियां वापस आ गई थीं। किन्तु इन सब बातों का कारण उस गैल्वोनी बैटरी (गैलवोनिक बैटरी) को बताया गया जिससे भैषजिक कई प्रकार के विचित्र प्रयोग कर रहा था। इन प्रयोगों की सफलता में मेरा भी कुछ हिस्सा था क्योंकि उनमें मेरी दिलचस्पी बहुत बढ़ गई थी किन्तु बड़े क्लेश की बात तो यह थी कि यद्यपि मैंने कई बार बात करने की कोशिश की, मैं अपना मुंह तक नहीं खोल सका क्योंकि वाग्शक्ति बिल्कुल अवरुद्ध हो चुकी थी—तब भला मैं उन विचित्र कल्पनात्मक सिद्धान्तों के विषय में क्या जवाब दे सकता था, जिनकी दूसरी परिस्थितियों में, हिप्पोक्रेरियन रोगविज्ञान से अपने सूक्ष्म परिचय के कारण, मैं धज्जियां उड़ा सकता था।

किसी निश्चित परिणाम पर न पहुंच सकने के कारण उन्होंने आगे परीक्षा के लिए, उस समय काम स्थगित कर दिया। मैं अटारी के एक छोटे कमरे में ले जाया गया। सर्जन की श्रीमती ने मुझे जांघिया और लंबे जुराब पहिनाये; खुद सर्जन ने मेरे हाथ तथा जेबी रूमाल से मेरे जबड़े बांध दिए और बाहर से दरवाजा बन्द करके भोजन करने चले गया तथा मुझे चुपचाप विचार करने के लिए छोड़ गया।

अब मुझे बड़े हर्ष के साथ यह बात मालूम हुई कि यदि मेरा मुंह रूमाल से बंधा न होता तो मैं बोल सकता था। इस विचार से अपने को सान्त्वना देते हुए मैं···के कुछ पदों को मन ही मन गुनगुना रहा था, जैसा कि सोने के पहले मैं सदा ही करता हूं, कि इसी समय दो लालची एवं दुःशील बिल्लियां दीवार के एक छेद से कमरे के अन्दर आकर मेरे शरीर के दोनों ओर आसीन हो गईं, और मेरी नाक जैसी तुच्छ वस्तु का स्वाद लेती हुई परस्पर भद्दे एवं अशिष्ट रूप में झगड़ने लगीं।

किन्तु जिस प्रकार अपने कान खोकर फारस के मैगियन या माइगेगुश को साइरस का सिंहासन मिल गया था, और जैसे अपनी नाक कटा लेने के बाद जोपाइरस को बैबिलोन पर अधिकार प्राप्त हुआ था, उसी प्रकार मेरी मुखाकृति से कुछ औंस भार निकल जाने से मेरे शरीर को

मुक्ति मिल गई। वेदना से तिलमिलाकर और क्रोध से जलते हुए एक झटके में मैंने अपनी पट्टियां और बन्धन तोड़ दिए। कमरे के बीच से गुजरते हुए मैंने उन दोनों योद्धाओं पर तिरस्कार की दृष्टि डाली और उनकी भीति एवं निराशा का कारण बनता खिड़की खोल बड़ी निपुणता के साथ बाहर कूद पड़ा।

डाकू······, जिससे मेरी शक्ल बिल्कुल मिलती थी, इस समय सिटी जेल से फांसी दिए जाने के लिए शहर से बाहर ले जाया जा रहा था। अत्यन्त दुर्बलता तथा लम्बी बीमारी के कारण उसे हथकड़ियां-बेड़ियां नहीं पहिनाई गई थीं; वह फांसी के वस्त्र पहिने था जो बहुत कुछ मेरी पोशाक के समान ही थे। वह फांसी गाड़ी के नीचे के हिस्से में पांव फैलाए लेटा हुआ था। जब मैं कूदा तो यह फांसीगाड़ी सर्जन के मकान की उस खिड़की के नीचे से गुजर रही थी। इस गाड़ी में कोई पहरेदार न थे; केवल ड्राइवर था जो सो रहा था और उसके साथ छठी पदातिक सैन्यदल के दो रंगरूट थे जो नशे में धुत् थे।

दुर्भाग्य की बात देखिए कि मैं अपने पांव लटकाकर इस गाड़ी में सवार हो गया। डाकू-चालाक तो था ही, उसने देखा कि उसके लिए यह अच्छा अवसर आ गया है। उछलकर वह पीछे कूद पड़ा और एक गली में मुड़कर क्षणभर में आंखों से ओझल हो गया। रंगरूट इस हल्ले-गुल्ले में जग पड़े किन्तु कुछ ठीक-ठीक समझ न पाए कि इस बीच क्या व्यापार हो गया है। अपराधी की प्रतिमूर्ति-से एक आदमी को गाड़ी में खड़ा देख उन्होंने समझा कि बदमाश बंदी (डाकू) भागने की चेष्टा में है; आपस में राय करके उन्होंने एक-एक घूंट शराब चढ़ाई और अपनी बन्दूकों के कुंदों से मारकर मुझे गिरा दिया।

शीघ्र ही हम मंजिल पर पहुंच गए। निश्चय ही मेरी सफाई में कोई बात नहीं कही जा सकती थी। फांसी ही मेरी अनिवार्य नियति थी। मैंने अपने को कुछ तो मूर्खतापूर्ण और कुछ तीखी भावनाओं के साथ भाग्य के भरोसे छोड़ दिया। कुछ सनकी होने के कारण मुझमें वे सब मनोभाव थे

जो कुत्ते में होते हैं। फांसी देनेवाले ने फंदा मेरे गले में लगाया। तख्ता नीचे गिरा। कहा जाता है, मुझमें असाधारण ऐंठन होने लगी। कई भद्रजन बेहोश हो गए और कुछ महिलाओं को हिस्टीरिया का दौरा आ गया और उनको उठाकर घर ले जाना पड़ा। चित्रकार पिनाजित ने यह दृश्य देखकर अपने प्रसिद्ध चित्र 'जीवित आदमियों का चर्मापनयन' में कुछ सुधार किया।

अब मैं फांसी के तख्ते पर अपनी संवेदनों का वर्णन करूंगा। इस विषय पर लिखने के लिए आवश्यक है कि आदमी फांसी पर चढ़ चुका हो। हर एक लेखक को अपने जीवन के अनुभवों तक ही सीमित रहना चाहिए। इसीलिए तो मार्क अन्तोनी ने नशे या मदहोशी पर एक पुस्तिका लिखी थी।

मरा तो मैं निश्चय ही नहीं था। पांव के नीचे के तख्ते के गिर जाने से एकाएक जो झटका मेरे गले में लगा, उसने उस अभागी अकड़न को ठीक कर दिया जो फांसीगाड़ी के भद्रजनों की कृपा से हो गई थी। देह मेरी जरूर थी पर मेरे पास निकलने के लिए सांस कहां थी? इसलिए रस्सी के घर्षण, कान के नीचे फंदे के दबाव, और मस्तिष्क की ओर रक्त की तीव्र गति के अलावा मुझे कोई खास असुविधा नहीं हुई।

किन्तु (मस्तिष्क की ओर खून दौड़ने की) अन्तिम अनुभूति क्षण-क्षण अधिक व्यथाजनक होती गई। मैंने सुना, मेरा हृदय जोरों से धड़क रहा है। हाथ एवं कलाई की शिराएं इतनी फूल गईं कि लगता था, फट जाएंगी; कनपटियां तूफानी गति से फड़फड़ाने लगीं और मुझे अनुभव हुआ कि मेरी आंखें गड्ढों के बाहर निकल आएंगी। इतनी बातें होते हुए भी जब मैं कहता हूं कि ये संवेदनाएं असह्य नहीं हो पाईं तो कौन मेरा विश्वास करेगा?

मेरे कानों में तरह-तरह की आवाजें आने लगीं—पहले बड़े-बड़े घंटों की टन-टन सी ध्वनि आई; फिर लगा, हजारों धौंसे बज रहे हैं; अन्त में समुद्र की क्षीण, सुप्त ध्वनि सुनाई पड़ने लगी। किन्तु ये सब आवाजें अप्रिय नहीं लगती थीं।

यद्यपि मेरी दिमागी ताकतें उलझनभरी और विकृत हो रही थीं, फिर भी, मेरा यह कथन विचित्र लगेगा, कि इस उलझन और विकृति का पूरा भान मुझे था। अभ्रान्त सत्वरता के साथ मैं, इच्छानुसार, बता सकता था कि किन बातों में मेरी संवेदनाएं ठीक हैं और किन बातों में रास्ते से भटक गई हैं। मैं ठीक-ठीक यह भी अनुभव कर सकता था इस भटकाव ने *कितनी दूर तक ; किस बिन्दु तक* मुझे पथभ्रष्ट किया है। किन्तु इतना होते हुए भी उस पथभ्रष्टता का संशोधन करने की शक्ति मुझमें नहीं थी। इसके साथ ही अपनी धारणाओं का विश्लेषण करने में मुझे प्रबल आनन्द भी आ रहा था।[1]

स्मृति, जिसे मेरी सम्पूर्ण शक्तियों में सबसे पहले विदा हो जाना चाहिए था, उलटे चौगुनी हो गई-सी जान पड़ती थी। मेरे अतीत जीवन की प्रत्येक घटना छाया की भांति मेरी आंखों के आगे नाच रही थी। जिस मकान में मैं पैदा हुआ था उसकी एक-एक ईंट, बचपन में उलटी हुई किताब का एक-एक पन्ना, किशोरावस्था में शिकार के बीच देखे वन का एक-एक वृक्ष, प्रौढ़ होने के बाद घूम-फिरकर देखे नगरों की एक-एक गली मुझे साफ-साफ दिखाई पड़ रही थी। अपने प्रारम्भिक दिनों में मैंने जो पुस्तकें, अध्याय या पंक्तियां पढ़ी थीं, उन्हें मैं ज्यों का त्यों सुना सकता था। और मैं विश्वासपूर्वक कहता हूं कि जब मेरे चतुर्दिक खड़ी भीड़ घृणा से या आतंक से स्तम्भित हो रही थी, मैं कभी अर्द्धदेव एसचाइलिस के साथ और कभी मण्डूक अरिस्तोफेनिस के साथ घूम रहा था।

अब मेरे प्राणों में एक स्वप्निल आनन्द भर गया और मेरे मन में कल्पना आने लगी कि मैं अफीम खाता रहा हूं, या फिर पुराने खूनियों-द्वारा प्रयुक्त हशीश का स्वाद लेता रहा हूं। किन्तु इस बीच भी मेरी आत्मा को विशुद्ध अमिश्र विवेक की झलक बीच-बीच में मिल जाती थी और मैं अब भी इस आशा से प्रमुदित था कि जो मौत मेरे ऊपर गिद्ध की भांति मंडरा रही है

१. मुझे विश्वास है कि मि० श्वासहीन की इन संवेदनाओं में, सामान्य पाठक को, दुर्द्धर्ष शेलिंग की वाहियात आध्यात्मिक-वाग्मिता (पेट.फीजीशियनिज्म) के दर्शन होंगे।

उसकी जकड़ से अन्त में मैं निकल जाऊंगा।

चेहरे पर रस्सी का अत्यधिक दबाव पड़ने से मेरी टोपी का एक टुकड़ा दूर जा गिरा, और मैंने आश्चर्य के साथ देखा कि मेरी दृष्टि-शक्ति अभी पूर्णतः नष्ट नहीं हुई है। मेरे चारों ओर हिलते हुए सिरों का सागर लहरा रहा था। प्रसन्नता के अतिरेक में मैं उन्हें अनुकम्पा की भावनाओं से देख रहा था, साथ ही उदास जनसमूह को देखते हुए अपने विशिष्ट ग्रहों की श्रेष्ठता को आशीर्वाद भी दे रहा था।

अब बहुत जल्दी-जल्दी मैं, गहराई के साथ, देशविधि (कामन-ला) के सिद्धान्तों—विशेषरूप से उस कानून के औचित्य का, जिसके अधीन मुझे फांसी पर चढ़ाया जा रहा था—, अर्थशास्त्र की व्यर्थताओं—जिनको अभी तक मैंने कभी स्वीकार नहीं किया था—, पुरातन अरस्तू सम्प्रदाय के मूढ़ाग्रहों—जिन्हें आजकल आमतौर से इन्कार किया जाता है—, बूर्दों, ग्रानिए, लैकराई के तिरस्करणीय स्कूली सूत्रों, सेंट पियरे की चन्द्रोन्मादी उपपत्तियों, पेहलम-उपन्यासों की असत्यताओं, विवियन ग्रे की खूबियों—बल्कि विवियन ग्रे की खूबियों से भी कुछ अधिक, विवियन ग्रे की गहराइयों, विवियन ग्रे की प्रतिभा, विवियन ग्रे की हर चीज पर विचार करने लगा।

उसके बाद बाढ़ की तरह मेरे दिमाग में कालेरिज, काण्ट, फिख्ते, और सर्वेश्वरवाद इत्यादि घूम गए; फिर तूफान की भांति अकादमी पर्गोला, ला स्काला, सैनकार्लो, पाल, अल्बर्ट, नोवलेट, रोजी बेंस्त्रिस, फैनी वायस और तैगलियोनी आए और चले गए।

अब मेरी संवेदनाओं में बड़ी तेजी के साथ परिवर्तन होने लगा। मेरे ध्यान से जगती के सम्पूर्ण सम्बन्धों की परछाइयां दूर हो गईं और एक तूफान—विराट्, नवीन तथा आत्मोद्दीपक तूफान मेरे प्राणों को पंख की भांति उड़ाने लगा। उलझनों पर उलझनें आती रहीं, जैसे लहरों पर लहरें उठा करती हैं। थोड़ी ही देर में मेरी यह स्थिति हो गई कि आत्मपरिचय इस पूर्णभाव से खुद शेलिंग भी सन्तुष्ट हो गया होता। यहां तक कि भीड़ कल्पनाओं का समूह-मात्र होकर रह गई।

इसी अवधि के आस-पास मुझे जोरदार धमाके और धक्के का अनुभव हुआ किन्तु यद्यपि इस आघात ने मेरे समस्त शरीर को हिला दिया मुझे इसका जरा भी ख्याल नहीं हुआ कि यह खुद मेरे ही शरीर में लगा है। मैंने यही सोचा कि यह घटना किसी दूसरी हस्ती के साथ हुई है।

इसी समय—जैसा कि बाद में मुझे मालूम हुआ—फांसी की पूरी अवधि तक तख्ते पर लटके रहने के बाद, मेरे शरीर को वहां से हटा देने का निश्चय किया गया, खास तौर से इसलिए भी कि असली अपराधी इस बीच पकड़ा और पहिचान लिया गया था।

अब मेरे लिए बड़ी सहानुभूति प्रकट की जा रही थी परन्तु चूंकि किसी नगर-निवासी ने मेरे शरीर को नहीं पहिचाना इसलिए निश्चय किया गया कि दूसरे दिन सुबह मुझे सार्वजनिक कब्रगाह में दफना दिया जाए। मैं जीवन के किसी भी लक्षण से रहित चुपचाप पड़ा रहा—यद्यपि जब रस्सी मेरे गले से खोली गई तो अपनी परिस्थिति की एक धुंधली चेतना दुःस्वप्न की भांति मुझे पीड़ित करने लगी।

एक बहुत छोटे-से कमरे में मुझे सुला दिया गया। उसमें चारों ओर फर्नीचर लदा हुआ था। फिर भी मुझे वह कमरा इतना बड़ा लग रहा था जैसे सारी दुनिया उसके अन्दर समा गई हो। इस एक विचार से मुझे जो वेदना हो रही थी, वैसी वेदना, शरीर या मन से, मैंने जीवन में उसके पहले या बाद कभी नहीं भोगी। आश्चर्य तो यह है कि इस वेदना के साथ विराट विस्तार, अनन्त की सरल-सी धारणा भी लगी हुई थी। पर बात ऐसी ही थी। मैंने कहा—'जीवन और मृत्यु, काल एवं शाश्वतता, यहां तथा वहां के बीच हमारी संवेदनाओं के मूर्त्तिकरण में कितना अन्तर है।'

दिन बीत चला, और मुझे पता था कि अंधेरा होता जा रहा है—फिर भी वही भयंकर वंचना अब भी मेरे दिमाग पर सवार थी। वह कुछ कमरे की सीमा तक ही आबद्ध नहीं थी—वह उसको पार करके सम्पूर्ण पदार्थों तक, और भी निश्चित ढंग से, फैल गई थी, बल्कि यह कहना भी कुछ गलत न होगा कि वह सम्पूर्ण संवेदनाओं में फैल गई थी। मेरी उंग-

लियां जो ठंडी, गीली, कड़ी और विवशतापूर्वक एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई थीं, मेरी कल्पना में, फूलकर वृहदाकार हो गई थीं। मेरे शरीर का एक-एक अंग बहुत बड़ा हो गया था। मुझे अच्छी तरह याद है कि सिक्के, जो मेरी पलकों को भी ठीक तरह से ढक नहीं पाते थे, ओलिम्पिया या सूर्य के रथ के चक्कों की भांति विराट लग रहे थे।

यह सब होने पर भी आश्चर्य तो यह है कि मुझे किसी भार का, गुरुत्व का अनुभव नहीं हो रहा था। इसके विपरीत एक प्रकार की स्फूर्तिशीलता के कारण मुझे बड़ी असुविधा हो रही थी। यह बात कुछ वैसी ही थी जैसी उत्तेजक कठिनाई गहरे जल में तैरनेवाले को जल के नीचे रहने में होती है। अपने आतंकों के कोलाहल के बीच यह सोचकर मुझे मन ही मन हार्दिक हंसी आई कि कैसी अनोखी बात हो यदि मैं अपनी गति के लचीलेपन और अपने आकार के पहाड़ को लिए हुए उठ खड़ा हूं और चल पड़ूं।

रात आई—और उसके साथ आतंकों एवं भीतियों की एक नई भीड़ भी आई। निकट आ रही भूमि-समाधि की चेतना ने नवीन रूप ग्रहण किया। मजा तो यह है कि यह सब होते हुए भी एक क्षण के लिए भी मेरे मन में यह कल्पना नहीं आई कि मैं *यथार्थ में मृत नहीं हूं*।

मैंने मन ही मन कहा—'यह अन्धकार, जो इन्द्रियगोचर है और मुझे इस तरह दबाए हुए है कि लगता है मेरा दम घुट जाएगा—यह-यह यही मृत्यु है। यही मृत्यु है—यही भयावनी मृत्यु है—यही पवित्र मृत्यु है। यही वह मृत्यु है जिसका अनुभव रेगुलस को, और उसी तरह सेनेका को हुआ था। इसी रूप में—इसी रूप में मैं सदा रहूंगा—सदा-सदा रहूंगा। तर्क गलत है, तत्वज्ञान झूठा है। कोई मेरी संवेदनाओं, मेरी भीतियों, मेरी निराशाओं को जान नहीं पाएगा। फिर भी लोग तर्क करेंगे, तत्वज्ञान बघारेंगे और अपने-आपको मूर्ख बनाएंगे। मैं देख रहा हूं जो कुछ है यही है, इसके अनन्तर कुछ भी नहीं है। यह-यह-यह, बस एक यह शाश्वत है। और हे प्रभु? कैसा शाश्वत है यह। इस विशाल, इस, इस विराट शून्य में पड़े रहना। एक भयावनी, अस्पष्ट और निरर्थक असंगति! गतिहीन होते हुए भी गति की

चाह, शक्तिहीन होते हुए भी शक्ति की कामना—सदा, सदा, सदा के लिए।

आखिरकार सुबह हुई, और उसकी धुंधली एवं उदास उषा के साथ कब्र के लवाज़मात तिगुने आतंक-सहित आ गए। तब कहीं जाकर—उसके पूर्व नहीं—मुझे उस भीषण भाग्य का भान हुआ जो मेरे सिर पर झूल रहा था। रात की चित्रमयता अपनी छायाओं के साथ दूर हो गई और मुंह फाड़े हुए कब्र के वास्तविक आतंक ने अनुभवातीतवाद (ट्रांसेंडेण्टलिज्म) की कल्पनाओं के हौआ के लिए मेरे हृदय में कोई उत्साह नहीं छोड़ा।

मैं पहले बता चुका हूं कि मेरी आंखें केवल अधमुंदी थीं, फिर भी मैं उन्हें ज्यादा घुमा-फिरा नहीं सकता था; केवल वही चीज़ें मुझे दिखाई पड़ती थीं जो मेरी दृष्टि के बिलकुल सामने पड़ती थीं। किन्तु इस दृष्टि-रेखा के परे प्रेतवत् एवं अलक्ष्य मूर्तियां निरंतर आ-जा रही थीं। वे मेरे दफन के लिए जल्दी-जल्दी तैयारियां कर रही थीं। पहले शवपेटिका लाई गई, और धीरे से मेरे पास रख दी गई। इसके बाद सेवकों तथा स्क्रूड्राइवर के साथ मृत्युक्रियासंपादनकर्त्ता—अण्डरटेकर—आया। इसके बाद एक तगड़ा आदमी आया, उसे मैं साफ-साफ देख रहा था। उसने मेरे पांव पकड़े और एक दूसरे ने, जिसका मैं केवल अनुभव कर सकता था, सिर एवं कन्धों को पकड़ा। इन दोनों ने उठाकर मुझे शवपेटिका में रख दिया और कफन उठाने के बाद ढक्कन बन्द कर दिया। एक स्क्रू कुछ टेढ़ा हो जाने के कारण, अन्डरटेकर की असावधानी से, मेरे कन्धे के भीतर गहरा चला गया। मेरे सम्पूर्ण शरीर में ऐंठन भरी सिहरन हुई। कैसे भय एवं दुःखी हृदय से मैंने सोचा कि एक मिनट पहले यदि मैंने जीवन के ऐसे ही लक्षण प्रगट किए होते तो सम्भवतः मैं दफनाए जाने से बच सकता था। किन्तु हाय! अब बहुत देर हो गई थी और जब मैंने अनुभव किया कि लोगों ने मुझे कन्धों पर उठा लिया है और सीढ़ी के नीचे शवयान में डालने के लिए लिये जा रहे हैं तो मेरे हृदय की सब आशा मर गई।

जब मुझे कब्रिस्तान के छोटे-से रास्ते पर ले जाया जा रहा था तो मेरी संवेदनाएं, जो कुछ देर सुषुप्त एवं सुस्त हो रही थीं, एकाएक घोर तथा

अस्वाभाविक रूप से चंचल हो उठीं। यह मैं नहीं जान सका कि इसका कारण क्या था। पक्षियों का उड़ना, नौकरों की फुसफुसाहट, तथा मृत्यु के अश्वों की गम्भीर श्वासध्वनि, सब कुछ मुझे सुनाई दे रही थी। यद्यपि मैं उस संकुचित तथा कठोर क्रोड़ में पड़ा हुआ था किन्तु मैं श्मशान यात्रा में शामिल लोगों की तेज़ या सुस्त चाल, ड्राइवर की बेचैनी, मार्ग की दाहिनी-बाईं मोड़ों सबका अनुभव कर रहा था। मैं शवपेटिका की अनोखी तथा लोहे के पेंचों की तीव्र गन्ध को अलग-अलग पहचान सकता था। अपने मुंह से सटे हुए कफन की बुनावट देख सकता था, यहां तक कि गाड़ी पर जो काले मातमी पर्दे लगे थे उनके इधर-उधर उड़ने से प्रकाश एवं छाया में होनेवाले क्षिप्र परिवर्तनों का अनुभव भी मुझे हो रहा था।

थोड़ी ही देर में हम लोग कब्रिस्तान पहुंच गए और मैंने अनुभव किया कि मुझे कब्र में रख दिया गया। प्रवेश-द्वार बंद करके लोग चले गएऔर मैं अकेला रह गया। मुझे कवि मार्स्टन की एक पंक्ति याद आ गई।—

मृत्यु है सुन्दर सखी, निज गृह सदा है खोल रखती।
(डैथ'ज़ ए गुडफेलो ऐण्ड कीप्स ओपेन हाउस)

और लगा कि वह बिल्कुल झूठ है। अन्त में मैं खिन्न होकर मृतकों के बीच पड़ रहा।

सुबह-सुबह लोगों की जो बातचीत मेरे कानों में पड़ गई थी उससे मुझे विश्वास हो गया था कि कब्र का दरवाज़ा खुलने के अवसर बहुत ही कम आते हैं। हो सकता है कि कई महीने बीत जायं तब ये द्वार खुलें, और मान भी लो कि उस समय तक मैं जिन्दा रह गया तो उस समय आज से अधिक क्या साधन मुझे प्राप्त होंगे कि मैं अपनी स्थिति लोगों पर प्रगट कर सकूंगा या शवपेटिका से बाहर भाग निकलूंगा ? इसलिए मैंने बड़ी शान्ति के साथ अपने को भाग्य के भरोसे छोड़ दिया और अनेक घण्टों के बाद गहरी, मृत्यु सदृश निद्रा में मग्न हो गया।

कबतक मैं इस हालत में रहा, यह आजतक मेरे लिए एक रहस्य है। जब मैं जगा तो मेरे अंगों से मृत्यु की अकड़न दूर हो गई थी और मैं पहले

की भांति गति की शक्ति से रहित नहीं रह गया था। ज़रा-सी चेष्टा से मेरे कारागार का ढक्कन खुल सकता था, क्योंकि वातावरण में जो सीलन थी उसके कारण लोहे के पेंचों के आस-पास की लकड़ी बहुत कुछ गल गई थी।

जब मैंने अपने आवास में अगल-बगल टटोलना शुरू किया तो मेरे पैर दुर्बल और अस्थिर से पड़ रहे थे। मुझे भूख की कटकटाहट तथा असहनीय श्वास की सम्पूर्ण वेदना का अनुभव हो रहा था। फिर भी मुझे आश्चर्य-सा लगता है कि पृथ्वी की इन मुसीबतों से मुझे कोई खास बेचैनी नहीं हो रही थी। उनकी अपेक्षा मन में दुष्ट अवसाद एवं क्लान्ति का बार-बार जो आगमन होता रहता था वह कहीं भयंकर था। और उससे भी अधिक आश्चर्यजनक थे वे साधन जिनसे मैं इस दुष्ट (अवसाद)को अपने सामने से खदेड़ता रहता था।

श्मशान बहुत बड़ा था और कई भागों में विभाजित था। मैं उनके निर्माण की विचित्रताएं देखने में व्यस्त हो गया। मैंने अपने आवास की लम्बाई-चौड़ाई नापी। मैंने इमारत में लगे पत्थरों को बार-बार गिना किन्तु अपने समय के भार को हलका करने के लिए मैंने इनके अलावा दूसरे उपायों से भी काम लिया। मैंने अनेक शवपेटिकाओं के बीच घूमना और बारी-बारीसे एक-एक का ढक्कन उठाकर अन्दर के शवों को देखना तथा उनके विषय में तरह-तरह के अनुमान लगाना शुरू किया।

इस प्रकार घूमते हुए मैं एक गोलमटोल, मोटी, फूली लाश से टकरा गया। मैं सोचने लगा—शब्द के प्रत्येक अर्थ में यह एक दुःखी, एक अभागा आदमी था। अपने भयंकर जीवन में उसे चलना नहीं घिसटना, आदमी की तरह नहीं बल्कि हाथी की तरह,—मनुष्य की तरह नहीं, गैंडे की तरह जीना नसीब हुआ।

उसके उन्नति के प्रयत्न विफलता के गर्भ में समा गए; उसकी भ्रमणकारी वृत्तियां निष्फल होकर रह गयीं। वह एक कदम आगे तो दो दाहिने और तीन बायें रखता था। उसका अध्ययन जटिल काव्य तक सीमित था। उसे एक पादनृत्य के चमत्कारों की कोई कल्पना नहीं हो सकती थी;

द्रुत-पद-गमन उसके लिए केवल कल्पना की वस्तु थी। वह कभी किसी पहाड़ी की चोटी पर नहीं चढ़ा। उसने कभी मीनार से किसी महानगर का दृश्य नहीं देखा। गर्मी उसकी सांघातिक शत्रु रही। उसके अनुसन्धान के दिन बुरी तरह गुजरे। उन दिनों उसे ज्वालाओं के, दम घुटने के, पहाड़ पर पहाड़ के स्वप्न दिखाई देते रहे। उनमें श्वास की कमी थी—एक शब्द में कहें तो उसे श्वास की कमी थी। वह वायुवाद्यों को बजाना व्यर्थ समझता था। वह स्वयं-चलित पंखों, वायुपालों तथा वायुसंचारक यंत्रों का आविष्कारक था। वह धौंकनी-निर्माता दु पोत का मददगार था और सिगार पीने की चेष्टा करते हुए बुरी तरह मरा। वह ऐसा केस था जिसमें मुझे गहरी दिलचस्पी का अनुभव होता है,—ऐसा व्यक्ति जिसके साथ मेरी सच्ची सहानुभूति है।

"किन्तु यहां", मैंने कहा—"हां, यहां तो देखो", और मैंने विद्वेषपूर्वक एक कंकालवत् लम्बी और विचित्र-सी दिखाई पड़ती लाश को उसके आश्रय स्थल से बाहर खींच लिया। उसकी महत्त्वपूर्ण मुखाकृति मुझे एक अमंगल परिचय से पूर्ण मालूम हुई। मैंने कहा—'यह अभागा किसी सांसारिक अनुकम्पा का पात्र नहीं है।' इतना कहकर उसको और नजदीक से देखने के उद्देश्य से अपने अंगूठा और तर्जनी उंगली से मैंने उसकी नाक पकड़ी और उसे जमीन पर बैठाकर हाथ के सहारे रोके रखा। इधर मेरा स्वगत-कथन चलता रहा—

मैंने दोहराया—"किसी सांसारिक अनुकम्पा का पात्र नहीं। भला किसी छाया पर कोई कृपा करने की बात क्यों सोचेगा?—फिर क्या उसे मरण के आशीर्वाद की कुछ कमी थी। वह लम्बे स्मारकों, हवाई (पतले) स्तम्भों, विद्युत-शलाकाओं तथा लोम्बार्डी चिनारों का प्रवर्तक था। 'छांहें और छायाएं' नाम की उसकी पुस्तिका ने उसे अमर कर दिया है। वह अल्पायु में कालेज चला गया था और वहां वायुविज्ञान पढ़ता रहा। फिर घर लौट आया वहां सदा बोलता रहता और सिंगा बजाया करता था। मशक-बीन उसका प्रिय बाजा था। काल के विरुद्ध चलनेवाले कैप्टन

वासंले भी उसके जवाब में चलने को तैयार न थे। विण्डहम (वायु गुप्त) तथा आलब्रेथ (सर्वश्वास सिंह) उसके प्रिय लेखक थे। उसकी शानदार मौत गैस सूंघते हुए हुई। वह निश्चय ही एक—"

हांफता हुआ, तथा प्रबल चेष्टा से अपने जबड़ों के चतुर्दिक बंधी पट्टी को फाड़ता हुआ, मेरी नुकताचीनी का पात्र, बीच में ही बोल उठा—"आप कैसे कह सकते हैं ? कैसे कह सकते हैं आप ? आप मि० श्वासहीन, पैशाचिक रूप से इतने निर्दय कैसे हो सकते हैं कि इस तरह नाक पकड़कर मुझे बेधते रहें ? क्या आपने नहीं देखा कि उन्होंने किस प्रकार मेरा मुंह बांध रखा था ? और यदि आप कुछ भी जानते हैं तो आपको इतना जानना ही चाहिए कि मेरे पास निकालने के लिए, खर्च कर देने के लिए कितना ज्यादा फालतू श्वास है। यदि आप नहीं जानते तो बैठ जाइए और देखिए। मेरी स्थिति में अपना मुंह खोलना, विस्तार से बोलना और आप-जैसे आदमी से, जो किसी भद्रजन की वार्ता के बीच में नहीं बोलता, सचमुच एक बड़ी राहत की बात है। हस्तक्षेप बड़े खिझानेवाले होते हैं और निश्चय ही उनका उन्मूलन कर दिया जाना चाहिए। क्या आप ऐसा नहीं सोचते ? कोई जवाब न दीजिए, एक समय में बोलने के लिए एक ही आदमी काफी है। धीरे-धीरे मैं अपनी बात कहूंगा, और तब आप अपनी बात शुरू कर सकते हैं। महोदय, आप इस जगह कैसे पहुंच गए ? मैं विनय करता हूं, एक शब्द भी न बोलिए। कभी मैं भी यहां आया था। भयानक दुर्घटना ! मैं समझता हूं, आपने सुना ही होगा। भयानक विपत्ति ! कुछ समय पहले की, बस उसी जमाने की बात है जब आप पर अभिनय एवं रंगमंच का भूत सवार था तब आपकी खिड़की के नीचे से जाते हुए भयानक दुर्घटना हो गई। क्या आपने किसी को अपना ही श्वास पकड़ते हुए सुना है ? ओह, अपनी जबान बन्द रखिए। मैंने किसी दूसरे का श्वास पकड़ लिया था। मेरे पास तो अपना ही बहुत ज्यादा था। सड़क की मोड़ पर मेरी ब्लैब से भेंट हो गई। वह मुझे एक शब्द भी बोलने का मौका नहीं देता था। एक अक्षर भी मैं बोल नहीं सका। फलत:

मुझ पर मृगी का दौरा हुआ। मैं गिर पड़ा। क्लैब तो रफूचक्कर हो गया। बुरा हो उन मूर्खों का। उन्होंने मुझे मुर्दा समझ लिया और मुझे यहां लाकर दफना दिया। क्या खूब करनी है उनकी। मैंने वह सब भी सुन लिया जो आपने मेरे बारे में कहा। शब्द-शब्द सुन लिया। प्रत्येक शब्द झूठ है। भयानक ! आश्चर्यजनक ! दारुण ! वीभत्स ! अज्ञेय ! इत्यादि-इत्यादि-इत्यादि-इत्यादि—।"

ऐसे अप्रत्याशित प्रवचन पर मुझे जो विस्मय हुआ उसकी कल्पना करना असम्भव है। इसी प्रकार उस मुक्त आनन्द की कल्पना भी असम्भव है जिसके साथ क्रमशः मुझे विश्वास हो गया कि सौभाग्य-वश जो श्वास उस भद्रजन ने, जिसे मैंने शीघ्र ही पहिचान लिया कि मेरा पड़ोसी विण्ड-एनफ (वायुबहुल) है—पकड़ लिया था वह ठीक वही (निश्वास) था जिसे अपनी पत्नी के साथ बात करते हुए मैंने स्थानच्युत किया था (छोड़ा था) काल, स्थान एवं आनुषंगिक परिस्थियों ने इस बात में कोई सन्देह नहीं रहने दिया। फिर भी तुरन्त मैंने मि० वि० की नाक को छुटकारा नहीं दिया, कम से कम उस अवधि में तो नहीं ही जिसमें लोम्बार्डी चिनारों का प्रवर्त्तक मुझे अपनी व्याख्याएं प्रस्तुत करता जा रहा था। इस विषय में मैं अपनी उस स्वाभाविक विचक्षणता से प्रेरित हो रहा था जो मेरे चरित्र का प्रधान लक्षण है।

मैंने विचार किया कि मेरी रक्षा के पथ में अब भी बहुत-सी कठिनाइयां पड़ी होंगी जिनपर कठोर अध्यावसाय से ही मैं विजय पा सकता हूं। मैंने यह भी विचार किया कि बहुत से लोग ऐसे होते हैं जो अपने द्वारा अधिकृत वस्तुओं का (फिर चाहे वे अपने तत्कालीन स्वामी के लिए कितनी ही कष्टप्रद और संकटापन्न रही हों) मूल्य दूसरों द्वारा उनके ग्रहण से या खुद उनके त्याग से लाभ उठा लेने के अनुपात में आंकते हैं। कहीं यही बात मि० विंडएनफ (वायुबहुल) के मामले में भी न हो। इस समय श्वास से मुक्ति पाने के लिए वह जो इतनी उत्सुकता प्रकट कर रहा है उसमें कहीं मैं उसके लोभ-जाल में तो नहीं फंस रहा हूं ? एक निश्वास लेकर मैंने

याद किया कि इस दुनियां में ऐसे भी बदमाश हैं जो अपने निकट पड़ोसी का अनुचित लाभ उठा लेने से नहीं चूकते और (यह बात खुद एपिक्टेटस ने कही है) जब आदमी अपनी ही विपत्तियों का बोझ उतार फेंकने के लिए अति उत्कण्ठित होते हैं तब वे दूसरों की विपत्ति दूर करने की इच्छा का अनुभव शायद ही कभी करते हैं।

इसी प्रकार की बातों पर विचार करते हुए और साथ ही मि० वि० की नाक पकड़े-पकड़े मैंने अपने उत्तर की रचना की।

मैंने बड़े रोष के स्वर में कहना शुरू किया—"राक्षस ! राक्षस ! वायुबहुल मूर्ख ! तू, तू, जिसके पापों की सजा भगवान ने तुझे दोहरी श्वासप्रणाली द्वारा दी है, तेरी यह हिम्मत कि तू मुझसे एक पुराने परिचित की भांति घनिष्टता की भाषा में बात करता है ! जबान बन्द रखूं और मैं 'झूठ बोल रहा हूं' यह सब एकश्वासप्रणालीवाले किसी भद्रजन से बात करने का तरीका है ? फिर यह सब तब जब मेरे पास वह शक्ति है जिससे मैं तेरी विपत्ति को, जिसे तू ठीक ही भोग रहा है, दूर कर सकता हूं ? जब मैं तेरे कष्टप्रद श्वसन की फालतू मात्रा को कम कर सकने में समर्थ हूं ?" ब्रूटस की भांति क्षणभर मैं उत्तर के लिए रुका और एक अंधड़ की भांति मि० विण्डएनफ (श्वासबहुल) ने मुझे दबोच लिया। प्रतिवाद पर प्रतिवाद और क्षमा-प्रार्थना पर क्षमा-प्रार्थना सामने आने लगी। कोई ऐसी शर्त नहीं थी जिसे मानने और पूरी करने को वह अनिच्छुक होते, या जिसका लाभ उठाने से मैं ही चूक जाता।

अन्त में जब सब प्रारम्भिक तैयारियां पूरी हो गईं तो मेरे परिचित ने मुझे श्वास प्रदान किया। मैंने उसकी सावधानी से परीक्षा की और बाद में उसकी प्राप्ति की एक रसीद भी दे दी।

मैं जानता हूं कि बहुत से ऐसे दुर्बोध व्यापार के विषय में इतने संक्षेप में बात करने के लिए मेरी निन्दा करेंगे। लोग सोचेंगे कि एक ऐसी घटना के विषय में मुझे अधिक विस्तार से बताना चाहिए था जिससे शरीर-विज्ञान के एक अत्यन्त रुचिवर्द्धक विषय पर नया प्रकाश पड़ सकता है।

मुझे दुःख है कि मैं इन सब बातों का जवाब नहीं दे सकता। केवल एक संकेत भर करने की अनुमति मुझे प्राप्त है। परिस्थितियां इतनी नाज़ुक थीं कि मैंने विचार करने पर उनके विषय में कम से कम बोलना ही ठीक समझा। फिर इन नाज़ुक परिस्थितियों के अतिरिक्त इसमें एक तीसरे पक्ष के हित की बात भी सम्बद्ध थी और इस अवसर पर मैं उसके क्रोध का शिकार नहीं होना चाहता।

जब यह सब आवश्यक व्यवस्था हो गई तो हम दोनों उस श्मशान के पिंजड़ों से निकल भागे। पुनःप्राप्त वाणी की संयुक्त शक्ति शीघ्र प्रकट हो उठी। 'ह्विग' के सम्पादक सीजर्स (मि० कैंची) ने अपने पत्र में फिर से 'भूमिस्थ ध्वनियों का उद्‌गम एवं स्वभाव' नामक निबन्ध प्रकाशित किया। उसके बाद उसके उत्तर, प्रत्युत्तर, खण्डन और मण्डन आए। अन्त में विवाद का निर्णय करने के लिए शव-पेटिकाओं को खोलकर देखा गया। फिर उन्हें मि० विण्डएनफ के और मेरे दर्शन हुए तब कहीं जाकर सिद्ध हुआ कि पक्ष-विपक्ष दोनों निश्चित-रूप से गलती पर थे।

जो जीवन सदा ही घटनापूर्ण रहा है उसमें से कुछ अत्यन्त अनोखे अंशों के इस वर्णन को पूर्ण करने के पूर्व मैं अपने पाठकों को उस अभेद तत्वज्ञान के गुणों का पुनः स्मरण दिलाना चाहता हूं जो ऐसी विपत्तियों के आघात के लिए सुरक्षित ढाल के समान है और जिन्हें न देखा, न अनुभव किया और न समझा जा सकता है। वह यही विवेक की भावना थी जिसके कारण प्राचीन हेब्रुओं (यहूदियों) में यह विश्वास प्रचलित था कि स्वर्ग के द्वार उन सब पापियों और संतों के लिए अनिवार्यतः खुलेंगे जो ज़ोर से तथा अटूट आस्था के साथ 'एवमस्तु' (आमीन) शब्द का उच्चार करेंगे। जब एथेंस में भयंकर प्लेग फैला और उसके निराकरण के सम्पूर्ण उपाय निष्फल हो गए तो इसी विवेक की भावना से एपीमीनाइद्स ने (जैसा कि उस तत्वज्ञानी की जीवनी के द्वितीय खण्ड में लार्तियस लिखता है) महेश्वर के लिए एक स्मारक एवं मन्दिर निर्माण करने की सलाह दी थी।

मीतज़ेनजेरस्टीन

सभी युगों में भीति और मृत्यु चतुर्दिक विचरण करती रही है। तब फिर जो कहानी मुझे कहनी है उसकी तिथि देने की क्या जरूरत है? इतना ही कहना काफी होगा कि जिस युग की बात मैं कह रहा हूं, तब हंगरी के अन्तरंग भाग में देहान्तरागमन के सिद्धान्त में लोगों का स्थिर, यद्यपि प्रच्छन्न, विश्वास था। सिद्धान्त के विषय में, अर्थात् उसकी झुठाई या सम्भाव्यता के बारे में, मैं कुछ नहीं कहता। किन्तु इतना जरूर कहता हूं कि हमारा अधिकांश अविश्वास, जैसा लाब्रुएर हमारे सम्पूर्ण दुःखों के विषय में कहता है—'अपने-आप नहीं आता।'

हां, हंगरी के अन्ध विश्वास में कुछ बातें ऐसी थी जो तेजी से बेतुकेपन की सीमा की ओर बढ़ रही थीं। इस विषय में हंगरीवासी तत्वतः अपने प्राच्य विशेषज्ञों से भिन्न थे। उदाहरण के लिए हंगरीवाले कहते थे—आत्मा किसी संवेदनशील देह में केवल एक बार ही रहती है। घोड़े, कुत्ते, यहां तक कि मनुष्य में भी इन जानवरों की भांति एक दुर्बोध साम्य है।

बर्लीफित्ज़ंग और मीतज़ेनजेरस्टीन के वंशज सदियों से एक-दूसरे के विरुद्ध चले आ रहे थे। किन्तु दोनों प्रसिद्ध वंश अपनी घातक शत्रुता में इसके पूर्व परस्पर ऐसे कटु कभी न हुए थे। इस इतिहास (कहानी) के युग में मरियल एवं कुटिल से दीख पड़नेवाली एक डोकरी ने तो यहां तक कह दिया था—'आग और पानी का मिलना आसान है किन्तु कोई बर्लीफित्ज़िंग किसी मीतज़ेनजेरस्टीन का हाथ पकड़े, यह असम्भव है।' इस शत्रुता का उद्गम एक प्राचीन भविष्यवाणी में मिलता है—"एक ऊंचे नाम का भयानक अधःपतन होगा। उस समय जैसे आरोही अश्व को काबू में कर

लेता है वैसे ही बर्लीफित्ज़िंग की अमरता पर मीतज़ेनजेरस्टीन की नश्वरता विजयिनी होगी ।"

सच पूछो तो इन शब्दों में कोई विशेष, या कोई भी अर्थ नहीं था। किन्तु ज्यादा दिन नहीं हुए, छोटी-छोटी बातों को लेकर अनेक दुर्घट परिणाम निकल आए। दोनों रियासतें एक-दूसरे से मिली हुई थीं और व्यस्त शासन के मामलों में बहुत दिनों से प्रतिद्वन्द्वी प्रभाव डालती आई थीं। यह बात भी है कि निकटस्थ पड़ोसी क्वचित् ही मित्र होते हैं, और बर्लीफित्ज़िंग गढ़ के निवासी अपने ऊंचे पुश्तों से मीतज़ेनजेरस्टीन-भवन की खिड़कियों की ओर झांक सकते थे। फिर भी सबसे बड़ी बात यह हुई कि कम पुराने और कम धनवान बर्लीफित्ज़िंग की क्षुब्ध भावनाओं को शान्त करने की जगह अति सामन्ती शान-बान से उन्हें और उत्तेजित कर दिया गया। तब यदि आनुवंशिक ईर्ष्या की प्रत्येक उत्तेजना पर लड़ने को जो दोनों कुटुम्ब पहले से ही सन्नद्ध रहते थे उनके बीच उस भविष्यवाणी के शब्दों ने, फिर चाहे वे जितने मूर्खतापूर्ण रहे हों यदि खाई पैदा कर दी या उन्हें बनाए रखा तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है? भविष्यवाणी का यदि कोई अर्थ निकलता था तो यही कि जो खान्दान पहले से ही ज्यादा शक्तिशाली है, उसी की अन्तिम विजय होगी। इसलिए दुर्बल तथा कम प्रभावशाली द्वारा कहीं उग्र शत्रुता की भावना से उसका याद किया जाना स्वाभाविक ही था।

विल्डेल्स काउण्ट बर्लीफित्ज़िंग, यद्यपि एक प्रतिष्ठित एवं ऊंचे वंश में पैदा हुए थे, किन्तु इस कथा के युग में एक दुर्बल और सठियाये वृद्ध के रूप में रह गए थे। उनमें कोई विशेषता नहीं थी; अपने प्रतिद्वन्द्वी के कुटुम्ब के प्रति असीम और प्रगाढ़ वैयक्तिक प्रतिकूलता-भर थी। इसके अलावा उन्हें घोड़ों का और शिकार का बेहद शौक था, यहां तक शारीरिक दुर्बलता, ज्यादा उम्र, मानसिक अक्षमता कोई चीज उन्हें नित्य इन खतरनाक क़ारंवाइयों में भाग लेने से विरत नहीं कर पाती थी।

इसके विपरीत फ्रेडरिक, बैरन मीतज़ेनजेरस्टीन की उम्र कम थी।

उनके पिता, मंत्री ज—, युवावस्था में ही मर गए थे। मां, लेडी मेरी, ने भी शीघ्र ही पिता का अनुसरण किया। उस समय फ्रेडरिक का पन्द्रहवां साल चल रहा था। शहर में पन्द्रह साल कोई लम्बा काल नहीं होता—अपनी तृतीय पंचवार्षिकी में भी बच्चा, बच्चा ही रहता है। किन्तु देहात में—फिर उस पुरानी गौरवशाली रियासत के सूनेपन में—पन्द्रह साल का कहीं ज्यादा गहरा अर्थ होता है।

सुन्दरी लेडी मेरी ! वह मर कैसे सकी ? फिर राजयक्ष्मा से। किन्तु इसी रास्ते से जाने के लिए तो मैं प्रार्थना करता रहा हूं। जितने लोगों को मैं प्यार करता हूं उनका अन्त इसी सभ्य रोग से होने देखना चाहता हूं। कैसी महिमामयी ! तरुण रक्त की दोपहरी में ही विदा हो जाना!—उस तरुणाई में जब हृदय केवल कामना-कानना हो जाता है और कल्पनाएं ज्वाला बन जाती हैं, सुखकर दिनों की स्मृतियों के बीच, फिर वर्षान्त में मरना—खिजां के महत् पत्र-पुंज में सदा के लिए दफन हो जाने के लिए।

इस तरह मर गई लेडी मेरी। किसी भी जीवित सम्बन्धी के बिना, अकेले ही, किशोर बैरन फ्रेडरिक मरी हुई मां के ताबूत के पास खड़ा था। उसने उस शान्त ललाट पर अपना हाथ रखा। उसके नाजुक शरीर में कोई कम्पन नहीं हुआ ; उसकी निष्ठुर छाती से कोई उसांस नहीं निकली। बचपन से ही हृदयहीन, मनमाना और जल्दबाज होने के कारण इस उम्र तक वह पूर्णतः भावनारहित, विलासी एवं उच्छृंखल जीवन बिताने लगा था। पवित्र विचारों और सामान्य शिष्टाचारों के आगे एक दीवार खड़ी हो गई थी।

जब पिता मर गए तो उनके प्रबन्ध के अनुसार वह विशाल रियासत किशोर बैरन के हाथ में आ गई। हंगरी के शायद ही किसी सामन्त ने इतनी बड़ी रियासत का उपभोग किया होगा। उसके किले असंख्य थे। इनमें से मीतज़ेनजेरस्टीन का किला, शान-शौकत में, सबसे बढ़ा-चढ़ा था। उसकी रियासत की सीमा कभी स्पष्ट रूप से निर्धारित नहीं हुई, किन्तु उसके प्रमुख उपवन का क्षेत्र पचास मील तक विस्तृत था।

ऐसे किशोर मालिक के गद्दी पर बैठने पर, जिसका चरित सर्वविदित था, जिसका वैभव अनुपम था, आचरण की दिशा क्या होगी, यह जानने के लिए विशेष कल्पना की आवश्यकता नहीं है। तीन दिनों तक तो यह हाल था कि वह अपनी सीमा तथा अपने अत्यन्त उत्साही प्रशंसकों की आशा-रेखा को भी पार कर गया। निर्लज्ज लम्पटताओं, भयानक धोकेबाजियों, अश्रुतपूर्व अत्याचारों के बीच उसकी कांपती प्रजा ने समझ लिया कि न तो उनके द्वारा प्रकट की जानेवाली दीन अधीनता और न तो खुद उसके अन्तःकरण की कोई भावना ही उस राक्षस के अनुतापहीन खूनी जबड़े से उनकी रक्षा कर पाएगी। चौथे दिन की रात को बर्लीफिल्जिग किले की अश्वशालाओं में आग लग गई और आस-पास के सब लोगों की एक ही राय थी कि यह काम बैरन का ही है।

किन्तु इस दुर्घटना के कोलाहल के बीच खुद किशोर सामन्त अपने पारिवारिक महल के एक ऊपरी विशाल पर निर्जन कक्ष में ध्यानमग्न बैठा था। दीवारों पर लटके शानदार, यद्यपि धूमिल पड़ने जा रहे चित्र हजारों नामी पूर्वजों की महिमामयी आकृतियों को व्यक्त कर रहे थे। कहीं निरंकुश शासक और सम्राट के साथ लम्बी दाढ़ीवाले पादरी और पोप के अधिकारी बैठे हुए हैं और पार्थिव राजा के किसी आदेश पर प्रतिबन्ध लगा रहे हैं; कहीं रानी मीतज़ेनजेरस्टीन अपनी पूरी लम्बाई में खड़ी हैं; कहीं योद्धागण पराजित एवं मृत शत्रु की लाश पर झुके उसे देख रहे हैं और उनके चेहरे की सरलतम शिराएं भी स्फूर्ति से भर उठी हैं; कहीं अतीत काल की हंसिनियों-सी कामिनियां किसी काल्पनिक संगीत के ताल पर नाच रही हैं।

बैरन जब बर्लीफिल्जिग की अश्वशालाओं में बढ़ते हुए कोलाहल को सुन रहा था, या सुनने का अभिनय कर रहा था, या कौन जाने जब वह किसी और नये उत्पात की रचना करने में मग्न था, उसकी आंखें अपने आप पर्दे पर खिचे वृहदाकार और अप्राकृतिक रंग के अश्व पर चली गईं। यह घोड़ा उसके प्रतिद्वन्द्वी के वंश के किसी सरासेनी पूर्वज का था। चित्र में आगे की ओर घोड़ा अचंचल भाव से, स्थिर मूर्तिवत् खड़ा था, और थोड़ी

दूर पर उसका पराजित आरोही किसी मीतज़ेनजेरस्टीन के कृपाण की वार से दम तोड़ चुका था।

उस दिशा में उसकी दृष्टि पड़ते ही, अजाने फ्रेडरिक के ओठों पर एक कुटिल अभिव्यक्ति फैल गई। उसने उसे दूर करने का कोई यत्न नहीं किया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि जो अदम्य चिन्ता उसकी चेतना पर आवरण की भांति छायी जा रही है, उसका कारण क्या है। बड़ी कठिनाई से वह अपने स्वप्निल एवं असम्बद्ध मनोभावों को आश्वस्त कर सका कि वह निश्चित रूप से जग रहा है किन्तु जितना ही वह चित्र को देखता, उतना ही एक जादुई प्रभाव में डूबता जाता था। यहां तक कि उसे अनुभव होने लगा कि वह कभी चित्र के आकर्षण से अपने को मुक्त न कर पाएगा। किन्तु बाहर का शोर सहसा बढ़ जाने के कारण, बड़ा ज़ोर लगाकर उसने अपनी आंखें वहां से हटाई और जलती हुई अश्वशालाओं से उठती लाल लपटों का जो प्रकाश कमरे की खिड़कियों पर पड़ रहा था, उसे देखने लगा। किन्तु यह क्रिया भी क्षणिक थी—अपने-आप उसकी दृष्टि पुनः दीवार की ओर मुड़ गई। उसे यह देखकर बड़ा भय और विस्मय हुआ कि इतनी देर में उस वृहदाकार घोड़े का रुख बदल गया है। इसके पूर्व घोड़ा गर्दन झुकाए खड़ा था, जैसे अपने मालिक के धराशायी शरीर की ओर समवेदनापूर्वक देख रहा हो। किन्तु अब वह बैरन की ओर घूम गया था। पहले आंखें प्रायः अदृश्य थीं, किन्तु अब वे एक ऊर्जस्वी एवं मानवीय अभिव्यक्ति से भर उठी थीं; अब उनमें ज्वालामयी अस्वाभाविक लालिमा आ गई थी। स्पष्ट जान पड़ता था कि अश्व क्रुद्ध हो उठा है। उसके ओंठ फूल उठे थे और बड़े-बड़े भीषण दांत दिखाई पड़ रहे थे।

भयक्रान्त होकर किशोर सामंत दरवाज़े की ओर लपका। ज्यों ही उसने द्वार खोला, रक्तिम प्रकाश का एक झोंका-सा सारे कमरे में फैल गया और लगा जैसे उस कम्पित चित्र पर किशोर की छाया को उठाकर फेंक दिया हो। उस छाया को देख वह कांप उठा क्योंकि फर्श पर लड़-खड़ाते हुए भी उसने देखा कि छाया ने ठीक वही स्थिति और आकृति ग्रहण

कर ली है जो बर्लीफिर्त्ज़िग के निर्दयी विजयी हत्यारे की चित्र में है।

अपनी मुर्दनी दूर करने के लिए बैरन खुली जगह की ओर चल पड़ा। कोठी के मुख्य फाटक पर तीन अश्वपालों से उसकी भेंट हुई। वे बड़ी कठिनाई से और अपनी जान पर खेलकर, एक वृहदाकार अग्निवर्णी अश्व की अप्राकृतिक उछलकूद पर काबू पाने की कोशिश कर रहे थे।

ज्योंही किशोर बैरन की नजर घोड़े पर पड़ी उसने देखा कि कमरे के चित्र में अंकित क्रुद्ध अश्व का ही प्रतिरूप वहां उपस्थित है। उसने विषण्ण एवं शुष्क वाणी में पूछा—"किसका घोड़ा है यह? इसे तुमने कहां पाया?"

एक अश्वपाल ने उत्तर दिया—"यह आपकी ही मिल्कियत है मालिक। कम से कम, दूसरा कोई इसका मालिक बनने को तैयार नहीं। यह गुस्से से दांत कटकटाता और मुंह से फेन बहाता बर्लीफिर्त्ज़िग किले की जलती अश्वशाला से निकलकर भागा जा रहा था। यह समझकर कि वह बूढ़े काउण्ट के विदेशी अश्वों में से एक है, हम इस विभ्रान्त को पकड़कर वापस ले गए। किन्तु वहां के साईसों ने इसे अपना मानने से इन्कार कर दिया। यह बात बड़ी विचित्र लगती है क्योंकि इसके शरीर पर ज्वालाओं से किसी प्रकार बच निकलने के स्पष्ट चिह्न मौजूद हैं।"

बात काटकर दूसरा अश्वपाल बोल उठा—"इसके माथे पर स्पष्ट रूप से दागे हुए डब्ल्यू० वी० बी० अक्षर देखे जा सकते हैं। मेरी समझ से ये विल्हेल्म वान बर्लीफिर्त्ज़िग नाम के प्रथमाक्षर हैं, किन्तु गढ़ के सभी आदमी घोड़े के बारे में कोई जानकारी रखने से इन्कार करते हैं।"

कुछ सोचता हुआ और अपने शब्दों के अर्थ पर ध्यान दिए बिना ही तरुण बैरन ने कहा—"कैसी विचित्रता है। जैसा तुम कहते हो, यह बढ़िया घोड़ा है—शानदार घोड़ा है, किन्तु तुम लोगों ने ठीक ही समझा है कि सन्दिग्ध और अज्ञेय स्वभाव का है। अच्छा, इसे मैं ही ग्रहण करता हूं।" फिर थोड़ा ठहरकर बोला—"शायद मीतज़ेनजेरस्टीन के फ्रेडरिक-जैसा अश्वारोही बर्लीफिर्त्ज़िग की अश्वशालाओं से आए हुए दानव को भी पालतू

बना लेगा।"

"मालिक, आप भूल रहे हैं। मैं समझता हूं, हम बता चुके हैं कि अश्व काउण्ट की अश्वशाला का नहीं है। यदि वैसी बात होती तो हम अपना कर्तव्य इतना तो जानते हैं कि आपके वंश के किसी सामंत के सामने उसे उपस्थित न करते।"

बैरन ने रुखाई के साथ कहा—"सत्य है।" इसी समय शयनागार का एक सेवक कोठी से आया। उसका चेहरा फक था और वह लड़खड़ाते कदमों से चल रहा था। उसने अपने मालिक के कान में फुसफुसाकर बताया कि कमरे से एक चित्र का कुछ अंश सहसा गायब हो गया। इसके बाद उसने सूक्ष्म ब्यौरा दिया किन्तु उसकी धीमी वाणी के कारण अश्वपालों की उत्तेजित उत्सुकता की तृप्ति नहीं हुई।

इस बातचीत की अवधि में तरुण फ्रेडरिक के चेहरे पर विविध मनोभावों की उत्तेजना दिखाई पड़ी। किन्तु शीघ्र ही उसने अपने पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया और उसके चेहरे पर अटल ईर्ष्या की अभिव्यक्ति दिखाई पड़ने लगी। उसने पक्का आदेश दिया कि कमरा तुरन्त बन्द कर दिया जाए और चाबी उसके हाथ में दे दी जाए।

जब सेवक चला गया और सामंत ने जिस बृहदाकार रहस्यमय घोड़े को अपना लिया था वह दूने और अतिप्राकृत रोष के साथ उछलने-कूदने लगा और फिर कोठी से मीतज़ेनजेरस्टीन की अश्वशालाओं की ओर जानेवाले लम्बे मार्ग पर भाग खड़ा हुआ तो बैरन के किसी प्रजाजन ने कहा—"आपने बूढ़े शिकारी वर्लीफिट्जिग की दुःखदायी मृत्यु के बारे में सुना ?

वक्ता की ओर तेज़ी से घूमकर बैरन ने कहा—"नहीं। तुम कहते हो—मर गए ?"

"मालिक, यह बिल्कुल ठीक बात है। मैं समझता हूं कि आपके लिए यह कोई अमंगल समाचार नहीं है।"

श्रोता के सुन्दर मुख पर तेज़ी से अनोखी एवं अज्ञेय अर्थों से भरी मुस्कान फैल गई—"मृत्यु कैसे हुई ?"

"अपने शिकार के किसी प्रिय अश्व को आग से बचाने में वह खुद बुरी तरह लपटों में जल मरे।"

जैसे किसी उत्तेजक कल्पना के सत्य के प्रति धीरे-धीरे स्वेच्छापूर्वक जाग्रत होकर बैरन ने कहा—"अच्छा !"

प्रजाजन ने कहा—"हां, मालिक।"

किशोर ने शान्तिपूर्वक कहा—"बुरी खबर है।" और चुपचाप कोठी में चला गया।

उस दिन से किशोर बैरन फ्रेडरिक वान मीतज़ेनजेरस्टीन का रंग-ढंग बिल्कुल बदल गया। उसका आचरण हर तरह की आशा के प्रतिकूल हो गया और उसकी आदतें पड़ोस की रियासत के प्रति पहले से भी अधिक कठोर हो गईं। अब कभी वह अपनी रियासत की सीमा के बाहर नहीं दिखाई पड़ता था और इस विस्तृत, सामाजिक विश्व में वह सर्वथा अकेला, साथीरहित था। बस, वही अप्राकृतिक, उग्र, अग्निवर्णी घोड़ा उसका एक-मात्र मित्र और साथी था—यदि उसे मित्र कहा जा सके।

बहुत दिनों तक पड़ोसी रियासत से अनेक अनेक निमंत्रण आते रहे—"क्या बैरन हमारे समारोह को अपनी उपस्थिति से समादृत करेंगे ?" "क्या बैरन शूकर के शिकार में हमारे साथ शामिल होंगे ?"

"मीतज़ेनजेरस्टीन नहीं उपस्थित होगा।" "मीतज़ेनजेरस्टीन शिकार नहीं खेलता।" निमंत्रणों के ऐसे धृष्ठ एवं संक्षिप्त उत्तर दिये जाते थे।

कोई भी दृप्त सामंत बारम्बार किये जानेवाले ऐसे अपमान सहन नहीं कर सकता था। इसलिए अब निमंत्रणों की भाषा उतनी सौहार्द्रपूर्ण नहीं रह गयी; अब आते भी बहुत कम थे। यहां तक कि कालान्तर में वे बिल्कुल बन्द हो गये। अभागे काउण्ट बर्लीफिट्ज़िंग की विधवा ने तो एक बार कहा दिया—"चूंकि बैरन अपने बराबर के लोगों की संगत से दूर भागते हैं तो वे उस समय घर पर होंगे जब घर पर रहना न चाहते होंगे, और चूंकि वह एक अश्व की संगत में रहना ज्यादा पसन्द करते हैं तब भी घोड़े पर चढ़ेंगे जब वह चढ़ना न चाहते होंगे।" इस बात से

खान्दानी झगड़ा और भभक उठा और इससे-यह भी सिद्ध हो गया कि जब हम असाधारण ऊर्जा प्रकट करने की आकांक्षा करते हैं तो हमारे उद्‌गार कैसे विनाशकारी होते हैं या हो सकते हैं।

जो लोग उदार विचारों के थे वे तरुण सामंत के परिवर्तन को देखकर कहते थे कि यह सब अपने माता-पिता की असामयिक मृत्यु से हुए स्वाभाविक शोक का प्रभाव है। वे भूल जाते थे कि उस मृत्युशोक के बाद ही थोड़े समय तक उसका आचरण कितना अन्यायपूर्ण और उच्छृंखल हो उठा था। कुछ कहते थे कि यह आत्मगौरव और मर्यादा का ही विस्तार है। दूसरे कहते थे—और इनमें पारिवारिक चिकित्सक भी शामिल था—यह आनुवंशिक बीमारी और खिन्न विषाद का परिणाम है। उधर सामान्य जन-समाज में और ही अस्पष्ट एवं भयावनी बातें कही जाती थीं।

हां, अपने उस नये घोड़े के प्रति बैरन की अस्वाभाविक रुझान, जो उस जानवर की खुंखार एवं राक्षसी प्रवृत्तियों के प्रत्येक नये उदाहरण के साथ बढ़ती ही जा रही थी, को देखकर अन्त में, सभी समझदार आदमियों ने कह दिया कि यह तो भयानक और अप्राकृतिक भावोन्मेष है। दोपहर की धूप में, आधी रात के समय, बीमारी हो या स्वास्थ्य, शान्ति हो या तूफान, चांदनी हो या अंधियारी किशोर मीतज़ेनजेरस्टीन हर समय उस वृहदाकार अश्व की पीठ पर सवार दिखाई पड़ता था जिसकी समझ में न आ सकनेवाली शरारतें उसकी आदतों के अनुकूल थीं।

किन्तु कुछ परिस्थितियां ऐसी थीं कि पिछली घटनाओं के साथ मिलाकर देखने पर अश्वारोही के उन्मादों को तथा घोड़े की विशेषताओं को अपार्थिव और अपशकुनकारी रंग में ढाल देती थीं। ठीक तौर से नापकर देखा गया था कि वह एक छलांग में कितनी दूर जाता है। और नाप का जो फल निकला वह अत्यन्त कल्पनाप्रधान व्यक्तियों के प्रबलतम अनुमानों को भी पार कर गया। बैरन ने उसे कोई खास नाम भी नहीं दिया था, यद्यपि और सब घोड़ों के निश्चित नाम थे। उसका अस्तबल भी और घोड़ों के अस्तबल से अलग और दूर हटकर था। जहां तक उसके मलने-दलने

खिलाने-पिलाने का काम था, खुद मालिक के सिवा दूसरा कोई उसे कर न पाता था। यहां तक कि दूसरा कोई उसके अस्तबल के पास फटकता भी नहीं था। यह भी देखा गया कि जिन तीन अश्वपालों ने बर्लीफिल्त्ज़िग के अग्निकाण्ड में से भागते हुए उसे सांकलों एवं फन्दों से पकड़ा था उनमें से कोई यह नहीं कहता था कि उस संघर्ष में या उसके बाद ही कभी वे उस पर हाथ लगा पाये हैं। किसी श्रेष्ठ और गुस्सैल अश्व की चालढाल के अनोखे समाचार लोगों में, विशेषतः उन लोगों में कोई विशेष कुतूहल नहीं पैदा करते जो नित्य ही दौड़ में काम करते हैं और घोड़ों की समझदारी से भलीभांति परिचित हैं। किन्तु यहां कुछ ऐसी परिस्थितियां थीं जिनके कारण अत्यन्त संशयवादी एवं जड़मति व्यक्तियों का ध्यान भी उसकी ओर आकर्षित हुआ। कहा जाता है कि ऐसे भी अवसर होते थे जब जानवर के चतुर्दिक मुंह बाये खड़े लोग उसके भयंकर पदाघात के गहरे एवं प्रभावशाली अर्थ से भयभीत चुपचाप लौट जाने को बाध्य होते थे। ऐसे भी अवसर आते थे जब घोड़े की सरल एवं मानवीय-सी दिखनेवाली आंखों की तीव्र एवं भेदक अभिव्यक्ति के सामने किशोर मीतज़ेनजेरस्टीन भी पीला पड़ जाता था।

घोड़े की आविष्ट विशेषताओं पर, किशोर सामंत के असामान्य स्नेह की प्रगाढ़ता पर बैरन के परिचरों एवं पार्षदों में से किसी को अविश्वास नहीं था।—केवल एक अपदार्थ और कुरूप लघु सेवक ही ऐसा था, जिसको इसमें संशय था किन्तु उसकी विकलांगता हर एक की निगाह में थी और उसकी राय का कोई भी महत्व नहीं था। यदि उसके विचारों का बयान करना जरूरी ही समझा जाए तो वह यह कहने की धृष्टता करता था कि उसके मालिक जब भी घोड़े की पीठ पर सवार होने की चेष्टा करते हैं तो उनमें एक रहस्यमय और लगभग अदृश्य-सा कम्पन दिखाई पड़ता है; लम्बी एवं अभ्यस्त अश्वयात्रा से लौटने पर विजयिनी अनिष्टकारिता की अभिव्यक्ति उनके चेहरे की हर एक पेशी को विकृत कर देती है।

एक तूफानी रात को मीतज़ेनजेरस्टीन भारी एवं पीड़ाकारी निद्रा से जग गया; अपने कमरे से पागल की भांति नीचे उतरा और जल्दी से घोड़े

पर बैठकर जंगल की ओर चल दिया। चूंकि यह एक सामान्य बात थी, किसी ने उधर विशेष ध्यान नहीं दिया। किन्तु जब कुछ घण्टों की अनुपस्थिति के बाद मीतजेनजेरस्टीन महल की शानदार दीवारें घनी अशास्य अग्निज्वाला की सुरमई लपटों में टूट-टूटकर ध्वस्त होने लगीं तब घर के सब लोग बेचैनी से उनके लौटने की राह देखने लगे।

जब पहिली बार आग का पता चला तब वह इतनी उग्र हो चुकी थी कि इमारत के किसी भाग को बचाने का प्रयत्न करना निरर्थक प्रतीत हुआ। इसलिए पास-पड़ोस के लोग उदासीनतापूर्वक चुपचाप खड़े विस्मय के साथ वह अग्निकाण्ड देख रहे थे। परन्तु शीघ्र ही एक नवीन भयानक चीज ने लोगों का ध्यान अपनी ओर अकर्षित कर लिया, और यह भी साबित कर दिया कि जड़ पदार्थ के अत्यन्त भयानक ध्वंस के दृश्य के प्रति सर्वसाधारण में जो उत्सुकता जगती है उससे कहीं ज्यादा तब जग पड़ती है जब वे मानव की पीड़ा को प्रत्यक्ष देखते हैं।

लोगों ने देखा कि वन से मीतज़ेनजेरस्टीन किले के मुख्य द्वार तक जो वीथिका चली आई है और जिसके दोनों ओर ओक के लम्बे वृक्ष लगे हुए है उसपर एक घोड़ा चला आ रहा है। उसपर एक छत्रहीन व्यक्ति बड़ी अस्तव्यस्त स्थिति में बैठा है और वह इतने वेग से उछल रहा है कि तूफान के राक्षस को भी मात कर रहा है। हैरत में पड़े प्रत्येक दर्शक ने चीत्कार किया—"भयानक।"

किसी प्रतिवाद की सम्भावना के बिना कहा जा सकता है कि अश्वारोही की अवस्था नियंत्रण के बाहर थी। उसकी मुखाकृति की व्यथा, उसके शरीर का तड़पभरा संघर्ष इस बात का प्रमाण था कि उसे अतिमानुषी श्रम करना पड़ा है। किन्तु अकेली एक चीख के सिवा कोई और शब्द उसके घायल ओठों से—जो गहरे भय के कारण बार-बार चबाए जाने से क्षतविक्षत हो रहे थे—नहीं निकला। एक क्षण बीता होगा कि ज्वालाओं के अट्टहास एवं हवाओं की चीख के ऊपर (घोड़े के) खुरों की खरखराहट की तीव्र प्रतिध्वनि छा गई। दूसरा क्षण, और लोगों ने देखा

कि एक ही छलांग में द्वारमार्ग एवं खाई को पार कर घोड़ा महल की टूटकर गिरती हुई सीढ़ियों के ऊपर चढ़ गया और अस्तव्यस्त अग्नि के अंधड़ में अपने सवार के साथ ही विलीन हो गया।

तूफान तुरन्त शान्त हो गया और चारों ओर मृत्यु की शान्ति छा गयी। एक श्वेत ज्वाला अब भी इमारत को चारों ओर से कफन की भांति घेरे हुई थी और वहां से निकलकर शान्त वातावरण में अतिप्राकृतिक दीप्ति उत्पन्न कर रही थी। उधर दीवारों पर छाये धुंए के घने बादलों से एक घोड़े की स्पष्ट वृहदाकार आकृति बन गई थी।

बेरेनिस

दुःख कई तरह का होता है। धरती बहुरूपी है। अगर ऊपर क्षितिज पर इन्द्रधनुष तक पहुंचते हैं तो वहां भी उतने ही रंग हैं, जितने उस गुम्बद में हैं: उतने ही अलग, फिर भी वैसे ही समन्वित। हां, इन्द्रधनुष के क्षितिज तक पहुंचना! यह कैसी बात है कि मैंने सौन्दर्य से एक प्रकार का असौन्दर्य प्राप्त किया है?—शान्ति के अनुबन्धों से शोक की उपमा प्राप्त की है? किन्तु जैसा कि नीतिशास्त्र में है, बुराई भलाई का ही परिणाम है, उसी प्रकार, सच्ची बात यह है कि, शोक आनन्द से ही उत्पन्न होता है। या तो अतीत आनन्द की स्मृति आज की, वर्तमान की पीड़ा है, अथवा जो भी यंत्रणाएं (आज) हैं उनका उद्गम उस हर्षोन्माद में है जो हो सकता था। मैं जो कहानी कहने जा रहा हूं वह भीति से, त्रास से पूर्ण है: मैं उसे न कहता, यदि वह तथ्यों की अपेक्षा अनुभूतियों के आधिक्य की कहानी न होती।

मेरा बपतिस्मा का नाम इगेइयस है; कौटुम्बिक नाम मैं नहीं बताऊंगा। फिर भी इतना कह देना चाहता हूं कि देश में कोई स्तम्भ उतना पुराना नहीं है जितना मेरा दुखियारा भूरा खान्दानी घर है। हमारे वंशवालों को स्वप्नदर्शियों की जाति कहा गया है, और ब्योरे की बहुत-सी उल्लेखनीय बातों में—खान्दानी कोठी के ढंग में, मुख्यकक्ष के भित्तिचित्रों में, शयनागारों की चित्रयवनिकाओं में, शस्त्रागार के कतिपय स्तम्भों की काट-तराश में, और विशेषरूप से प्राचीन चित्रों की शाला में, पुस्तकालय-भवन की शैली में और अन्त में पुस्तकालय के विषयों की अत्यन्त विलक्षण प्रकृति में, इस विश्वास के लिए पर्याप्त प्रमाण मिलते थे।

मेरे प्रारम्भिक वर्षों की स्मृतियां इस कक्ष और इसकी जिल्दों से

जुड़ी हुई हैं। इन जिल्दों-पुस्तकों के विषय में मैं कुछ नहीं कहूंगा। यहीं मेरी मां मरी थी। यहीं मैं पैदा हुआ था। परन्तु यह कहना कि उसके पहिले मैं जिया ही नहीं, या आत्मा का पहिले कोई अस्तित्व नहीं था, निरर्थक है। तुम इसे अस्वीकार करते हो परन्तु इस विषय में हम तर्क न करें, यही अच्छा है। मैं पूर्णतः आश्वस्त हूं किन्तु मैं किसी को आश्वस्त नहीं करना चाहता। किन्तु हवाई आकृतियों की, आध्यात्मिक एवं अर्थपूर्ण नयनों की, संगीतमयी किन्तु शोकाच्छन्न ध्वनियों की याद अवश्य है—याद जिसे दूर नहीं किया जा सकता—याद जो छाया की भांति अस्पष्ट, परिवर्तनशील, अनिश्चित, अस्थिर है, और जो छाया की भांति ही कभी मेरा साथ न छोड़ेगी, यद्यपि मेरी प्रज्ञा का सूर्य-प्रकाश भी रहेगा।

उसी कमरे में मैं पैदा हुआ था। इस प्रकार एक लम्बी निशा से, जो अ-भाव जैसी लगने पर भी अभाव थी नहीं, परियों के देश में, कल्पना के महल में, आश्रमिक विचार एवं ज्ञान के वन्य प्रदेश में जगने पर यह कोई अनोखी बात नहीं हुई कि मैंने अपनी चारों ओर चमत्कृत एवं उत्सुक आंखों से देखा; अपनी बाल्यावस्था पुस्तकों में खो दी; अपना यौवन विलास में खर्च कर दिया, किन्तु यह बात जरूर अनोखी है कि ज्यों-ज्यों उम्र गुजरती गई और जीवन के मध्याह्न ने मुझे अपने पूर्वजों की कोठी में ही पड़े पाया, मेरे जीवन-स्रोत बिल्कुल अवरुद्ध हो गये। कैसे आश्चर्य की बात थी कि मेरे सामान्य विचार बिल्कुल उलट गये। दुनिया की वास्तविकताएं मुझे स्वप्न-जैसी लगती थीं, जबकि उसके उलटे स्वप्न-लोक की उद्भुत धारणाएं—न कि दैनन्दिन जीवन की सामग्रियां—मेरे लिए जीवन का आधार बन गई थीं।

मैं और बेरेनिस चचेरे भाई-बहिन थे, और एक ही साथ मेरे पैतृक गृह में पले थे। फिर भी दोनों का विकास अलग-अलग ढंग पर हो गया। मैं अस्वस्थ और उदासी में डूबा हुआ; वह चंचल, ललित और स्फूर्ति से उमड़ती हुई। वह पहाड़ियों की सैर करती थी; मैं एकान्त कुटिया में अध्ययन-रत रहता था। मैं अपने ही हृदय के भीतर रहता हुआ, सम्पूर्ण शरीर एवं

आत्मा के साथ अत्यन्त गम्भीर एवं कष्टप्रद चिन्तन में डूबा रहता; वह अपने रास्ते की अमंगल परछाइयों और तस्करपंखी क्षणों का कोई विचार किए बिना जीवन—पथ पर असावधानी से घूमती फिरती थी। बेरेनिस! —मैं उसका नाम लेकर पुकार रहा हूं—बेरेनिस! और स्मृति के धुंधले ध्वंसावशेषों से हजारों संस्मरण आवाज सुनकर चमत्कृत हो उठते हैं। आह! आज भी उसकी मूर्ति मेरे सामने उतनी ही साफ खड़ी हुई है, जैसी उत्फुल्लता और आनन्द के पहले दिनों में वह मुझे दिखाई पड़ी थी। ओह! वह अलंकृत फिर भी अपरूप सौन्दर्य! वह आर्नहीम के निकुंजों की कोकिल! वह अपने फौआरों की जलपरी!—और फिर!—फिर जो कुछ है वह एक रहस्य और आतंक है, और एक ऐसी कहानी है जो कही नहीं जानी चाहिए। बिमारी, भयानक बीमारी, सांघातिक बीमारी उसकी देह-यष्टि पर प्रचण्ड अन्धड़ की भांति टूट पड़ी; मेरे देखते-देखते परिवर्तन की धारा ने उसे दबोच लिया—परिवर्तन जो उसके मन, उसकी आदतों और उसकी प्रकृति में प्रविष्ट हो गया, और सबसे सूक्ष्म और भयानक परिवर्तन तो यह था कि उसका रूप ही बदल गया। हाय! विध्वंसक आया और चला गया, और शिकार, कहां है अब? मैं जान नहीं पाया—या तबसे उसे फिर बेरेनिस के रूप में जान नहीं पाया।

जिस सांघातिक एवं प्रमुख रोग ने मेरी बहिन के नैतिक एवं शारीरिक अस्तित्व में वैसी भयंकर क्रांति कर दी थी, उसके कारण जो अनेकानेक विपत्तियां आती गयीं, उनमें सबसे दु:खदाई और कठोर थी, एक प्रकार की मृगी का दौरा। यह दौरा प्राय: ऐसी मूर्च्छा में आकर समाप्त होता था कि लगता था निश्चित अन्त हो गया है, और उससे मुक्ति बिल्कुल आकस्मिक रूप में होती थी। इस बीच मेरा रोग भी बढ़ता गया—मुझसे कहा गया है कि मैं उसे रोग ही कहूं—, मेरा रोग तेजी से मुझे आक्रान्त करता गया, और अधिक मात्रा में अफीम का सेवन करने के कारण उसके लक्षणों में बहुत वृद्धि हो गई। यहां तक कि अन्त में मेरा रोग एक अनोखे प्रकार के एकोन्माद में बदल गया—एकोन्माद जो क्षण-क्षण शक्तिमान होता गया

और जिसने मुझे विलक्षण एवं अकल्पनीय रूप से अपने काबू में कर लिया। यह एकोन्माद—यदि उसको मुझे एकोन्माद कहना ही पड़े—मेरे मन की चैतन्यवाहिनी नाड़ियों को विक्षुब्ध कर देता था और यह विक्षोभ एक ऐसे बिन्दु पर केन्द्रित हो जाता था जिसे अध्यात्मविद्या में ध्यान कहा गया है। सम्भव है, मैं अपनी बात ठीक तरह से न समझा पा रहा होऊं किन्तु किसी वस्तु में केन्द्रस्थ हो जाने की उस शिरागत गहराई को मैं किसी भी तरह सामान्य पाठक तक पहुंचा सकने में असमर्थ हूं जो संसार की अति-सामान्य वस्तुओं के प्रति भी मुझमें पैदा हो गई थी।

कभी किसी किताब के हाशिये पर बनी निरर्थक रेखाओं या उसकी टाइप की सेटिंग को घण्टों बिना थके देख रहा हूं; कभी पर्दे या फर्श पर पड़ती किसी विचित्र छाया को देखने में ऐसा ध्यानमग्न हो गया हूं कि ग्रीष्म-दिवस का अधिकांश भाग बीत गया है; कभी किसी दीपक की ज्योतिशिखा या आग की लपटों पर ऐसी टकटकी लगी कि सारी रात बीत गई है; कभी किसी पुष्प की सुगन्ध में डूबे हुए सारा दिन निकल गया है; कभी कोई सामान्य शब्द की ऐसी रटन लग गई है कि उस शब्द से होने-वाली कोई धारणा ही मुझमें शेष नहीं रही है; कभी शरीर की चेतना ही ऐसी विस्मृत हो गई है कि चलने-फिरने एवं अस्तित्व का कोई भाव ही नहीं रह गया है; ये सब कुछ साधारण एवं सबसे कम क्षतिकारक लक्षण थे मेरी मानसिक शक्तियों को प्रभावित करने वाले उस रोग के, जो भले अश्रुतपूर्व न हों किन्तु जिसका कोई विश्लेषण या व्याख्या सम्भव न थी।

किन्तु मुझे गलत न समझिए। मामूली चीजों के प्रति भी जो अस्वा-भाविक, अनावश्यक, गहरा एवं करुण ध्यान मैं देता था उसे सम्पूर्ण मानव जाति में पाई जानेवाली, और खास तौर से प्रबल कल्पनाशील व्यक्तियों में पाई जानेवाली रोमंथी क्षमता से मिलाने की भूल न कीजिए। जैसा कि प्रथम दृष्टि में मालूम पड़ता है, यह उस क्षमता की आत्यन्तिकता भी नहीं थी, बल्कि उससे बिल्कुल अलग एवं भिन्न वस्तु थी। पहिले प्रकार में तो उत्साही या स्वप्नदर्शी, किसी विशिष्ट पदार्थ को देखते हुए भी उससे

निकलते अनेक निष्कर्षों, फिर उन निष्कर्षों से निकलनेवाले सुझावों एवं संकेतों में इतना डूब जाता है कि मूल पदार्थ ही उसके ध्यान से लुप्त हो जाता है। मेरे मामले में प्रमुख पदार्थ बहुत मामूली होता था किन्तु मेरी उच्छृंखल दृष्टि के कारण उसे एक अस्वाभाविक एवं अवास्तविक महत्व प्राप्त हो जाता था। शायद ही उससे कोई निष्कर्ष निकाला गया हो और कभी कोई विचार उठता भी था तो पुनः उसी पदार्थ में लौटकर केन्द्रित हो जाता था। मेरे इस प्रकार के चिन्तन कभी सुखदायी नहीं लगे और जब वह स्थिति समाप्त भी हो जाती थी तब भी वह वस्तु मेरी आंखों से ओझल नहीं हो पाती थी और उसमें अतिप्राकृत सम्मान के कारण मैं खोया रहता था। एक शब्द में कहें तो दोनों स्थितियों में प्रमुख अन्तर यह है कि दिवा-स्वप्न देखने वाले की मनोवृत्ति *कल्पनात्मक* होती है, जब मेरी *ध्याना-त्मक* थी।

इस काल में मेरी किताबों ने यदि विशृंखलता को प्रत्यक्ष उत्तेजन नहीं दिया तो अपने कम से कम कल्पनात्मक एवं निष्फल प्रकृति के कारण स्वयं विशृंखलता की स्वाभाविक विशेषताएं ग्रहण कर लीं। मुझे अच्छी तरह याद है कि श्रेष्ठ इतालवी कोलियस सिकन्दस क्यूरियो के प्रबन्ध 'दा एम-प्लिट्यूदाइन बीटी रेग्नी दाई', संट आस्टिन के महान ग्रन्थ 'ईश्वरीय नगर' एवं तर्तूलियन दे कार्ने क्रिस्ती (जिसमें यह अज्ञेय वाक्य आया है—'मार्तु-अस इस्ट दाई फीलियस; क्रेडिबिले ईस्ट क्विआ इनएप्टम ईस्ट; एट सिपल्टस रिजरेक्जिट; सर्टप ईस्ट क्विआ इम्पासेबले ईस्ट अर्थात् "ईश्वर-पुत्र मर गया, यह बात विश्वसनीय है क्योंकि अयोग्य है; दफना दिया गया है किन्तु उठ खड़ा हुआ है, यह निश्चित है क्योंकि असम्भव है।) ने अनेक सप्ताहों तक श्रमपूर्ण एवं निष्फल अनुसंधान में मेरा सम्पूर्ण समय ले लिया था।

इस प्रकार अत्यन्त सामान्य वस्तुओं से मेरी प्रज्ञा हिल उठी थी। इस-की उपमा उस सागर-शिला से दी जा सकती है जिसका वर्णन टालेमी हेफेस्टियन ने किया है। शिला, जो मानवीय हिंसा के आघातों और सागर

तथा झंझा के उग्रतर आक्रोश का बराबर प्रतिरोध करती रही किन्तु अस्फोदल पुष्प के स्पर्श-मात्र से कम्पित हो उठी। यद्यपि किसी असावधान चिन्तक को यह बात सन्देह के परे मालूम होगी कि दुःखदायी रोग के कारण बेरेनिस की नैतिक दशा में जो भयानक परिवर्तन हो गया था वह मेरी गहरी एवं व्याधिग्रस्त चिन्तना के प्रयोग के अनेक अवसर उपस्थित करती रही होगी, किन्तु सच पूछो तो ऐसी कोई बात नहीं थी। मेरी दुर्बलता के बीच ऐसे क्षण जरूर आ जाते थे जिनमें उसकी विपदा का विचार कर मुझे वेदना होती थी और उसके सुन्दर एवं मृदुल जीवन के सम्पूर्ण ध्वंस के कारण कभी-कभी मैं उन आश्चर्यकारक साधनों पर तीक्ष्ण विचार भी करता था जिनसे ऐसी आकस्मिक क्रान्ति हो गई थी। किन्तु इस प्रकार के विचारों में मेरे रोग की स्वभावजात विलक्षणताएं नहीं होती थीं। उसके सम्बन्ध में मेरा सोचना-विचारना कुछ वैसा ही होता था जैसा कि वैसी परिस्थितियों में सामान्य मानव का हो सकता था। हां, मेरी अव्यवस्थितचित्तता, अपनी विशेषता के ही अनुरूप, बेरेनिस के शरीर में हुए चमत्कारी, परन्तु कम महत्त्व के, परिवर्तनों तथा उसके परिचित रूप हुई अनोखी एवं भयावह विकृतियों की ओर अधिक आकर्षित होती थी।

यह बात मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि उसके अनुपम सौन्दर्य के उज्ज्वलतम दिनों में मैंने कभी उसे प्यार नहीं किया। मेरे जीवन की विसंगति इतनी विचित्र थी कि मेरे मनोभाव हार्दिक रह ही नहीं गए थे; मेरी वासनाएं-उत्तेजनाएं केवल मानसिक थीं। प्रारम्भिक प्रभात के भूरे-पन में, दोपहर को जंगल की झंझरीदार छायाओं में, रात को अपने पुस्तकालय की नीरवता में वह मेरी आंखों के आगे इठलाती निकल मैंने उसे जीवित तथा सांस लेती हुई बेरेनिस के रूप में नहीं, बल्कि जाती थी। स्वप्न की किसी बेरेनिस के रूप में, इस पृथ्वी के प्राणी के रूप में नहीं उसकी भावसंज्ञा के रूप में देखा था।—ऐसे रूप में नहीं जिसको सराहा जाए, बल्कि ऐसे रूप में जिसका विश्लेषण किया जा सके; उस पदार्थ के रूप में नहीं जिसे प्रेम किया जाए बल्कि उस पदार्थ के रूप में जिसे

अत्यन्त गूढ़ यद्यपि कल्पना का विषय बनाया जा सके। और अब-अब तो मैं उसकी उपस्थिति में कांप उठता था; जब उसे अपनी ओर आते देखता था तब पीला पड़ जाता था। फिर भी उसकी अवनत एवं इकलेपन की स्थिति पर गहरा दुःख अनुभव करते हुए, मैं जानता था कि वह बहुत दिनों से मुझे प्यार करती रही है, और एक बुरे क्षण में मैंने उससे विवाह का प्रस्ताव किया।

अन्ततोगत्वा जब हमारे परिणयोत्सव का समय निकट आ रहा था तब शरत की एक तिपहरी को, जब ऋतुविरुद्ध दिन गरम, शान्त एवं धुंधला था, मैं अपने पुस्तकालय के अन्तःकक्ष में बैठा हुआ था। सोचता था कि मैं अकेला हूं किन्तु आंख उठाई तो देखा, बेरेनिस मेरे सामने खड़ी है।

क्या वह मेरी उत्तेजित कल्पना थी, या वातावरण का धुंधला प्रभाव था, या कमरे की अस्थिर द्वाभा थी, या उसकी मूर्ति के चतुर्दिक झूलते वस्त्र थे जो उसे अप्राकृतिक सीमा तक बृहदाकृति में प्रकट कर रहे थे? मैं कुछ नहीं कह सका। वह एक शब्द भी नहीं बोली और मैं—मैं तो एक अक्षर भी मुंह से निकालने में असमर्थ था ही। एक बर्फानी लहर मेरे सारे शरीर में फैल गई; असहनीय चिन्ता की भावना मुझे पीड़ित कर रही थी; मेरी आत्मा में एक व्यापक उत्सुकता भर गई थी। मैं अपनी कुर्सी के सहारे पड़ गया, कुछ समय के लिए मेरी सांस रुक गई और मैं निश्चल पड़ा रहा। मेरी आंखें उसके शरीर पर अटकी हुई थीं। हाय! वह बिल्कुल सूख गई थी और उसकी आकृति की किसी रेखा पर भी पूर्वप्राणी का कोई चिह्न शेष नहीं रह गया था। अन्त में मेरी जलती हुई दृष्टि उसके मुख पर जा पड़ी।

माथा ऊंचा था, और बहुत पीला तथा प्रशान्त। एक समय के सुनहले केश उस पर अंशतः फैले हुए थे और उसके इस समय काकपक्ष की भांति काले हो रहे घूंघर धंसी कनपटियों तक लटक रहे थे और चेहरे पर छाये विषाद को भंग कर रहे थे। आंखें निर्जीव और प्रकाशहीन थीं; बिना किसी चेष्टा के, अपने-आप, मेरी आंखें उसकी पथराई हुई दृष्टि से हट गईं और मैं उसके पतले, सिकुड़े ओठों को देखने लगा। वे खुल गए और

अनोखे अर्थ से भरी मुस्कान में, परिवर्तित बेरेनिस के दांत धीरे-धीरे मेरी आंखों के सामने प्रकट हो गए। हे ईश्वर! मैंने उन्हें इस रूप में कभी देखा नहीं था, देखकर ही जैसे मैं मर गया।

दरवाज़े के बन्द होने की आवाज़ से मैं चौंक पड़ा। आंखें ऊपर उठाईं तो मालूम हुआ मेरी बहिन कमरे से चली गई है, किन्तु मेरे मस्तिष्क के अव्यवस्थित कक्ष से नहीं गई है और दांतों का सफेद भयानक रंग तो कभी उससे बाहर न किया जा सकेगा। उनके तल पर एक धब्बा नहीं, उनके एनेमेल (वल्क) पर कोई आभा नहीं, उनके विन्यास में कोई रेखा नहीं, उनके सिरों में कोई दांता नहीं। उसकी क्षणिक मुस्कान मेरी स्मृति पर न जाने क्या जड़ गई। उस समय मैंने उन्हें जितनी स्पष्टता से देखा था, इस समय उससे भी अधिक स्पष्टता के साथ देख रहा था। दांत! दांत! वे वे यहां थे, वहां थे, हर जगह थे, साफ दीख रहे थे—लम्बे, पतले, अत्यधिक श्वेत, पास कांपते ओठों-सहित, जैसे प्रथम भयंकर विकास के क्षणों के बीच हों। इसके बाद आ गया मेरे एकोन्माद का ताण्डव और उसके विचित्र एवं अदम्य प्रभाव के विरुद्ध मेरा सारा संघर्ष निष्फल हुआ। बाह्य जगत् के असंख्य पदार्थों में से मेरे विचार के लिए केवल दांत रह गए। उस एक ध्यान में सब वस्तुएं और सब दिलचस्पियां विलीन हो गईं। मानस-चक्षु के सामने केवल वही रह गए और उनका एक मात्र व्यक्तित्व मेरे मनोजीवन का सार-तत्व बन गया। हर प्रकाश में मैं उन्हें ही देखता था; हर प्रवृत्ति में मैं उन्हें ही पाता था। मैं उनकी प्रकृति का सर्वेक्षण करता था, मैं उनकी विचित्रताओं पर विचार करता था, मैं उनकी एकरूपता पर सोचता था, मैं उनकी प्रकृति के परिवर्तन की विवेचना करता था। उनके अन्दर एक संवेदनशील एवं चैतन्ययुक्त शक्ति और ओठों की सहायता के बिना ही अपनी नैतिक अभिव्यक्ति प्रकट करने की क्षमता की कल्पना करके मैं कांप उठा। मैंदम्वाइजली सैले के विषय में कहा जाता है—"que tous ses pas etaient des sentiments" अर्थात् उसके समस्त पग ही मनोभाव थे' बेरेनिस के विषय में और भी अधिक विश्वास के साथ मैं

कहूंगा—"que tous ses dents etaient des id'ees. अर्थात् 'उसके समस्त दांत विचार थे।'

इसी तरह सांझ हो गई, फिर रात आई, ठहरी और चली गई; फिर दिन हुआ और अब दूसरी रात का अंधेरा फैलने लगा था। फिर भी मैं उस एकान्त कमरे में उसी तरह निश्चल बैठा हुआ था; अब भी मैं ध्यान में डूबा हुआ था और अब भी अपनी अत्यन्त ठोस एवं भयावनी विशिष्टता के साथ दांत का इन्द्रजाल मुझे अपने वशीभूत किए हुए था। उसी सपने की-सी हालत में बड़े जोरों के साथ भय एवं निराशाभरी प्रचण्ड आवाज मुझे सुनाई पड़ी। उसके कुछ देर बाद शोक एवं वेदना के क्षीण रोदनों से मिश्रित घबराहट-भरी आवाजें सुनाई पड़ने लगीं। मैं तेजी के साथ अपने स्थान से उठा और पुस्तकालय का एक द्वार खोल दिया। देखता हूं कि उनके अन्तर्कक्ष में एक सेविका, आंखों में आंसू भरे खड़ी हुई है। उसने मुझे बताया कि बेरेनिस अब नहीं है। तड़के ही मृगी के दौरे में वह नीचे गिरी और मर गई, और अब जब रात हो रही है, केरायेदार के लिए कब्र तैयार है और दफन की सब तैयारियां पूरी हो चुकी हैं।

शोकाच्छन्न हृदय के साथ, फिर भी हिचकिचाता हुआ, भीतिपीड़ित मैं उसके शयन-कक्ष में गया। कमरा लम्बा पर बहुत अंधेरा था और उसकी तमाच्छन्न सीमा में कब्र की सामग्रियां जगह-जगह बिखरीं पड़ी थीं। एक नौकर ने मुझे बताया कि ताबूत के चतुर्दिक उधर शय्या पर पर्दे लगा दिए गए हैं। फिर उसने फुसफुसाते हुए मुझे विश्वास दिलाया कि बेरेनिस का समस्त अवशेष उसी ताबूत में है। किसी ने, वह कौन था जिसने मुझसे पूछा—"क्या मैं लाश को देखना न चाहूंगा ?" मैंने किसी के ओंठ हिलते नहीं देखा, फिर भी सवाल किया गया और शब्दों की झंकार अब भी कमरे में तैर रही थी। इन्कार करना असम्भव था; मुझे अपना दम घुटता-सा लगा और मैंने किसी तरह घसीटकर अपने को पलंग तक पहुंचाया धीरे से मैंने काला पर्दा उठा दिया; छोड़ते ही वे मेरे कंधों के पीछे गिर पड़े; मैं जीवितों से अलग हो गया और घिरा हुआ, मृतात्मा से पूर्णतः

जुड़ गया। वातावरण में ही मृत्यु समाई हुई थी। ताबूत की विचित्र गंध से मैं घबरा उठा। मुझे लगा कि लाश से विषैली गंध निकल रही है। मैं चाहे जिस तरह हो, मृत्यु के उस विषाक्त प्रभाव से भाग कर शाश्वत आकाश की मुक्तवायु में सांस लेना चाहता था। किन्तु मुझमें हिलने की भी शक्ति नहीं रह गयी थी—मेरे घुटने टूटे जा रहे थे और मैं उस स्थान पर बंधा हुआ, बिना ढक्कन के ताबूत में लिटाये हुए कठिनाये शरीर की भयावनी लम्बाई को देख रहा था।

हे स्वर्ग के प्रभु ! क्या वह सम्भव था ? कहीं मेरा दिमाग तो खराब नहीं हो गया था, या फिर सचमुच कफन में लिपटे मुर्दे की उंगली हिली थी ? अनिर्वाच्य भीति से जड़ होकर मैंने लाश के चेहरे की ओर आंखें उठाईं। जबड़ों में जो पट्टी बंधी थी, वह न जाने कैसे फटकर गिर पड़ी थी। निष्प्रभ ओंठों पर एक प्रकार की मुस्कराहट थी और उस घिरते हुए अंधकार में एक बार फिर, अपनी स्पष्ट वास्तविकता के साथ, बेरेनिस के श्वेत, प्रदीप्त एवं भयावने दांत चमक उठे। मैं बल खाकर शय्या से कूद पड़ा और बिना एक शब्द कहे, पागल की तरह, तिहरे भय, रहस्य और मृत्यु के उस कमरे से भाग खड़ा हुआ।

एक बार फिर मैंने पुस्तकालय में अपने को बैठा, अकेला बैठा, पाया। लगता था कि मैं किसी परिभ्रमित एवं उत्तेजक स्वप्न से अभी-अभी जग गया हूं। मैं जानता था कि यह अर्द्धरात्रि का समय है और मैं इस बात से भी भलीभांति परिचित था कि सूर्यास्त तक बेरेनिस दफना दी गई है। इस बीच जो समय गुजर गया, उसका कोई निश्चित ज्ञान मुझे नहीं था किन्तु उसकी स्मृति भीति से भरी हुई थी और वह भीति अस्पष्ट होने के कारण और भयानक हो उठी थी; अनिश्चित होने के कारण आतंक और भी भयंकर हो उठा था। मेरे जीवन के रेकर्ड में यह एक भीषण पृष्ठ था, जो धुंधली, बीभत्स एवं अविज्ञेय स्मृतियों से लिखा गया था। मैंने उनका अर्थ बैठाने की चेष्टा की किन्तु वह व्यर्थ हुई। फिर भी

कभी-कभी किसी नारी-कण्ठ की तीव्र एवं वेधक चीख मेरे कानों में गूंज उठती थी। मैंने कोई कृत्य किया था—क्या था वह कृत्य ? कमरे की प्रतिध्वनि उत्तर देती—हां, क्या था वह ?

मेरे पास टेबुल पर एक लैंप जल रहा था; उसके निकट ही आबनूस का एक बक्स रखा था। बक्स की बनावट में कोई खास बात नहीं थी। मैं पहिले भी अनेक बार उसे देख चुका था क्योंकि वह परिवार के चिकित्सक का था। किन्तु वह मेरे टेबुल पर यहां कैसे आया और उसकी ओर देखकर मैं कांप क्यों रहा हूं ? किसी तरह इन बातों का कोई कारण नहीं समझ में आता था। इसी समय एक खुली किताब के पृष्ठों पर मेरी निगाह पड़ी, उसमें एक वाक्य पर निशान लगा हुआ था। ये कवि इब्न जायद के सरल शब्द थे—"दाइसबैत मिही सोदालिस सी सिपल्वरम एमीकाई विजितेरेम वर्शोरस मियाज एलिक्वेंतुलम फोर लेवेतास।' (अर्थात् मेरे दोस्त 'मुझसे कह रहे थे कि यदि मैं अपनी प्रिया की कब्र पर हो आऊं तो मेरी चिन्ताएं कुछ कम हो जाएंगी।) तब क्या बात है कि उसे पढ़ते हुए मेरे सिर के बाल खड़े हो गये थे और मेरे शरीर का रक्त शिराओं में जम गया था ?

पुस्तकालय के द्वार पर एक हलकी थपकी सुनाई पड़ी और मुर्दे के समान पीला हो रहा एक सेवक अंगूठे के बल, चुपके से, अन्दर आया। उसकी आंखें भय से निकली पड़ती थीं, और उसने कांपती हुई अवरुद्ध एवं बहुत धीमी वाणी में अपनी बात कही। क्या कहा उसने ? मुझे कुछ खण्डित वाक्य ही सुनाई पड़े। उसने कहा कि रात्रि की निस्तब्धता को भंग करती एक चीख सुनाई पड़ी थी, जिससे सारा घर एकत्र हो गया और जिधर से आवाज आई थी उस दिशा में खोज की गयी।' इसके बाद उसकी आवाज में तेजी आ गई और उसने बताया कि लोगों ने जाकर देखा 'कब्र खुदी पड़ी है और उसकी छोर पर एक विरूपित लाश है—लाश जो कफन के अन्दर होते हुए भी सांस ले रही है, जिसके हृदय की धड़कन जारी है और जो जीवित है।'

उसने मेरे वस्त्रों की ओर संकेत किया—वे पंकिल थे और उन पर

खून के धब्बे थे। मैं कुछ नहीं बोला। उसने मृदुतापूर्वक दीवार से लगी किसी चीज़ की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया। मैं कुछ क्षण तक उसे देखता रहा, वह फावड़ा था। चीखकर मैं टेबुल की ओर दौड़ा और उसपर पड़ा वह आबनूसी बक्स उठा लिया, परन्तु उसे खोल न सका और कंपन के कारण वह मेरे हाथों से छूट गया, ज़ोर से गिरा और उसके टुकड़े-टुकड़े हो गए तथा उससे निकल कर खनखनाती आवाज़ के साथ, दन्त-सम्बन्धी शल्यक्रिया के औज़ार तथा श्वेत चमकते हुए और भी पदार्थ (दांत) फर्श पर जहां-तहां फैल गए।

लघुकाय फरासीसी बायें हाथ में गलपट्टी क्यों बांधता है ?[1]

मेरे विज़िटिंग कार्ड (जो गुलाबी चिकने कागज़ के हैं) पर जिस भी भद्रजन की इच्छा हो, इन रोचक शब्दों के दर्शन कर सकता है—"सर पैट्रिक ओ' ग्रैण्डीसन, बैरोनेट, ३९ साउथैम्पटन रो, रसेल स्क्वायर, जिला ब्लूम्सबरी।" और यदि आप इस बात की खोज करना चाहते हों कि सारे लन्दन नगर में शिष्टाचार का आदर्श कौन है, या मदिरापान में अग्रणी कौन है, तो वह और कोई नहीं है, इसलिए अपनी नाक सिकोड़ना बन्द कर दीजिए, क्योंकि पिछले छः सप्ताह से मैं एक-एक इंच भद्रव्यक्ति रहा हूं और जबसे मेहनत-मजूरी का काम छोड़ा है और बैरन पद पर पदार्पण किया है,

---

१. इस कहानी की विशेषता बस इतनी ही है कि बैरन पहले बहुत सामान्य मजूर थे, उन्होंने अपनी कथा असंस्कृत ग्रामीण अंग्रेजी लहजे में कही है। जैसे—"And it is really more than the three fut and a bit that there is, innyhow, of the little ould furrener frinchman that lives jist over the way gogling the houl dany at the purty···my own nixt dour neighbor," आजकल इसे यों लिखा जाएगा—"And it is really more than the three feet and a bit that there is, anyhow, of the little old freigner frenchman that lives just over the way, goggling the wholeday at the pretty···my own next-door neighbour." हिन्दी में तो उसका रूप आ नहीं सकता केवल आशय दिया गया है। —अनुवादक

तब से यह पैट्रिक धार्मिक एवं पवित्र सम्राट की तरह जीवन बिता रहा है। आपकी आत्मा के लिए क्या यह मंगलप्रद न होगा कि आप अपने दोनों नयन खोलकर सर पैट्रिक ओ' ग्रैण्डीसन, बैरोनेट का उस समय दर्शन करें जब वह पहन-ओढ़कर हाइडपार्क में सैर के लिए घोड़े पर सवार होता है। जो लम्बा-चौड़ा, सुन्दर शरीर मुझे प्राप्त है, उसी के कारण सब औरतें मुझे प्रेम करने लगती हैं। क्या यह मेरी सुन्दर देह नहीं है जो नाप में छः फुट और तीन इंच बैठती है ? और फिर मेरे अंग-अंग कैसे समानुपात से बने हैं ? पर मजा तो देखिए कि उधर रास्ते पर जो लघुकाय विदेशी फरासीसी रहता है, और तीन फुट से थोड़ा ही ज्यादा होगा, मेरे अगले मकान की पड़ोसिन और मेरी सुपरिचित तथा घनिष्ट मित्र, सुन्दरी विधवा श्रीमती ट्रैकिल (भगवान उसका मंगल करे) पर सारे दिन ताक-झांक किया करता है (बुरा हो उसका)। आप देख रहे हैं न कि वह नटुल्ला मुंह लटकाए हुए है और अपना बायां हाथ एक गलपट्टी में बांधे हुए है। वह गलपट्टी में हाथ क्यों बांधे हुए है, इसी का ठीक कारण बताने जा रहा हूं।

सारे मामले का तथ्य बहुत सीधा-सादा है। पहले ही दिन जब मैं कनाट से लौटकर आ रहा था और विधवा की, जो वातायन से देख रही थी, मुझ सुन्दर-मधुर पर दृष्टि पड़ी, बस सुन्दरी श्रीमती ट्रैकिल का दिल उसके हाथ से निकल गया। आप जानते हैं, मैं तुरन्त इसे समझ गया; जरा भी गलती नहीं हुई; खुदा की कसम, यह बिल्कुल सच्ची बात है। पहले उसने उड़ती निगाहों से मेरी ओर देखा, फिर दोनों आंखें मुझपर गड़ा दीं; फिर एक छोटी स्वर्णिम दूरबीन एक आंख में लगाकर देखती रही। मुझ पर शैतान की मार, यदि इसका यह मतलब नहीं तो क्या है कि आंख जितना कह सकती है, दूरबीन के जरिए, कह रही है—"ओह सर पैट्रिक ओ' ग्रैण्डीसन, बैरोनेट, प्रभात आपको शुभ हो। आप निश्चय ही स्वच्छ भद्र पुरुष हैं, और मैं तथा मेरा सब कुछ, जब भी आज्ञा देंगे, दिन के किसी समय भी आपकी सेवा में निछावर हैं।" और आप मुझसे शिष्टता और नम्रता में बाजी नहीं ले जा सकते, इसलिए मैंने झुककर उसे ऐसा नमस्कार

किया कि आप देखते तो आपका हृदय भग्न हो जाता। और तब मैंने बड़े हावभाव से अपना हैट उतार लिया और दोनों आंखों से उसपर सैन चलाते हुए, मानो उनके माध्यम से कहा—"मिसेज ट्रैकिल, मेरी प्रिये, तुम कैसी सुन्दर एवं मधुर हो, और मैं सर पैट्रिक ओ' ग्रैण्डीसन बैरोनेट अगर तुम्हारी आंखों के एक इशारे पर पसेरियों प्रेम न ढलका दूं तो मुझे दलदल में गिराकर मार डाला जाए।"

बिल्कुल दूसरे ही दिन सुबह की बात है, जब मैं अपने मन में विचार कर रहा था कि क्या यह शिष्ट और उचित होगा कि मैं एक प्रेमपत्र के रूप में विधवा को कुछ लिख भेजूं कि उसी समय मेरा नौकर सुदर्शन कार्ड ले आया और मुझे बताया कि इसपर छपा नाम (क्योंकि मैं बयंहत्या होने के कारण कापर-प्लेट की छपाई नहीं पढ़ पाता) मोशिये, काउण्ट ए-गूज लुकईजी (सरलदर्शन) मेते-दी-दाउन का है और यह सब शैतान की आंत की तरह लम्बा नाम उसी नटुल्ले विदेशी फरासीसी का है जो उधर सड़क पर रहता है।

इसी समय वह नाटा बदमाश खुद आ पहुंचा, झुककर मुझे सलाम किया और कहा कि मैं आपके दर्शन और मिलन का सौभाग्य प्राप्त करने आया हूं। फिर तेजी के साथ देर तक बोलता रहा। उसकी बातों से जरा भी पता न लगा कि अन्त में वह मुझसे क्या कहना चाहता है, किन्तु अन्त में, ढेरों झूठ बोलने के बाद, उसने प्रकट ही तो कर दिया कि वह श्रीमती ट्रैकिल के प्रेम में पागल हो रहा है और मेरी प्रियतमा भी उसके प्रति आसक्त है।

आपकी कसम, यह बात सुनते ही मैं टिड्डे की भांति उन्मत्त हो उठा, किन्तु फिर मुझे याद आ गया कि मैं सर पैट्रिक ओ' ग्रैण्डीसन बैरोनेट हूं और यदि क्रोध नम्रता को दबा लेता है तो यह शिष्टाचार की बात न होगी, इसलिए उस बात पर विशेष ध्यान नहीं दिया; उसे अंधेरे में रखा और उस नटुल्ले के साथ खूब हेलमेल कर लिया। कुछ समय के बाद उसने मुझसे अनुरोध किया कि मैं विधवा औरत के घर तक उसके साथ चलूं,

और वह श्रीमती के साथ मेरा परिचय करा देगा।

तब मैंने अपने मन में कहा—'यह था तुम्हारा मतलब ?' पैट्रिक तुम जीवन में परम सौभाग्यशाली हो। अब हमें जल्द ही मालूम हो जाएगा कि यह तुम हो या वह लघु मोशिये मेते-दी-दाउन है जिसके साथ श्रीमती ट्रैकिल सरापा प्रेम में डूबी हुई हैं।

इसके बाद हम बगल वाले घर में, श्रीमद ट्रैकिल के यहां पहुंचे। साफ-सुथरी सुन्दर जगह थी। फर्श पर सब जगह कार्पेट बिछा था; एक कोने में सारंगी रखी थी और भी न जाने क्या-क्या बाजे थे; दूसरे कोने में बहुत सुन्दर सोफा था और बिलकुल साफ उस सोफे पर प्यारी-प्यारी अप्सरा-सी श्रीमती ट्रैकिल बैठी थीं।

मैंने कहा—"श्रीमती ट्रैकिल; प्रभात आपको मंगलमय हो।" फिर मैंने झुककर उम्दा सलाम झाड़ा है कि देखते तो आप लोगों का दिमाग चक्कर खा जाता।

उस नाटे विदेशी फरासीसी ने कहा—"मिसेज ट्रैकिल, यह महाशय हैं श्रद्धेय सर पैट्रिक ओ' ग्रैण्टीसन, बैरोनेट और इस दुनिया में यह मेरे अत्यन्त घनिष्ठ परिचित एवं मित्र हैं।"

इतना सुनते ही श्रीमती ट्रैकिल सोफा से उठ खड़ी हुई और उन्होंने ऐसे मधुर ढंग से स्वागत किया जैसा कभी और देखा न था। और वह देवी की भांति फिर उस सोफे पर बैठ गईं। तब हिमाकत देखिए कि नटुल्ला मोशिये मेते-दी-दाउन धम से उनकी दाहिनी ओर बैठ गया। हे भगवान्! मैं निराशा से इतना उन्मत्त होगया कि मुझे तो लगा कि मेरी दोनों आंखें उसी जगह मेरे सिर से बाहर निकल पड़ेंगी। फिर भी जरा रुककर मैंने कहा—'मुझी को चुनौती ? तुम रहे वहां मोशिये मेते-दी-दाउन ?' और मैं खल के साथ बराबरी करने के लिए श्रीमती जी की बाईं ओर बैठ गया। और तब मैंने अपनी दोनों आंखों से उसके मुख पर जो सैन मारी है उसे आप देखते तो नाच उठते।

किन्तु नटुल्ले फरासीसी को मेरी तरफ से जरा भी सन्देह नहीं हुआ

और वह तो पागल हो ही रहा था, उसने उस महिला के प्रति अपना प्रेम प्रकट कर ही दिया—"आह तुम ! वाह तुम ! कीचड़ की कमल !"

मैं सोचता हूं—'मोशिये फ्राग (मेढक), यह सब निरर्थक है।' और मैं जितनी ज़ोर और जितनी तेज़ी से सम्भव था, बातें करने लगा जिससे सुन्दरी का ध्यान एक दम से और पूरी तौर पर मेरी ओर आकर्षित हो गया। कनाट की दिलचस्प बातों से मैं उसे बराबर रिझाता रहा। बीच-बीच में उसके मुख के एक कोने से दूसरे कोने तक मीठी मुस्कान फैल जाती थी; उसकी मुस्कानों ने मुझमें शूकर-जैसा साहस भर दिया और मैंने बड़ीही नज़ाकत के साथ उसकी छोटी उंगली का छोर पकड़ लिया और ऐसा करते हुए बराबर उसपर अपने नयन गड़ाये रहा।

और उस प्यारी देवी की चतुराई तो देखिए कि ज्योंही उसने देखा कि मैं उसका हाथ दबाने के फेर में हूं, तो एक क्षण में उसे उठाकर पीठ की ओर कर लिया, मानो कह रही हो—'अब, सर पैट्रिक ओ' ग्रेण्डीसन, आपके लिए ज्यादा अच्छा सुयोग है क्योंकि यह अच्छा और शिष्टातापूर्ण नहीं कि लघुकाय विदेशी फरासीसी मोंश्ये मेते-दी-दाउन की आंखों के सामने आप मेरा हाथ दबायें।'

यह देखते ही मैंने एक बड़ी सैन मारी, मानो उसके द्वारा प्रकट किया—'बस सर पैट्रिक ही इन चालों को भांप सकते हैं।' फिर मैं बड़ी चतुराई से अपना दाहिना हाथ सोफे और सुन्दरी की पीठ के बीच ले गया, और वहां पाया कि एक छोटा सुन्दर हाथ प्रतीक्षारत है, मानो कह रहा हो—'ओ सर पैट्रिक ओ' ग्रेण्डीसन, बैरोनेट, आज का प्रभात आपके लिए शुभ हो।' और मैंने गोया शुरूआत करने के तौर पर, एक बड़ी ही हलकी चुटकी उनके हाथों में भरी, और कैसी मृदुल और नाज़ुक थी वह चुटकी जो उन्होंने बदले में मेरे हाथ में काटी। मैंने मन में सोचा—'खून और बिजली ! सर पैट्रिक, अपनी मां के बेटे, विश्वास रखो, एक मात्र तुम्हीं हो उसके लिए सबसे सुन्दर, सबसे भाग्यशाली।' और बस, मैंने बड़े ज़ोर से उसका हाथ दबाया उसने भी बदले में वैसा ही किया। किन्तु उसी समय मोंश्ये मेते-दी-दाउन

ने ऐसा आचरण किया कि आप देखते तो हंसते-हंसते दोहरे हो जाते। उसने सुन्दरी के प्रति जो हाव-भाव, बनावटी हंसी और खुशामद शुरू की वैसी धरती पर कभी देखी नहीं गई। शैतान मुझे जला दे यदि इन्हीं आंखों से मैंने उसे बेचारी की ओर आंख मारते न देखा हो। बस, मैं किलकैनी बिल्ले की भांति पागल हो उठा।

मैंने सदा की भांति नम्रता के साथ कहा—"मोश्ये मेते-दी-दाउन, यह अच्छी बात नहीं है, और आपके लिए तो इस महिला के प्रति ऐसा हाव-भाव दिखलाना बिल्कुल शोभा नहीं देता।" और बस, मैंने उसके हाथ में फिर एक चुटकी दी—ऐसी जो कह रही हो—मेरी प्राणप्रिये, यह सर पैट्रिक ही है जो तुम्हारी हिफाजत कर सकते हैं।' और उसके जवाब में पीछे की ओर मेरे हाथ में चुटकी काटकर मानो उसने कहा—आप ठीक कहते हैं सर पैट्रिक ! आप जैसे सदाशय, स्वच्छ पुरुष के लिए यह उचित है। यह ईश्वरीय सत्य है।' इसके साथ उसने मुझपर अपने दोनों सुन्दर नयन इस तरह गड़ा दिए कि मुझे लगा—वे उसके माथे से बिल्कुल बाहर निकल आएंगे। पहले उसने मोश्ये फाग (मेढ़क) की ओर पागल बिल्ली की तरह देखा; फिर मुझे देख मुस्कराने लगी।

उस बदमाश ने कहा—"वाह रे पागल ! वाह रे रोगी !" और अपने दोनों कन्धे इस तरह ऊपर उठाए कि बस उसके सिर की चोटी भर जरा-जरा सी दिखाई देती थी। फिर उसने उन्हें गिरा दिया। उसी क्षण से उसके प्रति मुझे धीरज नहीं रह गया।

विश्वास करो, मेरी प्रिय, निश्चय ही यह सर पैट्रिक यानी मैं ही था जो उस समय विवेक छोड़कर उन्मत्त हो गया, इसलिए और भी कि वह रमणी की ओर बराबर आंख मारता जा रहा था, और उधर रमणी बराबर मेरे हाथ दबाती जा रही थी, मानो कह रही हो—हां, सर पैट्रिक, उसे एक घिस्सा और !' और मैं दांत कटकटाता हुआ उस बदमाश से बोल उठा "ओ सुअर के बच्चे ! अबे गंदे मेढ़क !" और जानते हो, उसपर उस महिला ने क्या किया ? वह सोफे से ऐसी उछली जैसे किसी ने उसे बींध दिया

और दरवाजे से बाहर निकल भागी। उधर मैंने अपना सिर घुमाया और मेरी दोनों आंखें बड़े आश्चर्य और हैरानी के साथ उसका अनुसरण करने लगीं। आप जानते हैं कि मेरी हैरानी का कारण था। क्योंकि मैं जानता था कि उसका हाथ जो मेरे हाथ में है, वह सीढ़ियों के नीचे कैसे जा सकती है जब तक कि मैं उसे छोड़ न दूं ? मैं कहता हूं—

"तुम जो दुनिया बना रही थी, उसमें यह थोड़ी-सी भूल क्यों करने पर तुली हो ? मेरी प्यारी, लौट आओ, मैं तुम्हारा हाथ लौटा दूंगा।" किन्तु वह बन्दूक की गोली की तरह सीढ़ियों से उतर भागी। अब मैंने नटुल्ले विदेशी फरासीसी की ओर सिर घुमाया। या खुदा ! यह उस सुकुमारी का मृदु हाथ नहीं था जिसे मैं पकड़े हुए था—तब क्या—तब, वह हाथ नहीं था, बस।

शायद वह मैं नहीं था जो हंसते-हंसते उस नाटे आदमी को देखकर मरा जा रहा था। उस आदमी की सूरत देखने के काबिल थी जिसे अब मालूम हुआ कि वह अब तक रमणी का नहीं, सर पैट्रिक ओ' ग्रैण्डीसन का हाथ पकड़े हुए था। ऐसा लम्बा मुंह उसने कभी न बनाया होगा। जहां तक सर पैट्रिक ओ' ग्रैण्डीसन बैरोनेट की बात है, उनके स्वभाव में ही नहीं है कि ऐसी छोटी भूल के लिए परेशान हों। हां, आप कह सकते हैं—क्योंकि यह ईश्वरीय सत्य है—मैंने तब तक उसका हाथ नहीं छोड़ा, जब तक उसे एक बार ऐसी मरोड़ नहीं दी कि चटनी बन जाए। और यह भी तब जब महिला के नौकरों ने हम दोनों को लात मार कर सीढ़ियों के नीचे धकेल दिया।

और यही कारण है कि फरासीसी के बायें हाथ में गलपट्टी बंधी हुई है।

स्वप्नदर्शी

अभागे और रहस्यमय मानव ! अपनी ही कल्पना के प्रकाश मे विस्मित और अपने ही यौवन की ज्वालाओं में पतित ! मैं कल्पना में तुम्हें आज फिर देख रहा हूं, शीत और छाया के अन्तर्देश में जिस रूप में तुम आज हो उस रूप में नहीं, वरं उस रूप में जिसमें तुम्हें होना चाहिए—उस धुंधले स्वप्नों के नगर में, तुम्हारे अपने वेनिस में, भव्य चिन्तन में जीवन को लुटाते हुए—उसी वेनिस में जो समुद्र का प्रियतम स्वर्ग है, और जिसके गर्वोन्नत प्रासादों के दीर्घ वातायन गम्भीर एवं तीक्ष्ण अर्थों के साथ उसके मौन जल के रहस्यों की ओर देख रहे हैं। हां ! मैं फिर कहता हूं—जैसा तुम्हें होना चाहिए। निश्चय ही इस जगत् के अतिरिक्त और भी जगत् हैं; जनसमूहों के विचारों के अतिरिक्त और भी विचार हैं; कुतर्की की कल्पनाओं के अतिरिक्त और भी कल्पनाएं हैं। तब तुम्हारे आचरण पर कौन उंगली उठाएगा ? अपने स्वप्नदर्शी क्षणों के लिए कौन तुम पर दोषारोप करेगा ? और जो व्यपार तुम्हारी शाश्वत ऊर्जाओं की धारा-तुल्य थे उन्हें जीवन नष्ट करना कहकर कौन निन्दा करेगा ?

उसी वेनिस में पोंती दी सास्पीरी नामक स्थान पर आच्छादित तोरणों के नीचे, तीसरी या चौथी बार मेरी उस आदमी से भेंट हुई थी जिसकी कहानी मैं कह रहा हूं। जिन परिस्थितियों में वह मुलाकात हुई थी उनकी धुंधली-सी याद भर मुझे है। फिर भी वह गम्भीर निशीथ, वह आहों का पुल, स्त्री का वह सौन्दर्य और संकरी नहर पर इधर-उधर चलता हुआ रोमांस का दैत्य मुझे याद है; भला उन्हें मैं कैसे भूल सकता हूं ?

बड़ी अंधेरी रात थी। चौक के घण्टाघर की महदाकृति घड़ी इतालवी

संध्या का पांचवां घण्टा बजा चुकी थी। कम्पेनाइल-चौक नीरव और जन-शून्य हो चुका था और ड्यूक के पुराने महल की बत्तियां तेजी से बुझती जा रही थीं। मैं महती नहर के रास्ते चौक बाजार से घर लौट रहा था किन्तु ज्योंही मेरी गन्दोला (डोंगी) सेन मार्को नहर के उद्गम के सामने पहुंची, सहसा निर्जन प्रान्त से रात में किसी नारी-कण्ठ से निकली आवाज़ गूंज उठी—एक उन्मत्त, प्रकम्पित, लम्बी चीख। आवाज़ से घबड़ाकर मैं खड़ा हो गया; उधर नाविक की एक ही पतवार उसके हाथ से छूट गई और घोर अन्धकार में न जाने किधर बह गई—यहां तक कि उसे फिर पाने की आशा ही जाती रही। अब हमें केवल उस धारा का पथ-प्रदर्शन प्राप्त था जो बड़े स्रोत से छोटी नहर में आ रही थी। अब हमारी नौका किसी बड़े कृष्णपंखयुक्त गिद्ध की भांति धीरे-धीरे 'आहों के पुल' की ओर बढ़ती जा रही थी। थोड़ी ही दूर बढ़ी होगी कि ड्यूक के महल की खिड़कियों एवं सीढ़ियों से छन कर आने वाले हजार-हजार प्रदीपों के प्रकाश ने उस गहरे अन्धकार को नीलाभ अतिप्राकृतिक दिन में बदल दिया।

उस ऊंची अट्टालिका की किसी ऊपर की खिड़की से एक शिशु अपनी ही मां की गोद से नीचे गहरी एवं धुंधली नहर में गिर पड़ा था। शांत जल ने बड़ी उदारतापूर्वक अपने शिकार को अपनी गोद में ले लिया। गन्दोला तो वहां बस मेरी ही एक थी, किन्तु बहुत से साहसी तैराक धारा में उतर चुके थे और सतह पर उस खजाने की खोज कर रहे थे जो जलगर्भ में ही पाया जा सकता था। महल के प्रवेश-द्वार के पास, जल से कुछ सीढ़ियों के ऊपर, चौड़े काले मर्मर ध्वज-प्रस्तर पर, एक मूर्ति खड़ी थी जिसे उस समय देखनेवाला कोई भूल नहीं सकता। यह थी रानी एफ्रोदाइत—समस्त वेनिस की पूजा की वस्तु, मुदितों में मुदित, जहां सभी सुन्दरियां ही थीं, उन सब में भी सर्वसुन्दरी, और इतने पर भी बूढ़े और रहस्यमय मेण्टोनी की पत्नी,—उस सुन्दर शिशु की मां, जो उसका प्रथम और एकमात्र शिशु था; वही इस समय धुंधले जल के गर्भ में चला गया था और शायद क्षुब्ध हृदय से उसकी मधुर थपकियों की याद करता हुआ उसे पुकारने में अपने नन्हें जीवन

को खो रहा था।

वह अकेली खड़ी थी। उसके नन्हें, अनावृत, रजत्पद उसके नीचे के मर्मर प्रस्तर के कृष्णदर्पण में चमक रहे थे। बालरूप के लिए गुंथी हुई केशराशि रात के लिए अभी आधी ही खुल पाई थी, और उसके सिर के चतुर्दिक लिपटे गुच्छों में हीरे दमदमा रहे थे। वह अपने नाजुक शरीर पर सिर्फ एक तुषारधवल अत्यन्त महीन वस्त्र लपेटे हुए थी, किन्तु मध्यग्रीष्मीय एवं मध्यरात्रिक वायु तप्त, खिन्न एवं स्थिर थी; उसमें कोई गति नहीं थी और मूर्ति की भांति खड़ी वह स्त्री भी बिल्कुल निष्कम्प थी,—यहां तक कि वाष्प-जैसे पतले उसके वस्त्रों में भी किसी प्रकार की गति नहीं दिखाई पड़ती थी। इतने पर भी बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि उसकी बड़ी-बड़ी दीप्त आंखें उस जलगर्भ पर नहीं लगी हुई थीं जिसमें उसकी उज्जवलतम आशा डूब गई थी, बल्कि वे बिल्कुल दूसरी ही दिशा में स्थिर थीं। मैं समझता हूं कि सम्पूर्ण वेनिस में पुरातन जनतन्त्र (ओल्ड रिपब्लिक)का कारागार ही सबसे शानदार इमारत है। पर वह औरत उसपर क्यों टकटकी लगाए हुए है जब उसी के चरणों के नीचे उसका एक मात्र शिशु दम तोड़ रहा है? तब उसके कक्ष के वातायन के सामने दूर पर अन्धकार से घिरी लताओं से आच्छादित प्रशान्त छज्जोंवाली उस इमारत की ओर वह क्या देख रही है जिसे उसने विस्मयपूर्वक पहले हजारों बार देखा होगा? वाहियात! कौन नहीं जानता कि ऐसी दुर्घटना के समय आंखें टूटे दर्पण की भांति, अपने शोक के प्रतिबिम्बों को गुणित कर लेती हैं और जो पदार्थ निकट है वही उन्हें असंख्य दूरस्थ स्थानों में दिखाई पड़ता है।

रानी से कई सीढ़ियों के ऊपर और जलद्वार के गुम्बद के भीतर, अपनी पूरी पोशाक में मेण्टोनी की पशुमानवी मूर्ति खड़ी थी। बीच-बीच में वह अन्यमनस्क भाव से गिटार को ध्वनित कर देता था और मृत्यु-जड़ की भांति शिशु की खोज के लिए आदेश देता जाता था। मैं हैरान और विस्मित-सा पहली बार चीख सुनते ही जहां खड़ा हो गया था वहीं खड़ा रहा: जैसी मेरी हिलने-डुलने की शक्ति ही खो गई थी। उद्विग्न जन-मण्डली को मैं

निश्चय ही एक अपशकुन की भांति दीख पड़ता हूंगा, क्योंकि उस मृत्यु-यात्रापन्न गन्दोला पर मैं अपने निष्प्रभ मुख एवं जड़ अप्रसरणशील अंगों को लिए बहा जा रहा था।

सब प्रयत्न व्यर्थ हुए। खोज में लगे अनेक साहसी व्यक्ति श्रम से चूर होकर सुस्ताने और शोक प्रकट करने लगे। अब शिशु के लिए कोई आशा नहीं दिखाई पड़ती थी। किन्तु पुरातन प्रजातान्त्रिक कारागार के उसी रानी के वातायन के सामनेवाले तिमिरगर्भ में समाये एक भाग से, जिसका संकेत ऊपर किया जा चुका है, लबादे में लिपटी एक मूर्ति निकली, प्रकाश में आई, फिर कगार पर एक मिनट रुकी, फिर सिर के बल नहर में कूद पड़ी। क्षणभर में ही वह जीवित एवं श्वास लेते हुए शिशु को लिए हुए रानी के पास आ खड़ा हुआ। उसका लबादा पानी से भीगकर भारी हो जाने के कारण खुलकर कई तहों में उसके पैरों के पास गिर पड़ा था। आश्चर्यचकित दर्शकों को एक तरुण व्यक्ति के सुन्दर शरीर के दर्शन हुए। उन्हें इसलिए भी आश्चर्य हुआ कि यह वही आदमी था जिसके नाम से युरोप का अधिकांश भाग ध्वनित हो रहा था।

उद्धारकर्ता एक शब्द भी नहीं बोला। किन्तु रानी ! वह अपना बच्चा पाएगी, वह उसे हृदय से लगाएगी, वह नन्हें को लिपटा लेगी और हाथ फेर कर दुलरायेगी। पर हाय ! दूसरे ही मनुष्य की भुजाओं ने अजनबी से उसे ले लिया; दूसरे की भुजाएं उसे ले गईं, दूर महल के अन्दर ! और रानी ! उसके ओंठ, सुन्दर ओंठ कांप रहे हैं: उसके नयनों में आंसू एकत्र हो रहे हैं—इन नयनों में जो स्वयं मृदुल, लगभग द्रव-तरल—हैं। हां ! उन नयनों में आंसू भरते जा रहे हैं, और देखो, पूरी स्त्री और उसकी आत्मा स्पन्दित है, मूर्ति जीवित हो उठी है, मर्मर पत्थर की विवर्णता, मर्मरवक्ष की स्फीति, मर्मर पदों की पावनता अकस्मात् एक अशास्य अरुणिमा के ज्वार में डूब गई है। उसकी नाजुक देह में एक क्षीण कम्पन दिखाई पड़ रहा है, जैसे घास के बीच सिर उठाए हुए सुन्दर रजत् कमलिनियां समीर की थपकी से हिलती हैं। महिला के मुख पर लज्जा की अरुणिमा क्यों छा गई

है ? इस सवाल का कोई जवाब नहीं है—सिवाय इसके कि बहुत जल्दी में और मातृहृदय के आतंक के कारण वह अपने निजी कक्ष को छोड़ पांवों में स्लिपर पहिने बिना ही चली आई है और अपने वेनेशियन कन्धों पर कोई ओढ़नी डालना भी भूल गई है। उसकी इस लज्जारुणिमा का, बेकल एवं याचना करते हुए नयनों की उस दृष्टि का, उन फूलते सीने की असाधारण बाढ़ का, कम्पित हाथों के उस आकुंचनमय दबाव का—उस हाथ के जो मेण्टोनी के महल की ओर जाते ही संयोगवश अजनबी के हाथ पर गिर गया है—और क्या सम्भवित कारण हो सकता है ? अजनबी से विदा लेते हुए महिला ने जल्दी-जल्दी जो अर्थहीन शब्द बहुत ही धीरे से कहे उसका ही क्या कारण हो सकता है ? उसने यह कहा या फिर जल की कल-कल ध्वनि ने मुझे धोखा दिया, हां—"तुमने विजय पाई है। तुमने विजय पाई है। सूर्योदय के घण्टे भर बाद हम मिलेंगे। ख्याल रखना।"

कोलाहल शान्त हो चुका था, महल की बत्तियां बुझ गई थीं, और अजनबी, जिसे मैंने पहिचान लिया था, वहीं अकेले ध्वजदण्ड के स्थान पर खड़ा था। वह अकल्पनीय उत्तेजना से कांप उठा और उसने किसी गन्दोला की खोज में आंखें इधर-उधर घुमाई। मैंने अपनी गन्दोला उसकी सेवा में अर्पित कर दी, और उसने उसे स्वीकार कर लिया। जल-द्वार पर एक डांड खरीदने के बाद हम दोनों उसके घर की ओर चल पड़े। बहुत शीघ्र उसने अपने मन पर नियंत्रण स्थापित कर लिया और बड़े प्रेम एवं मैत्रीभाव से हमारे किंचित् पूर्वपरिचित होने का भी उल्लेख किया।

कुछ ऐसे विषय हैं जिनका सूक्ष्म वर्णन करने में मुझे विशेष प्रसन्नता होती है। वह अजनबी—दुनिया के लिए वह अब भी अजनबी था, इसलिए मैं इसी नाम से उसे पुकारूंगा—भी ऐसा ही एक विषय है। ऊंचाई में वह मझोले कद से कुछ कम ही होगा: यद्यपि ऐसे भी क्षण आते थे जब उसकी देहयष्टि सचमुच फैल जाती थी और हमारी इस बात को झूठा सिद्ध कर देती थी। उसके शरीर का नाजुक सन्तुलन एवं समानुपात खतरे की घड़ियों में प्रदर्शित उस सहज भीम-बल की अपेक्षा, जिसके लिए

वह प्रसिद्ध था, उस कार्य के अधिक उपयुक्त प्रतीत होता था जो कुछ देर पूर्व उसने 'आहों के पुल' के पास प्रदर्शित किया था। देवोपम मुख और चिबुक, अनोखे चंचल, लम्बे एवं आर्द्र नयनों—जिसकी छाया ईषत् कपिशवर्ण से चमकीले काले वर्ण तक बदलती रहती थी—तथा चमकीले घने काले बालों—जिसके बीच हाथीदांत-सा चमकता मस्तक रह-रहकर दिखाई पड़ जाता था—के साथ उसकी मुखाकृति और उसकी शिरोरचना कुछ ऐसी थी कि उससे अधिक नियमित और सन्तुलित मैंने सम्राट कमोडस के संगमर्मर की मूर्तियों के अतिरिक्त संसार में कहीं नहीं देखी। साथ ही उसका चेहरा-मोहरा ऐसा भी था, जिसे प्रत्येक आदमी ने अपने जीवन की किसी अवधि में एक बार देखा होगा और जो उसे फिर दोबारा देखने को न मिला होगा। उसमें कोई ऐसी विचित्र, ऐसी स्थिर सर्वप्रमुख अभिव्यक्ति नहीं थी जो स्मृति में गड़ जाती है; वह ऐसा चेहरा था जिसे देखते हैं और भूल जाते हैं किन्तु जिसे भूलकर भी उसे याद करने की अस्पष्ट और कभी समाप्त न होनेवाली अभिलाषा बनी रहती है। ऐसी बात नहीं कि कभी उस चेहरे के दर्पण में कोई तीव्र गतिमान कामना प्रतिबिम्बित होने से रह जाती हो, बात इतनी ही है कि वह दर्पण की भांति ही, कामना के विदा हो जाने के बाद, उसका कोई चिह्न अपने अन्दर सुरक्षित नहीं रखता था।

उस घटना की रात, जब हम उसे उसके घर छोड़कर विदा हो रहे थे, तो उसने कुछ इस तरह दूसरे दिन बड़े तड़के मुझे मिलने के लिए कहा कि मुझे लगा, कोई बहुत ज़रूरी काम होगा। इसलिए दूसरे दिन सूर्योदय होते ही मैं उसकी कोठी पर पहुंच गया—कोठी जो उदास किन्तु छायाचित्रात्मक महिमामयी इमारतों का विशाल पुंज थी। ये इमारतें रियाल्तो के निकट महती नहर (ग्रैण्ड केनाल) के ऊपर ही सिर उठाए खड़ी हुई थीं। सेवक ने मुझे चौड़ी घुमावदार मोज़ैक की सीढ़ियों से गुज़रते हुए ऐसे कक्ष में पहुंचा दिया जिसके द्वार खुलते ही ऐसी अनुपम द्युति मुझपर फट पड़ी कि मैं उस चाकचिक्य से अभिभूत एवं अस्वस्थ-सा हो गया।

मैं जानता था कि मेरा वह परिचित व्यक्ति धनवान है। उसके वैभव के सम्बन्ध में जो रिपोर्ट थी उसे मैं अतिशयोक्ति कहता था, किन्तु इस समय मेरे चतुर्दिक जो राजकीय वैभव जगमग-जगमग कर रहा था, उसे देखकर मुझे विश्वास ही नहीं होता था कि यूरोप के किसी भी नागरिक के पास इतनी सम्पदा हो सकती है।

यद्यपि उस समय सूर्योदय हो चुका था किन्तु कमरा अब भी दीप्त प्रदीपों से प्रकाशित था। जैसी परिस्थिति थी उसमें, और अपने मित्र के चेहरे पर थकान के लक्षणों से, मैंने अनुमान किया कि वह सारी रात सोया नहीं है। कमरे के तक्षण एवं सजावट का हेतु दर्शक को चमत्कृत एवं विस्मित कर देना जान पड़ता था। उसमें व्यवस्था तथा जातीयता की कोई विशेषता नहीं थी। आंख पदार्थ-पदार्थ को देखती फिरती थी परन्तु किसी पर ठहरती नहीं थी—वहां न तो यूनानी चित्रकारों के अलंकृत चित्र थे, न सर्वोत्तम इतालवी युग की मूर्तियां थीं, और न अकृताभ्यास (स्वयंस्फूर्त) मिश्र की विराट नक्काशी थी। कमरे के हर भाग में कीमती पर्दे पड़े थे जो मन्द करुण संगीत के स्पन्दनों से हिल रहे थे। बड़ी-बड़ी धूपदानियों एवं सुगन्धपात्रों से परस्पर-विपरीत सुगन्ध निकल रही थी जिससे चेतना बोझिल हो उठती थी। गुलाबी रंग के एक ही कांच की चौखटवाली खिड़कियों से सूर्य की किरणें छनकर सर्वत्र फैल रही थीं। कार्निसों से जो पर्दे पिघली हुई चांदी के प्रपातों-सदृश लटक रहे थे, प्राकृतिक प्रकाश की यहां-वहां झांकती किरणें उनसे टकराकर सहस्र-सहस्र प्रतिबिम्बों में बिखर जाती थीं और फिर अन्त में कृत्रिम प्रकाश में घुलकर स्वर्ण-निर्मित, द्रव-सी दीखती मूल्यवान कालीनों पर शिथिल पड़ जाती थीं। यहां प्रतिभापूर्ण हाथों की चतुराई दिखाई पड़ती थी। हमारे सामने चारों ओर सौन्दर्य विशृंखल रूप में बिखरा पड़ा था। एक स्वप्निल एवं बेमेल गौरव की भावना ने मुझे पूर्णतः वशीभूत कर लिया था और मैं द्वार के बीच अवाक् खड़ा था।

'हा ! हा ! हा !—हा ! हा ! हा !'—गृहस्वामी ने अट्टहास किया

और मुझे एक कुर्सी पर बैठने का संकेत करते हुए स्वयं आरामकुर्सी पर फैलकर बैठ गया। यह देखकर कि ऐसे अनोखे स्वागत के औचित्य के प्रति मैं तुरन्त अपने मन का सामंजस्य नहीं कर पाया हूं, उसने कहा—"मैं देख रहा हूं कि आप मेरे कक्ष को, मेरी मूर्तियों को, मेरे चित्रों को, तक्षणकला की मेरी मौलिक धारणा को देखकर चकित हैं और चाकचिक्य एवं महत्ता में डूब-से गए हैं। मेरे प्यारे भाई, मुझे क्षमा कीजिए (यहां उसकी आवाज़ बिल्कुल मृदुल हो गई), मेरे अनुदार हास्य के लिए मुझे क्षमा कर दीजिए। आप हैरत में कुछ ऐसे दिखाई ही पड़े थे। कुछ बातें ऐसी विकृत लगती हैं कि आदमी को हंसी आ ही जाती है; न आए तो वह मर जाएगा। हंसते हुए मरना सब भव्य मृत्युओं में सर्वोत्तम है। सर टामस मूर—सर टामस मूर बड़े ही भले आदमी थे। आपको याद होगा कि वह हंसते हुए ही मरे थे। रैवीशियस टेक्सटर ने अपने ग्रन्थ 'असंगतियां' (ऐब्सर्डिटीज़) में ऐसे व्यक्तियों की लम्बी सूची दी है जिनका ऐसा ही भव्य अन्त हुआ।" फिर कुछ विचारमग्न-सा होते हुए कहता गया—"क्या आप जानते हैं कि स्पार्टा (जो अब पैलियोछोरी हो गया है) में, किले की पश्चिम ओर, कठिनाई से दिखाई पड़नेवाले जो ध्वंसावशेष फैले हुए हैं उनमें अब भी एक स्तम्भ पर 'हास्यवेदी' अक्षर खुदे हुए हैं। स्पार्टा में सहस्रों देवताओं के सहस्रों मन्दिर एवं पूजास्थान थे। किन्तु कैसे आश्चर्य की बात है कि जब सब मिट गए हैं तब केवल 'हास्य की वेदी' रह गई है। किन्तु वर्तमान सन्दर्भ में (अपनी आवाज़ और ढंग में अनोखा परिवर्तन लाते हुए उसने कहा) मुझे आपकी कीमत पर हंसने का कोई अधिकार नहीं। निश्चय ही आप विस्मित हो रहे होंगे। मेरे इस लघुकक्ष-जैसी श्रेष्ठ कोई भी चीज़ यूरोप नहीं पैदा कर सकता। मेरी और कोठियां इस श्रेणी की नहीं हैं—वे फैशनेबुल नीरसता की प्रतिमूर्ति भर हैं। पर यह फैशन से कुछ ऊंची है, है न ? फिर भी मैंने इसे सांसारिक लगाव से दूर रखा है। एक अपवाद के साथ, आप ही एक मात्र व्यक्ति हैं जिसने इस राजकीय क्षेत्र के रहस्य में प्रवेश किया है।"

मैंने सिर झुकाकर अपनी कृतज्ञता प्रकट की, क्योंकि वहां के वैभव, सुगन्ध, संगीत तथा वक्ता की सनकभरी वाणी एवं आचरण ने मुझे ऐसा बेबस कर दिया था कि शब्दों में मैं अपनी प्रशंसा व्यक्त नहीं कर पाया।

फिर वह खड़ा हो गया और इधर-उधर चहलकदमी करने के बाद मेरे कंधे पर झुककर कहा—"यहां यूनानियों से लेकर सीमाबू और सीमाबू से लेकर वर्तमान काल तक के चित्र हैं। इनमें बहुत से विशेषज्ञों की राय की परवाह न करते हुए भी चुने गए हैं। फिर भी वे ऐसे कक्ष के लिए शोभाशाली अलंकरण हैं। उधर अज्ञात पर महान चित्रकारों की श्रेष्ठ कृतियां हैं, और इधर ऐसे लोगों की अपूर्ण—असमाप्त—डिजाइनें हैं जो अपने समय में निश्चय ही श्रेष्ठ रहे होंगे, किन्तु जिनके नाम के विषय में चित्रकला अकादमियों की सूक्ष्म दृष्टि मौन रह गई है।" फिर अकस्मात् घूमकर कहा—"आप इस चित्र 'मैंदोना देला पाइता' के विषय में क्या ख्याल करते हैं?"

मैं उस चित्र के सौंदर्य को देर से देख रहा था। इसलिए मैंने अपने स्वभाव की समस्त स्फूर्ति के साथ कहा—"यह तो गुइदो के हाथ से ही सम्भव है। निश्चय ही यह गुइदो के हाथ की बनी है। आपको यह कैसे मिल गई? निश्चय ही यह नारी चित्र में उतनी ही सुन्दर है जितनी वीनस (रतिदेवी) मूर्त्ति में है।"

कुछ सोचते हुए वह बोला—"हां! वीनस? सुन्दरी वीनस? मेदिसाई की वीनस? वह सुवर्णकेशी? वाम भुजा का कुछ अंग और सम्पूर्ण दक्षिण भुजा फिर से बनाई हुई है। इसका समस्त प्रभाव दक्षिण भुजा की हावभावमयी मुद्रा में निहित है। वह अपोलो भी प्रतिकृति है—'कापी', है। जैसा अन्धमूर्ख मैं हूं, मैं अपोलो की शेखीभरी स्फूर्ति को ग्रहण करने में असमर्थ हूं। आप मुझपर तरस खाएंगे किन्तु मैं एन्तीनुअस को उसपर तर्जीह दिए बिना नहीं रह सकता। शायद सुकरात ने ही कहा था कि मूर्तिकला को स्वयं अपनी मूर्त्ति मर्मरप्रस्तर-खण्ड में प्राप्त हुई।" (इतालवी महाकवि) माइकेल एंजेलो ने अपनी निम्नलिखित कविता में कोई

मौलिक बात नहीं कही थी—

"Non ha l'ottimo artista alcum concetto
Che un marmo solo in se non circunscriva."

अर्थात् "जो कुछ संगमर्मर अपने में छिपाए हुए नहीं है उसकी कल्पना कोई अच्छा शिल्पी नहीं कर सकता।"

कहा जाता रहा है और कहा जाना भी चाहिए कि सच्चे भद्रजन के आचरण में हमें सदा ही सामान्य असंस्कृत लोगों के ढंग से अन्तर का अनुभव करते हैं, किन्तु बिल्कुल ठीक-ठीक हम नहीं जानते होते कि वह अन्तर किस बात में है। उस प्रभात में मैंने अनुभव किया कि यह बात मेरे दोस्त के बाहरी रूप-रंग पर तो लागू होती ही है किन्तु उससे भी अधिक उसके नैतिक स्वभाव एवं प्रकृति पर लागू होती है। जिस विलक्षणता के कारण मैं उसे सब मानवों से अलग स्थान देता हूं उसकी इससे अच्छी परिभाषा करने में असमर्थ हूं कि उसे एक ऐसे गहरे एवं निरन्तर चिन्तन का अभ्यास कह लूं जो उसके छोटे से छोटे कामों में भी व्याप्त है और जो उसके प्रसन्नता के क्षणों के बीच भी जबर्दस्ती घुस आता है तथा हास्य के कौंधों के बीच टपक पड़ता है।

किन्तु यह सब होते हुए भी मैंने बार-बार लक्ष्य किया कि शीघ्रता के साथ कभी उत्फुल्ल और कभी गम्भीर हो जानेवाले उसके ढंग में एक प्रकार का उद्वेग है, उसकी वाणी एवं कार्य में घबराहट की मात्रा है, एक अशान्त उत्तेजना है। मुझे इसका कुछ कारण समझ में नहीं आ रहा था, कभी-कभी तो मुझे भय होने लगता था। कभी-कभी वह एक वाक्य शुरू करता और बीच में ही भूल जाता कि वह क्या कह रहा था, और बड़े ध्यान से कुछ सुनने लगता—जैसे प्रतिक्षण किसी आगन्तुक के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा हो या उन ध्वनियों को सुनने में लगा हो जिनका अस्तित्व केवल उसकी कल्पना के अन्दर है।

एक बार जब वह ऐसे ही मनोराज्य में विचरण कर रहा था, मैंने अपने पास कुर्सी पर पड़ी कवि तथा विद्वान राजनीतिज्ञ की सुन्दर दुःखा-

न्तिका 'अफियो' (प्रथम स्वदेशी इतालवी दुःखान्तिका) उठा ली। उसे उलटते हुए मैंने देखा कि एक जगह कुछ अंश पेंसिल से रेखांकित है। यह नाटिका के तीसरे अंक के अन्त में था; बड़ा ही हृदयोन्मादकारी पद था वह। यद्यपि उसमें अपवित्रता का रंग था किन्तु कोई भी पुरुष उसे विलक्षण मनोभावों के उन्मेष के बिना पढ़ नहीं सकता; कोई भी स्त्री उसे पढ़कर निःश्वास लिए बिना रह नहीं सकती। वह सारा पृष्ठ ताज़े आंसुओं के धब्बों से भरा था और उसके साथ के सादे अन्तपृष्ठ पर निम्नलिखित पंक्तियां ऐसी हस्तलिपि में लिखी हुई थीं जो मेरे दोस्त की अनोखी प्रकृति के बिल्कुल ही विपरीत थीं—यहां तक कि मुझे यह समझने-पहचानने में काफी कठिनाई हुई कि वे उसकी ही हैं—

प्रिये ! तुम्हीं थीं मेरी सब कुछ, जिसके लिए हमारा वह मन।
तड़पा करता था निशिवासर, पीड़ा से करता था क्रन्दन।
जीवन के अगार सागर में, हरित द्वीप-सी तुम थीं मेरे।
या तुम पावन देवमूर्त्ति थीं, मेरे फूल तुम्हें थे घेरे।
किन्तु स्वप्न सब क्षणभंगुर थे, आशा की चांदनी खिली, पर।
सघन कृष्णघन जीवन-नभ में, शीघ्र छा गए उसपर आकर।
नियति-गर्भ से गिरा उठी, 'बस, आगे बढ़ जाओ हे प्राणी।'
किन्तु प्राण मेरे अतीत में, शिथिल और मूर्छित कल्याणी।
हाय ! लालसाएं सब मेरी, नष्ट हो गई हैं दीवानी।
'और नहीं', 'बस, और नहीं' सागर चिल्ला पड़ता है रानी।
अपने तट के बालुकणों से, विद्युत्झटित चारुद्रुम खण्डित,
अब फिर कभी नहीं होवेंगे, हरित और पुष्पों से मण्डित।
विद्ध गरुड़ अब उड़ न सकेगा, फिर से ऊंचे नील गगन में।
मेरे क्षण मूर्छा से पूरित, मेरे नैशस्वप्न सब विगलित,
बहुत दूर पर उड़े जा रहे, तेरे सुन्दर कमल-नयन में।
तेरे चरणों की ध्वनि से है, पथ का हृदय जहां पर मुखरित।

आत्मा मेरी पड़ी वहीं है, पीड़ित, क्षुब्ध, अलस, आकंपित।
किन्तु हाय, वे क्षण जब तुमको, छीन ले गया, भाग्य हमारा।
प्रेम और पूजा से वैभव, और उपाधिकारी हत्यारा।

पंक्तियां अंग्रेजी में थीं। मैं नहीं जानता था कि यह भाषा भी उनका रचयिता जानता है। किन्तु उसमे मुझे कुछ विशेष आश्चर्य नहीं हुआ। मैं अच्छी तरह जानता था कि उसकी सिद्धियों का, उसके ज्ञान का क्षेत्र बहुत व्यापक है और उनको छिपाकर रखने में उसे अपार आनन्द मिलता है—इसलिए कि किसी समय एकाएक उन्हें जानकर लोग चमत्कृत हो उठें। इसीलिए कहता हूं कि मुझे आश्चर्य नहीं हुआ किन्तु उन पंक्तियों पर लिखने के स्थान का जो नाम था उसने जरूर मुझे विस्मित किया। उनके नीचे लन्दन का नाम था, जो बाद में सावधानी से मिटा दिया गया था, किन्तु इतनी अच्छी तरह नहीं कि चतुर पर्यवेक्षक की आंखों को धोखा दे सके। मैंने कहा है कि इसने मुझे विस्मित किया, क्योंकि मुझे अच्छी तरह याद है कि अपने मित्र के साथ इससे पहले की किसी भेंट में मैंने उससे खास तौर पर पूछा था कि क्या लन्दन में कभी वह मार्चेशा दी मेण्टोनी से (जो अपने विवाह के कुछ साल पूर्व लन्दन में रह चुकी थी) मिला था, तब उसने कहा था कि उसने तो ब्रिटेन के इस महानगर के कभी दर्शन ही नहीं किए। यहां मैं इतना और कह देना चाहता हूं कि (यदि अनेक असम्भव बातों की रिपोर्ट पर न भी विश्वास करें तो) मैंने एकाधिक बार सुना है कि जिस आदमी के विषय में मैं लिख रहा हूं वह न केवल जन्म से, बल्कि शिक्षण से भी अंग्रेज है।

बिना जाने हुए कि मुझे एक दुःखान्त घटना का पता लग चुका है, (मानो अपने स्वप्न से जगकर) उसने कहा—"एक चित्र और है, एक चित्र और है, जिसे आपने नहीं देखा है।" और यह कहकर उसने एक चित्र पर पड़े हुए पर्दे को हटा दिया! मैंने देखा कि वह मार्चेशा एफ्रोदाइत का कद्देआदम चित्र है।

उसके अतिमानवीय सौन्दर्य के रेखांकने में मानव की कला उसके आगे

नहीं जा सकती। पिछली रात जो स्वप्निल, हवाई मूर्ति मेरे सामने ड्यूक के महल की सीढ़ियों पर आकर खड़ी हुई थी, वही मानो पुनः मेरे सामने आकर खड़ी हो गई हो। चेहरा मुस्कानों से दमक रहा है किन्तु उस पर करुणा की वह छाया है जिसके बिना सौन्दर्य में पूर्णता नहीं आती। उसका दाहिना हाथ उसकी छाती पर मुड़ा हुआ पड़ा है और अपने बायें हाथ से वह नीचे एक विलक्षण अलंकृत पात्र की ओर संकेत कर रही है। एक ही लघु, सुन्दर चरण दीख रहा है जो हलके से धरती पर उठा हुआ है। उसकी मंजुलता के चतुर्दिक छाये प्रदीप्त वातावरण में, बड़ी मुश्किल से अत्यन्त नाजुक कल्पना के दो पंख तैरते दिखाई पड़ते हैं। मेरी दृष्टि चित्र से मेरे मित्र पर चली गई, और चैपमैन की निम्नलिखित पंक्तियां अपने-आप मेरे ओंठों पर थिरक उठीं—

"He is up
There like a Roman statue ! He will stand
Till Death hath made him marble"

"वह खड़ा है
वहां एक रोमन मूर्त्ति-सा। वह खड़ा रहेगा तब तक
जबतक कि मृत्यु उसे मर्मर में न ढाल दे।"

अन्त में ठोस चांदी के बने एक टेबुल के पास घूमकर उसने कहा—"आइए। उसपर कुछ सुराहियां और कुछ वैसे ही अलंकृत पात्र पड़े थे जैसे चित्र में मैं देख चुका था। सहसा उसने कहा—"आइए। हम मदिरापान करें। अभी बहुत जल्दी है परन्तु आइए, हम पिएं। निश्चय ही, अभी जल्दी है।" उसने कुछ इस तरह कहा, जैसे सूर्योदय के बाद प्रथम घण्टे में किसी देवशिशु ने स्वर्णवाद्य से समस्त कक्ष को झंकृत कर दिया हो। "निश्चय ही अभी जल्दी है, किन्तु क्या हुआ ? आहा, हम पिएं। हम उस शान्त सूर्य की भेंट के रूप में ढालें, जिसे ये अत्यालंकृत प्रदीप एवं धूपदान पराजित करने का प्रयत्न कर रहे हैं।" और मेरे लिए एक बड़े पात्र में मदिरा भरकर वह एक के बाद एक तेजी से कई प्याले चढ़ा गया।

एक सुन्दर पात्र को धूपदान के तीव्र प्रकाश में पकड़े-पकड़े उसने कहा—"स्वप्न देखना ही मेरे जीवन का कार्य रहा है। इसलिए जैसा आप देख रहे हैं, मैंने अपने लिए इस स्वप्न-कक्ष का निर्माण किया है। क्या वेनिस के केन्द्रभाग में मैं इससे अच्छा बना सकता था ? यह ठीक है कि आप अपने चर्तुदिक अनेक प्रकार की वास्तुकलाओं की खिचड़ी देख रहे हैं। आयोनिया की शुचिता अति पुरातन रीतियों से अपमानित है, और मिश्र के मौन स्तम्भ यहां स्वर्ण की कालीनों पर फैले हुए हैं। फिर भी केवल अज्ञानियों को इसका प्रभाव विसंगत मालूम पड़ता है। स्थान, मुख्यतः काल के बंधन मनुष्य को महत् के दर्शन से भीत कर देते हैं। कभी मैं भी बड़ा आचारवान था किन्तु बुराई के उस दैवीकरण ने मेरी आत्मा पर गहरी चोट की है। अब यह सब मेरे हेतु के पूरक हैं। उन अलंकृत धूपदानों के समान मेरी आत्मा आग में तड़प रही है और इस दृश्य की मूर्च्छा मुझे सच्चे स्वप्नों के उस देश के और उन्मत्त दृश्यों के लिए तैयार कर रही है जहां मैं क्षिप्रगति से विदा हो रहा हूं।" इतना कहने के बाद उसने स्वीकार किया कि यह सब और कुछ नहीं, मदिरा का प्रभाव है, और एक चौकी पर लम्बा पड़ गया।

इसी समय सीढ़ियों पर तेजी से आते पगों की ध्वनि सुनाई पड़ी; फिर दरवाजे पर जोर से कराघात हुआ। मेण्टोनी के घर का एक परिचर कमरे में तेजी से आया और भावविगलित-वाणी में ये असम्बद्ध शब्द कहे—"मेरी मालकिन।—मेरी मालकिन को विष दे दिया गया। विष दिया गया। हाय, सुन्दरी, सुन्दरी एफोदाइत !"

घबड़ाकर मैं मित्र की चौकी के पास भागा और उस सोनेवाले को ऐसे भयानक सामाचार के लिए जगाने की चेष्टा की। किन्तु उसके अंग कठिया गए थे, उसके ओंठ निष्प्रभ हो गए थे, उसकी कुछ समय पहले की दीप्त आंखें मृत्यु में जड़ हो गई थीं। मैं लड़खड़ाता टेबुल की ओर गया और मेरा हाथ एक टूटे, काला पड़ते प्याले पर पड़ा और समस्त भयानक सत्य मेरे हृदय में कौंध गया।

ईरोज़ तथा चार्मिओन की बातचीत

ईरोज

तुम मुझे ईरोज क्यों कहते हो ?

चार्मिओन

अब आगे तुम इसी नाम से पुकारे जाओगे। तुम भी मेरी पार्थिव संज्ञा भूल जाओ, और चार्मिओन के रूप में ही मुझसे बातें करो।

ईरोज

यह स्वप्न तो नहीं है ?

चार्मिओन

हमारे पास अब कोई स्वप्न नहीं है—किन्तु ये रहस्य तो हैं ही। मैं तुम्हें जीवनमय एवं बुद्धिपूर्ण देखकर खुश हूं। तुम्हारी आंखों से छाया का आवरण पहले ही दूर हो चुका है। अब साहस से काम लो और किसी चीज का भय न करो। तुम्हारी मूर्च्छा के नियत दिन बीत चुके हैं, और कल स्वयं मैं तुम्हें तुम्हारे नवीन-जीवन के समस्त आनन्दों एवं आश्चर्यों से परिचित कराऊंगा।

ईरोज

सचमुच मुझे मूर्च्छा का अनुभव नहीं हो रहा है—बिल्कुल नहीं। प्रबल बीमारी और भयंकर अंधियारी मुझसे दूर हो गई है, और अब मुझे अनेक समुद्रों-जैसा उन्मत्त, प्रचण्ड और भीषण शब्द सुनाई नहीं पड़ता। फिर भी चार्मिओन, नवीन के आभास से मेरी इन्द्रियां विस्मित हैं, होश गुम हैं।

चार्मिओन

चन्द दिनों में यह सब दूर हो जाएगा, किन्तु मैं तुम्हारी स्थिति समझ रहा हूं और तुम्हारे लिए मुझे सहानुभूति है। दस पार्थिव वर्ष बीत गए जब मेरे ऊपर भी वही बीती थी जो तुम पर अब बीत रही है, फिर भी आज तक उसकी स्मृति मेरे साथ बनी हुई है। अब तक तुम वह सब दर्द भोग चुकी हो जो तुम्हें अदन में भोगने होंगे।

ईरोज़

अदन में ?

चार्मिओन

हां, अदन में।

ईरोज़

हे ईश्वर ! चार्मिओन, मुझपर रहम खाओ। मैं सभी वस्तुओं की महिमा के भार से दबी हुई हूं। जो अज्ञात था, वह ज्ञात हो गया है, जो कल्पना का भविष्य था वह महत् एवं निश्चित वर्तमान में निमग्न हो गया है।

चार्मिओन

अब ऐसे विचारों में न उलझो। कल हम उसके विषय में बताएंगे। तुम्हारा मन अस्थिर है, और सरल स्मृतियों का ख्याल करने से उसकी अशान्ति दूर हो जाएगी। अपने इर्द-गिर्द या आगे की ओर न देखो, पीछे की ओर देखो। जिस महती घटना ने तुम्हें हमारे बीच फेंक दिया है, उसका ब्योरेवार वर्णन सुनने के लिए मेरे प्राण तड़प रहे हैं। मुझे उसके बारे में बताओ। आओ, हम उस दुनिया की पुरानी परिचित भाषा में, परिचित वस्तुओं के विषय में बात करें, जो इस भीषणता के साथ नष्ट हो गई है।

ईरोज़

अत्यन्त भीषणता के साथ, भीषणतापूर्वक।—यह कोई स्वप्न तो नहीं है ?

चार्मिओन

अब कोई स्वप्न नहीं रह गया है। मेरी ईरोज़, क्या मेरे लिए बड़ा शोक किया गया?

ईरोज़

शोक, चार्मिओन? शोक तो बड़ा गहरा हुआ था। अन्तिम क्षण तक तुम्हारी गृहस्थी पर गहरी उदासी और प्रबल शोक के बादल छाये हुए थे।

चार्मिओन

और वह अन्तिम क्षण। उसके बारे में बताओ। याद रखो कि केवल विपत्ति के तथ्य के अलावा और कुछ मुझे ज्ञात नहीं है। जब मानवजाति के बीच से निकलकर आते समय, कब्र के रास्ते में घोर निशा में पहुंच गया, तो, यदि मुझे ठीक याद आ रहा है तो तुम पर जो विपदा आ पड़ी उसका बिल्कुल पूर्वाभास नहीं था। किन्तु निश्चय ही मैं उस समय की कल्पनात्मक विचारधारा के विषय में कुछ नहीं जानता था।

ईरोज़

जैसा तुम कहते हो, व्यक्ति विपदा का बिल्कुल पूर्वाभास नहीं था, किन्तु वैसे ही दुर्भाग्य बहुत पहले से ज्योतिषियों के अध्ययन एवं विवाद के विषय रहे हैं। प्रिय मित्र, यह भी कहना मेरे लिए बाहुल्य मात्र है कि जब तुम हम लोगों को छोड़ गए थे, तब भी मानवों ने पवित्र ग्रन्थों के उन अंशों को समझने में सहमति प्रकट की थी जिनमें अग्निद्वारा सब वस्तुओं के अन्तिम विनाश का उल्लेख है और वे इस विषय में एकमत थे कि इन बातों का सम्बन्ध केवल पृथ्वी-मण्डल से है। किन्तु जहां तक विनाश के आसन्न अभिकरण (एजेंसी) का सम्बन्ध है ज्योतिर्विज्ञान के उस युग से ही इस कल्पना में त्रुटि आ गई जब यह मान लिया गया कि धूमकेतुओं से आग लगने का भय नहीं है। यह बात सिद्ध हो चुकी है कि इन पिण्डों में विशेष घनत्व नहीं होता। यह भी देखा गया है कि जब वे गुरु के उपग्रहों के बीच से गुज़रते हैं तो उन उपग्रहों के ग्रहपथ या पिण्ड-विधान में कोई इन्द्रियगम्य परि-

वर्तन नहीं होता। हम इन परिव्राजकों या सैलानियों को बहुत दिनों से अलक्ष्य तनुतावाली वाष्पीय सृष्टियां मानते आ रहे थे। हम यह भी मानते रहे हैं कि इनमें हमारी ठोस पृथ्वी को संस्पर्श की स्थिति में भी कोई विशेष हानि पहुंचाने की शक्ति नहीं है। संस्पर्श का ज़रा भी भय नहीं माना जाता था क्योंकि समस्त धूमकेतुओं के तत्वों का ठीक-ठीक ज्ञान हमें प्राप्त था। उनमें हम अपने भावी अग्नि-विनाश का अभिकरण (एजेंसी) या साधन खोजें, इसे अनेक वर्षों से एक अग्राह्य विचार माना जाता था। किन्तु पिछले कुछ दिनों से चमत्कारिक एवं विस्मयपूर्ण कल्पनाएं विचित्र ढंग से मानवजाति में फैल गई थीं और यद्यपि ज्योतिषियों-द्वारा एक नये धूमकेतु की घोषणा से थोड़े से अज्ञानियों को ही भय हुआ किन्तु फिर भी न जाने क्यों घोषणा को सर्वसाधारण ने एक प्रकार के अविश्वास एवं बेचैनी के साथ ग्रहण किया।

उस विचित्र ज्योतिष्क पिण्ड के तत्वों पर तुरन्त विचार किया गया, और एक समय सभी पर्यवेक्षक इस बात पर एक मत थे कि उसका परिक्रमापथ सूर्यसमीपक (पेरीहोलियन) बिन्दु पर उसे पृथ्वी के अत्यन्त निकट ला देगा। हां, दूसरी श्रेणी के दो-तीन ऐसे ज्योतिषी अवश्य थे जो निश्चयपूर्वक कहते थे कि संस्पर्श अवश्यम्भावी है। इस विचार का लोगों पर कैसा असर पड़ा, इसे मैं तुमसे क्या कहूं। कुछ दिनों तक तो यह हाल था कि वे कोई ऐसी बात मानने को नहीं थे जिसे उनकी बुद्धि ग्रहण न कर पाए। किन्तु जो तथ्य प्रबल महत्व के होते हैं वे जल्द ही दुराग्रहियों एवं बुद्धिहीनों द्वारा भी मान लिए जाते हैं। अन्त में सभी आदमियों ने देख लिया कि ज्योतिष का ज्ञान झूठा नहीं था। अब वे धूमकेतु की प्रतीक्षा करने लगे। शुरू-शुरू में तो उसकी गति तेज़ नहीं थी, न तो उसका रूप ही कुछ असाधारण था। वह धुंधला लाल था। सात-आठ दिन तक तो उसके व्यास या आयतन में कोई विशेष वृद्धि दिखाई नहीं पड़ी; उसके रंग में भी बहुत थोड़ा अन्तर मालूम पड़ा। किन्तु इस अवधि में लोग अपने मामूली कामकाज भूल गए; जिसे देखो वही धूमकेतु की प्रकृति की तात्विक बातों को

लेकर उलझा हुआ है। जो अत्यन्त अज्ञान थे वे भी अपनी शिथिल शक्तियां इन्ही बातों में लगा रहे थे। पण्डित वर्ग भी अब अपनी बुद्धि का, आत्मा का, उपयोग लोगों का भय दूर करने या अपने प्रिय सिद्धान्त पर ज़ोर देने में नहीं करता था। वे भी सच्चाई जानने को विकल हो रहे थे। वे पूर्ण ज्ञान के लिए छटपटाते थे। अपनी शक्ति एवं परम महिमा की पवित्रता के बीच सत्य ऊपर उठा और विद्वानों ने उसके चरणों पर झुककर पूजा की।

उक्त संभवित संस्पर्श से हमारे पृथ्वी-मण्डल को या उसके निवासियों को कोई ठोस हानि पहुंचेगी, यह विचार विद्वानों के बीच बराबर अग्राह्य होता जा रहा था। अब भीड़ की कल्पना और तर्क पर भी उनका अधिकार स्थापित होने लगा। यह बात प्रदर्शित की गई कि धूमकेतु के शीर्ष-भाग का घनत्व हमारे सूक्ष्मतम गैस के घनत्व से भी कहीं कम है। गुरु के उपग्रहों के बीच उसके निर्दोष अतिक्रमण पर भी बड़ा बल दिया गया और उसके कारण लोगों का भय बहुत दूर हो गया। धर्मशास्त्री लोग, भय-मिश्रित विश्वास के साथ, बाइबिल की भविष्यवाणियों पर बड़ा ज़ोर दे रहे थे और ऐसी स्पष्टता और सरलता से उनका प्रतिपादन करते थे जिसकी कोई पूर्व मिसाल नहीं थी। पृथ्वी का अन्तिम विनाश अग्नि के कारण ही होगा, यह बात वे इतने ज़ोर के साथ कहते थे कि आदमी को विश्वास हो जाता था। और चूंकि अब सबको विश्वास हो चला था कि इन धूमकेतुओं की प्रकृति ज्वालामयी नहीं है, इसलिए घोषित संकट का भय लोगों में बहुत कुछ दूर हो गया। किसी भी धूमकेतु के आगमन पर लोगों में जो मूढ़ विश्वास फैल जाता था कि इसके कारण युद्ध होगा, महामारी फैलेगी, वह सब इस समय बिल्कुल नहीं था। ऐसा लगता था मानो किसी आकस्मिक दांव से बुद्धि ने अन्धविश्वास को उसके सिंहासन से उठाकर दूर फेंक दिया है। दुर्बल से दुर्बल बुद्धि भी तद्विषयक प्रबल रुचि के कारण प्राणवती हो उठी थी।

संस्पर्श से छोटी-मोटी क्या बुराइयां पैदा हो सकती हैं, इसपर भी तरह-तरह के सवाल उठ रहे थे। विद्वज्जन भूतात्त्विक उपद्रव, जलवायु

और फलस्वरूप हरीतिमा के परिवर्तन तथा चुम्बकीय एवं विद्युतीय प्रभावों की सम्भावना की बातें करते थे। बहुतेरे यह भी कहते थे कि किसी प्रकार का कोई दुष्ट प्रभाव नहीं पड़ेगा। जब इस तरह के वाद-विवाद चल रहे थे, धूमकेतु धीरे-धीरे निकट आता जा रहा था। उसका आकार बढ़ता जा रहा था तथा उसमें ज्यादा चमक पैदा होती जा रही थी। ज्यों-ज्यों वह निकट आता गया, मानवजाति पीली और पीली पड़ती गई। सब मानव-कर्म ठप हो गए।

जब धूमकेतु ने वह वृहदाकार ग्रहण किया, जैसा पहले के धूमकेतुओं में कभी देखा नहीं गया था, तो सर्वसाधारण की जो मनोदशा हुई उसे एक अलग युग ही कहा जा सकता है। लोगों के मन में थोड़ी-बहुत जो आशा थी, वह भी टूट गई और अब उन्हें अमंगल का पूर्ण विश्वास हो गया। भय-सम्बन्धी द्विधा दूर हो गई। हमारी जाति में जो परम साहसी थे, उनके हृदय भी अन्दर-अन्दर जोरों से धड़कने लगे। कुछ दिनों के बाद तो ये अनुभूतियां भी और अधिक असहनीय मनोभावों में बदल गई। अब उस विचित्र ज्योतिष्क पिण्ड के विषय में अभ्यस्त विचार-पद्धति से हम किसी बात का आरोपण नहीं करते थे। उसके ऐतिहासिक लक्षण लुप्त हो गए थे। अब वह हमें मनोवेग की भीषण नवीनता से पीड़ित किए हुए था। अब हम उसे आकाश की एक ज्योतिर्विज्ञानीय घटना के रूप में नहीं बल्कि अपने हृदयों पर छाए एक दुःस्वप्न और अपने मस्तिष्कों पर तैरती छाया के रूप में देख रहे थे। अब उसने अकल्पनीय द्रुत गति से सूक्ष्म ज्वाला का वह विराट आवरण ओढ़ लिया था जो क्षितिज से क्षितिज तक फैला हुआ था।

एक दिन और बीता और आदमियों ने मुक्तिपूर्वक सांस ली। यह स्पष्ट हो गया कि हम धूमकेतु के प्रभावक्षेत्र में आ चुके हैं, फिर भी जी रहे हैं। अब तो हमारे शरीर में असाधारण लोच—प्रसरणशीलता—आ गई और हमारे मन उत्फुल्ल हो उठे। हमारे भयजनक पिण्ड की निरतिशय तनुता स्पष्ट थी; सब आकाशीय नक्षत्र इसके पार दिखाई पड़ रहे थे। हां,

हमारी हरीतिमा में अवश्य परिवर्तन दिखाई पड़े, जिसे विद्वानों ने पहले ही बता दिया था। वनस्पति मात्र में एक अज्ञातपूर्व समृद्ध हरीतिमा छा गई।

दूसरा दिन आया, और देखा गया कि धूमकेतु बहुत कुछ हमारे ऊपर आ गया है। स्पष्ट हो गया कि पहले उसका शीर्षभाग हम तक पहुंचेगा। सब आदमियों में प्रबल परिवर्तन हो गया। वेदना की प्रथम अनुभूति अगले सामान्य दुःख, रोदन और भीति का संकेत थी। यह प्रथम वेदनानुभूति सीने की अकड़न और फेफड़ों के आंकुचन तथा चमड़ी की असहनीय शुष्कता के रूप में थी। अब कोई इस बात से इन्कार नहीं करता था कि हमारा वायु-मंण्डल बहुत ज्यादा बदल गया है। इस वायुमण्डल का अनुकूलीकरण तथा सम्भवित संशोधन किस प्रकार किया जा सकता है, यही अब चर्चा का विषय हो गया। अनुसंधान से जो परिणाम निकला उसने सर्वत्र मानवों के हृदय को घोर आतंक के विद्युत-स्पर्श से भर दिया।

यह बात बहुत दिनों से ज्ञात रही है कि हमारे चतुर्दिक् जो वायुमण्डल है वह आक्सीजन (ओषजन) एवं नाइट्रोजन (नेत्रजन) गैसों का एक मिश्रण है। इस मिश्रण में आक्सीजन का अनुपात इक्कीस और नाइट्रोजन का उन्नासी प्रतिशत है। आक्सीजन ज्वलन-दहन का मुख्य तत्त्व तथा ताप का वाहक है और वह प्राणी-जीवन की स्थिति के लिए परमावश्यक है। वह प्रकृति का सबसे शक्तिमान और सक्रिय साधन—एजेण्ट—है। इसके विपरीत नाइ-ट्रोजन न तो प्राणी-जीवन को कायम रख सकता है, न ज्योतिशिखा को। आक्सीजन की अप्राकृतिक वृद्धि से पाशविक प्रवृत्तियों में भी वृद्धि होती है, जैसाकि हम पिछले दिनों अनुभव कर रहे थे। इस विचार का अनुसरण करने से ही भय पैदा हुआ था। नाइट्रोजन का सर्वथा लोप हो जाने का परि-णाम क्या होगा? तुरन्त एक अप्रतिहत, सर्वभक्षी, सर्वव्यापी ज्वाला उठ खड़ी होगी। पवित्र ग्रंथ (बाइबिल) की भविष्यवाणियों में निहित भयोत्पा-दक एवं दाहक निन्दा-वचन, अपने सूक्ष्म एवं भयानक ब्योरों में, बिल्कुल सत्य सिद्ध होंगे।

चार्मिओन, मैं मानव जाति की विमुक्त उन्मत्तता का चित्रण क्यों कर

रही हूं ? धूमकेतु की जिस तनुता ने पहले हमें आशा से पूरित कर दिया था, वही इस समय दुःख और निराशा का स्रोत बन गई थी। उसकी दुर्ज्ञेय गैसीय रचना में हमें भाग्य की निष्पत्ति स्पष्ट दिखाई दे रही थी। इस बीच एक दिन और बीत गया और अपने साथ आशा की अन्तिम छाया भी लेता गया। अब हम वायु के तीव्र परिवर्तन के बीच हांफ रहे थे। सूक्ष्म शिराओं में लाल रक्त तूफानी गति से दौड़ रहा था। सब लोगों पर एक भयानक उन्मत्तता छा गई थी और वे डरानेवाले आकाश की ओर अचंचल बांहें फैलाए हुए ज़ोरों से कांप और चीख रहे थे। अब विनाशक का शीर्षभाग हमारे ऊपर था। उसका स्मरण करके यहां अदन में यह सब कहते हुए भी मैं कांप रही हूं। अब हम उसी प्रकार संक्षेप में कहेंगे जैसा संक्षिप्त हम-पर घिरा हुआ वह विनाश था। थोड़ी देर के लिए तो बस एक विचित्र निष्प्रभ प्रकाशमात्र रह गया था। यह प्रकाश सब चीज़ों के अन्दर-बाहर समा रहा था। तब, चार्मिओन, आओ हम महेश्वर की परम महिमा के प्रति नतमस्तक हो लें, तब एक व्यापक शब्द हुआ, मानो स्वयं परमेश्वर के मुख से निकलकर आया हो, और ईश्वर की जिस समस्त धारक संहति में हमारा अस्तित्त्व था, वह अकस्मात् ऐसी गहरी ज्वाला में फट पड़ी जिसकी परम दीप्ति एवं सर्वदाहक ताप के लिए विशुद्ध ज्ञान के महत् स्वर्ग के देवदूतों के पास भी कोई संज्ञा नहीं है। इस तरह सबका अन्त हो गया।

○ ○ ○

मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-६

11127